यह सल
पृ ५८ है।

# भूमिका

किसी निर्धन साधन-विहीन व्यक्ति के घर कार्यकुशल सन्तान को देखकर ही पूर्वजन्म के संस्कार तथा कर्म फल का विचार बनता है। परन्तु इस विचार की मान्यता का आधार दो बातों पर टिका है। एक तो यह कि शरीर में कोई चेतन सत्ता उपस्थित है जो शरीर के कर्मों के लिए उत्तर-दायी है। दूसरा आधार है—शरीर के नष्ट होने पर उस चेतन शक्ति का चलते रहना और अपने कर्मों के अनुसार नवीन जन्म पाना।

आत्मा, परमात्मा और पुनर्जन्म तथा मोक्ष, ये सब सम्बद्ध विचार हैं। एक से अन्य सब सिद्ध होते हैं। यदि एक को न माना जाए तो दूसरे स्वयं-अमान्य हो जाते हैं।

या तो यह माना जाए—

> अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः
> अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ।।

अन्यथा यह संसार अन्धकारपूर्ण ही बनने लगेगा। अन्धकार में मनुष्य अन्धे के समान ठोकरें खा रहा प्रतीत होगा।

यदि कोई पुण्यात्मा अपने पूर्वजन्म के पुण्य कर्मों के अधीन सत्ता सम्पन्न हो जाए और वह अपनी प्रभुता को एक घटनावश ही माने तो जीवन के टेढ़े-मेढ़े मार्गों को सीधा करने में घोर पाप कर्म करने लगेगा और जहां वह अपने लिए नरक का द्वार खोल लेगा, वहां वह अपने सम्पर्क में आने वालों के लिए भी घोर संकटावस्था उत्पन्न कर देगा।

आज यही इस संसार में व्यापकरूप में हो रहा है। सत्ता-सम्पन्न अनीश्वरवादी, जीवन को जन्म से मरण पर्यन्त ही मानने वाले, न कोई कर्म फल और न ही कर्म फल का कोई देने वाला, मानने वाले बन रहे है।

इनके लिए न्याय वह है, जिससे उनकी कठिनाइयां दूर होती हैं। उनके लिए सत्य वह है जो उनकी प्रभु सत्ता को बनाये रखता है। उनके लिए इमानदारी का अर्थ अपनी मनमानी है। अन्य सब झूठ है, छलना है, अन्याय है और बेईमानी है।

यह है कथा 'यह सब झूठ है' की। पात्र आदि सब काल्पनिक हैं परन्तु कथा तो सब ही सत्य है। देखने वाले के पास आंखें होनी चाहिएं।

—गुरुदत्त

यह सब झूठ है

# प्रथम परिच्छेद

: १ :

दिल्ली के एक उपनगर में बन रही सड़कों पर काम करने वाले मज़दूर, अपने काम से अपनी बस्ती को लौट रहे थे। उन्होंने ठेकेदार का काम ठीक पांच बजे बन्द किया था और अपनी झुग्गी बस्ती को लौटते समय उनके पांव धीरे-धीरे चल रहे थे।

काम करनेवाले मजदूरों में स्त्री-पुरुष दोनों थे। सन् १९४८ का अन्त आ रहा था और दिल्ली के पश्चिम में पंजाब से विस्थापितों के लिए एक नयी बस्ती बनाई जा रही थी। कुछ मकान सरकार स्वयं बनवाकर विस्थापितों को किश्तों पर दे रही थी। कुछ भूमि के टुकड़े लोगों को दे दिए थे, जिससे वे अपनी रुचि के अनुसार मकान बनवा लें। सड़कें तो सरकार बनवा रही थी। ठेकेदार सड़कों पर रोड़ी कुटवा रहे थे। मज़दूर सड़क पर रोड़ी बिछाते थे। इंजन रोड़ी को कूटता था और मज़दूर उसके साथ-साथ पानी डालते जाते थे। इस प्रकार दिन में आठ घण्टे काम कर, परिश्रम से थके हुए भारी कदमों से ये मज़दूर चले आ रहे थे।

ये मजदूर राजस्थान से दिल्ली में मेहनत मजदूरी कर पेट भरने आये हुए थे और सबने बन रही बस्ती से कुछ हटकर शादीपुर बस्ती के पिछवाड़े अपनी झुग्गियां डाल रखी थीं।

कन्हाईलाल भी इनमें एक था। वह उन्नीस-बीस वर्ष का युवक था। प्रायः काम समाप्त कर लम्बे-लम्बे पग उठाता हुआ काम से सीधा शादीपुर में बनिये की दुकान को चला जाया करता था। वहां से रात और

अगले दिन खाने की रसद लेकर ही अपनी झुग्गी पर पहुँचता था। झुग्गी में पहुंच चूल्हे पर रात के लिए खाना बना और खा, अपनी खाट पर सो जाया करता था।

अविवाहित होने से उसे अपनी दशा पर विचार करने का बहुत अवसर मिल जाया करता था। खाट पर लेटा-लेटा आकाश के तारों को देखता देखता वह कल्पनाभिभूत हो जाया करता था। वह अपने जीवन से संतुष्ट नहीं था। इसको उन्नत करने के उपायों पर विचार करता रहता था।

आज जब वह काम से बनिये की दुकान की ओर चला तो उसकी बस्ती की एक स्त्री उसके साथ होली। कन्हाई इसमें कुछ विशेषता न समझ चलता गया। उसने यह पूछ लिया, "चाची ! रसद खरीदने जा रही हो ?"

"नहीं, वह तो तुम्हारा चाचा खरीदा करता है। मैं तो तुम्हारे साथ ही चल पड़ी थीं कि देखूं तुम क्या खाते-कमाते हो ?"

"कमाई तो चाची, तुम जानती हो। अढ़ाई रुपये मिलते हैं। पर मैं इससे संतुष्ट नहीं हूं।"

"पर यही तो अन्य सबको मिलता है। हां ! हम औरतों को पौने दो रुपये ही ठेकेदार देता है।"

"जानता हूं, परन्तु इससे मेरा काम नहीं बनता।"

"क्यों ? कितना खा जाते हो ?"

कन्हाई आज इस पड़ोसिन के उसके आय और खर्च के विषय में पूछने पर विस्मित हुआ था। इसमें केवल सहानुभूति ही कारण समझ उसने बात स्पष्ट कर दी।

उसने कहा, "मैं दस आना रोज खा जाता हूं। अन्न के अलावा एक आने का गुड़ और दो आने का घी रोज खाता हूं।"

"तुम्हारे चाचा को भी मीठा खाने का शौक है और मैं उसके और मोहन के लिए रोज कुछ-न-कुछ मिठाई घर पर बना देती हूँ।"

"चाची ! मेहनत करने वालों के लिए मीठा बहुत लाभ करता है। उस दिन ओवरसीयर बाबू अपना कुछ सामान उठवाकर अपने घर ले गये थे और कहते थे कि जितना अच्छा खाओगे, उतनी अधिक मेहनत कर सकोगे। अधिक मेहनत की अधिक मजदूरी मिलेगी और उस अधिक से कोई भी बुद्धि रखनेवाला अपनी उन्नति का मार्ग ढूंढ़ सकता है।"

"तो कितना रुपया जमा कर लिया है।" चाची का अगला प्रश्न था।"

"सच बताऊं चाची ?"

"झूठ बोलने से क्या लाभ होगा ? मैं तुमसे कुछ मांगने के लिए नहीं पूछ रही।"

"अब तो तीन महीने से निरन्तर काम मिल रहा है। इससे पचास रुपये से ऊपर टेंट में बंधे हैं।"

"तो इसको टेंट के साथ क्यों बांध रखे हैं ?"

"झुग्गी में पीछे छोड़ जाने से चोरी भी तो हो सकती है।"

"परन्तु टेंट में बंधे कभी गिर भी सकते हैं।"

"तो चाचा क्या करता है ?"

"वह तो बनिये के पास जमा करा देता है। तुम्हारा चाचा है, मैं हूँ, मोहन और टुनिया भी हैं। सबको मिलाकर साढ़े आठ रुपये रोज मिलते हैं। हम तीन रुपये रोज का खा जाते हैं। महीने में दस-बीस रुपये का कपड़ा भी लेना पड़ जाता है। इस बार हमारे, बनिये के पास दो सौ रुपये जमा हो चुके हैं।"

"पर यह बनिया राधेश्याम तो बहुत बेईमान है।"

"क्या बेईमानी करता है ?"

"कम तोलता है।"

"वह तो उसकी दुकानदारी है। तुम्हारे चाचा ने भी उसको कई बार पकड़ा है। इसपर राधेश्याम हंस देता है और हमको तो ठीक तोलकर

देने लगा है।"

"मैं तो उसके पास अपने रुपये रखना नहीं चाहता।"

"परन्तु इस प्रकार तो गिर सकते हैं।"

"कुछ और अधिक हो लें तो फिर विचार कर लूंगा कि इनको कहां रखूं।"

इस समय वे राधेश्याम बनिये की दुकान पर जा पहुंचे थे। इनके वहां पहुंचते ही राधेश्याम ने कहा, "बताओ दुनिया की मां! आज फिर झगड़ा करने आई हो?"

दुनिया की मां नीमो हंस पड़ी और बोली, "तुम कम तोलोगे तो झगड़ा करूंगी ही।"

"नहीं बाबा! तुम्हारे सामने कम नहीं तोल सकता।" यह कह बनिया भी हंसने लगा।

कन्हाई अपनी चादर की छोर में रसद बांध चला तो दुनिया की मां भी उसके साथ चल पड़ी। कन्हाई विस्मय कर रहा था कि नीमो चाची उसके साथ किस प्रयोजन से चल रही है। दुनिया की मां ने चलते हुए पूछ लिया, "खाना बनाते हुए तुमको कष्ट तो बहुत होता होगा?"

"नहीं चाची! आधे घण्टे में सब बनकर तैयार हो जाता है और खा भी लेता हूँ। पर चाची! तुम तो चार का खाना बनाती हो। तुमको तो ज़रूर कष्ट होता होगा।"

"पर यह तो औरतों का काम है न। हमको इससे कष्ट नहीं होता और अब तो दुनिया मेरा हाथ बंटाने लगी है।"

"उसे कभी खाना बनाते देखा नहीं।"

"बनाती है और मुझसे जल्दी बना लेती है।" नीमो ने एकदम बात बदलते हुए कह दिया, "मैं समझती हूँ कि तुमको विवाह कर लेना चाहिए।"

"विवाह?" यही विषय तो कन्हाई की कल्पना का हुआ करता था।

उसका चित्त खिल उठा, परन्तु एक ही क्षण में उसका चित्त फिर उदास हो उठा। उसको स्मरण हो आया कि उसका कोई सगा सम्बन्धी तो यहां है नहीं और पचास रुपये लेकर घर किस मुख से जाए और इतने से विवाह हो सकेगा क्या ?

वह अपने बड़े भाई और भावज से लड़कर घर से भाग आया था। आते समय वह कहकर आया था कि वह परदेस जा रहा है और बहुत रुपया कमाकर लौटेगा। तब अपनी भूमि लेकर जोते-बोयेगा। परन्तु जीवन की कठोरता ने उसको पछाड़ रखा था। कई बार उसके पास दस-बीस रुपये इकट्ठे हुए थे, परन्तु जब भी उसके पास कुछ जमा-पूंजी इकट्ठी होती थी, काम छूट जाता था और सब जमा-पूंजी व्यय हो जाती थी।

एकाध बार तो उसको बनिये से उधार लेकर भी खाना पड़ा था। अब पहली बार ही उसके पास पचास रुपये एकत्रित हुए थे। इसपर वह सोचता था इन पचास रुपयों के बल पर उसका विवाह हो सकेगा क्या ?"

विवाह की बात सुन कन्हाई को गम्भीर होते देख नीमो ने पूछ लिया, "क्यों, क्या सोच रहे हो ?"

"सोच रहा हूं कि किससे विवाह कर लूं ?"

"मानो तो बताऊं ?"

"हां चाची ! बतादो। लंगड़ी लूली न हुई तो मान जाऊंगा।"

नीमो ने साहस पकड़ कहा, "मैं टुनिया की बात कर रही थी।"

इस समय वे झुग्गी बस्ती के समीप पहुंच गए थे। टुनिया का नाम सुनते ही कन्हाई चौंका। वह टुनिया को नित्य देखता था, परन्तु उससे विवाह की बात उसके मन में कभी आई नहीं थी। टुनिया अपनी झुग्गी के बाहर खड़ी अपने भाई मोहन को पानी लाने के लिए कह रही थी। बस्ती से कुछ अन्तर पर एक सरकारी नल लगा था और बस्ती के सब लोग अपने घड़े वहां से भरकर लाते थे।

टुनिया तो लाड़-प्यार का नाम था। पंडित ने उसका नाम चन्द्रकला

रखा था। इसपर भी सब बस्ती के लोग और उसके मातापिता और भाई उसे दुनिया ही कहकर पुकारते थे।

दुनिया से विवाह की बात सुन कन्हाई की दृष्टि झुग्गी के बाहर खड़ी दुनिया की ओर चली गई। अब उसने दुनिया को अपनी पत्नी के रूप में विचार किया तो पसन्द कर लिया। वह चलता चलता खड़ा हो गया और दुनिया की ओर देखने लग गया।

उसे रुकते देख नीमो ने पूछ लिया, "क्यों पसन्द नहीं ?"

एकदम स्वीकृति देने में कन्हाई को लज्जा अनुभव हुई। उसने कुछ कहने के लिए कह दिया, "पर वह तो मुझसे झगड़ा करेगी।"

वैसे कन्हाई जानता था कि दुनिया बहुत सुशील है। नीमो ने कह दिया, "कन्हाई तुम पुरुष हो। झगड़ा करेगी तो पीट देना।"

कन्हाई ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "चाची ! चाचा तुमको पीटते हैं।"

"पर मैं झगड़ा करती ही नहीं।"

"हां चाची ! अगर पीटने की इजाजत हो तो उससे विवाह कर लूंगा।" इसपर दोनों हंसने लगे।

हंसते हुए नीमो ने कहा, "इसमें इजाजत की क्या बात है ? जबर-दस्त को सदा इजाजत होती है। यह तो औरत की चतुराई होती है कि बिना झगड़ा किए अपनी बात मनवा लेती है।"

इस समय वे बस्ती में पहुंच गए थे। नीमो ने बात समाप्त करने के लिए कह दिया, "अच्छा, दुनिया के बाप को तुमसे बात करने के लिए भेजूंगी।"

कन्हाई अपनी झुग्गी की ओर चला गया। चूल्हा-चौका तो झोपड़े के बाहर बना था। वह सुबह खाना बनाने के उपरान्त लीप-पोत दिया जाता था। और अब तो आग सुलगा कर खाना बनाना होता था।

आज कन्हाई के मन में विवाह की लालसा उग्र हो गयी थी। उसकी खाना बनाने में रुचि नहीं हुई। वह झोंपड़े में चला गया और खाट पर लेट

दुनिया से विवाह-सुख के स्वप्न लेने लगा।

एकाएक वह उठा और शादीपुर की तरफ चल पड़ा। शादीपुर में एक 'ढाबा' था। कन्हाई वहां से बनी बनाई दाल ले आया करता था और रोटियां घर पर सेंक लिया करता था। आज वह उस ढाबे की रोटी ही खाने चल पड़ा था।

: २ :

कन्हाई ढाबे पर पहुंच ढाबे वाले से बोला, "पंडित जी! आज तो रोटी खिला दो।"

"क्यों, क्या बात है?"

"आज बनाने को चित्त नहीं किया।"

"बहुत पैसा जमा कर लिया है क्या?"

"नहीं पंडित! कुछ और बात है।"

धाबे का मालिक सीताराम होश्यारपुर पंजाब का रहने वाला था। वह कन्हाई लाल की सूरत-शक्ल और अक्ल से प्रभावित था। उसे रोज दाल ले जाते देख एक दिन उसने पूछा था, "घर पर क्यों नहीं बना लिया करते? जहां रोटी बनाते हो, दाल भी बना सकते हो।"

"नहीं पंडित!" कन्हाई का कहना था, "दाल में अधिक मेहनत करनी पड़ती है।"

सीताराम ने यह समझा था कि लड़का विचारशील है। वह वक्त का मूल्य समझता है। इस प्रकार की बातों से वह प्रभावित हुआ था। आज उसने कहा कि कुछ और बात है तो वह मुख देखता रह गया। इस समय कन्हाई ने कह दिया, "दाल, साग, चटनी, रोटी, अचार और कुछ मीठा भी बना है?"

"हां, खीर है।"

"कितने की देते हो?"

"चार आने की एक प्लेट।"

"वह भी दे दो।" कन्हाई ने कह दिया।

इससे तो पंडित को और भी विस्मय हुआ। उसने एक थाली में चार रोटी, एक प्लेट दाल, एक प्लेट सब्जी, चटनी और खीर की एक प्लेट लगा कर दे दी।

जब कन्हाई निश्चिन्त हो खाने लगा तो सीताराम ने समीप आ पूछ लिया, "कन्हाई! कहीं पड़ा धन पाया है?"

कन्हाई को हंसी सूझी। उसने एक चम्मच खीर मुख में डाल स्वाद लेते हुए कहा, "हां, यही बात है।"

इस पर सीताराम ने कन्हाई की ओर झुक कर पूछ लिया, "कितना है?"

"बहुत है। अभी गिना नहीं।"

"नोट हैं अथवा नकद है?"

"नकद है।"

"कहां रखा है?"

"अभी अपने बाप के घर है।" कन्हाई की हंसी निकल गयी।

सीताराम समझ गया। उसको पड़े धन का अर्थ समझ आ गया और वह भी हंसने लगा। हंसकर बोला, "तो यह बात है। विवाह कर रहे हो।"

कन्हाई मुस्कुराता हुआ खाना खाता रहा। वह विचार कर रहा था कि ढाई रुपये उसको मिलते हैं, पौने दो उसकी पत्नी के होंगे। अधिक से अधिक दो-सवा दो रुपये रोटी-कपड़ा पर व्यय करेगा तो दो रुपया रोज बचा लेगा और फिर उस रुपये से अपना मकान बनायेगा। परन्तु कैसे? यह वह जानता नहीं था। इस पर वह चुप-चाप खाना खा रहा था।

आज उसने भोजन का दाम बारह आने दिया। इस पर भी वह प्रसन्न था। वह उत्सुकता से दुनिया के पिता सोमू चाचा के उससे मिलने आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

अगले दिन कन्हाई काम करता हुआ स्फुर्ति अनुभव कर रहा था। वह

दूसरों से ड्योढ़ा काम कर रहा था। आज फिर सड़क पर रोड़ी बिछाई जा रही थी।

ओवरसियर गणपतराय काम देखने आया था और वह देख रहा था कि कन्हाई लाल तीन चक्कर रोड़ी ढोता है जब कि दूसरे मज़दूर दो चक्कर ही लगाते हैं। गणपत राय को विस्मय हुआ और वह ध्यान से कन्हाई को देखता रहा।

जब काम समाप्त हुआ तो गणपत राय ने उससे पूछ लिया, "छोकरे, क्या नाम है तुम्हारा ?"

"कन्हाईलाल।"

"तुम काम दूसरों से अधिक करते हो।"

"जी। मैं जानता हूं।"

"और उजरत कितनी पाते हो ?"

"ठेकेदार ढाई रुपये देता है।"

"यह तो वह सब को देता है।"

"जी।"

"तो काम उनसे अधिक क्यों करते हो ?"

"मैं कर सकता हूं। इसलिये करता हूँ।"

"पर जब मज़दूरी कम मिलती है तो काम अधिक क्यों करते हो ?"

"मैं आशा तो करता हूं कि अधिक मज़दूरी की अधिक उजरत मिले। परन्तु कम मज़दूरी के लिये मैं अपनी आदत बिगाड़ना नहीं चाहता। मैं सोचता हूं कि कभी अपना काम करूंगा तो यह आदत लाभ देगी।"

"ओह ! क्या काम करोगे अपना ?"

"मैं एक दिन ठेकेदार बनूंगा।"

"पर कैसे ?"

इसका उत्तर कन्हाई नहीं जानता था। वह परेशानी में बाबू का मुख देखता रहा गया।

गणपत राय ने कुछ विचार किया और फिर बोला, "अच्छा, हमारी बाइसिकल पकड़ो और हमारे साथ चलो। हम तुमको ठेकेदार बनने का तरीका बतायेंगे।"

: ३ :

गणपत राय एक दिन पहिले भी उससे अपने घर कुछ सामान उठवा कर ले गया था। उस दिन कन्हाई ने बाबू को अपने घर से भाग आने की कहानी बताई थी। उसने बताया था कि वह सरदारशहर के समीप एक छोटे से गांव का रहने वाला है। वहां उसके पिता की थोड़ी-सी भूमि है। उस पर बहुत कठिनाई से खाने भर का पैदा होता है। पिता के मरने पर भाई और भावज ने उसको तंग कर घर से भाग जाने पर विवश कर दिया था। उस दिन भी गणपत राय ने कन्हाई को एक मेघावी युवक समझा था। आज उसको यह ज्ञात हुआ कि यह लड़का महत्वाकांक्षी भी है। मार्ग में चलते हुए उसने पूछा, "अच्छा कन्हाईलाल! यह बताओ कि तुम ठेकेदार बनना क्यों चाहते हो?"

"मैं अपने में सामर्थ्य उत्पन्न करना चाहता हूं। मेरा अभिप्राय यह है कि मेरे अधीन दस-बीस आदमी काम करें और मैं उनको आज्ञा दिया करूं।"

"ओह···!" गणपतराय इसकी आकांक्षा का रूप सुन विस्मय में उसका मुख देखने लगा।

कन्हाई ने अपने मन की बात की और व्याख्या कर दी। उसने कहा, "जी। मैं चाहता हूं कि मैं भी एक कोठी में रहूं। मेरी स्त्री भी बढ़िया भूषण वस्त्र पहिने। मेरी लालसा है कि मेरे भी बच्चे हो और वे स्कूलों और कालेजों में पढ़े।"

गणपतराय साथ-साथ चल रहे युवक का मुख देखता रह गया। इस समय वे देवनगर में जा पहुँचे। वहाँ एक दुकानदार से गणपत राय ने कुछ सामान खरीदा था। वह सामान एक गठरी में बंधा हुआ वहां दुकान पर

रखा था। वह गठरी बाइसिकिल पर ले जाई नहीं जा सकती थी। इसी कारण गणपतराय कन्हाई को साथ लाया था। गणपतराय ने कन्हाई को वह गठरी दिखाकर कहा, "तुम मेरी कोठी तो जानते हो। यह वहां ले जाओ।" इतना कह गणपतराय बाइसिकिल पर सवार हो आगे निकल गया। कन्हाईलाल गठरी उठा पैदल पूसा रोड की तरफ चल पड़ा। गणपतराय वहां ही एक कोठी में रहता था।

मार्ग में चलता हुआ कन्हाई लाल भी विचार कर रहा था कि बाबू क्या तरीका बतायेगा ठेकेदार बनने का। उसने भी अपनी महत्वाकांक्षा बताते समय बाबू के मुख की गम्भीर मुद्रा देखी थी। इससे उसे चिन्ता लगी थी कि कहीं बाबू उससे नाराज़ न हो गया हो।

जब वह कोठी पर पहुंचा तो बाबू अपनी बाइसिकिल मोटर गेरैज में रख भीतर जा चुका था। उसने गठरी बरामदे में रख आवाज़ दे दी, "बाबू जी! सामान आ गया है।"

कोठी का नौकर भीतर से निकला और सामान उठाते हुए कन्हाई लाल से बोला, "बाबू कहते हैं, ठहरो।"

कन्हाईलाल उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगा। दस मिनट में गणपत राय बाहर आया। स्वयं वह बरामदे में रखी कुर्सी पर बैठ गया और सामने खड़े कन्हाई लाल से कहने लगा, "तो तुम ठेकेदार बनना चाहते हो? देखो ......क्या नाम बताया है अपना?"

"जी! कन्हाईलाल।"

"हां, कन्हाईलाल! तुम बड़े आदमी बन सकते हो। परन्तु इसमें दो बातें करनी होंगीं। बताओ करोगे?"

"बताइये बाबू जी! यत्न करूंगा।"

"हाँ सुनो। बिना ईश्वर की कृपा के कोई यश, कीर्त्ति और धन प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिये भगवान का स्मरण किया करो। जानते हो कैसे किया जाता है?"

"जी नल पर नहाते हुए राम-राम कर लेता हूं।"

"ठीक है। परन्तु यह काफी नहीं। नहाने के उपरान्त अपनी झुग्गी में एक साफ़-सुथरी जगह पर पलथी मार कर बैठ जाया करो, और आंखें मूंद कर पीठ और गर्दन सीधी रख कर एक मन्त्र का जप किया करो।"

"कौन-सा मन्त्र ?"

"बोलो ओं।"

कन्हाई जब यह शब्द बोला तो गणपतराय ने उससे यह पांच-छः बार दुहरवाया। जब कन्हाईलाल कह चुका तो गणपतराय ने कहा, "इसको एक सौ बार नित्य उच्चारण किया करो।"

"सौ बार ? परन्तु बाबू जी ! गिनूंगा कैसे ?"

"अच्छा मैं तुमको एक माला देता हूँ। एक बार ओं शब्द कहने पर माला का एक दाना चला लिया करो।"

"और राम-राम न कहा करूं ?"

"वह तो तुम स्नान करने के समय कहा ही करते हो। उसे तो कहा ही करो।"

"करूंगा।"

"यह हुई एक बात और दूसरी बात ज़रा कठिन है। जितना नित्य कमाते हो उससे कम व्यय करो। बचत को बैंक में जमा किया करो।"

"वह कहां है ?"

"कल दोहहर की छुट्टी में मेरे साथ चलना। जो कुछ जमा किया रखा है, वह लेते आना और मैं तुम्हारा हिसाब बैंक में खुलवा दूँगा। पर अपना नाम लिखना जानते हो अथवा नहीं ?"

"जी नहीं। अभी अंगूठा लगाकर मज़दूरी ले लेता हूं।"

"तो पहिले नाम लिखना सीखो।"

"कहां से सीखूं ?"

"ठेकेदार बनने के लिये लिखना पढ़ना तो आना ही चाहिये।"

इस पर कन्हाई बाबू का मुख देखने लगा। उसकी कठिनाई का अनुमान लगा गणपतराय ने कहा, "तुम हमारी नौकरी कर लो। मैं तुमको लिखना-पढ़ना सिखा दूंगा। बिना इसके तो तुम तरक्की नहीं कर सकते।"

"नौकरी कर लूँगा।"

"हां, मैं तुमको रोटी कपड़ा और बीस रुपये महीना वेतन दे दिया करूंगा।"

"पर बाबू, इससे तो अधिक मैं अभी भी पैदा कर लेता हूँ। खा-पहिन कर मैं तीस-चालीस बचा लेता हूँ।"

"पर पढ़ाई भी तो करोगे।"

कन्हाई तरक्की के इस मार्ग को समझ नहीं सका। वह तो यह समझा था कि इससे तो आय कम हो जायेगी, परन्तु उसने उत्तर नहीं दिया। वह देखता रहा।

गणपतराय ने कह दिया, "बस अभी दो बातें बतायी हैं। पहिले इनको करो। पीछे आगे की बात बताऊंगा। दस वर्ष में तुम ठेकेदार बन जाओगे।"

कन्हाईलाल आशा से भर उठा था। उसने पूछ लिया, "दिन में कितना समय नौकरी करनी होगी?"

"चौबीस घण्टा। तुम यहां कोठी में ही आकर रहा करोगे।"

"पर बाबू जी! मैं तो विवाह कर रहा हूं।"

"कहां?"

"यहीं दिल्ली में ही। एक मज़दूर लड़की है।"

"तो रात तुम अपने झोंपड़े में जा सकोगे।"

कन्हाईलाल अभी इस योजना पर विचार ही कर रहा था कि गणपतराय उठा और यह कह, "ठहरो। मैं तुमको एक माला देता हूं।" वह कोठी के भीतर चला गया।

कन्हाईलाल अभी भी कुछ न समझता हुआ भौचक्का हो खड़ा रह

गया। गणपतराय हाथ में एक माला लिये आया। उसने उसको माला देते हुए कहा, "यह तो 'ओं' का जप करने के लिये है और यह चार आने सामान उठा कर लाने के लिये।"

कन्हाई लाल अनिश्चित मन खड़ा था। वह निश्चय नहीं कर सका कि सामान उठाने की मज़दूरी ले अथवा नहीं। वह हाथ जोड़ मौन रूप में मज़दूरी लेने से इन्कार करने लगा। गणपतराय ने उसका हाथ पकड़ कर चवन्नी उस पर रखते हुए कहा, "यह तुम्हारा हक है और देखो, पढ़ना-लिखना सीखे बिना तरक्की नहीं हो सकेगी। तुम हमारी नौकरी कर लो।"

"बाबू जी! अपने श्वसुर से पूछ लूं।"

गणपतराय हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, "श्वसुर से या बीवी की मां से?"

कन्हाई मुस्कुराता हुआ चुप रहा। वास्तव में वह विचार करने के लिए समय चाहता था। उसने झुक कर सलाम की और लौट पड़ा।

वह श्वसुर की और विवाह की बात कह तो आया, परन्तु अब सोचने लगा कि वह बीमारी से पहिले ही दवाई की धूम मचा रहा है। इस उक्ति के मन में आने पर वह चलता-चलता हंस पड़ा। नीमो ने कहा था कि दुनिया का बाप उससे बात करेगा, परन्तु न तो वह पिछली रात ही बात करने आया और न ही दिन भर साथ-साथ काम करते हुए उसने बात करने का यत्न किया था। इससे वह मन में विचार कर रहा था कि कदाचित् सोम चाचा ने उसको अपना दामाद बनाना अस्वीकार कर दिया है।

आज फिर उसका चित्त घर पर जाकर चूल्हा सेकने को नहीं किया। वह बनिये की दुकान पर रसद लेने नहीं गया। एक तो पिछले दिन की रसद अभी बची रखी थी। दूसरे, उसका चित्त ठेकेदार बनने के उस मार्ग पर विचार कर रहा था जो बाबू ने बताया था। बाबू ने कहा था कि सड़क पर मज़दूरी करने को छोड़ उस के घर की नौकरी कर ले। वह ज्यों

ज्यों विचार करता था, उसे यह ढंग गलत प्रतीत होने लगा था। गणपतराय की नौकरी में सब से बड़ा प्रलोभन था पढ़ना-लिखना सीखने का। वह मन में विचार कर रहा था कि सड़क पर मज़दूरी करते हुए क्या वह पढ़ाई नहीं कर सकता।

इसी विचार में वह सीताराम के ढाबे पर जा पहुंचा। आज फिर उसने खाना मांगा तो सीताराम उसके मुख पर देखने लगा। कन्हाई अपने विचारों में लीन था। वह एक मेज कुर्सी पर जा बैठा। सीताराम ने थाली लगाई और उसके पास ले आया। थाली उसके सा' ने रख कर पूछ लिया, "कब हो रहा है तुम्हारा विवाह ?"

इस प्रश्न ने तो कन्हाई लाल का ध्यान भंग कर दिया। वह प्रश्न भरी दृष्टि से सीताराम का मुख देखने लगा। सीताराम ने अपना प्रश्न दोहराया तो कन्हाई को समझ आया कि उसे विवाह के विषय में कुछ कहना चाहिये। उसने कह दिया, "अभी दिन निश्चित नहीं हुआ।"

"मालूम होता है बहुत कुछ मिलने वाला है विवाह में ?"

कन्हाई को समझ आया कि सीताराम उसकी फ़ज़ूल खर्ची के विषय में कह रहा है। अतः आज फिर बना बनाया खाना लेने के विषय में अपनी सफाई दे दी। उसने कहा, "ओवरसियर बाबू के काम पर जाने से देरी हो गयी है और खाना बनाने का समय नहीं रहा।"

"तो यह बात है।"

"हां। और मैं विचार कर रहा हूं कि जो समय रोटी बनाने पर व्यय करता हूं वह मैं पढ़ने पर लगाऊं।"

"पढ़ कर क्या करोगे ?"

"बहुत धन कमाना चाहता हूं।"

"परन्तु यह तो कमाई कम करने की बात कर रहे हो।"

"कैसे ?"

"तुम्हारी सारी कमाई तो ढाबे पर रोटी खाने में ही समाप्त हो

जायेगी।"

कन्हाई यही बात तो विचार कर रहा था। वह भी यही समझा था कि गरणपतराय की नौकरी करने से तो कमाई कम हो जायेगी। इस कारण वह सीताराम को भी वही बात कहते सुन पूछने लगा, "मगर तरक्की करने का और तरीका भी तो कोई नहीं।"

"है क्यों नहीं। तुम प्रातः काम पर जाने से पहिले और सांय काम से लौटने पर मेरे ढाबे पर काम किया करो। मैं तुमको रोटी खिला दिया करूंगा।"

"और पढूंगा किस समय?"

"मैं पढ़ाऊंगा। रात काम बन्द कर देने के पीछे।"

"ढाबे पर क्या काम करना होगा?"

"मेज कुर्सी की सफाई, दो वक्त बुहारी और रात को बर्तन साफ करने।"

कन्हाई को यह बात भी पसन्द नहीं आयी। वह समझता था कि वह रात दस बजे तक काम करता-करता इतना थक जाया करेगा कि उससे पढ़ाई हो नहीं सकेगी। इस पर भी उसने कह दिया, "अच्छा अपने श्वसुर से राय कर बताऊंगा।"

कन्हाई ने फिर श्वसुर का नाम ले लिया, परन्तु वह मन में विचार कर भीतर ही भीतर हंस रहा था कि श्वसुर है कहां?"

सीताराम कन्हाई के उत्तर से मुस्कुराया और बोला, "हां, श्वसुर से बात करनी चाहिये। आखिर उसकी लड़की के लिये ही तो यह मेहनत मजूरी होगी।"

: ४ :

कन्हाईलाल इस रात भी सोमू चाचा की प्रतीक्षा करता रहा, पर वह नहीं आया। अब तो वह निराश हो गया। पिछली रात और उस दिन वह काम करता हुआ मन में दुनिया से विवाह के सुख-स्वप्नों के चित्र

खींचता रहा था। ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता जाता था, उसे सोमू चाचा से अस्वीकार किये जाने का विश्वास होता जाता था। बहुत रात गये उसे नींद आयी। इस पर भी वह स्वभाववश सूर्योदय से बहुत पहले जागा। शौच स्नान कर वह अपनी कुटिया में आया तो उसे गणपतराय से दी गयी माला की याद आयी। वह अपने कुर्ते की जेब से माला निकाल, भूमि पर चटाई बिछा पलथी मार बैठ गया और आंखें मूंद वह 'ओं' का जप करने लगा। ज्यूँ त्यूं कर उसने एक सौ आठ बार 'ओं' का जप समाप्त किया। उसका ध्यान तो रह-रह कर सोमू चाचा की ओर जा रहा था। मुख से 'ओं' कह रहा था परन्तु मन में वह विचार कर रहा था कि वह आज नीमो से ही पूछ ले कि सोमू उससे बात करने क्यों नहीं आया?

जप समाप्त हुआ तो उसने आखें खोल दीं। सामने सोमू चाचा को बैठे देख वह चकित रह गया। वह समझा कि यह उसके जप का प्रभाव है जो उसकी मनोकामना पूरी होने जा रही है।

सोमू ने कन्हाई को आखें खोलते देख मुस्करा कर कहा, "कन्हाई! तुम तो पंडित हो गये हो?"

कन्हाई मुस्कुराया और चुप कर रहा। सोमू कन्हाई को पूजा करते देख प्रसन्न ही हुआ था। अब उसने अपने मन की बात कह दी, "कन्हाई, तो तुम विवाह करोगे?"

कन्हाई के मन से अनायास ही निकल गया, "चाचा! टुनिया से।"

"कब करोगे?"

"जब तुम कहो।"

"तब ठीक है। मैं कल ब्राह्मण से पूछ रहा था। उसने बताया है कि विवाह का मुहूर्त अगले मास बनता है। उसने कार्तिक की पूर्णिमा का दिन बताया है। अभी बीस दिन बीच में हैं।"

कन्हाई के उत्तर देने के लिए कुछ बात नहीं थी। सोमू ने कह दिया, "तो ठीक है न? अच्छा यह देखो। टुनिया के लिए कुछ भूषण और कपड़े

बनवा लो। विवाह के समय पहिनने के लिए अपने भी नए कपड़े ठीक रहेंगे।"

"चाचा।" आखिर कन्हाई ने जबान खोली, "चाची को कहो कि मुझसे रुपए ले कर टुनिया को साथ लेकर बाजार से जो कुछ आवश्यकता हो खरीद लाए। मेरी भी तो वह चाची है।"

सोमू ने इतनी बात और कही, "बेटा! टुनिया बहुत समझदार लड़की है। तुमने उसे पीटने की बात कही है। मैं समझता हूं कि ऐसा अवसर नहीं आयगा। यदि कभी आया तो पीटने से पहिले मुझे बताना। मैं उसे समझा दिया करूंगा, पीटने की नौबत नहीं आएगी।"

कन्हाई हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कह दिया, "चाचा! वह तो चाची से हंसी कर रहा था।"

"तब ठीक है। मैंने तो यह समझा था कि तुमने टुनिया में कोई खराबी देख कर कहा है।"

"नहीं चाचा! मैं उससे बहुत प्यार करूंगा।"

सोमू खिलखिला कर हंस पड़ा। वह उठा और यह कह, "अच्छा तुम्हारी चाची को भेजूंगा।" वह चला गया।

उस दिन काम समाप्त होने के समय फिर गणपतराय काम पर आया और वह ठेकेदार रामदयाल से कन्हाई के विषय में ही बातें करता रहा।

रामदयाल ने जब यह सुना कि ओवरसियर कन्हाईलाल को अपने पास नौकरी देने की बात कर रहा है तो उसने कह दिया, "बाबू, मैं तो उसका काम देख उसकी तरक्की करने वाला हूं।"

"सच? क्या देना चाहोगे?"

"इस सप्ताह से उसकी उजरत तीन रुपये कर रखी है।"

"परन्तु उसने बताया नहीं?"

"मैंने उसे बताया नहीं। कल शनिवार को जब मजदूरी बांटूगा तो तो एकदम साढ़े तीन रुपये अधिक ले कर उसका चित्त बहुत प्रसन्न होगा।"

गणपतराय चुप रहा। एक बात वह समझ रहा था कि इस लड़के ने अपनी मेहनत से ठेकेदार के मन पर भी प्रभाव डाला है। उसको संदेह होने लगा था कि इस अवस्था में कन्हाई लाल उसकी नौकरी स्वीकार नहीं करेगा।

वह इस लड़के की उन्नति के विषय में विचार करता हुआ मौन रहा। जब काम समाप्त हो गया तो कन्हाईलाल के पास पहुँच पूछने लगा, "तो तुमने क्या फैसला किया है ? तुम्हारा श्वसुर क्या कहता है ?"

कन्हाईलाल ने बात टालने के लिए कह दिया, "मैं आपके घर आ कर बताना चाहता हूं। यहां नहीं।"

गणपतराय को यह समझ आया कि इसे अभी अपनी मजदूरी में वृद्धि का ज्ञान नहीं और वह नौकरी स्वीकार करने वाला है। कदाचित् वह दस-पांच रुपए वेतन में वृद्धि मांगेगा। वह विचार करने लगा था कि किस सीमा तक वह वेतन में वृद्धि दे सकता है। उसने कह दिया, "तो कब आओगे ?"

"यदि आप सीधा वहां जा रहे हो तो मैं काम बन्द होते ही वहां आ जाऊंगा।"

"ठीक है। आ जाओ।"

गणपतराय तो अपनी बाइसिकिल पर सवार हो चल दिया और कन्हाईलाल पूसा रोड की ओर पैदल ही चल पड़ा। मार्ग में चलते-चलते वह विचार करता जा रहा था कि किस प्रकार नौकरी करने से इन्कार करे। वह बाबू को नाराज़ करना नहीं चाहता था।

जहां तक पढ़ने का प्रश्न था, वह सीताराम से बातचीत करना चाहता था। वह सोचता था कि सवेरे वह पढ़ा करेगा और केवल सायंकाल ढाबे पर काम किया करेगा। उसका विचार था कि सीताराम मान जायगा। दोनों समय काम करना वह मंहगा सौदा समझा था और यह आशा करता था कि वह सीताराम को समझा सकेगा।

परन्तु इस समय तो वह यह विचार कर रहा था कि बाबू गणपतराय के प्रस्ताव को किस प्रकार अस्वीकार करे कि वह नाराज न हो।

इन्हीं विचारों में वह पूसा रोड वाली कोठी पर जा पहुंचा। वहां गणपतराय अपनी पत्नी सरस्वती के साथ बरामदे में बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। गणपतराय नौकरी की शर्तें अपनी पत्नी के सामने ही निश्चय करना चाहता था।

कन्हाईलाल ने सलाम की और जा सामने खड़ा हुआ।

"हां, तो बताओ। क्या बताना चाहते हो?" गणपतराय ने पूछ लिया।

"बाबू जी! नाराज़ न हो तो कहूं?"

"हां-हां! कहो।"

"मेरा विवाह होने वाला है। दिन बार निश्चय हो चुका है। मैं चाहता हूं कि मेरी पत्नी मज़दूरी का काम न करे। इसके लिए मुझे अधिक से अधिक मेहनत करनी चाहिए और उस मेहनत की अधिक से अधिक उजरत प्राप्त करनी चाहिए। आपकी नौकरी में तो मेरी आय कम हो जायगी। मेहनत तो कम पड़ेगी, परन्तु मैं मेहनत से नहीं डरता।"

"परन्तु पढ़ाई का अवसर भी तो मिल रहा है। उसके बिना तुम्हारी अभिलाषा पूरी कैसे होगी?"

"उसके लिए मैं दिन भर सड़क पर काम करने के बाद कहीं काम करूंगा और उससे पढ़ाई करना चाहता हूं।"

"ऐसा काम कहां और किस प्रकार का मिल सकेगा?"

"शादीपुर में एक ढाबे वाला पंडित सीताराम है। वहां उसके बर्तन साफ कर दूंगा और वह पढ़ा देगा।"

गणपतराय को समझ आया कि वह ढाबे वाला इस होनहार युवक का जीवन बरबाद कर देगा। उसने अपने मन में उठी बात कह दी, "और वह कितना पढ़ा है?"

"यह तो मैं नहीं जानता और जान सकता भी नहीं।"

"मैं जानता हूं। वह मुझसे अधिक पढ़ा नहीं हो सकता।"

"तो मैं आपका काम सायंकाल कर दिया करूंगा। आप पढ़ा दिया करें। मैं जीवन भर आपका गुलाम बना रहूंगा।"

गणपतराय इस अनपढ़ युवक के विचार करने के ढंग को देख अति प्रभावित हुआ। वह समझता था कि यह ठीक कह रहा है कि अपने नियमित काम के अतिरिक्त काम कर वह अपनी उन्नति करना चाहता है। गणपतराय ने इसकी विचार शक्ति की और परीक्षा करनें के लिए कह दिया, "देखो कन्हाई! ठेकेदार और पैसे वाला बनने के लिए बहुत कुछ जानने और सीखने की आवश्यकता है। उसके लिए वह ढाबे वाला उचित उस्ताद नहीं हो सकता। साथ मेहनत भी अधिक करनी पड़ेगी।"

"मेहनत मैं कर लूंगा। मैंने अपनी परीक्षा की है। लगातार चौबीस घंटे काम करके देख चुका हूं। इतना काम करने पर दो घंटे सोकर मैं फिर काम करने की सामर्थ्य रखता हूं।"

"अच्छी बात है। परीक्षा कर के देखो। प्रश्न तो यह है कि दिन भर की मेहनत-मजदूरी के उपरान्त दिमागी काम भी कर सकोगे क्या?"

"मुझको विश्वास है कि कर सकूंगा।"

"तो तुम ठेकेदार का काम कर नित्य यहां आ जाया करो।"

"तो आप मुझे पढ़ाएगे?"

"हां। यही तो कह रहा हूं।"

कन्हाई झुककर बाबू के चरण स्पर्श कर बोला, "मैं आज से आपको अपना गुरु मानता हूं।"

"गुरु?" गणपतराय ने गम्भीर हो कहा, "बहुत कठिन बात कह रहे हो? कन्हाई सोच लो।"

"सोच लिया है बाबू जी! जीवन भर आपके चरण धो-धो पीयूंगा। आप आधा घण्टा पढ़ाकर रात के दस बजे तक काम ले लिया करें।"

"और दस बजे के बाद क्या करोगे ?" सरस्वती ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

कन्हाई ने आंखें नीची किए हुए और लज्जा से लाल होते हुए कह दिया "बबुआइन ! मैं ब्याह कर रहा हूं।"

इस पर बाबू और बबुआइन दोनों हंस पड़े। सरस्वती को कन्हाई की एक बात स्मरण आ गई। उसने पूछा, "और पत्नी दिन भर क्या किया करेगी ?"

"वह मेरे घर को सुन्दर बनायेगी। मेरे बच्चों का पालन-पोषण करेगी। उनको साफ-सुथरा रखेगी।"

"इस पर तो बहुत खर्चा होगा।" सरस्वती का कहना था।

"आप की कृपा से मैं इस सबके लिए पैदा करूंगा।"

"ठीक है।" गणपतराय ने कहा, "तुम कल से साढ़े पांच बजे आ जाया करो। मैं तुमको पढ़ाया करूंगा। जिस दिन मुझको अवकाश नहीं होगा, उस दिन बबुआइन तुमको पढ़ा दिया करेंगी। हम तुमसे काम नहीं लेगें। जिससे तुम अपनी बीवी की संगत से वंचित न हो जाओ।"

"तो मैं आपकी सेवा किस समय किया करूंगा ?"

"जब तुमने मुझे गुरु वर लिया है तो फिर गुरु बनने का दाम नहीं लूँगा।"

इस पर तो कन्हाईलाल गम्भीर विचार में पड़ गया। फिर कुछ विचार कर बोला, "आप ठीक कहते हैं। गुरु जी की सेवा नाप तोल कर नहीं की जाती। मैं स्वयं सेवा का कार्य ढूंढ लूंगा।"

कन्हाईलाल विचार करता था कि वह स्वयं देखेगा कि क्या काम वह कर सकता है और वह उसको कुशलता पूर्वक करने का यत्न कर दिया करेगा।

"तो ठीक है। तुम कल आ जाना। मैं तुम्हारे लिए किताव, कलम, दावात मगवा रखूंगा।"

कन्हाईलाल ने पुनः गणपतराय के और फिर सरस्वती के चरण स्पर्श किए और हाथ जोड़कर नमस्कार करने लगा। सरस्वती ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया, "पर तुमने मेरे चरण स्पर्श क्यों किये?"

"आप माता बन गई है। मां की कृपा से ही तो सफलता मिलती है।"

अगले दिन से कन्हाई पढ़ने लगा। पढ़ाई के उपरान्त वह घर के छोटे छोटे कामों में हाथ बंटाने लगा। एक दो बार सरस्वती ने कहा भी, "रहने दो।"

"तो बता दीजिए। किस प्रकार यह किया जाता है?" वह उनके चाय के बर्तन धोने के लिए ले जा रहा था।

"इनके टूट जाने का डर है। इसके लिए गुसलखाने में टब रखा है। उसमें साबुन घुला रहता है और वहां बर्तन पोंछने का तौलिया भी रखा है।"

उस दिन के उपरान्त वह चाय के और फिर रात के बर्तन भी साफ करने लगा था। रात नौ बजे तक रात का खाना समाप्त हो जाता था। आधे घण्टे में कन्हाईलाल बर्तन साफ कर पोंछ कर आलमारी में सजा कर जाने को तैयार हो जाता था।

गणपतराय अपने पिता की कोठी में रहता था। उसका पिता रणपतराय कनाट प्लेस में दुकानदारी करता था। रणपतराय लाहौर का रहने वाला था और सन् १९३७ में नई दिल्ली में दुकान लेकर यहां आ गया था। उस समय गणपतराय अभी स्कूल में पड़ता था। गणपतराय का बड़ा भाई लखपतराय अपने पिता के साथ दुकान पर काम करता था। उसका विवाह हो चुका था और उसके दो बच्चे भी थे। गणपतराय ने एफ० एस० सी० की और फिर रुड़की में ओवरसियर की शिक्षा ग्रहण करने चला गया। वहां से परीक्षा पास कर वह सन् १९४५ में दिल्ली आया और यहां केन्द्रीय सरकार के निर्माण विभाग में उसे नौकरी मिल गई।

अब सन् १९४८ था और गणपतराय अभी तक अपने पिता और भाई के साथ ही रहता था। इस समय तक गणपतराय का भी विवाह हो चुका

था। और उसके घर में दो बच्चे भी हो चुके थे। लखपतराय के पांच बच्चे थे। गणपतराय की माता थी और गणपतराय की बहिनें तथा उनके बच्चे भी आते रहते थे। इस प्रकार एक बहुत बड़ा परिवार था और काम भी बहुत ज्यादा रहता था। इस कारण जब कन्हाई काम करने लगा तो सब को सुख अनुभव होने लगा था।

: ५ :

कन्हाई के विवाह का दिन आया तो कन्हाई ने दो दिन से काम की छुट्टी कर दी। उसने गणपतराय के घर से भी छुट्टी मांग ली थी।

सायं सात बजे विवाह हुआ। पुरोहित ने कुछ संस्कृत में पढ़ा और फिर वर-वधू का गठबन्धन करा दिया। तत्पश्चात् उसने कन्हाई को सम्बोधन कर कह दिया, "देखो कन्हाई! भगवान् को साक्षी मान तुमने इसे अपनी पत्नी बनाया है। अब मरणपर्यन्त तुम इसे अपने सब कुछ आधे की भागीदार मानोगे। और इसके सुख-सुविधा का प्रबन्ध करोगे।

"और चन्द्रकला! भगवान् ने तुमको यह पति दिया है। इसको भगवान् का रूप मान इसकी आज्ञा का पालन करना। सदा इसको प्रसन्न करने का यत्न करना और किसी पर-पुरुष से सम्बन्ध नहीं बनाना।

"और दोनों मिलकर बच्चे पैदा करो तथा धर्म-कर्म करते रहो।"

इस प्रकार विवाह सम्पन्न हुआ तो बस्ती के सब लोगों ने और अन्य जो वहां एकत्रित हो रहे थे, बधाइयां दीं। पंडित की दान-दक्षिणा को दे विदा किया गया तो बस्ती वालों का भोज आरम्भ हुआ। सब बिछी दरी पर बैठ गये। दुनियां अपनी सहेलियों में बैठी थी और कन्हाई अपने श्वसुर सोमू चाचा के पास। खाने के लिए पूरी, मिठाई, साग-भाजी, चटनी-अचार था। झुग्गी बस्ती के लोग इसके अतिरिक्त कुछ और की आशा करते थे। सब उसकी प्रतीक्षा में एक-दूसरे का मुख देख रहे थे। सब में एक भगौड़ी नाम का व्यक्ति था। वह उस झुग्गी बस्ती में चौधरी माना जाता था। उसने सब के मन की बात कह दी। उसने कहा, "सोमू! दारु नहीं

मंगवाया ?"

"भाई नहीं। कन्हाई ने मना कर दिया था।"

"क्यों बे कन्हाई ! फोकट में ही विवाह कर रहे हो ?"

"नहीं दादा ! चाचा खाना तो दे ही रहा है। मिठाई है, पूरी, साग चटनी-अचार फिर सिगरेट बीड़ी भी है। मैं शराब पीता नहीं और मैं पिलाता नहीं।"

"उस दिन ओवरसियर बाबू कह रहे थे कि शराब का चलन तो बहुत ही धनी लोगों में है। उनके पास हराम की कमाई होती है। दादा ! हमारी कमाई तो खून-पसीना एक करने पर होती है। वैसे शराब का चलन उन लोगों में भी है जो होते तो निर्धन हैं, परन्तु संसार को भूलने के लिये पीते हैं। वे कम बुद्धि के लोग होते हैं। दादा ! हम तो अक्ल रखते हैं। हम मूर्ख नहीं हैं।"

"शादी का मजा नहीं आयेगा।"

"मुझे तो उस दिन से ही मज़ा आ रहा है जब से चाचा ने विवाह करना स्वीकार किया है।"

इस पर सब हंसने लगे। भगौड़ी ने अब सोमू से पूछ लिया, "क्यों चाचा ! विवाह से पहले ही लड़की दे दी थी। इस अधर्म का तो प्रायश्चित्त करना होगा।"

"ऐसी कोई बात नहीं है भगौड़ी।" सोमू ने कह दिया। "कन्हाई के कहने का मतलब कुछ और है।"

"क्या मतलब है ?"

"मतलब तो वह ही बतायेगा। मुझको उसने बताया है और मैं समझ गया हूं।"

"क्यों कन्हाई ! क्या मतलब है तुम्हारा? बीवी पाने से पहले ही मज़ा लेने लगे हो ?"

कन्हाई ने अपने मन की बात धीरे-धीरे समझा कर कह दी, "मेरा

चित्त उस दिन से ही एक खास उमंग से भर रहा है। मैं अपने जीवन में एक विशेष बात करना चाहता हूं और विवाह से मेरे मन की बात पूरी हो रही प्रतीत होती है। इस कारण मैं प्रसन्न हूं। इस उमंग में मैं दुगुना तो काम करने लगा हूं और जीवन में रस आने लगा है।"

'क्या रस आने लगा है ?"

"जब कोई बहुत अच्छी वस्तु पाने की इच्छा हो और वह वस्तु मिलती प्रतीत होने लगे तो मन नाचने लगता है। वही मेरी अवस्था है।"

इस पर तो भगौड़ी ठहाका मार कर हंसने लगा। उसने कह दिया, "तो यह दुनिया तुमको स्वर्ग की अप्सरा प्रतीत हो रही है और इसके बीवी बनाने की आशा में ही आनन्द लूटने लगे हो।"

"भैया ! मैंने आज तक तो कोई अप्सरा देखी नहीं। इस कारण कह नहीं सकता कि चाची की बेटी अप्सरा है या कुछ और है। हां, एक बात निश्चय है कि यह मुझको प्रिय होगी। मेरे बच्चों की मां होगी और फिर मेरी घरवाली होगी।"

इस प्रकार की कल्पना से तो भगौड़ी चुप कर गया। उसने विवाह को कभी इस दृष्टि से देखा ही नहीं था। कन्हाई ने अपनी बात को और स्पष्ट करने के लिए कह दिया, "भैया ! मैं देखता हूं कि बड़े आदमियों के बच्चे सुन्दर, विद्वान और यश तथा कीर्ति के भागी होते हैं। मैं भी वैसे ही बच्चों की आशा करता हूं। इससे आनन्द विभोर हो रहा हूं।"

भगौड़ी ने कह दिया, "अबे कन्हाई, तू बहक गया है। असल बात यह है कि तू हमको ठग रहा है। और तू इस माया रूपी संसार में भटकते हुए दुःखी होगा। तथा जन्म-जन्मान्तर तक भटकता रहेगा।"

इस पर सोमू ने पूछ लिया, "और दारु पीने से यह भटकना नहीं रहेगा क्या ?"

"नहीं चाचा ! यह भटकना छूट तो नहीं सकता। इस पर भी कुछ काल लिए संसार के दुःख क्लेश तो छूट ही जाते हैं।"

सोमू ने मिठाई खाते हुए कहा, "नहीं दादा ! यह दुःख दर्द छूटते नहीं। थोड़े काल के लिए भी नहीं छूटते। केवल मदहोश व्यक्ति उनको महसूस नहीं करता। जब उसे होश आता है तो वे और भी अधिक तीव्रता से कष्ट देने लगते हैं।"

भगौड़ी को श्वसुर और दामाद दोनों मूर्ख प्रतीत हो रहे थे। इस पर भी उसने कह दिया, "देखो चाचा ! तुम और कन्हाई बड़े मतलबी हो। अपने रुपये बचाने के लिये ये सब बातें बना रहे हो। जब मेरा विवाह सुखिया से हुआ था तो तीन दिन तक सारे गांव को न्योता दिया गया था और दारु के मटके खाली हो गये थे। बाबा ने इतना खर्च किया था कि बाबा के मरने के बाद भी बाबू ऋण चुकाता रहा था।"

सोमू और कन्हाई इस बात को सुन और भी प्रसन्न हुए थे। वे समझ रहे थे कि वे ऋण में नहीं डूबे और उनके बच्चों को ऋण चुकाने का कष्ट नहीं करना पड़ेगा। वे दोनों चुप रहे।

दावत रात के बारह बजे तक चलती रही। सिगरेट और हुक्का ही चल सका। बिना दारु पिये ही दावत समाप्त हो गयी।

इसके अगले दिन कन्हाई और दुनिया स्नान इत्यादि से निवृत्त हो अपने झोपड़े में चटाई पर बैठे रात की दावत से बची पूरी मिठाई खा रहे थे। आज भी उन्होंने काम से छुट्टी की हुई थी। दोनों खाते हुए अपने-अपने मन में बिवाहित जीवन की प्रथम रात के अनुभव पर विचार कर रहे थे। एकाएक कन्हाई ने पूछ लिया, "बताओ दुनिया, प्रसन्न हो ?"

दुनिया का सतर्क उत्तर था, "अपने मन से पूछ लो। तुम खुश हो तो मैं भी खुश हूं।"

"अब मुझसे लड़ोगी तो नहीं ?"

"यह हमारे कुल की रीति नहीं। मां बाबा से कभी नहीं लड़तीं। मां ने यह बताया भी है कि झगड़ा करूंगी तो पीटी भी जा सकती हूं।"

कन्हाई हंस पड़ा। उसने कह दिया, "वह तो चाची से हंसी की थी।"

"और मन में क्या विचार था ?"

"यही कि यदि तुम भी मेरा साथ दोगी तो बच्चे, मकान और फिर गाड़ी घोड़ा सब बन जायेगा।"

"कैसे साथ दूं ?"

"हम मेहनत से काम करेंगे और आमदनी से खर्चा कम रखकर जीवन चलायेंगे तो मन की इच्छा पूर्ण कर सकेंगे। इस पर भी किस सीमा तक आशा पूर्ण होगी ? यह भाग्य और भगवान के अधीन है। उनकी कृपा होगी तो सब कामनाएं पूर्ण हो सकेंगी।"

"ईश्वर की कृपा कैसे होगी ?"

"पूजा पाठ से।"

"तो अब आप पूजा भी किया करेंगे ?"

"वह तो पहिले भी करता था। रोज स्नान करते-करते 'राम-राम' कह लेता था। परन्तु अब ओवरसियर बाबू ने माला लेकर 'ओं' का जप करने के लिये कहा है। साथ ही यह भी कहा है कि ईमानदारी से काम करने पर उस परिश्रम का पूर्ण मूल्य प्राप्त करने का यत्न करना चाहिए।"

"यह कैसे होगा ?"

"दिन भर की मज़दूरी का अधिक से अधिक मूल्य प्राप्त कर। ठेकेदार ने मेरी तीन रुपये मजदूरी कर दी है और मैं इससे भी अधिक पैदा करने के लिए यत्न कर रहा हूं।"

"कैसे यत्न कर रहे हो ?"

"ओवरसियर बाबू मुझको पढ़ाते हैं। मैंने बाल बोध समाप्त कर लिया है। गणित में सौ तक गिन सकता हूं। बाबू कहते थे कि यह तो आरम्भ ही है। वे मुझको इससे बहुत अधिक सिखायेंगे।"

"मुफ्त में ?"

"हां। वह तो पढ़ाने का कुछ मूल्य नहीं मांगते, पर मैं उनको गुरु मानता हूं जब भी अवसर मिलता है उनकी सेवा किया करता हूं। मैं उनके

बर्तन साफ कर देता हूँ और उनकी बैठक झाड़-पोंछ देता हूं।

"परसों मैंने कहा था कि मैं दो दिन पढ़ने नहीं आ सकूंगा। मेरा विवाह हो रहा है। इस पर बबुआइन ने कहा है कि विवाह के बाद मैं तुमको लेकर उनके घर जाऊं।"

इस पर तो टुनिया पति का मुख देखती रह गई। कन्हाई ने उसे चुप देख पूछ लिया, "क्यों ? क्या सोच रही हो ?"

"तो मैं चलूं ?"

"अभी नहीं। आज शाम चार बजे बुलाया है।"

"मुझे डर लगता है।"

"किसलिये डर लगता है ?"

"वे बड़े आदमी हैं। हम उनकी जात बिरादरी के नहीं हैं।"

"तो फिर क्या हुआ ? वे तो मुझसे स्नेह रखते हैं। वे मुझ को पढ़ाई के अतिरिक्त भी बहुत सी बातें बताया करते हैं। उन्होंने मुझे रुपया डाकखाने में जमा करने का तरीका बताया है और फिर रुपया जमा करने के लाभ बताये हैं।"

"देख लीजिये।"

"मैं तो कहूंगा चलना चाहिये। बबुआइन भी बहुत अच्छी हैं। जब मैं काम समाप्त करता हूं तो मुझको प्रायः वहीं खा लेने के लिये बैठा लेती हैं और घर में जो कुछ सब के लिये बना होता है वही खिलाती हैं।

"जरा उनका घर देखोगी तो समझोगी कि कैसा घर और कैसे बच्चे बनाना चाहता हूं। उनके दो बच्चे हैं और बहुत ही अच्छे लगते हैं।"

टुनियां हंस पड़ी। इस समय उसके माता-पिता और भाई आ गये। सो औरम मोहन तो कन्हाई के पास बैठ बातें करने लगे और नीमो अपनी लड़की से हाल-चाल पूछने लगी।

: ६ :

ओवरसियर और इंजीनियर के काम में लेने-देने की बात खूब चलती

है। परन्तु गणपतराय इस काम से बचता रहता था। उसके अधीन ठेकेदार थे और उसके ऊपर अफसर थे। बहुत सा अनियमित धन उसके हाथ में से निकलता था। बिना लिये वह ऊपर पहुंचा नहीं सकता था। डेढ़ सौ रुपये महीने का बाबू अपने वेतन से सब-डिविजनल अफसर और फिर चीफ इंजीनियर को प्रसन्न नहीं रख सकता था। इस अर्थ उसे ठेकेदारों से लेना पड़ता था।

वह ईश्वर से डरता था परन्तु इस रुपये के चलन के बिना तो उसका काम पर टिका रहना भी सम्भव नहीं था। इस कारण उसने अपने मन की भावना और अपनी नौकरी की मांग में समन्वय बना रखा था। वह जो कुछ ठेकेदारों से लेता था सब का सब ऊपर पहुँचा देता था और इस पाप से अपने हाथ बचाये रखता था।

इससे उसके चित्त को शान्ति नहीं मिलती थी, इस पर भी काम चल रहा था। जब कन्हाई उससे पढ़ने आने लगा तो वह उसको संसार में चलने का ढंग बताया करता था। इस बताने में वह अपने व्यवहार पर भी अवलोकन किया करता था। इससे वह कन्हाईलाल जैसे तीव्र बुद्धि रखने वाले शिष्य को अनुभव की बातें बताने में रस अनुभव किया करता था।

एक दिन कन्हाई ने कहा था कि वह अपनी पत्नी को सड़क पर मज़दूरी नहीं करने देगा। इस पर उसने पूछा था, "क्यों ?"

कन्हाई का कहना था, "वह स्त्री है और स्त्री का काम घर में है, बाज़ार में नहीं।"

"यह किसने बताया है तुमको ?"

"मैं देखता हूँ। सब भले घरों की औरतें घर का काम करती है। यदि यह ठीक न होता तो यह प्रथा चलती ही नहीं।"

गणपतराय कन्हाई को इस प्रकार युक्ति करते देख चकित रह जाता था। अब सरस्वती ने कन्हाई को कहा था कि विवाह के अगले दिन वह अपनी पत्नी को लेकर उनके घर आये तो गणपतराय देखना चाहता था

कि क्या वह लड़की कन्हाई की महत्वाकांक्षा में उसका सहयोग दे सकेगी। उस दिन कन्हाई नियत समय पर अपनी पत्नी को लेकर आया।

सरस्वती की जेठानी और उसके बच्चे भी घर पर थे। सरस्वती ने सब को बता रखा था कि उनके घर पढ़ने और काम करने के लिये आने वाले कन्हाई की नव-विवाहिता पत्नी आने वाली है। घर में ऐसे अवसर आते रहते थे, परन्तु यह विशेष बात थी। कन्हाई समाज में उनके स्तर का व्यक्ति नहीं था। न ही वह उनके प्रान्त तथा बिरादरी का था। राजस्थान के देहात की लड़की को वहां और अपने समाज के पहिरावे में देखने की लालसा सब में थी।

लखपतराय की पत्नी सुदर्शना और उसके पांच बच्चे चार बजे ही घर पर आ गये थे। वे इस नवीन प्राणी को देखने आये थे। गणपतराय भी नित्य से पहले ही आ गया था और जब कन्हाई तथा दुनिया साढ़े चार बजे वहां पहुँचे तो पूर्ण परिवार कोठी के ड्राइंग रूम में बैठा था।

कन्हाई ने आते ही सब से पहले बबुआईन के चरण स्पर्श किये और फिर बाबू गणपतराय के। दुनिया अपने पति का अनुकरण कर रही थी। जब सब से पाय लागूं हो चुकी तो बच्चे दुनिया को घेर कर बैठ गये। उसने छोटा सा घूंघट निकाला हुआ था।

दुनिया ने विवाह वाले कपड़े पहिने थे और पांव हाथ और नाक कान में चांदी के भूषण पहिने थे। ये उसकी मां ने बनवा दिये थे। लाल छपी हुई ओढ़नी, बूंदी दार चोली और पिंडलियों तक लहंगा। मोटे चमड़े का नया जूता था।

सरस्वती ने कन्हाई से पूछ लिया, "कैसी लगी है बहू ?"

"मां जी ! इसे तो वर्षों से देख रहा था। हमारे ही गोल में थी यह। इसका भाई और माता-पिता भी साथ ही काम करते हैं। पहिले भी यह अच्छी लगती थी। परन्तु जब से इसकी मां ने कहा है कि यह मेरी पत्नी बन सकती है तब से तो बहुत ही भली लगने लगी है।"

"और अब ?" गणपतराय ने सब बातों का सूत्र अपने हाथों में लेते हुए पूछ लिया।

"मैं अपने पर भगवान् की कृपा ही समझा हूँ।"

"ओह ! तो तुम बहुत प्रसन्न हो ?"

"जी।"

दूसरी ओर बच्चे और गणपतराय की भावज दुनिया से बातें करने लगे थे। गणपतराय की लड़की सुमित्रा ने दुनिया के हाथ को पकड़ कर कह दिया, "तुम तो सुन्दर लग रही हो।"

सुमित्रा पांच वर्ष की लड़की थी। इस समय दूसरी श्रेणी में पढ़ती थी। जब उसकी ताई ने दुनिया को अपने समीप बैठाया था तो सुमित्रा ने घुंघट में से उसके मुख को देखकर उक्त बात कही थी।

दुनिया इस प्रशंसा को सुन प्रसन्न हुई थी। वह मुस्कुराकर सुमित्रा के मुख पर देखती हुई पूछने लगी, "कितनी सुन्दर हूं ?"

"कितनी ?" अब सुमित्रा अपने कथन का मन में विश्लेषण करने लगी थी। उसने कुछ सोच कर कहा, "हमारी रामायण में बिवाह के समय जैसी सीता बनी है। वैसी।"

सुमित्रा के ताई की लड़की मधुरानी बोल उठी, "गलत। यह सत्य नहीं।"

"इसमें क्या झूठ है ?"

मधुरानी सुदर्शनकौर की तीसरी सन्तान थी और सुमित्रा की सम-वयस्क थी। दोनों में सदा प्रतिस्पर्धा चला करती थी। जब मधु ने कहा कि सुमित्रा गलत कहती है तो दुनिया का मुख उतर गया था। वह समझ रही थी कि इस लड़की ने उसे सुन्दर नहीं समझा। सुदर्शना ने यह देखा तो ताड़ना के भाव में अपनी लड़की से पूछ लिया था, "क्या झूठ है इसमें ?" उसे, नववधू को मधु का कहा बुरा लगा प्रतीत हुआ था।

परन्तु मधुरानी इस प्रकार अपने को गलत कहा जाता सुन बोल

उठी, "मम्मी ! सुमित्रा की बात झूठ तो नहीं, परन्तु गलत है। बहू सीता की भांति सुन्दर नहीं। यह कृष्ण की राधा प्रतीत होती है।"

सुदर्शना इस भेद को सुन हंस पड़ी। बच्चे भी हंसने लगे। दूसरी ओर सरस्वती ने सबको हंसते देख पूछ लिया, "क्या बात है सुमित्रा ?"

उत्तर सुदर्शना ने दिया, "सदा की भांति इन दोनों लड़कियों की बहस चल पड़ी है। सुमित्रा कहती है कि बहू सीता की भांति सुन्दर है और मधु कहती है कि यह राधा की तरह सुन्दर है। इस भेद पर मैं हंस पड़ी थी।"

इस पर तो सरस्वती और गणपतराय भी हंसने लगे। वे भी उठ कर बच्चों के पास आ बैठे। सरस्वती ने मधु से ही पूछ लिया, "मधु बेटी ! राधा की कौन सी बात तुमने इसमें देखी है ?"

"इसका लहंगा, इसकी चोली, इसके नाक की नथ।"

"ओह !" अब सरस्वती ने सुमित्रा से पूछ लिया, "और तुमने कौन सी सीता की बात इसमें देखी है ?"

"इसका लम्बा गोल मुख। मस्तक पर बिन्दी और मांग में सिन्दूर।"

गणपतराय ने अपना निर्णय दे दिया, "मधु ठीक कहती है।"

"वाह पिता जी ! मैं अभी अपनी रामायण लाकर दिखाती हूँ।"

"और मैं भी राधा-कृष्ण की मूर्ति लाती हूँ। उस दिन मम्मी बाजार से मोल लायी थीं।"

सरस्वती अभी कुछ कहने ही लगी थी कि दोनों लड़कियां उठ कर कोठी के दूसरे भाग में चली गयीं।

इस पर तो फिर सब हंसने लगे। गणपतराय ने कह दिया, "ठीक है दोनों को अपनी-अपनी बातों का प्रमाण देने दो।"

दुनिया देख रही थी कि ये बच्चे वैसे नहीं, जैसे उनकी बस्ती के बच्चे हैं। वहां तो इतनी सी बात पर मुक्का-मुक्की हो पड़ती। ये तो बहस करते और बिना झगड़ा किए अपनी बात सिद्ध करने का यत्न कर रहे हैं। इस पर भी उसे अपने सौन्दर्य को विवाद का विषय बन जाना ठीक नहीं लगा था। परन्तु

वह जानती नहीं थी कि वह कैसे मना करे उनको।

अभी सब हंस ही रहे थे कि दोनों लड़कियां अपने-अपने कथन का प्रमाण ले कर चलीं आई।

सुमित्रा ने अपनी रामायण में से सीता और राम का चित्र दिखाते हुए कहा, "देखिये पिता ज़ी ! सीता का मुख बहु के मुख से मिला लीजिए।"

"और इस राधा का घघरा व चोली बहू की चोली से मिला लीजिये।" मधुरानी ने अपना दावा सिद्ध करने का यत्न किया। सरस्वती ने दोनों के प्रमाण देखे और कह दिया, "मैं समझती हूं तुम दोनों ठीक कहती हो। बहू सीता और राधा दोनों के समान सुन्दर है। देखो मधु ! यह गोरी है और सीता भी गोरी है।"

"पर चाची !" मधु ने कहा, "राधा भी तो गोरी-गोरी है।"

"हां। इसी से तो कहती हूँ कि तुम दोनों ठीक कहती हो।"

"पर सीता ने तो साड़ी पहिनी है और बहू ने लहंगा पहिना है।"

"हां। परन्तु मधु ! बहू का मुख लम्बा है और राधा का गोल।"

"इससे क्या हुआ ?"

"हुआ यह कि तुम दोनों को सौ में से पचास-पचास नम्बर ही मिले हैं। तुम दोनों पास।"

सब हंसने लगे। गणपतराय ने कह दिया, "दोनों के पास होने की खुशी में रसगुल्ले खाये जाएं।"

इसका अभिप्राय यह था कि चाय आरम्भ की जाएं।

जब खाना-पीना हो चुका तो सरस्वती ने टुनिया से पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"टुनिया।"

"वह क्या होता है ?"

"मां कहती हैं कि जब मैं बच्ची थी तो बहुत रूठा करती थी। इस कारण मेरा नाम टुनिया पड़ गया है।"

"यह नाम ठीक नहीं। आज से तुम यह नाम मत बताया करो। तो मैं तुम्हारा नाम रख दूं ?"

इस पर कन्हाई ने कह दिया, "इसका असली नाम चन्द्रकला है।"

"पर जिससे सब बुलायें वह नकली कैसे हो गया ?" टुनिया ने पूछ लिया।

"तो जो बात सब कहें वह सत्य ही होती है ?" गणपतराय ने पूछ लिया।

अब लखपतराय के बड़े लड़के रामलाल ने कहा, "चाचाजी ! प्रजातंत्र में तो यही बात सत्य मानी जाती है।"

"पर है यह झूठ ही।"

सरस्वती ने बातचीत में ही काट कर कहा, "नहीं। यह चन्द्रकला हैं। यह सीता और राधा के समान सौन्दर्य वाली टुनिया नहीं हो सकती।

"अच्छा चन्द्रकला। तुम कल से घर पर बैठी क्या किया करोगी ? तुम्हारा घरवाला तो कहता है कि वह तुमको सड़क पर काम करने नहीं भेजेगा।"

कन्हाई ने अभी यह बात चन्द्रकला को नहीं बतायी थी। इस कारण टुनिया प्रश्न भरी दृष्टि में अपने पति का मुख देखने लगी। इस पर कन्हाई ने कह दिया, "यह मैंने अभी इसे नहीं बताया। पर है यह मेरे मन की इच्छा।"

"पीछे झुग्गी में बैठी क्या किया करेगी ?" सुदर्शना का प्रश्न था।

इस पर सरस्वती ने कह दिया, "तुम यहां आ जाया करो। यहां बच्चों में बैठे दिल बहल जाया करेगा।"

टुनिया अभी भी पति का मुख देख रही थी। कन्हाई ने केवल यह कहा, "टुनिया ! माता जी का कहा मानना चाहिये। कुछ अक्ल सीख जाओगी।"

इस पर सरस्वती उठी और अपने कमरे में से एक जोड़ा रेशमी कपड़े

और एक हाथी दांत के मनकों का हार ले आयी। हार उसने चन्द्रकला के गले में डाल कह दिया, "सौभाग्यवती रहो। सौ वर्ष तक जीओ और पुत्र-पौत्रों का मुख देखो।"

इसके पश्चात् पीठ पर हाथ फेर उसने आशीर्वाद दे दिया।

जब ये अपनी झुग्गी में पहुंचे तो टुनिया ने पूछ लिया, "तो मैं अब काम पर नहीं जाऊंगी क्या?"

"आवश्यकता नहीं। देखो चन्द्र! मैं चाहता हूँ कि हम बड़े आदमी बन जाएं।"

"पर आय कम हो जाएगी?"

"मैं तरक्की पाने के और तरीकों पर विचार करूंगा।"

टुनिया चुप रही और अगले दिन काम पर जाते हुए कन्हाई उसे बाबू गणपतराय की कोठी पर छोड़ गया। उसने टुनिया से कह दिया, "माता जी का काम करोगी तो उनका आशीर्वाद फलेगा।"

सरस्वती ने जब टुनिया को घर पर बुलाया था तो सोच-विचार कर बुलाया था। कन्हाई उसके घर का काम करता था। वह अपने काम के लिए कुछ भी प्रतिकार लेता नहीं था। सरस्वती उसे प्रायः खाना खिला दिया करती थी, परन्तु वह उसके काम का प्रतिकार नहीं समझती थी। वह टुनिया से काम ले उसका वेतन बांध देना चाहती थी।

कुछ ही दिन में चन्द्र सरस्वती और सुदर्शना के कमरे झाड़ पोंछ कर साफ करने लगी। फिर गणपतराय की पुस्तकों पर से मिट्टी झाड़ उनको अलमारी में तरकीब से लगाने तथा बर्तन साफ करने लगी थी। धीरे-धीरे यह कार्यक्रम हो गया था कि कन्हाई और चन्द्र अपनी झुग्गी से प्रातः का अल्पाहार लेकर चलते थे। कन्हाई अपने लिए दोपहर का भोजन एक पोटली में बांध साथ ले लेता था। चन्द्र दिन भर गणपतराय की कोठी में रहती थी। वह वहां घर के कामों में हाथ बंटाने लगी थी। सायं कन्हाई कारखाने से सीधा कोठी पर आता था और अपनी पढ़ाई करता तथा अपने

भागका काम करता था।

रात का खाना दोनों वहां खाते थे। और फिर दोनों इकट्ठे झुग्गी बस्ती को चल देते थे। समय पाकर कन्हाई लिखने-पढ़ने लगा था। चन्द्रकला भी सरस्वती से पढ़ती थी और वह भी कुछ-कुछ गिनती-मिनती सीख गयी थी।

एक मास बाद सरस्वती ने उसको बीस रुपये वेतन के रूप में दिए। फिर पुराने उतारे कपड़े तथा घर के फटे पुराने खेस, लिहाफ, चादरें उसको मिलने लगीं। इस प्रकार चलते हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया।

इस सब समय में कन्हाई अपनी आय को बढ़ाने का विचार करता रहा था। बाबू गरणपतराय से भी उसकी बातचीत हुई थी। गरणपतराय ने पूछ लिया था, "डाकखाने में कितने रुपये जमा करवा चुके हो ?"

"एक सहस्र से कुछ ही कम है।"

"ठीक है। रुपया इकट्ठा करते जाओ और हिसाब-किताब लिखने का ढंग सीख जाओ। फिर बताऊंगा।"

परन्तु गरणपतराय के बताने से पूर्व ही कन्हाई को उन्नति करने का अवसर मिल गया। एक दिन ठेकेदार रामदयाल का मुन्शी नहीं आया था। शनिवार का दिन था और मज़दूरों को उजरत देनी थी। रामदयाल तो पढ़ा-लिखा व्यक्ति नहीं था। इस कारण वह उजरत का चिट्ठा तैयार नहीं कर सका था। मध्याह्न के समय जब कन्हाई खाना खा रहा था तो रामदयाल ने कह दिया, "आज मज़दूरी बांटी नहीं जा सकती।"

कन्हाई ने खाने से मुख उठा ठेकेदार को पूछ लिया, "क्यों ?"

"मुन्शी बीमार है और आया नहीं। चिट्ठा बना नहीं।"

"तो मैं चिट्ठा बना दूं ?"

"तुम ? तुम कैसे बनाओगे ?"

"मुन्शी का रजिस्टर देख कर और, सब की मजदूरी गिन कर।"

"तुम मुन्शी का लिखा पढ़ लोगे ?"

"जी।"

रामदयाल कन्हाई का मुख देखता रह गया। उसने कहा, "विश्वास नहीं आता।"

"मैं बनाता हूं। आप देख लीजियेगा।"

"मैं तो देख नहीं सकता।"

"देखो, ठेकेदार साहब ! मैं चिट्ठा बनाता हूं। आप उसके हिसाब से मज़दूरी बाट दें। जब मुन्शी आये तो दिखा लीजियेगा। अगर गलती हुई तो मैं जिम्मेवार हूं। घाटा मैं दे दूंगा।"

"तुम कहां से दे दोगे ?"

"डाकखाने में जमा रुपये से।"

रामदयाल के लिए यह नवीन समाचार था। वह कन्हाई को साफ धुले कपड़ों में तो देखता था, परन्तु इसका अर्थ वह यह समझा था कि उसकी पत्नी जो पहिले मजदूरी करती थी, अब उसके कपड़े धोने का काम करने लगी है। आज उसे यह सुन कि वह हिसाब भी कर सकता है और डाकखाने में रुपये जमा रखता है, उसको विस्मय हुआ था।

उसने कन्हाई के कथन की परीक्षा करने के लिए कह दिया, "अच्छा, भोजन करलो और रजिस्टर लेकर चिट्ठा बना कर सुनाना।" कन्हाई का प्रयोजन तो केवल यह था कि उसे मजदूरी उसी दिन मिल जानी चाहिए। इस कारण वह खाना समाप्त कर हाथ धो मुन्शी का लिखा रजिस्टर ले चिट्ठा बनाने लगा। उसने आधे घण्टे में चालीस मज़दूरों का चिट्ठा बना दिया। रामदयाल ने वह चिट्ठा देखा और सुना। उसको ठीक ही प्रतीत हुआ। लिखा भी बहुत सुन्दर लेख में था। इस पर रामदयाल ने सब मजदूरों से यह कह दिया, "आपकी मजदूरी का चिट्ठा कन्हाई ने बनाया है। उसके अनुसार मैं मज़दूरी बांट रहा हूं। इस कारण भूलचूक लेनीदेनी रहेगी।" इतना कह रामदयाल ने वेतन बांट दिया।

अगले दिन रामदयाल ने हिसाब मुन्शी को दिखाया तो उसमें गलती

न देख वह बहुत प्रसन्न हुआ।

इसके कुछ ही दिन बाद मुन्शी किसी दूसरे ठेकेदार के पास अधिक वेतन के लालच में चला गया तो रामदयाल ने मुन्शी का काम कन्हाई से लेना आरम्भ कर दिया। कन्हाई मजदूरी भी करता था और ठेकेदार का मज़दूरों के लेन-देन का हिसाब भी रखता था। मज़दूरी के उसे तीन रुपये रोज के हिसाब से मिलते थे और मुन्शीगीरी के तीस रुपया महीना अलग। इसमें कन्हाईलाल को हाजिरी का रजिस्टर और मज़दूरों की पेशगी दिये का हिसाब और सप्ताह के पश्चात् मज़दूरी का चिट्ठा बना वेतन-वितरण करना पड़ता था। यह काम वह काम आरम्भ होने से पहले प्रातः काल और आधा घंटा काम के बाद सायंकाल में कर देता था।

इस प्रकार अब कन्हाईलाल साथ-साथ मज़दूर और मुन्शी का काम करने लगा था।

: ७ :

चन्द्रकला के नित्य ओवरसियर बाबू के घर जाने और दिन भर वहां रहने से झुग्गी बस्ती के मज़दूरों में चर्चा होने लगी थी। कदाचित् यह चर्चा न चलती, परन्तु चन्द्रकला और कन्हाई की झुग्गी अधिक साफ, अधिक उज्ज्वल रहने लगी थी। इन दोनों के वस्त्र भी अब झुग्गी बस्ती के दूसरे रहने वालों से अधिक उज्ज्वल रहते थे। इससे स्त्रियां चन्द्रकला को देख-देख विस्मय करती थीं और ईर्षा से जलती थीं। पुरुष वर्ग भी परस्पर बातें करते थे, परन्तु मन में संदेह को नहीं बताते थे। उनको अपने संदेह का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाई नहीं देता था।

एक दिन बात फूट पड़ी। भगौड़ी और सुखिया काम से बस्ती की ओर लौट रहे थे। अब वे इस गोल में काम नहीं करते थे, जिसमें कन्हाई इत्यादि काम करते थे। रामदयाल ने भगौड़ी को काम में सुस्त देख निकाल दिया था। भगौड़ी ने अब पटेल नगर में बन रहे क्वार्टरों में सरकारी निर्माण विभाग में काम करना आरम्भ कर दिया था। कुछ और

भी लोग थे जो रहते तो इसी बस्ती में थे, परन्तु काम सरकारी विभाग में करने लगे थे।

उस काम की देख-रेख भी गरणपतराय ही करता था काम गरणपतराय का अफसर सब डिविज़नल अफसर मिस्टर शिवाराओ सरोदे के अधीन ही हो रहा था।

भगौड़ी ने काम से बस्ती की ओर आते हुए सुखिया से कहा, "यह कन्हाई और उसकी पत्नी कब झुग्गी छोड़ रहे हैं ?"

"झुग्गी क्यों छोड़ेंगे ?"

"उनके पास हराम की कमाई आने लगी है और उस कमाई वाले इन झुग्गियों में नहीं रह सकते।"

"कैसी कमाई वाले नहीं रह सकते ?" सुखिया समझ तो रही थी, परन्तु अपने मुख से कह नहीं सकती थी।"

"ठीक है। तुम सती-साध्वी स्त्री हराम की कमाई की बात कैसे जान सकती हो, परन्तु यह बात तो अब सब जानते हैं कि दुनिया ओवरसीयर बाबू की बीवी बन रही है।"

सुखिया ने कहने के लिए कह दिया, "राम ! राम ! कहो जी।" मन से तो उसको भी संदेह था, परन्तु वह संदेह और सत्य में अन्तर समझती थी और जब तक प्रमाण न हो वह संदेह को सत्य बताने में डरती थी।

"तुम नहीं जानती सुखिया। पर मैं जानता हूं कि बदकारी कितनी लाभ की वस्तु है। कभी कन्हाई का झोपड़ा भीतर से देखा है ?"

"हां। भीतर कपड़ा लगा लिया है। छत पर भी रंगीन कपड़ा बंधा है। भूमि पर चटाई बिछी रहती है और उस पर दरी है। दरी के ऊपर मियां-बीवी की खाटें हैं जिन पर सफेद धुले बिस्तर लगे रहते हैं।

भगौड़ी ने झुग्गी भीतर से देखी नहीं थी, परन्तु उनकी बाहरी टीप-टाप से अनुमान लगाया था कि भीतर भी सफाई होगी। अब अपने अनु-

मान का समर्थन सुखिया से सुन वह हंस पड़ा। हंस कर बोला, "यह मजदूरों के और झुग्गियों में रहने वालों के लक्षण नहीं। ननकू की बात सत्य ही है।"

"तो ननकू कुछ कहता था इनके विषय में ?"

"हां, वह कहता था कि ओवरसियर की कोठी में एक मज़दूर की बीवी घुसी रहती है।"

"यह तो ठीक है, परन्तु इसका दूसरा मतलब कैसे निकल आया ? नीमो चाची कहती थीं कि वह बाबू के घर का काम करती है और वहां से वेतन पाती है।"

"सब झूठ है।"

सुखिया विचार करती थी कि नीमो का कहा झूठ माने अथवा अपने पति और ननकू का। उसने पूछ लिया, "क्या झूठ है ?"

"जो नीमो कहती है।"

"और ननकू का कहा सत्य कैसे है ?"

"धुआं देख आग का होना सिद्ध होता है। इसी प्रकार एक मज़दूर की बेटी को रानियों की भांति रहते देख बदकारी सिद्ध होती है।"

"पर देखो जी ! ऐसी बात सोमू से मत कहना। फौजदारी भी हो सकती है। हम गरीब तो उसमें पिस जाएगे।"

"गरीब नहीं पिस सकते। हमारा क्या है। यहां नहीं रहेंगे तो किसी दूसरी जगह झोपड़ा उठा ले जाएंगे। कौन महल है जो उठा नहीं सकते।"

"फिर भी झगड़ा करने से क्या मिलेगा ?"

"परन्तु आज दुनिया बदकारी करती हुई रह सकती है तो कल कोई और बस्ती की औरत भी वही कुछ कर सकती है। तुमको भी तो लालच आ सकता है।"

"मेरी चिन्ता न करो। तुम अपनी चिन्ता करो।" सुखिया को अपने विषय में यह कहते क्रोध चढ़ आया।

"मैं? मैं तो आज बस्ती में कन्हाई का भण्डा फोड़ने वाला हूँ।"

"परमात्मा के लिये चुप रहो। सुना नहीं, कबीरा तेरी झोपड़ी, गल कटों के पास। जो करनगे सो भरनगे, तुम क्यों भये उदास।"

"नहीं सुखिया। गन्दगी के पास रहते हुए बदबू से बचा नहीं जा सकता।"

सुखिया अभी अपने घर वाले को और समझाना चाहती थी, परन्तु बस्ती आ गयी थी और वह दुनिया के विषय में चर्चा वहां पर करना नहीं चाहती थी। वह चुप कर रही। झोपड़ी में अपना कपड़ा रख वह चूल्हा साफ कर खाना बनाने की तैयारी करने लगी थी।

नीमो ने तो अपने चूल्हे पर दलिया चढ़ाया हुआ था और वह समीप बैठी कलछी हिला रही थी। सोम झुग्गी के बाहर बैठा हुआ हुक्का पी रहा था। भगौड़ी को एक बात सूझी। वह अपनी झुग्गी के भीतर जाने के स्थान सोम चाचा की झुग्गी के बाहर सोम के सामने जा खड़ा हुआ।

सोमू ने भगौड़ी को देख उसे अपने समीप बैठा लिया और हुक्का आगे कर पीने का निमन्त्रण दे दिया। भगौड़ी ने हुक्का नहीं लिया। उसने पूछ लिया, "चाचा! दुनिया कहां रहती है। उसे देखा नहीं बहुत दिन से?"

नीमो भी अपना ध्यान चूल्हे से हटा कर, मर्दों की ओर कान दे, उनकी बातें सुनने लगी। सोमू ने उत्तर दे दिया, "यहीं रहती है। उसका झोपड़ा वह खड़ा है।"

"कभी देखा नहीं?"

"क्यों, कुछ काम है?"

"नहीं। मुझे तो नहीं, परन्तु एक मजदूर की बेटी और मजदूर की बीवी को जल्दी घर आना चाहिये। लोग संदेह करने लगे हैं।"

"क्या सन्देह करने लगे हैं? और कौन करता है?" सोम ने आवेश में कह दिया।

भगौड़ी ने कहा, "चाचा नाराज़ होने की बात नहीं। वहां हमारा एक

मेट ननकू है। वह चार अक्षर पढ़ा भी है। वही कह रहा था कि गणपत ओवरसियर बहुत हराम की कमाई करता है। ऐसी कमाई से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और एक मज़दूर की बीवी उसकी कोठी में घुसी रहती है।"

नीमो यह वार्त्तालाप सुन रही थी। उसे क्रोध तो आ रहा था, परन्तु वह अभी चुप थी। वह देख रही थी कि उसका घरवाला क्या कहता है। सोमू ने गम्भीर मुद्रा में कह दिया, "भगौड़ी दादा ! बाबू की कमाई की बात तो मैं जानता नहीं। हां, इतना जानता हूँ कि चन्द्र दिन भर उनके घर का काम करती है। चौका-बासन करती है। तब जाकर वे उसे बीस रुपया महीना और रोटी-कपड़ा देते हैं।"

"मेहनत मज़दूरी करनी है तो सबके साथ सड़क पर ही क्यों नहीं करती ?"

"उसे वहां कम मेहनत करनी पड़ती है। कन्हाई कहता था कि उसे शीघ्र ही अपना घर बनाना है और वह वहां काम करती हुई घर का रहन-सहन सीख रही है।"

"और कन्हाई को अपनी बीबी को एक पैसे वाले के घर में छोड़ दुःख नहीं होता।"

"इसमें दुःख की क्या बात है ? वह अपनी बीवी से सड़क के किनारे काम कराना पसन्द नहीं करता।"

"तो उसके दिमाग में रईसी घुस आयी है।"

"यह गुनाह है क्या ?"

"देखो चाचा ! रईसी का मतलब है बेईमानी। जिनके पास साधन न हो, वे अपनी बीवियों को बेचते फिरते हैं।"

"यह तुमको किसने कहा है ?"

"सब जग कह रहा है। हमारे काम पर भी इसकी चर्चा चल रही है।"

"यह सब झूठ है। भगौड़ी ! तुमको तो इसका विरोध करना चाहिये।'

"पर प्रमाण झूठ को सत्य बता रहे हैं।"

"क्या प्रमाण देखा है तुमने ?"

"तुम्हारी लड़की की टीप-टाप।"

अब नीमो से नहीं रहा गया। वह अपने चूल्हे से जलती लकड़ी उठा भगौड़ी पर लपकी। उसने कड़ककर कहा, "भाग जाओ भगौड़ी के बच्चे, नहीं तो सिर फोड़ दूंगी।"

भगौड़ी दो पग पीछे हटकर बोला, "नीमो ! नाराज़ क्यों होती है ? मैं तो तुम लोगों के हित की ही बात कह रहा हूं। दुनिया की निन्दा होने लगी है। वह अपनी लड़की ही तो है। इससे हम सब की निन्दा होती है।"

इस समय दूसरी झुग्गियों के मर्द-औरतें वहां आ गये। वे झगड़े का कुछ निष्कर्ष देखना चाहते थे।

नीमो सब को एकत्रित होते देख शान्त हो गयी। उसका लकड़ी वाला हाथ नीचे हो गया। वह विचार करती थी कि इस क्रोध के प्रदर्शन से तो बात बस्ती भर में चर्चा का विषय हो जाएगी। अतः अपने मन को शान्त कर वह लकड़ी को चूल्हे में रखने चली गयी।

सब को इकट्ठा हो गया देख भगौड़ी को अपनी सफाई देनी आवश्यक हो गयी। उसने सब की ओर घूर कर कहा, "नीमो व्यर्थ में नाराज़ हो रही है। मैं तो कन्हाई और उसकी बीवी के बस्ती से लापता होने की बात कह रहा था।"

सब देख रहे थे कि यह उनके मन की ही बात है, परन्तु सब चुप थे। भगौड़ी की पत्नी सुखिया भी वहां आ गयी थी। उसने अपने पति की सहायता कर दी। उसने कहा, "दुनिया का पहिरावा और रहन-सहन हम गरीबों में रहने वाला नहीं रहा।"

एक पड़ोसी ने कह दिया, "दादा ! यह बात नीमो से कहने किस लिये आये हो ? ये तो अपनी लड़की कन्हाई को दे चुके हैं। वह आयेगा तो उससे कहना।"

भगौड़ी अपनी झुग्गी की ओर लौट पड़ा था। कुछ दूसरे मर्द और

औरतें भगौड़ी और सुखिया के साथ-साथ आ रहे थे। सोमू के सुनने से दूर हो वे परस्पर बातें करने लगे थे। "कन्हाई तो बिल्कुल ही बोदा निकला। इसको शर्म भी नहीं आती, स्वयं उसे कोठी में ले जाते हुए।"

भगौड़ी ननकू की बात बताने लगा। उसने कहा, "हमारा एक मेट है ननकू। वह कह रहा था कि ओवरसियर बाबू ने रखेल रखी हुई है।"

"यह ननकू कौन है ?"

"एक मज़दूर था, परन्तु ओवरसियर बाबू ने उसे समझदार और पढ़ा लिखा देख, मेंट बना दिया है। अब वह हमारा काम देखता है, हाज़री लगाता है, उसको अब तीन रुपये रोज के मिलते हैं।"

"तो वह पढ़ा-लिखा मजदूर है।"

"हां। उसने मेट बनते ही मजदूरों के ठेकेदार को हटा दिया है। वह फोकट में दो आना रोज हर मजदूर से ले जाता था।"

"तो अब तुमको कुछ नहीं देना पड़ता ?"

"अब ठेकेदार वहां आता ही नहीं। वह ननकू से डरकर भाग गया है।"

अब एक और बोल पड़ा। सब भगौड़ी की झुग्गी के बाहर आ खड़े हुए थे। उसने कहा, "यह तो ठीक नहीं हुआ। वह बहुत काम का आदमी था। एक बार मेरा काम छूट गया था। मैं दो दिन बेकार रहा। कई इमारतों पर गया, पर कहीं काम न मिला। एक मजदूर ने इस ठेकेदार का पता बता दिया। उसने राजेन्द्रनगर में एक काम पर बुला लिया। अगले दिन मैं काम पर लग गया। इसको चार महीने हो चुके हैं और एक दिन बेकार नहीं हुआ। मैं समझता हूँ कि उसको दो आना रोज देना अच्छा है। एक दिन बेकार रहने से बीस दिन की बचत बराबर हो जाती है।

इसने इन पांच महीने में तीन बार मेरा काम लगवाया है और बेकारी से एक पैसे की हानि नहीं हुई।"

"यह सब झूठ है। अब तो दिल्ली में इतना काम हो गया है कि कोई बेकार रह ही नहीं सकता।" भगौड़ी ने कह दिया।

"परन्तु बेकार तो अभी भी बहुत हैं। रोजगार के दफ्तर पर तो भीड़ लगी रहती है।"

"वहां की बात दूसरी है। वैसे बेकारी अब नहीं रही।"

दूसरा मुख देखता रह गया। वह विचार कर रहा था कि यदि वह कोई बात कहेगा तो भगौड़ी फिर कह देगा कि यह सब झूठ है। वह जानता था कि यह झूठ नहीं।

भगौड़ी को जब भी कोई बात ऐसी कही जाती थी जिसको वह नहीं जानता था तो वह उसको झूठ कह देता था। यह उसका स्वभाव हो गया था। यह स्वभाव ननकू की बातें सुनकर बना था। ननकू भी उन सब बातों को झूठ मानता था; जिनका ज्ञान उसको नहीं था।

इस समय कन्हाई चन्द्रकला के साथ आ गया। उसने अपनी झुग्गी का द्वार खोला और भीतर जा मोमबत्ती जलाई। वह खाट पर बैठा ही था कि बाहर से भगौड़ी ने आवाज दे दी, "कन्हाई भैया !"

कन्हाई को आता देख भगौड़ी अपने पास खड़े सब लोगों को लेकर कन्हाई की झुग्गी के बाहर आ गया था। कन्हाई ने भीतर से आवाज़ दी, "आओ भगौड़ी दादा ! आओ बैठो।"

आये लोगों ने झोपड़ी को भीतर से देखा तो चकित रह गए। भीतर से वह एक सुन्दर खेमा दिखाई देता था। भगौड़ी ने कह दिया, "भैया, जरा बाहर आ जाओ। बहुत से हैं।"

कन्हाई उठकर झुग्गी से बाहर आ गया और पूछने लगा, "क्या बात है ?"

बाहर बात भगौड़ी ने ही की। वह बोला—"ये सब लोग हैरान हो रहे हैं कि तुम इतना कुछ खर्च कहां से कर रहे हो ? यह तुम्हारी सामर्थ्य से बाहर है।"

कन्हाई इसका अर्थ नहीं समझा। उसने कह दिया, "दादा ! यह भगवान की कृपा है। कमाई में बरकत पड़ रही है। मैं हिसाब-किताब देखने का ढंग सीख गया हूं और ठेकेदार का हिसाब लिख देता हूं। मजदूरी तो करता ही हूं। मजदूरी के साथ मुंशीगीरी का वेतन भी मिल जाता है।"

"क्या मिल जाता है ?"

"तीन रुपये नित्य तो मजदूरी मिलती है और तीस रुपये महीना मुंशीगीरी के मिल जाते हैं।"

"बड़ा बेईमान है ठेकेदार।"

"मुझको तीस रुपये देता है इसलिए ?"

"वह पहले मुंशी को साठ रुपये देता था।"

"वह उससे कुछ और भी काम लेता होगा।"

"मगर उसको तो तीस रुपये महीने का लाभ हो गया है।"

"इससे मुझको दुःख क्यों होगा। मेरा वेतन एक सौ बीस रुपया हो गया है।"

"और यह झुग्गी की सजावट और तुम्हारे-तुम्हारी बीवी के कपड़े इससे ही बने हैं क्या ?"

"मेरे कपड़े तो मेरी आमदनी से बने हैं। मैंने मजदूरी करने के कपड़े अलग रखे हुए हैं। मैं प्रातः बाबू की कोठी से जाते समय वे पहन लेता हूं और सायंकाल वे वहां उतार आता हूं। ये कपड़े तो बाबू के घर और यहां पहनता हूं।"

"और खाना-पीना तथा बीवी की शृंगार-पट्टी ?"

"दादा ! वह बाबू के घर नौकरी करती है। वहां से वेतन पाती है। खाना और वस्त्र तथा झुग्गी में जो कुछ है वह उनके घर का फटा-पुराना मिल जाता है। चन्द्र उनकी मरम्मत कर लेती है।

"सवेरे खाना हम यहां बना खा जाते हैं। चन्द्र दोपहर को और हम

दोनों रात को खाना उनके यहां ही खाते हैं।"

"और तुम्हारी बीवी वहां क्या काम करती है जो रानी बनी घूमती है ?"

इस पर कन्हाई ने चन्द्रकला का काम बता दिया। उसने यह भी कहा, "दादा ! अब तो वह कपड़े सीने की मशीन चलाती है और बच्चों के कपड़े सीने लगी है।"

"भैया ! यह सब झूठ है। लोग कहते हैं कि तुमने अपनी बीवी को बाबू के पास बेच रखा है।"

कन्हाई का मुख क्रोध से लाल हो गया। उसने अपने आपको यत्न से काबू में कर कह दिया, "दादा ! मैं तुम्हारा बहुत मान करता हूं, परन्तु तुम जानते हो कि अपनी बीवी की ऐसी बात कोई भी आदमी सुन नहीं सकता। सुन लो ! चुपचाप अपनी झुग्गी में चले जाओ नहीं तो तुम जिन्दा नहीं रह सकते।"

भगौड़ी अपने साथियों की ओर देखने लगा। साथियों में कोई नहीं था जो भगौड़ी को निर्दोष मानता हो। उनमें से कुछ थे, जो मन से उसके अनुमान को ठीक मानते थे, पर किसी ने चन्द्रकला में कोई खराबी देखी नहीं थी। इस कारण चुप थे। सुन्दर भगौड़ी की बांह मे बांह डालकर उसको घसीटता हुआ दूर ले गया।

कन्हाई भगौड़ी को जाते देख फिर अपनी झुग्गी में चला गया। वहां झुग्गी के द्वार के समीप खड़ी चन्द्रकला बाहर हो रही बातें सुन रही थी। कन्हाई का मुख अभी भी क्रोध से लाल हो रहा था। चन्द्रकला ने कह दिया, "अब तो इस बस्ती में रहने को जी नहीं करता।"

"मैं भी यही सोच रहा हूं। कल बाबू से बात करूंगा।"

बाहर बस्ती के कुछ लोग प्रसन्न और कुछ बिना कुछ समझे अपनी-अपनी झुग्गी में चले गये। सुन्दर भगौड़ी को उसके झोपड़े में छोड़ अपने झोपड़े में चला गया। इस समय सुखिया रोटिया सेंककर भीतर ले आई

थी। भगौड़ी अभी भी खाट पर क्रोध से अथवा भय से कांपता हुआ बैठा था।

सुखिया ने थाली में रोटियां रखते हुए कहा, "मैंने तुमको मना भी किया था। मैंने कहा था कि ऐसी बातों में फौजदारी हो जाती है, परन्तु तुम माने नहीं?"

"तो क्या मैं झूठ कहता हूँ?"

"मैं झूठ-सच की बात नहीं कर रही। मैं कहती हूं कि तुमने कहा ही क्यों?"

भगौड़ी इसका उत्तर नहीं दे सका। उसने कह दिया, "मैं इसको इसकी धमकी का स्वाद चखाऊंगा।"

"क्या स्वाद चखाओगे?"

"जब चखाऊंगा तो तुम जान जाओगी?"

"मैं समझती हूँ कि हमको चुप रहना चाहिए था। यहां से अपना झोपड़ा उठाकर कहीं और ले जाना चाहिए।"

"वाह! यह क्यों?"

"इसलिए कि तुम पीटे जा सकते हो। वह हट्टा-कट्टा और तुमसे दो अंगुल ऊंचा है। तुम उससे लड़ नहीं सकते। इसके अलावा जो तुम दुनिया के विषय में कह रहे हो वह अनुमान ही तो है। वह गलत भी हो सकता है।"

"नहीं, गलत नहीं। तुम्हारे दिमाग में डर समा गया है। इस कारण तुम गलत विचार करने लगी हो। तुम क्यों नहीं दुनिया जैसे बढ़िया कपड़े पहिन सकतीं। तुम्हारा झोपड़ा दुनिया के झोपड़े के समान सजा क्यों नहीं है?"

"मेरे भाग्य की बात है। मेरा भाग्य ही खोटा है। हमारे एक ही लड़का था और वह भी हमारे पास नहीं रह सका। वह हमको छोड़ गया है।"

भगौड़ी हंस पड़ा। उसने कहा, "मोहन की बीवी उसको ले भागी थी।"

सुखिया ने एक कटोरी में नमक मिर्च और उस पर थोड़ा तेल डालकर चटनी-सी बना ली और थोड़ी-थोड़ी छः रोटियों पर लगाकर अपने पति को दे दी और चार रोटियों को स्वयं हाथ में ले खाने लगी। खाते-खाते वह बोली, "मोहन ही की बीवी एक दिन मिली थी और कहती थी कि तुमने उससे छेड़खानी की थी। इसी कारण वह यह बस्ती छोड़ गई है।"

"यह झूठ है। मैंने उसको कोई अनुचित बात नहीं कही। वह तो अपने घरवाले की कमाई पर हमारा कुछ अधिकार नहीं मानती थी और मैं कभी मोहन से दो-चार आने मांग लेता था। बस इसी बात से नाराज़ हो वह भाग गई है।"

"परन्तु उसको इस झूठ बोलने में क्या लाभ था? मैंने तो उसको यहां से चले जाने पर कुछ कहा ही नहीं था।"

"वह समझती होगी कि तुम कुछ कहोगी। इसी कारण उसने पहले ही झूठ बोल दिया होगा।"

"परन्तु एक बात तो है, तुमने मुझको तो कभी एक पैसे का गुड़ तक नहीं खिलाया और उसको रोज मिठाई खिलाने उसकी झुग्गी में चले जाते थे।"

"वह तो इसलिए कि मुझको वह भली लगती थी।"

"यही तो मैं कह रही हूं। मैं भली नहीं लगती न?"

भगौड़ी हंसकर चुप कर गया।

: ८ :

अगले दिन मध्याह्न के समय सीताराम ढाबे वाले का नौकर भागा-भागा कन्हाई को बताने आया कि उनकी झुग्गी बस्ती में आग लग गई है। उस बस्ती के जितने लोग रामदयाल ठेकेदार के पास काम करते थे, भागे-भागे बस्ती पर आए, परन्तु उनके पहुंचने से पूर्व ही पूर्ण की पूर्ण बस्ती

जलकर भस्म हो चुकी थी। दमकल आग बुझाने आई थी, परन्तु वह भी समय पर पहुंच नहीं सकी थी। भगौड़ी की साथ वाली झुग्गी में मोदू और शान्ति के दो बच्चे जलकर मर गए थे।

बस्ती के प्रायः सब आदमी आ गए थे और वे विस्मय में एक-दूसरे का मुख देख रहे थे। दमकल राख ठंडी कर चली गई तो बच्चों के अधजले शव बाहर निकाले गए। बच्चे का पिता मोदू शोक मुद्रा में एक ओर बैठा था। उसकी पत्नी शान्ति ऊंचे-ऊंचे रो रही थी। बस्ती वाले अन्य स्त्री-पुरुष उनके चारों ओर खड़े थे। कई बाहर के लोग भी एकत्रित हो गए थे।

पुलिस आ गई और पूछ-ताछ करने लगी थी। आग लगने के समय बस्ती के बच्चे वहां खेल रहे थे। उनमें से एक पांच-छः साल के बच्चे रामू ने पुलिस को बता दिया, "भगौड़ी दादा आया था और कन्हाई की झोपड़ी को आग लगा भाग गया है। पीछे सब कुछ जलने लगा। मोदू के दोनों बच्चे खेलते-खेलते थक गए थे और अपने झोपड़े में जाकर सो गए थे। लड़का पांच वर्ष का था और लड़की तीन वर्ष की थी।"

किसी सज्ञान की गवाही नहीं हो सकी। इसपर भी पुलिस ने भगौड़ी के विषय में पूछ-ताछ आरम्भ कर दी। कन्हाई ने पिछली रात के तकरार के विषय में बता दिया। इसपर भगौड़ी की तलाश आरम्भ हो गई। वह वहां नहीं आया था। मोदू की पत्नी शान्ति के पास भगौड़ी की पत्नी सुखिया बैठी उसको सान्त्वना दे रही थी। उससे पुलिस ने उसके पति के विषय में पूछा तो उसने बता दिया कि मध्याह्न काम बन्द होने से पहले वह काम छोड़ पेशाब करने गया था और फिर वहाँ दिखाई नहीं दिया।

पुलिस वाले यह कह कि सब सज्ञान पुरुष सायंकाल थाने में उपस्थित हो जाएं, वहां से चले गए। उनके चले जाने के उपरान्त मोदू के बच्चों के शवों को यमुनाजी में बहाने ले गए।

सुखिया को विश्वास था कि यह करतूत उसके घरवाले की है। उसे उसका कहना स्मरण आ रहा था कि वह कन्हाई को मजा चखाएगा। इससे वह उसके कन्हाई के झोपड़े को आग लगाने की बात को समझ गई थी। परन्तु एक तो पूर्ण बस्ती जलकर भस्म हो गई थी, दूसरे, कन्हाई के साथ-साथ बस्ती के सब रहने वालों को हानि पहुंची थी, और साथ ही मोदू के बच्चे का जल जाना, इस करण वह चुप-चाप बैठी रह गई। वह अब समझ नहीं सकी थी कि वह कहां किसके पास जाएगी। अब उसे अपने लड़के मोहन की याद आई, परन्तु वह नहीं जानती थी कि वह कहां रहता है।

वह सबके साथ यमुनाजी नहीं गई। उसको अपने पति की करतूत पर इतना शोक और पश्चात्ताप लगा था कि वह शिथिल हो बैठी रह गई थी। यमुनाजी को जाते हुए तो सब शोकातुर थे और पूर्ण घटना पर किसी प्रकार की टीका-टिप्पणी नहीं कर रहे थे, परन्तु लौटते समय वे टोलियों में विभक्त हो गए थे। मोदू और शान्ति पीछे रह गए थे। इस समय आगे-आगे जानेवालों में चर्चा चल पड़ी कि यह क्यों हुआ ?

सुन्दर ने कह दिया, "झगड़ा भगौड़ी और कन्हाई का था। बीच में पिस गया बेचारा मोदू।"

एक चेतु था। वह बीस-इक्कीस वर्ष का अविवाहित युवक ही था। अपनी मां के साथ बस्ती में रहता था। मां विधवा थी और मां-बेटा मेहनत कर निर्वाह कर रहे थे। चेतु को दुनिया में कोई दोष प्रतीत नहीं हो रहा था। वास्तव में वह भी दुनिया से विवाह की इच्छा कर रहा था, परन्तु सोमू की पत्नी नीमो का चुनाव कन्हाई था। कन्हाई उसे चेतु से अधिक समझदार प्रतीत हुआ था। वह चेतु से अधिक मेहनती भी था।

चेतु की मां नीमो से चेतु के विषय में कह रही थी, परन्तु उसकी दृष्टि में कन्हाई समा रहा था और समय पा कर उसने विवाह कर दिया था। चेतु को इससे निराशा तो हुई थी, परन्तु वह इस निराशा में अपने भाग्य

को ही कोसता था। पिछली रात वह भगौड़ी और कन्हाई का झगड़ा सुन रहा था और वह कन्हाई के इस कहने पर कि वह भगौड़ी को मार डालेगा, प्रसन्न हुआ था। उसे भगौड़ी का दुनिया को बदनाम करना ठीक प्रतीत नहीं हुआ था। इस पर भी वह इन दोनों के झगड़े में पड़ने से बच रहा था।

आज यमुना से लौटते समय जब सुन्दर ने वस्तुस्थिति का वर्णन किया तो उसके मुख से निकल गया, "अगर भगौड़ी पकड़ा गया तो फांसी पा जाएगा।"

'हां भाई ! सरकार अंधी है न। न्याय तो यह है कि कन्हाई को कैद होनी चाहिये।"

"क्या अपराध किया है उसने ?" चेतु ने पूछ लिया।

"उसने भगौड़ी को मार डालने की धमकी दी थी।"

"तो वह अपनी पत्नी की निन्दा सुनता रहता। निन्दा करने वाले को रोकता नहीं।"

"वह निन्दनीय तो है ही।"

"क्या निन्दा की बात की है उसने ?"

"ओह !" एक अन्य मक्खन बोल उठा, "तुमको दुनिया पर दया आने लगी है। कुछ तुम्हारा भी मतलब प्रतीत होता है।"

"मेरा क्या मतलब हो सकता है ?"

"जो एक युवक का एक बदकार औरत से हो सकता है।"

चेतु को क्रोध चढ़ आया। चेतु की मां माया चेतु के साथ-साथ चल रही थी। उसको अपने लड़के पर इस प्रकार का संदेह नहीं था। उसने झगड़ा बढ़ते देख कह दिया, "चेतु ! क्या मूर्खों की-सी बात कर रहे हो ?"

"मां ! मैं मूर्ख हूँ क्या ?"

"हां। इनसे बात कर तुम व्यर्थ का झगड़ा कर रहे हो। देखो भाई

सुन्दर ! यदि शिकायत है तो कन्हाई से क्यों नहीं कहते ? चेतू कुछ नहीं कहता । जाओ । उससे अपनी हानि पूरी कर लो ।"

सुन्दर चुप कर गया । परन्तु एक और बोल उठा, "मोटू के तो बच्चे ही गये, परन्तु हमारी तो सब कमाई फुक गयी है। रात अब रहेंगें कहां ?"

"कन्हाई के सिर में । उसकी बीवी तो आयी नहीं । वह तो अपने यार के बंगले में ऐश उड़ा रही है ।"

सोमू भी यह सब सुन रहा था । वह चलता-चलता खड़ा हो गया । उसने मोहन और नीमो को भी खड़ा कर लिया । उनको खड़ा होता देख चेतु और उसकी मां माया भी खड़े हो गये । सुन्दर इत्यादि ने उनको खड़े होते देख पूछ लिया "चाचा ! क्या बात है ?"

सोमू ने कहा, "तुम लोग चलो । मुझ से आपकी बात सुनी नहीं जाती ।"

इस पर सुन्दर मुख में यह कहता हुआ चल पड़ा, "लड़की को मना नहीं कर सकता और हमसे नाराज़ होता है ।"

सुन्दर और उसी के विचार के लोग चल पड़े । एक ने कह दिया, "यदि यह बच्चों की बात न होती तो मैं भगौड़ी को बहुत बहादुर आदमी मानता ।"

"और बच्चों के मर जाने से उसकी बहादुरी समाप्त हो गयी ?"

"उसे फांसी जो मिलेगी ।"

"मैं रामू को समझा दूंगा । वह कह देगा कि भगौड़ी नहीं था ।"

"पर कन्हाई ने कल के झगड़े की बात जो बताई है ?"

"इससे क्या होता है । इसका आग लगाने के साथ क्या सम्बन्ध हो सकता है ?"

पीछे रह जाने वाले सोमू इत्यादि मोटू के साथ-साथ हो लिये । मोटू जानता था कि भगौड़ी ने ही आग लगाई है, परन्तु वह मन में

वैराग्य अनुभव कर रहा था। उसने सोमू चाचा को कह दिया, "चाचा ! बच्चे तो भगवान के घर में चले गये। वे हमारे भाग्य में नहीं थे, परन्तु मुझे तो सुखिया पर दया आती है।"

"हां। उस बेचारी की दशा दयनीय ही है।"

"मैं तो कन्हाई से कहूंगा कि उसे पिछली रात की बात पुलिस में नहीं कहनी चाहिये। जो हो गया सो हो गया। जो रह गये है उनको भी फांसी चढ़वाने से हमें क्या मिलेगा ? '

कन्हाई तो यमुना जी से ही पैदल कश्मीरी गेट चला गया था। और वहां से बस में नयी दिल्ली तथा वहां से पटेल नगर चला गया था। सोमू मोदू के साथ हो कहने लगा, "भगौड़ी ने किया तो बहुत बुरा है, परन्तु सुखिया पर दया आती है। उस बेचारी का क्या दोष है कि वह वेकार में विधवा हो रही है।"

"चाचा ! कन्हाई को कहो कि वह इसमें गवाही न दे।"

"कहूंगा।"

इस पर चेतु ने कह दिया, "परन्तु मुख्य गवाही रामू की है। उसने भगौड़ी को आग लगाते देखा है ?"

मोदू ने इसका उत्तर दिया, "वह नाबालिग है उसकी बात का विश्वास नहीं किया जा सकता।"

सोमू ने कहा, "सरकार जाने और रामू जाने। मैं कन्हाई को कहूंगा कि वह अपने बयान को ढीला कर दे। यदि भगौड़ी बच जाए तो हमें क्या ?"

सोमू विचार कर रहा था कि जब मोदू ही भगौड़ी का पक्ष ले रहा है तो उसको क्या आवश्यकता है कि पाप की भागी बने।

चेतु को यह समझ नहीं आ रही थी कि एक भगौड़ी जैसे अपराधी को ये सब लोग किसलिए बचाने का यत्न कर रहे है। उसको मोदू के कथन पर विस्मय हो रहा था। इस पर भी उसने कहा, "हाँ चाचा !

यदि भगौड़ी बच जाए तो ठीक है, परन्तु उसने अपराध तो बहुत बड़ा किया है।"

उत्तर मोदू ने ही दिया, "भैया चेतु! पाप-पुण्य को देखने वाला परमात्मा है। वह स्वयं निपट लेगा। हम इस बीच में क्यों पड़ें?"

"परन्तु झूठ बोलना भी तो ठीक नहीं।"

"असल सत्य क्या है वह हम कैसे जान सकते हैं। सब माया का खेल है। संसार झूठा है। इसका मोह झूठा है। जो कुछ दीखता है वह भ्रम है।"

चेतु चुप कर रहा।

जब सब लोग लौट कर बस्ती में पहुंचे तो अंधेरा हो चुका था। किसी का ध्यान सुखिया की ओर नहीं गया। सब अपने-अपने खाने-पीने में लग गये। प्रायः वे भुने चने और गुड़ खा कर ठंडा पानी पी रहे थे।

ये लोग अभी खा पी रहे थे कि पुलिस का आदमी आया और इनको डांटने लगा। वह कह रहा था, "तुमको थाने में आना चाहिये।"

मोदू ने कह दिया, "हम बच्चों के शव को यमुना जी में बहाने ले गये थे।"

"तो बहा आये हो?"

"हां।"

"क्यों बहा आये हो?"

"तो क्या करते?"

"उनको तो अस्पताल ले जाना था। उनका 'पोस्ट-मार्टम' करने के लिये।"

"वह क्या होता है?"

"डाक्टर को दिखाना था।"

"डाक्टर क्या कर लेता इसमें। वे तो अंधों को भी मर गये प्रतीत हो

रहे थे।"

"तुम सब मुर्ख हो। इस हत्याकण्ड में सब पकड़े जाओगे। चलो अभी सब थाने चलो।"

साहस पकड़ सुन्दर ने कह दिया, "इस समय तो हम थके हुए हैं। हम नहीं चल सकते। कहो तो कल दिन के समय आ जाएंगे।"

पुलिसमैन लौट गया। वह अभी गया ही था कि कन्हाई आ गया। बस्ती के लोग दो जगह एकत्रित हो हुक्का पीने लगे थे। एक टोली सोमू चाचा के साथियों की थी और दूसरी सुन्दर की। दोनों में मतभेद हो गया था। सुन्दर और उसके साथी कन्हाई को ही अपराधी समझ रहे थे। वे समझते थे कि न कन्हाई मार डालने की धमकी देता और न भगौड़ी यह कांड करता। सोमू चाचा के साथी यह समझ रहे थे कि भगौड़ी अपराधी तो है। इस पर भी वह अपना साथी है। उसको बचाने का यत्न करना चाहिए। मोदू और शान्ति सोमू चाचा के पास बैठे थे।

कन्हाई आया तो सोमू ने पूछ लिया, "तुम यमुनाजी से किधर गए थे?"

"चाचा! चन्द्रकला को सूचना नहीं थी कि यहां क्या हो गया है। वह मेरे वहां न पहुंचने पर चिन्ता करती और फिर रात रहने का प्रबन्ध करना था। उसको खुले में यहां कहां लाकर सुलाता।"

सब जानते थे कि उसके दिन चढ़े हुए हैं और वह छठे-सातवें महीने में जा रही है। कन्हाई ने बात आगे चला दी। उसने कहा, "करोलबाग और देवनगर में एक-एक मकान ढूंढ डाला है। एक कोठरी तक नहीं मिली। एक मकान खाली था। भाड़ा सौ रुपया महीना से ऊपर है।

"अभी बाबू ने अपनी कोठी में गाय बांधने वाला तबेला दे दिया है और वहां चन्द्र को छोड़ आया हूं।"

सोमू ने कहा, "यहां नई कुटिया बना लो।"

"विचार करूंगा। चन्द्र यहां आकर रहना नहीं चाहती।"

"किसलिए ?"

"यहां के रहने वाले मूर्ख है। उसका कहना है कि ये लोग शराब पी-पी कर मति भ्रष्ट हो गए हैं।"

"सब को दण्ड भी तो मिला है।"

"परन्तु चाचा ! ये लोग दोषी को निर्दोष और निर्दोष को दोषी मानते हैं। हम यहां रहने में अपना कल्याण नहीं मानते। मैं तो आता भी नहीं। चन्द्र ने कहा है कि सुखिया और शान्ति चाची से सहानुभूति प्रकट करने आना चाहिए।"

मोदू सहानुभूति का शब्द सुन सतर्क हो बोला, "कन्हाई ! यदि सहानुभूति है तो झुग्गी बनवाने में सहायता कर दो।"

"कैसे सहायता कर दूं ?"

"हमारे पास तो दो चार रुपये से अधिक है नहीं और झोपड़े पर दस पन्द्रह रुपये से कम लगेगा नहीं।"

कन्हाई विचार करता था कि पिछली रात ये सब लोग चन्द्रकला को छिनाल कहा जाता सुन रहे थे और किसी ने भगौड़ी को कहने से मना नहीं किया। वह जानता था कि मोदू सुन्दर इत्यादि सब भगोड़ी के साथ खड़े चंद्रकला को ही अपराधी मान रहे थे। ऐसे लोगों की वह क्यों सहायता करे ? एकाएक उसके मन में विचार आया कि चन्द्रकला के पिता से राय कर ले। उसने पूछ लिया, "चाचा ! तुम क्या समझते हो ?"

"मेरे पास तो अपने झोपड़े के लिए पैसे हैं। मैं विचार कर रहा था कि जो सहायता के लिए मेरे पास आएंगे उनको एक सीमा तक ऋण दे सकता हूं। यदि वे दो रुपये सैकड़ा माहवारी का व्याज देना स्वीकार करें तो मैं एक सौ रुपया तक इस काम में बांट सकता हूं।"

इस पर कन्हाई ने कह दिया, "चाचा ! इस प्रकार नहीं। एक सौ रुपया तुम दो और एक सौ रुपया मैं देता हूं। व्याज नहीं लेंगे। रुपया किश्तों से प्रति सप्ताह वापिस ले लेंगे।"

"क्या किश्त लोगे ?" मोद्दू ने पूछ लिया ।

"दो रुपया प्रति सप्ताह । रुपये साप्ताहिक मजदूरी मिलने पर ही वसूल कर लिए जाया करेंगें ।"

सोमू को यह बात पसन्द नहीं थी । वह रुपये एक दम वापिस चाहता था । और ब्याज छोड़ना पसन्द नहीं करता था । उसे चुप देख कन्हाई ने पूछ लिया, "चाचा ! चुप क्यों हो ?"

"बेटा कन्हाई ! रुपये बहुत मेहनत से पैदा होते हैं और जितना कुछ इनको मिलता है, उतना ही तो हमको मिलता है । ये लोग अपनी बचत शराब इत्यादि में व्यय कर देते हैं और हम सूखी दाल रोटी खाकर रहते हैं । मैं इनको मुफ्त में रुपया देने के पक्ष में नहीं ।"

"चाचा ।" कन्हाई ने कहा, "यदि ये खराब आदमी हैं तो फिर इनको रुपया देते ही क्यों हो । सूद का लोभ पूरा कर ये भले आदमी हो जाएंगे ।"

"ये मांगते हैं और मेरे पास है । इसलिए अपनी शर्त पर देता हूं ।"

"चाचा ! मैं समझता हूं यह विचार मिथ्या है । यदि देना है तो इन पर आई मुसीबत को देख कर दो । इस मुसीबत में इनसे लाभ उठाने के लिए देना तो धर्म के विपरीत हो जाएगा । यदि ये इतने खराब हैं कि इनको कष्ट भोगने देना चाहिए तो मत दो । और इनको कष्ट भोगने दो ।"

नीमो ने कह दिया, "कन्हाई ठीक कहता है । दो तो बिना व्याज के दो । मेरा तो यह कहना है दिया तो दे दिया फिर वापिस लेने की आशा छोड़ कर दो ।"

सोमू हंस पड़ा । हंसते हुए बोला, "अब बताओ कन्हाई ! नीमो की बात पर क्या कहते हो ?"

"चाची ठीक कहती है । दें तो सहायता समझ कर दें । जो वापिस करना चाहे और कर सके तो कर दे । जो नहीं कर सकते उनसे वापिस लेने की आशा न की जाए ।"

सोमू गम्भीर हो गया । कन्हाई ने कुछ विचार कर कहा, "भैया मोद्दू!

सब मिलकर झुग्गियां बनाओगे तो सस्ती पड़ेंगी। सब बनाने के लिए लग जाओगे तो एक दिन में तैयार हो जाएंगी।"

मोद्दू ने सुन्दर को आवाज़ दे दी, "सुन्दर भैया ! जरा बात सुनो।"

सुन्दर आया तो उसके साथ बैठे पुरुष स्त्री भी आ गये। बच्चे तो सब भूमि पर ही सो गए थे। बात मोद्दू ने ही की कि कन्हाई कहता है कि एक सौ रुपया वह मुझको उधार देता है बिना व्याज के। वह कह रहा है कि सोमू चाचा भी एक सौ रुपया इसी प्रकार दे और सब मिल कर अपने आप अपनी झुग्गियां बना लें। रुपया जब-जब जिसके पास होगा दे दें।

"और सोमू चाचा क्या कहता है ?"

"कन्हाई की बात मैं टाल नहीं सकता।" सोमू ने कहा।

"चाचा जुग-जुग जियो।" सुदर्शन ने कह दिया। मेरे पास तो दम था नहीं। मैं कल बनिए से उधार लेने वाला था। वह पांच रुपया सैकड़ा सूद मांगता और दस देकर पन्द्रह लिख लेता। पांच रुपये सूद के पेशगी होते।"

इसपर चेतु ने कह दिया, "कन्हाई दादा—"मेरे पास झुग्गी बनाने के लिए दम है। मुझको नहीं चाहिए। मैं अपनी झुग्गी स्वयं बना लूंगा।"

इस, पर कन्हाई ने कह दिया, "मोद्दू भैया ! कल दस बजे के उपरांत मुझको मेरे काम पर मिलना। मैं डाकखाने से रुपये निकलवा कर दे दूंगा।"

सुखिया का किसी को पता नहीं था कि वह कहां गयी है। कन्हाई ने जाने से पूर्व पूछा भी था, परन्तु कोई नहीं जानता था और किसी ने नहीं बताया।

: ६ :

जमना जी में शवों के बहाने के बाद कन्हाई सीधा गणपतराय की कोठी पर पहुंचा था। गणपतराय आज अभी तक कार्यालय से लौटा नहीं था। उसने चन्द्रकला को आग लग जाने और पूर्ण बस्ती के जल जाने का

समाचार बताया। यह इससे अवाक् बैठी रह गयी। मोदू के बच्चों के जीवित जल जाने से तो वह व्याकुल हो उठी।

उसे समाचार बता कन्हाई ने कहा, "रात कहीं सोने का प्रबन्ध करना है इस कारण मैं ठेकेदार के पास जा रहा हूं और उसकी सहायता से कहीं कोई कोठरी भाड़े पर लेने का यत्न करता हूं। तुम माता जी को समाचार बता देना।"

कन्हाई गया और रामदयाल को लेकर करौलबाग और देवनगर में रहने योग्य स्थान ढूंढता रहा। तीन घंटे की खोज के उपरान्त वह कोठी पर लौट आया। वहां चन्द्रकला ने उसे बताया कि माता जी पहिले ही कह रही थीं कि उपयुक्त स्थान नहीं मिल सकेगा। इस कारण उन्होंने गाय का तबेला खाली करा दिया है और हमको अभी उसमें टिक जाने को कहा है। उन्होंने दो खाट और चादरें तथा बिस्तर भी दिये हैं।"

कन्हाई सरस्वती की उदारता और सूझ-बूझ का परिचय प्राप्त कर चकित रह गया। उसने पूछ लिया, "बाबू जी आये हैं क्या ?"

"हां, आये थे और फिर चले गये हैं। उनको भी माता जी ने इस प्रबन्ध के विषय में बताया है और वे कह गये हैं कि अभी कुछ मास के लिये हमको यहीं रहना चाहिये।"

कन्हाईलाल ने कहा, "मैं बस्ती में जाकर दूसरे लोगों की अवस्था देखना चाहता हूं। विशेष रूप में चाचा और चाची से मिलने जा रहा हूं।"

"अच्छा।" चन्द्रकला ने कह दिया, "मोदू की पत्नी शान्ति से सहानुभूति प्रकट करना।"

शान्ति की बात चलने पर सुखिया की याद आ गयी। जमुना जी जाने से पूर्व कन्हाई ने उसे सर्वथा भग्नाश और हतोत्साह बस्ती के समीप बैठे देखा था। उसने उसके विषय में चन्द्रकला को बताया तो चन्द्रकला ने कह दिया, "भगौड़ी पकड़ा गया तो फांसी पा जाएगा और भाग गया तो कहीं

दूर जाकर ही बच सकेगा। सुखिया बेचारी दोनों ही अवस्थाओं में विधवा समान रह जाएगी।"

"मुझको उस पर दया आ रही है।"

"उसकी सहायता करनी चाहिये।"

"चाचा से बात करूंगा।"

कन्हाई जली हुई झुग्गियों के पास बैठे लोगों का समाचार लेने जा जा पहुंचा। वहां एक घटा भर ठहर और उनको सहायता का आश्वासन दे वह पूसा रोड वाली कोठी पर लौट आया। चन्द्रकला ने गाय के तबेले पर अधिकार कर उसको रहने के योग्य बना लिया था। तबेले के द्वार पर फाटक नहीं था। इसके द्वार पर एक तिरपाल टंगी थी जो सर्दी की ऋतु में गाय को सर्दी से बचाने के लिये लटका दी जाती थी और गर्मी के दिनों में उठा दी जाती थी। वैसे तबेला एक साधारण कमरे के बराबर था और इसमें पीछे की ओर रोशनदान भी था। कोठी बनाते समय गणपतराय के पिता लखपतराय का विचार एक गाय रखने का था, परन्तु नई दिल्ली म्यूनिसिपल कमेटी ने कोठी में गाय रखने की स्वीकृति नहीं दी और तब से यह स्थान गोदाम बना हुआ था। सरस्वती ने इसे खाली करवा दिया था।

कन्हाई बस्ती से लौटा तो चन्द्रकला ने कह दिया, "बाबू जी! आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। पहिले वहां हो आइये। पीछे आकर भोजन करियेगा।"

गणपतराय अपने स्टडी रूम में बैठा था। सरस्वती भी वहां बैठी थी। ये दोनों पिछले दिन के झगड़े की पूर्ण कहानी चन्द्रकला से सुन चुके थे। और वे यही विचार कर रहे थे कि चन्द्रकला को कोठी में रखने से उनकी बदनामी क्या रूप ले सकती है। गणपतराय कभी मन में विचार करता था कि शीघ्रातिशीघ्र कन्हाई और उसकी पत्नी से अपना सम्पर्क छोड़ दे, परन्तु फिर मन में विचार करता था कि इस आरोप में कुछ भी तथ्य नहीं। इस झूठ का यह प्रतिकार तो उसको और भी बदनाम कर देगा। लोग

इसका यह अर्थ लेंगे कि सत्य ही दाल में कुछ काला है। इस विचार से वह अपने मन को दृढ़ कर सरस्वती की योजना को ठीक समझने लगा था।

सरस्वती ने स्वेच्छा से ही चन्द्रकला को कोठी में ही रह जाने का प्रबन्ध कर दिया था। गणपतराय को सरस्वती ने कन्हाई और भगौड़ी के झगड़े की पूर्ण कथा भोजन करते समय बतायी थी। भोजनोपरान्त गणपतराय ने यह कहा था, "तुम समझती हो कि इनको यहां नहीं रखना चाहिये क्या ?"

इस पर तो सरस्वती ने चन्द्रकला के गाय के तबेले में रहने की बात बता दी। उसने कहा, "मैंने तो उसको कम से कम छः-सात महीने तक यहां रहने के लिए कह दिया है।"

इस पर गणपतराय गम्भीर विचार में मग्न हो गया और इसी विचार में वह अपने स्टडी रूम में चला आया था। सरस्वती अपने पति के मन की अवस्था को जानने के लिये उसके पीछे-पीछे वहां आ पहुंची थी।

दोनों में खुल कर बात हुई थी। सरस्वती ने पूछा, "आप किसके सम्मुख बदनामी से डरते हैं ?"

"सबसे पहले इसका तुम्हारे मन पर प्रभाव की चिन्ता कर रहा हूँ।" तुम कहीं यह न समझने लगो कि मैं वास्तव में कन्हाई की सहायता उसकी पत्नी के कारण कर रहा हूं।"

"तो क्या मैं कन्हाई और उसकी पत्नी की सहायता आप से कम कर रही हूं। मैं समझती हूँ कि आपको मेरी आपके प्रति निष्ठा पर सन्देह करने में कोई कारण नहीं है।"

"फिर पिता जी है, भाई हैं और भाभी इत्यादि भी तो है।"

"मैं उनको ऐसा नहीं मानती। इस पर भी सुदर्शन बहिन तो चन्द्रकला से मुझसे भी अधिक स्नेह रखती हैं।"

"बाहर के लोग भी हैं।"

"आज आपको क्या हो गया है। जो एक व्यर्थ की बात की चिन्ता

करने लगे हैं। जिसका अस्तित्व ही नहीं उसका काल्पनिक भूत सामने खड़ा कर आप अपने व्यवहार का निश्चय कर रहे हैं।"

गणपतराय सरस्वती के कथन की सत्यता को समझने लगा था। इस पर उसने अन्तिम बात कह दी, "देखो सरस्वती ! हम अपनी बदनामी से न भी डरें, परन्तु अपने लोगों में कन्हाई और उसकी पत्नी की जो निन्दा आरम्भ हुई है वह उसको कष्ट दे सकती है। वह इस समय विवश हो हमारा आश्रय पाकर कृतज्ञता अनुभव करेगा, परन्तु कालान्तर में यह बदनामी चन्द्रकला, उसकी होने वाली सन्तान के विषय में एक काली रेखा छोड़ सकती है।"

"अपने विषय में उनको स्वयं विचार करने दीजिये। अधिक से अधिक आप कन्हाई को सतर्क कर सकते हैं। मैं समझती हूं कि कन्हाई समझदार व्यक्ति है। वह इस प्रकार के झूठे आरोपों से अपनी प्रगति को अवरुद्ध नहीं कर लेगा। मुझे विश्वास है कि यदि आप उसको स्वतन्त्रता से विचार करने देंगे और अपने संशय वर्णन नहीं करने देंगे तो वह मेरे प्रबन्ध को स्वीकार करेगा और इसके लिये वह आपका जीवन भर कृतज्ञ रहेगा।"

जब कन्हाई चन्द्रकला के कथनानुसार बाबू गणपतराय के सामने उपस्थित हुआ तो गणपतराय ने उसे सामने बैठा कर पहिले तो उसके श्वसुर के परिवार के विषय में पूछा। फिर भगौड़ी के पकड़े जाने के विषय में प्रश्न किया। अन्त में कहा, "सुमित्रा की माता जी ने तुम्हारे रहने का जो प्रबन्ध किया है, वह कैसा लगा है ?"

"बाबू जी ! मैं माता-पिता विहीन बालक था। भाई, भावज से तंग आकर घर से निकल आया। अब तो आप ही मेरे मां-बाप हैं। मैं आपके अहसान से जीवन भर आपकी सेवा करके भी अपने को मुक्त नहीं मान सकता। मेरे पूर्व जन्म के कोई बहुत ही शुभ कर्म उदय हो रहे हैं जो आपकी कृपा दृष्टि मुझ पर पड़ी है।"

"खैर ! यह तो कुछ ऐसा ही प्रतीत हो रहा है कि पूर्व जन्म के कोई

संस्कार ही हमको सम्पर्क में लाये हैं; परन्तु मैं यह पूछ रहा हूँ कि तुम चन्द्र के विषय में अपने लोगों में निन्दा को किस दृष्टि से देखते हो ?"

"बाबू जी, संसार के लोग अपनी भ्रम पूर्ण कल्पनाओं में फंसे हुए ऐसी बातें किया करते हैं। इनकी चिन्ता व्यर्थ है। चन्द्र के माता-पिता उसके विषय में इस प्रकार के विचार की कल्पना भी नहीं कर सकते। बस वे ही मेरे लोग हैं। मुझको अन्य किसी की चिन्ता नहीं।"

"चन्द्र को," गणपतराय ने बात और स्पष्ट कर दी, "अभी कुछ महीनों के लिये यहीं रहना चाहिये। यहां उसकी देख-रेख भली-भांति होगी। इस पर भी यदि उसके माता-पिता उसे अपने पास रखना चाहें तो तुम्हारी इच्छा है।"

इस समय कन्हाई ने कह दिया, "जहां तक मुझे पता है, यह कोठी आपके पिता जी की है और इस स्थान का जो आपने हमें रहने को दिया है भाड़ा बहुत अधिक होगा। मैं अपनी आय में से इतना कुछ दे नहीं सकूंगा। आप अपने पिता जी से मेरी सिफारिश कर दीजियेगा कि जो कुछ अपनी सामर्थ्य के अनुसार मैं दूं वे स्वीकार कर लें।"

कन्हाई को किराये के विषय में इस प्रकार बात करते देख गणपतराय और सरस्वती चकित रह गये। फिर एकाएक उनको हंसी आ गयी। हंसते हुए उन्होंने कहा, "हां, सिफारिश कर दूंगा, परन्तु तुम्हारी सामर्थ्य कितनी है ?"

"बीस रुपये मासिक तो सुगमता से दे सकूंगा। इससे अधिक कुछ खींच-तान कर निकाल सकूंगा।"

"अच्छी बात है। मैं पिता जी के विचार जानकर बताऊंगा। तुम ठीक कहते हो कि कोठी के मालिक वे हैं। सरस्वती नहीं है।"

सरस्वती ने गाय का तबेला खाली करने से पूर्व अपनी जेठानी और सास सदारानी से पूछ लिया था। उन दोनों की सम्मति से ही उसने यह स्थान चन्द्रकला को रहने के लिये दिया था। इस पर भी जब उसके पति ने

कहा कि वे अपने पिता से पूछ कर बतायेंगे तो वह चुप कर रही।"

इसके कई दिन पीछे की बात है। सब परिवार एकत्रित हो रहा था। रविवार का दिन था। सब मध्याह्न का भोजन कर चुके थे और ड्राइंग रूम में बैठे थे। चन्द्रकला तो वहां नहीं थी, परन्तु कन्हाई एक ओर बैठा था। एकाएक गणपतराय ने अपने पिता से कन्हाईलाल की ओर संकेत कर पूछ लिया, "कन्हाई कहता है कि गोशाला का भाड़ा तो बहुत अधिक है। इतना वह दे नहीं सकेगा। वह चाहता है कि मैं आपसे सिफारिश करूं कि आप उतना ही स्वीकार कर लें जितना वह अपनी आय में से दे सकता है।"

गणपतराय ने कह दिया, "ठीक है। अभी तो इसको यहां रहते महीना पूरा नहीं हुआ। जब होगा तब हम हिसाब कर लेंगे कि कुछ लेना बनता है अथवा देना बनता है। मैं तो यह समझता हूँ कि दिल्ली की आबादी बढ़ रही है और चोरियां अधिक होने लगी हैं। कन्हाई और उसकी स्त्री के यहां रह जाने से हमको चौकीदार रखने की आवश्यकता नहीं रही। इसलिए चौकीदार का वेतन कितना होना चाहिये और इस तबेले का भाड़ा कितना लेना चाहिये? फिर विचार कर लेंगे।"

इस प्रकार बात समाप्त हो गयी।

# द्वितीय परिच्छेद

: १ :

इस प्रकार की उदार सहायता मिल जाने पर भी बस्ती वालों की कन्हाईलाल के विरुद्ध भावना मिटी नहीं। आग लगने के दूसरे दिन कुछ लोग तो थाने में गये। ये प्राय: वे थे जो भगौड़ी से सहानुभूति रखते थे और कुछ सोमू के साथ जाकर कन्हाई से एक सौ रुपया झुग्गियां बनाने के लिये ले आये। सोमू ने भी अपने भाग का एक सौ रुपया दे दिया। सोमू ने विचार कर लिया था कि वह इस बस्ती को छोड़ देगा। मोदू इत्यादि को दो सौ रुपया देने के साथ ही उसने कह दिया था, "मैंने अपनी झुग्गी नहीं बनवानी।"

"क्यों ?"

"मैं अब यहां नहीं रहूँगा।"

"किसलिये ?"

"देखो मोदू ! मेरा तुम लोगों से क्या सम्बन्ध है ?"

मोदू और सुन्दर बांस फूस इत्यादि लेने के लिये जाने वाले थे। वे सोमू का मुख देखते रह गये। मोदू को यह बात समझ नहीं आ रही थी कि यदि सोमू को उनके साथ रहना नहीं था तो यह रुपया किसलिये दिया है ? कन्हाई के विषय में तो वे समझ रहे थे कि वह अपनी बीवी की बिक्री करता हुआ उनमें रह सकता ही नहीं, परन्तु सोमू चाचा के विषय में वे समझते थे कि उन्हें उनके साथ रहने में राजी होना चाहिये। परन्तु जब सोमू ने पूछा कि उनका उससे क्या सम्बन्ध है तो वे समझ गये कि सिवाय

इसके कि उनको इकट्ठे रहते हुए दो वर्ष से ऊपर हो चुके हैं अन्य कुछ भी नहीं है। सोमू बीकानेर रियासत का रहने वाला था। और सुन्दर जयपुर का।

जब वे अवाक् मुख देखते रह गये तो सोमू ने ही अपने मन की बात कह दी, "कोई सम्बन्ध नहीं न। दो राही चलते-चलते एक रात के लिये एक सराय में ठहर गये थे। मैं समझता हूँ कि आगे हमारा मार्ग एक नहीं है। एक हो भी नहीं सकता।"

"तो चाचा ! कहां जाओगे ?" मोदू ने पूछ लिया।

"मैं यहां के ठेकेदार का काम छोड़ कहीं अन्यत्र काम ढूंढने जा रहा हूँ। जहां काम मिलेगा वहीं सिर छुपाने को स्थान बना लूंगा।"

सुन्दर ने कहा, "मोदू चलो। सत्य का तेज इतना प्रबल है कि बिरले ही इसको सहन कर सकते हैं।"

मोदू कुछ न समझता हुआ सुन्दर के साथ चल पड़ा। शाम तक झोपड़े बनाने का सब सामान आ गया था और बस्ती के लोग भूमि साफ कर रहे थे। उनका विचार अगले दिन सब मिलकर झुग्गियां बनाने का काम करने का था।

पुलिस थाने में गये लोग भी दिन भर वहां बैठ कर लौटे थे। पुलिस वालों ने उनके बयान लिखे थे। उनको डांटा-डपटा भी था, परन्तु इनमें से कोई भी आदमी भगौड़ी के विरुद्ध कुछ कहने को तैयार नहीं हुआ था। कन्हाई को भी थाने में बुलाया गया था। उसने झगड़े की बात तो बताई थी परन्तु उसने स्पष्ट कह दिया था कि वह भगौड़ी से इस प्रकार के कार्य की न तो आशा करता है और न ही वह उस पर शक करता है।

पुलिस अब भगौड़ी की खोज में थी। उसके काम पर पुलिस के लोग गये थे। परन्तु वह मिला नहीं था।

सायंकाल तक सोमू अपने बर्तन राख में से बटोर अपनी पत्नी और लड़के के साथ बस्ती छोड़ गया था। उसको मज़दूरों के ठेकेदार के द्वारा

निजामुद्दीन में काम मिल गया था। वहीं उसने एक खाली जगह पर अपना झोपड़ा बनाने का प्रबन्ध कर लिया था।

मोदू अभी दिन भर घूमने की थकावट दूर ही कर रहा था कि शादीपुर के बनिये के साथ कुछ सफेद पोश वहां आ पहुंचे। बनिये ने मोदू को उनके सामने बुला कर बताया, "बाबू साहब ! इसके दोनों बच्चे इस आग में जल गये हैं।"

आने वाला मदनलाल नाम का एक व्यक्ति था। स्वराज्य काल से पूर्व वह पंजाब रावलपिंडी का रहने वाला था और कांग्रेस का काम किया करता था। और अब वह स्वराज्य काल की राजनीति में भाग लेने लगा था। वह दिल्ली कांग्रेस कमेटी का सदस्य बन गया था और आगामी म्युनिसिपैलिटी के चुनावों में एक प्रत्याशी बनने का विचार रखता था। उसने अपना मकान देवनगर में बना लिया था और दिल्ली की इस नयी बस्ती की ओर से खड़ा होना चाहता था।

शादीपुर का बनिया घनश्याम मदनलाल का सहायक था। इस कारण वह उसे इन कठिनाई में फंसे लोगों के पास लाया था।

मदनलाल ने मोदू से सहानुभूति प्रकट की और फिर कह दिया, "किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो तो बताना।"

"साहब !" मोदू ने बात समझते हुए कहा, "हमारे पास तो कुछ भी नहीं। एक सज्जन से एक सौ रुपया, पांच रुपये सैंकड़ा पर ऋण लेकर यह घास-फूंस एकत्रित कर रहे हैं। इतने से काम बनता दिखाई नहीं देता और फिर कपड़ों की सबसे बड़ी समस्या है।"

"इतने मंहगे व्याज पर रुपया क्यों लिया है ?"

"जब और किसी से नहीं मिला तो इस आदमी से लिया है।"

"अच्छा। मैं तुम लोगों को कुछ दिये जाता हूं। वह रुपया उसको वापिस कर दो। एक रुपया सैंकड़ा सूद से अधिक मत देना। यदि वह एक दिन के लिये एक रुपया लेकर संतोष न करे तो फिर मेरे पास आना। मैं

तुम सबके कपड़ों के लिये कुछ और दूंगा।" इतना कह कर मदनलाल ने अपने साथ आये एक अन्य व्यक्ति को कहा, "इनको सवा सौ रुपया अभी दे दो।"

मोदू ने रुपया ले लिया और कहा, "अगर उस पठान के बच्चे ने रुपया वापिस न लिया तो मैं आपके पास हाजिर हो जाऊंगा।"

"हां, हां, चले आना। मैं उसको हवालात में भिजवा दूंगा।"

ये लोग गये तो मोदू ने बस्ती वालों को रुपये की बात बता दी। सोमू और कन्हाई से लिये दो सौ रुपये में से भी अभी पचास रुपये बचे थे। इस कारण इस नयी रकम से तो सब विचार करने लगे कि इस रुपये का सदुपयोग कैसे किया जाये। सुन्दर का सुझाव था कि जब झोपड़े बन जायें तो एक दिन जलसा किया जाये और उस दिन खाना-पीना तथा दारू का प्रबन्ध किया जाये।

इस प्रकार निश्चय कर सब प्रसन्न थे। मोदू के बच्चों के जल जाने का परिणाम यह हुआ था कि वह बस्ती का चौधरी बन गया। कन्हाई इत्यादि से मिले रुपयों में से बचे रुपये उसके पास जमा थे। अब यह सवा सौ रुपया भी उसके पास ही रहा।

अगले दिन वे बांसों को काट ठट्ठर बांध रहे थे कि एक सिक्ख सज्जन सरदार भजनसिंह अपने साथ पांच-छः आदमियों को लेकर आया तो मोदू को फिर उसके सम्मुख उपस्थित किया गया। भजनसिंह ने भी उससे सहानुभूति प्रकट की और आवश्यकता के विषय में पूछ लिया। मोदू समझ गया कि उनसे भी कुछ तो मिल सकेगा। इस कारण उसने सरदार भजनसिंह के सम्मुख अपने साथियों की कठिनाई का वर्णन कर दिया। सरदार भजनसिंह ने कहा, "तुम मेरे मकान पूसा रोड पर सायं पांच बजे के बाद आजाना और मैं तुम लोगों के लिये कुछ कपड़ों का प्रबन्ध कर दूंगा।"

इन आश्वासनों से उत्साहित हो मोदू, अपना झोपड़े बनाने का काम अन्य बस्ती वालों को सौंप स्वयं दान-दक्षिणा का रुपया बटोरने चल ड़पा।

वह बारह बजे के लगभग मदनलाल के मकान का पता कर वहां जा बैठा। वहाँ से लगभग एक सौ रुपया और प्राप्त कर वह सायं चार बजे भजनसिंह की कोठी पर जा पहुंचा। वहां से तो दो सौ रुपये मिले। इस प्रकार रात के आठ बजे वह अपनी बस्ती में पहुंचा तो उसने देखा कि झुग्गियों का आधे से अधिक काम हो चुका था।

मोदू ने अपनी दिन भर की कारगुजारी सुनायी तो बस्ती वालों को यह समझ आया कि भगौड़ी का झुग्गियों को आग लगा फूंक देना उनके लिये वरदान बन गया है। इस साझे खाते से मोदू ने सब के खाने-पीने का प्रबन्ध कर दिया और अगले दिन झुग्गियों का काम समाप्त हुआ तो रुपये के बंटवारे का प्रश्न उपस्थित हो गया। कुल पन्द्रह झोपड़े बने थे और उनमें चालीस के लगभग सज्ञान रहते थे। झोपड़े बन जाने पर और दो दिन के खाने-पीने का खर्चा देकर साढ़े चार सौ के लगभग रुपया बचा था। इसमें से भोज-शराब के लिये सौ रुपया पृथक् रख कर शेष साढ़े तीन सौ को सज्ञानों में बांटने का विचार कर दिया गया। चेतू ने कह दिया, "मैं आपके इस रुपये में से कुछ नहीं लूंगा। न ही मैं आपके खाने-पीने में सम्मिलित होऊंगा।"

"क्यों?"

"मैं अपने दो हाथों की कमाई पर ही जीना चाहता हूं। मैंने अपनी झुग्गी पर स्वयं ही रुपया व्यय किया है।"

"तो तुम हमारी बिरादरी में शामिल होना नहीं चाहते?"

"वह तो परमात्मा ने शामिल कर रखा है। मैं आप लोगों के साथ ही काम करता हूं। आपकी झुग्गियों के साथ मेरा भी झोपड़ा जला है। मैं आपसे बाहर कैसे हो सकता हूँ, परन्तु मैं आपकी दावत में सम्मलित होकर शराब नहीं पीयूंगा। कारण यह कि जो कुछ हुआ है वह खुशी की बात नहीं है। वह एक भयंकर घटना हुई है। उसके लिये खुशी की आवश्यकता नहीं। साथ ही हम सब मेहनती हैं। हमको किसी से भिक्षा न मांगनी चाहिये थी

न ही लेनी चाहिये थी। हम भिखारी नहीं हैं।"

सब चेतु का मुख देखते रह गये। उनको समझ आया कि वह उनसे विलक्षण जीव है। इस पर सुन्दर ने पूछ लिया, "यदि तुम ऐसा समझते हो तो तुम सोमू चाचा के साथ चले क्यों नहीं गये ?"

"मैं ठेकेदार रामदयाल का काम करता हूँ। मुझे वह मालिक पसन्द आया है। मैं उसका काम छोड़ना नहीं चाहता था। सोमू चाचा की बात दूसरी थी। वे अपने दामाद के नीचे काम करते संकोच अनुभव कर रहे थे। कन्हाई रामदयाल की मुन्शीगीरी करने लगा है। मेरे साथ ऐसी कोई बात नहीं।"

चेतु के मन की भावना को कौन-कौन समझ सका कहना कठिन था। हां, उसकी बात का किसी ने उत्तर नहीं दिया। उन्होंने समझा कि उनकी दावत के कोष में बीस रुपये और अधिक हो गये हैं। सब चुप रहे और एक दिन खूब खाना-पीना हुआ और इतनी शराब पी गयी कि अगले दिन सिवाय चेतु और उसकी मां के अन्य कोई काम पर नहीं गया।

चेतु ने सब बात कन्हाई को बतायी तो उसे ऐसे लोगों को रुपये देने का पश्चात्ताप होने लगा, परन्तु थूक कर चाटने का स्वभाव उसका नहीं था, वह चुप रहा।

हां, इस घटना का एक परिणाम हुआ कि चेतु के लिये कन्हाई और उसके द्वारा रामदयाल के मन में सद्भावना बनने लगी। कन्हाई ने चेतु को बाबू गणपतराय से कह कर सरकारी नौकर करवा दिया। वह मज़दूरों पर मेट के रूप में गणपतराय के अधीन सरकारी नौकरी पा गया। साठ रुपये महीना और रहने को 'ई' क्लास का क्वार्टर जिसका भाड़ा तीन रुपया महीना था, मिल गया। गणपतराय ठेकेदारों के काम की पैमाइश करते समय उसको साथ रखता था। इस प्रकार चेतु को ठेकेदार प्रसन्न रखने लगे।

समय पर चन्द्रकला के लड़का हुआ। चन्द्रकला ने प्रसव हस्पताल

जाकर किया और पांच दिन के उपरान्त गरणपतराय की कोठी पर लौट आयी। दस-पन्द्रह दिन के विश्राम के उपरान्त वह पुनः गरणपतराय के घर का काम-काज वैसे ही करने लगी जैसे पहले किया करती थी।

इस सब काल में सोमू इत्यादि अपनी लड़की और दामाद से मिलने आया करते थे और वे कन्हाई की उन्नति के समाचार सुन प्रसन्न हुआ करते थे।

लड़का होने के उपरान्त चन्द्रकला के घर लौटने पर सोमू, नीमो और मोहन आये थे। वे मोहन की सगाई वहां अपने साथ काम करने वाले एक मज़दूर की लड़की से होने की सूचना देने लगे। चन्द्रकला इससे बहुत प्रसन्न थी। इधर कन्हाई ने बता दिया, "चाचा! हमारे जीवन ने भी करवट ली प्रतीत होती है।"

"क्या हुआ है?"

"एक बात तो यह सामने देख रहे हो।" उसने चन्द्र की गोदी में बच्चे की ओर संकेत कर दिया।

"और इसके आने के साथ भगवान् ने भी एक कृपा की है। ठेकेदार रामदयाल को एक सहस्र रुपये की आवश्यकता थी। वह जानता था कि मेरे पास रुपया है। उसने वह रुपया ऋण के रूप में मांगा तो मैंने इन्कार कर दिया। उसने कारण पूछा तो मैंने बताया, मैं तो इससे कोई कारोबार करना चाहता हूं। उसने पूछा, "पर एक हजार रुपये से क्या कारोबार करोगे?"

"मैंने कह दिया, मेरे पास डेढ़ हजार हैं। बाबू जी की सहायता से कोई छोटा-मोटा ठेका लेने का विचार है।

इस पर ठेकेदार ने कह दिया, यह तो कुछ नहीं। पांच हजार डालो तो मैं तुमको अपने साथ बराबर का पत्तीदार बना सकता हूं।

"मैंने कह दिया मेरे पास इतना रुपया हैं नहीं। ठेकेदार बोला, अभी यह रुपया व्याज पर दे दो। जब काम के लायक होगा तो काम भी कर

सकोगे।

"मैंने कहा, बाबू जी से पूछ कर दे सकता हूं।

इस पर ठेकेदार मुझे ले कर बाबू जी के सामने आया तो उन्होंने ठेकेदार को बताया कि मुझे तो खुदाई का ठेका महरौली की सड़क पर मिलने वाला है। उन्होंने यह भी कह दिया कि यदि वह मुझे तीसरे भाग का भागीदार बना ले तो मैं अढ़ाई हजार दे सकता हूं। ठेकेदार मान गया है। मैंने डेढ़ हजार उसको दे दिया है और एक हजार रुपया बाबू जी ने मुझे उधार देने का वचन दिया है। यह एक हजार लिखत-पढ़त हो जाने पर दिया जायेगा।

"इस प्रकार चाचा ! मैं दो दिन से रामदयाल ठेकेदार का पत्तीदार हो गया हूं। अभी वह मुझको डेढ़ सौ रुपया महीना खर्च में देगा। स्वयं वह तीन सौ निकालता है। पटेल नगर और देवनगर की सड़क का काम मेरे हवाले कर वह नया काम लेने का यत्न कर रहा है।"

सोमू कन्हाई की बात सुन कर चकित रह गया। एकाएक वह उठा और कन्हाई को पकड़ खड़ा कर उसे गले मिलने लगा। इस प्रकार अपने मन के उद्गार प्रकट कर कहने लगा, "कुछ परमात्मा का धन्यवाद किया करो। यह सब कुछ उसकी कृपा का फल ही है।"

"करता हूँ। चाचा कल मंगलवार था और चन्द्र ने कहा कि मुझे हनुमान जी का चढ़ावा चढ़ाना चाहिये। मैं नयी दिल्ली के हनुमान जी के सामने चढ़ावा चढ़ा आया हूं।

"वहां से लौटकर बाबू जी और बबुआइन को प्रसाद देने गया तो उन्होंने आशीर्वाद दिया। वे स्वयं तो हनुमान जी को नहीं मानते। इस पर भी उन्होंने प्रसाद लिया और खाया था।"

"तो वे किस देवता की पूजा करते हैं ?"

"वे आर्य समाजी हैं। वह देवी देवताओं के मन्दिर में नहीं जाते।"

"तो तुम उनके देवता का भी पूजन कर दो। बेटा, परमात्मा से उतर

कर उनकी ही कृपा माननी चाहिये।"

"वे कह रहे थे कि मुझे लड़के का नाम करण करना चाहिये। अगले रविवार को वे अपने पंडित को बुलाकर अपने ढंग से पूजा करा कर इस बच्चे का नाम रखायेगें। इस प्रकार उनके देवता का भी पूजन हो जायेगा। वे कहते थे कि उनका देवता तो देवों का देव महदेव है।"

"तो यह बात है। वे शिव के उपासक हैं। ठीक है, वे बहुत बड़े देवता हैं। तभी तो बाबू भी इतने बड़े हैं।"

उसी दिन सांयकाल कन्हाई ने अपने श्वसुर की बात बाबू गरणपतराय को बतायी तो वे खिलखिला कर हंस पड़े। कन्हाई उनके हंसने का कारण नहीं समझ सका। इस कारण उनका मुख देखने लगा। गरणपतराय ने कह दिया, "सोमू चाचा ठीक समझा है कि हमारा इष्ट देव देवताओं का भी देवता है। वह महादेव है। वह इतना बड़ा है कि किसी मन्दिर में वह समा नहीं सकता। इस कारण हमने उसका देव मन्दिर नहीं बनाया। इस पर भी जहां हम उसकी पूजा करते हैं वहां वह उपस्थित हो जाता है।"

: २ :

कन्हाईलाल तथा रामदयाल ने एक कम्पनी की रजिस्टरी करवा ली। उसमें दो भाग रामदयाल के थे और एक भाग कन्हाईलाल का था। पूर्ण पूंजी साढ़े सात हजार की थी। इसमें कन्हाईलालने ढ़ाई हजार दिया था। लिखत-पढ़त होने पर काक चलने लगा। कम्पनी का नाम था बीकानेर कन्स्ट्रक्शन कम्पनी। रामदयाल ने भागदौड़ कर एक काम विश्वविद्यालय क्षेत्र में ले लिया। यह भी सड़क बनाने का था। उसने अनुभव किया कि एक तिहाई का कन्हाईलाल को भागीदार बना कर उसने अपना काम दुगना कर लिया है और कन्हाईलाल समझता था कि उसको उन्नति करने का मार्ग मिल गया है। दोनों इमानदारी और मेहनत से काम करने लगे थे।

परन्तु गरणपतराय के कार्यालय में काम सरलता से नहीं चल रहा था। गरणरतराय अपने अधिकारी शिवाराव को प्रसन्न नहीं रख सका। शिवा-

राव दिल्ली के पश्चिमी क्षेत्र का सब-डिविज़नल अफसर था। उसके अधीन पांच ओवरसीयर काम कर रहे थे और स्वराज्य होने के उपरान्त नगर निर्माण का कार्य बहुत तीव्रता से चल रहा था।

चारों के चारों ओवरसीयर एस० डी० ओ० महोदय को कई प्रकार से प्रसन्न किया करते थे। गणपतराय नियम से, जो कुछ उसको ठेकेदारों इत्यादि से मिलता था, उसको दे देता और इससे अधिक वह कुछ नहीं करता था। शिवाराव इससे प्रसन्न नहीं था।

एक दिन शिवाराव ने गणपतराय को संकेत भी किया। गणरतराय एस० डी० ओ० की कोठी पर गया हुआ था। गणपतराय ने किसी ठेकेदार के विषय में अपनी रिपोर्ट दी थी।

"सर! उसके बीस हजार के बिल पास होने चाहिएं। वह प्रत्येक प्रकार से इनके मंजूर किये जाने का अधिकारी है।"

एस० डी० ओ० ने कह दिया, "हां, मिस्टर साहनी आया था। वह एक अच्छा आदमी है। उसके विषय में कल मुझे कार्यालय में स्मरण कराना।

"परन्तु गणपतराय! यह देखो कपूर हमको यह प्रेज़ैन्ट दे गया है। गणपतराय ने देखा एक अर्थ नग्न स्त्री का संगमरमर का डेढ़ फुट ऊंचा बुत था। वह बुत साहब के ड्राईंग रूम में चिमनी पर सजा कर रखा हुआ था। कपूर गणपतराय का साथी ओवरसीयर था।

गणपतराय ने बुत देखा। उसने कह दिया, "बहुत सुन्दर है।"

"मैंने उसका नाम एस० डी० ओ० के ग्रेड के लिये सिफारिश कर ऊपर भेज दिया है।"

"आप सत्य ही बहुत दयालु है।"

"हम तुमको उससे ज्यादा लायक समझते हैं।"

"तो मेरे नाम की भी सिफारिश की होगी?"

"नहीं अभी नहीं। मैं विचार कर रहा हूं। हमारी मिसेज़ कहती थीं

कि तुम्हारी कोई ऐसी यादगार यहां नही है।"

"सर ! मैं समझता हूं कि इस तस्वीर का मूल्य पांच सौ रुपये के लगभग है।"

"हाँ ! हमने पता किया है। वह जयपुर से इसे साढ़े पांच सौ में लाया है।"

"श्रीमान ! मेरे पास तो इतने रुपये जमा होने में एक वर्ष से ऊपर लग जाते है। दिन प्रतिदिन मंहगाई बढ़ रही है और वेतन में गुज़र कठिनाई से होता है।"

"तो क्या कपूर कोई घर का बहुत अमीर आदमी है?"

"वैसे तो मेरे पिता भी कुछ सम्पति रखते हैं। उनका कारोबार भी चलता है, परन्तु वे मुझको इस प्रकार भेंट देने के लिये कुछ देंगे नहीं।"

"क्यों ? उनको अपने लड़के की उन्नति में रूचि नहीं है ?"

"साहब ! रूचि तो है परन्तु वे यह चाहेंगे कि पहले उन्नति मेरी योग्यता के कारण हो जाये तो तब वे उस खुशी में आपकी किसी प्रकार से सेवा करने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे।"

"वे व्यापारी आदमी प्रतीत नहीं होते। अच्छी बात है। हम विचार करेंगे।"

इस विचार का परिणाम गणपतरायको इस घटना के तीन महीने पीछे पता चला। एकाएक उसको एक सरकारी पत्र मिला। उस पत्र में लिखा था,

"गणपतराय ओवरसीयर के भारी रिश्वत लेने की शिकायत अधिकारियों को मिली है। उसके विषय में जांच करने के लिए श्री सी० शिवाराव को आरोपों की फाइल भेजी जा रही है। गणपतराय को अपनी सफाई के लिए मिस्टर शिवाराव के सामने उपस्थित होना चाहिए।"

गणपतराय पहले तो पत्र पढ़कर स्तब्ध रह गया। परन्तु शीघ्र ही मिस्टर कपूर द्वारा दिये गए संगमरमर के बुत की बात स्मरण कर वह खिलखिला कर हंस पड़ा। कपूर की भेंट की बात हुए तीन महीने हो चुके

थे। गणपतराय विचार करता था कि शिकायत के विषय में निर्णय होते बहुत देरी लगाई गई है। इस समय तक कपूर की उन्नति हो चुकी थी।

जिस दिन शिवाराव ने गणपतराय को कपूर की सिफारिश करने की बात बताई थी, उसी दिन गणपतराय ने अपने पिता को उससे हुआ पूर्ण वार्तालाप सुना दिया था। रणपतराय ने पूछ लिया था, "और तुम क्या चाहते हो ? वैसे तो मैं एक हजार रुपए तक ऐसे काम के लिए व्यय कर सकता हूं।"

गणपतराय का कहना था, "पिताजी ! मैं इन अफसरों को प्रसन्न करने का तरीका तो जानता हूं। मैंने बीसियों बार ठेकेदारों की एस० डी० ओ० साहब को नज़र न्याज़ देने की राय दी है, परन्तु मैं स्वयं कुछ लेता नहीं और मैं कुछ देता नहीं। इस समय मेरे सामने यह प्रश्न उपस्थित होता है कि मुझे भी दूसरे ओवरसियरों की भांति लेना-देना आरम्भ करना है अथवा नहीं। आखिर आप से कर लेकर कब तक काम चल सकता है। यह तो एक प्रथा का प्रश्न है। मैंने अभी तक इस प्रथा का पालन करने का निश्चय नहीं किया।"

"तो निश्चय कर लो। नहीं तो नौकरी छोड़ने के लिए तैयार हो जाओ।"

"मैं नौकरी छोड़ूंगा नहीं। जगदीश काम सीखने अमेरिका गया हुआ है। उसे वहाँ से लौटने में दो वर्ष लगेंगे। तब तक मैं इस नौकरी में रहना चाहता हूं। उसके आने पर उसके साथ कारखाना खोलने का विचार कर रहा हूं।"

रणपतराय चुप रहा। मतलब यह था कि उसे लड़के के विचारों में दोष प्रतीत नहीं हुआ। गणपतराय को यह सब कुछ स्मरण आ गया, जब उसने उक्त पत्र पढ़ा। जब उसे चिट्ठी मिली वह सरकारी कार्यालय में बैठा था। उसने उसी समय पत्र का उत्तर ड्राफ्ट किया। उसे टाइप किया और पत्र लेकर शिवाराव के कमरे में जा पहुंचा।

गणपतराय ने दरवाज़े में से झांक कर पूछा, "मे आई कम इन सर ?"

शिवाराव ने सिर उठाकर गणपतराय को देखा तो कह दिया, "यस, कम इन।"

गणपतराय अफसर के सामने पहुंचा और उसने अपना टाईप किया हुआ पत्र शिवाराव के सामने मेज पर रख दिया।

उसने पत्र में लिखा था—

पत्र क्र···दिनांक···जिस पर हस्ताक्षर चीफ इन्जीनीयर साहब के हैं, मिला। उसके आदेशानुसार मैं श्री सी० शिवाराव जी के सामने उपस्थित हो यह प्रार्थना करता हूं कि मुझको मेरे विरुद्ध आरोपों की सूची दी जाए जिससे श्रीमान् द्वारा की जाने वाली जाँच में उचित सफाई उपस्थित कर सकूं।"

शिवाराव पत्र पढ़कर गम्भीरता पूर्वक विचार कर बोला, "तो तुम चाहते हो कि तुम्हारे विपरीत रिपोर्ट पर मैं जांच करूं ?"

"चीफ इन्जीनीयर साहब का हुक्म है। आप इन्कार कैसे करेंगे ?"

'इस बात को छोड़ो। याद है। मैंने तीन चार महीने हुए तुमसे मिस्टर कपूर के विषय में कुछ कहा था ?"

"जी याद है।"

"मैं बहुत कुछ कर सकता हूं। कपूर पालम हवाई अड्डे वाले काम में लग गया है। वह मालामाल हो रहा है।"

"आप जो ठीक समझते हैं वह आपको करना ही चाहिए। मेरे पिता जी ने मुझको वही बात बताई थी जो मैंने आपके सामने अर्ज की थी। काम पहले और दाम पीछे।"

"तो जांच होगी।"

"मैंने आरोपों की सूची मांगी है।"

"तो जांच शुरु करने से पहले तुमको सस्पेंड करना पड़ेगा।"

"आपको अधिकार है।"

"ठीक है। जांच आरम्भ करने से पहले जो कुछ होना चाहिए, उसकी

प्रतीक्षा करो।"

अगले दिन गणपतराय को बिना किसी कारण अथवा आरोपों को बताए निलम्बित करने की आज्ञा जारी कर दी गई।

गणपतराय ने उस आज्ञा को अनुचित घोषित करने के लिए दिल्ली के सब जज के पास प्रार्थना कर दी। सरकार ने इसमें कोर्ट के हस्तक्षेप को अनुचित बताने के लिए कोर्ट में अपना वकील भेज दिया।

मुकद्दमा चल पड़ा। गणपतराय को निलम्बित कर उसके विरुद्ध आरोप तैयार करने शुरु हो गए। इन आरोपों की तैयारी करने के लिए शिवाराव ने मिस्टर जयदयाल कपूर को अपने घर पर बुलाया। कपूर शिवाराव के एहसान के नीचे दबा हुआ था और उसको एक बहुत ही लाभप्रद काम में एस० डी० ओ० के पद पर नियुक्त किया गया था। साथ उसको यह समझा दिया गया था जो लोग उसकी उन्नति कराने की सामर्थ्य रखते हैं वे उसको निकाल देने अथवा उसकी पदवी गिराने में भी सामर्थ्य-वान है।

अतः कपूर गणपतराय के विरुद्ध प्रमाण एकत्रित करने में लग गया। कपूर को सहायक मिल गया ननकू। ननकू का पूरा नाम नानकसिंह था। वह एक ट्रेड यूनियन संगठित करने के लिए नियुक्त कम्यूनिस्ट अधिकारी था। नानकसिंह पंजाब विश्वविद्यालय का स्नातक था और उसको रोजाना उज्रत पर काम करने वाले इमारती मजदूरों की यूनियन बनाने पर लगाया गया था। उसने अपना काम १९४८ में राजेन्द्रनगर में बन रहे क्वार्टरों पर काम करने वाले मजदूरों में आरम्भ किया। वह एक मजदूर के रूप में वहाँ काम करने लगा था। गणपतराय उस काम पर ओवरसीयर लगा था। एक दिन गणपतराय ननकू से बातचीत करने पर जान गया कि वह कोई पढ़ा-लिखा युवक है।

गणपतराय के अधीन मुन्शी ने यह शिकायत की थी कि एक ननकू ने मजदूरों को भड़का कर ठेकेदार को उसकी कमीशन देनी बन्द करा दी

है। परिणाम यह हुआ है कि नए मजदूरों की भरती दुर्लभ हो गई है।

इस पर गणपतराय ने ननकू को बुलाकर पूछा कि उसको ठेकेदार के विपरीत क्या शिकायत है? ननकू का उत्तर था, "गरीब मजदूरों की उजरत में से यह अपना हिस्सा ले लेता है।"

"पर वह उनकी सेवा भी तो करता है।" गणपतराय का कहना था।

"क्या सेवा करता है?"

"जब वे बेकार होते हैं तो उनके लिए काम ढूंढता है।"

"यह काम तो सरकार का हैं। जब उसे मज़दूरों की आवश्यकता हो तो वह मजदूर ढूंढ़े।"

"सरकार तो यत्न करती है, परन्तु मजदूर जो अनपढ़ हैं उनका संपर्क अफसरों से यह ठेकेदार पैदा करता है।"

"उसके लिए हम मजदूरों की यूनियन बना रहे हैं।"

गणपतराय इस कथन पर विचार करने लगा। हम कौन? फिर यूनियन केवल अपने सदस्यों को मजदूरी दिलाएगी अर्थात् जिस किसी को मजदूरी चाहिए, वह यूनियन का सदस्य बनने पर विवश होगा। दूसरे शब्दों में ठेकेदारी यूनियन करेगी। साथ ही ठेकेदारों से भी अधिक यह अन्य मजदूरों पर शासन करेगी। अपने सदस्यों से ठेकेदारी से अधिक चन्दा लेगी।

इसके साथ ही गणपतराय समझ गया कि ननकू साधारण मजदूरों से अधिक शिक्षित है। अतः उसने नीति का अवलम्बन कर कहा, "तुम ठीक कहते हो। यूनियन बन जाने से ठेकेदार की आवश्यकता नहीं रहेगी, परन्तु हम यूनियन को मज़दूरों की सप्लाई की मोनोपली नहीं दे सकते। यदि ठेकेदार कोई मजदूर लाएगा तो हम आवश्यकता होने पर उसके मजदूरों को रखेंगे।

"इस पर भी ननकू भाई! हम तुम्हारी योजना की सराहना करते हैं और तुम्हारी इस सूझ-बूझ के लिए तुमको 'मेट' नियुक्त करते हैं।"

"तो मैं सरकारी नौकर हो जाऊंगा ?"

"हां। अपने साथियों से पूछ लो। यदि स्वीकार हो तो कल हमको बताना। एक मेट का वेतन नब्बे रुपया महीना है। वह अपने मजदूरों के गैंग का सरगना होता है। प्रायः एक मेट के नीचे चालीस तक मजदूर होते हैं।"

"मेरे साथी नहीं हैं। मैं स्वयं ही निर्णय करने वाला हूं।" ननकू ने कहा।

गणपतराय ने मुस्कुराते हुए कहा, "यह तो अभी-अभी तुमने स्वीकार कि है याकि तुम अकेले नहीं हो। तुम्हारे साथ कुछ लोग और भी हैं। तुमने कहा था न कि हम लोग ट्रेड यूनियन बनाने का विचार रखते हैं। इस 'हम' से ही यह प्रकट होता है कि तुम्हारे अतिरिक्त कोई अन्य भी है।"

गणपतराय ने ननकू को मेट नियुक्त कर एक मार्केट पर जो मिठाई के पुल के समीप बन रही थी, नियुक्त कर भेज दिया।

ननकू ने देखा कि जो कुछ कार्य उसने राजेन्द्रनगर और पटेल नगर के कार्य पर मजदूरों में किया है, वह सर्वथा विनष्ट किया जा रहा है। उसने कह दिया, "साहब ! यदि मुझको मेट बनाना है तो पटेल नगर में रखा जाए। अन्यथा मैं मजदूर ही ठीक हूं।"

गणपतराय की समझ में आ गया कि यह कोई पढ़ा-लिखा समझदार व्यक्ति है। उसने पूछा, "तुम तो कोई उच्च शिक्षा प्राप्त युवक प्रतीत होते हो।"

ननकू मुस्कुराया और बोला, "तो क्या मजदूरी करने में यह शर्त है कि इस काम पर अनपढ़ ही रहें ?"

"नहीं। ऐसी कोई बात नहीं। इस पर भी एक शिक्षित को अशिक्षितों का काम करते देख साधनों का अपव्यय ही समझ में आया है।

"मैं समझ रहा हूं कि तुम क्लर्क बनने के योग्य हो, परन्तु उस पदवी पर मैं नियुक्त नहीं कर सकता। हां, तुम चाहो तो मैं तुम्हारी सिफारिश

कर सकता हूं।"

ननकू ने कहा, "यह आपकी मेहरबानी है। मुझको यदि मेट बनाना है तो इन लोगों पर बनाया जाए जिनके साथ मैं काम कर रहा हूं। नहीं तो मजदूर ही रहने दिया जाए।"

गणपतराय इस दृढ़ संकल्प युवक को अपने अंगूठे तले रखना चाहता था। इस कारण वह उसकी बात मान गया, परन्तु उसने मुन्शी को कह कर मजदूरों की भर्ती ठेकेदार द्वारा जारी रखी और उसे अपनी कमीशन प्राइवेट रूप में लेने के लिए कह दिया।

इससे ननकू चिढ़ गया और उसने गणपतराय की निन्दा आरम्भ कर दी। उसके काम में भगौड़ी जो उनकी यूनियन का सदस्य बन गया था, सहायक हो गया। भगौड़ी ने गणपतराय के घर एक मजदूर की पत्नी के जाने की बात बताई तो ननकू ने इस सूचना को प्रेम-कथा का रूप दे दिया।

इस प्रचार का परिणाम भगौड़ी का अपराधी बन जाना हुआ। एक ओर तो ननकू जो अब मेट बन चुका था भगौड़ी को छुपा कर रखने में संलग्न हो गया। दूसरी ओर वह गणपतराय के छिद्र ढूंढने लगा।

गणपतराय में छिद्र तो पता चले नहीं, परन्तु ननकू को इस यत्न में कुछ महकमा अधिकारियों से मिलने का अवसर मिल गया। इस संदर्भ में ही ननकू का सम्पर्क मिस्टर जे० डी० कपूर से बना था।

अब गणपतराय ने सरकार पर दावा किया तो कपूर शिवाराव से मिला और फिर उसने नानक सिंह से भेंट की।

: ३ :

शादीपुर के समीप वाली मजदूरों की झुग्गी बस्ती में आबादी बढ़ गयी थी। इसमें अब झुग्गियों की संख्या चालीस तक पहुंच गई थी और मोदू इस बस्ती में चौधरी माना जाने लगा था। इस समय कमेटी के चुनाव आ गए। मोदू का सम्पर्क तो पहले ही मदनलाल और भगवानसिंह दोनों से था। और ये दोनों इसी क्षेत्र में से कमेटी की सदस्यता के लिए प्रत्याशी थे।

दोनों अपने चुनाव प्रचार के लिए आने लगे।

मोदू समझ गया कि दो नौकाओं में सवारी नहीं हो सकेगी। इस कारण सरदार भगवान सिंह के साथ सम्पर्क बनाने का विचार करने लगा। अतः पति-पत्नी दोनों तीन रुपये नित्य पर परस्पर विरोधी प्रत्याशियों के कार्यकर्ता बन गए। दोनों ने मज़दूरी का काम छोड़ प्रत्याशियों के घर खाना पीना और भिन्न-भिन्न बस्तियों में जा-जा कर एक दूसरे के विरुद्ध कार्य करना आरम्भ कर दिया।

एक दिन मोदू ने अपनी बस्ती के सब मज़दूरों की सभा बुलाई और उसमें उसने मदनलाल के एक प्रचारक को बुला कर लैक्चर करा दिया। दूसरे दिन शान्ति ने उस बस्ती में सरदार भगवान सिंह के पक्ष की सभा करा दी। इसमें भगवानसिंह स्वयं उपस्थित होकर व्याख्यान दे गया।

इन व्याख्यानों के उपरान्त तो बस्ती में नित्य पंचायतें होने लगी। इन पंचायतों में कभी शान्ति उपस्थित होती थी और कभी मोदू। दोनों बड़े जोश से अपने-अपने प्रत्याशी की वकालत करते थे। प्रायः मजदूर यह समझते थे कि दोनों सत्य हृदय से पृथक्-पृथक् कार्य कर रहे हैं।

एक दिन शान्ति पंचायत में पहुंची और यह प्रस्ताव करने लगी, "हम सबको पंचायत की ओर से फैसला करना चाहिए कि हमारा वोट शेर वाले डिब्बे में जायेगा।" सुन्दर ने पूछ लिया, "क्यों ? बैलों वाले डिब्बे में क्यों नहीं ?"

"इसलिये कि शेर के निशान वाले डिब्बे का कैंडिडेट आपको एक-एक पौवा शराब देगा।"

तुरंत सुन्दर ने कह दिया, "चुनाव को सबपांच दिन रह गये हैं। यह शराब चुनाव के पहले बंटनी चाहिये।"

"आप लोग आज यह बात पास करें तो आज भी शराब बंट सकती है।"

इस प्रस्ताव से बैठे लोगों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। कानों

कान पूर्ण बस्ती में समाचार फैल गया कि जो कसम खा कर कहेगा कि वह वोट शेर वाले डिब्बे में डालेगा, उसे एक पैग बढ़िया शराब चुनाव के दिन तक नित्य मिलेगी।

राय होने लगी। सुन्दर ने अब एक और बात कह दी, "हम कसम कल खायेंगे। पहिले मोदू दादा से पता कर लें कि वह एक पैग देता है या अधिक ?"

इस पर एक अन्य मजदूर बसन्ता बोल उठा, "हमको आज शेर वाले डिब्बे की शराब ले लेनी चाहिए और मोदू माने तो कल उससे भी ले लेनी चाहिये। फिर जिसकी अधिक तेज हो, उसके डिब्बे में परची डाली जाये।"

इस प्रस्ताव का सब ने समर्थन कर दिया। इस समय चेतु ने कहा, "सुन्दर मैं भी एक प्रस्ताव रखना चाहता हूं।"

बस्ती वाले जानना चाहते थे कि वह किसकी वकालत करेगा और यदि उसको प्रत्याशी की ओर से भी कुछ मिलने वाला है तो वह भी सुन लेना चाहिये। इस कारण सुन्दर ने चेतु को आगे आ जाने के लिये कह दिया। चेतु सुन्दर के समीप आकर बोला, "मैं आपकी बस्ती का ही एक रहने वाला हूं। सरकारी नौकरी मिल जाने के कारण अब मैं क्वार्टरों में रहता हूं। इस कारण मैं आपसे एक बात कहने आया हूं।

"स्वराज्य मिल गया है। महात्मा गांधी जी के प्रयत्नों से हम स्वतन्त्र हो गए हैं। हमको अपनी आजादी इस शराब में नहीं बहा देनी चाहिए। जो शराब पिला कर आपका मत मांग रहे हैं वे पीछे आपके चूनड़ों पर लात मार कर आपकी दुर्दशा भी कर सकते हैं।

"महात्मा गांधी जी गौ रक्षा के लिये सदा कहते रहते थे। इस कारण गौ हत्या बन्द कराने वाले लोगों का निशान दीपक है। मैं आप सब से यह कहूंगा कि धर्म की रक्षा के लिये, गौमाता की रक्षा के लिये कांग्रेस को तो वोट देना नहीं चाहिये। इसके राज्य में सहस्रों गौएं नित्य कटती हैं।

"शराब के लोभ में गौ माता के गले पर छुरी चलाने वालों को मत

देना धर्म विरुद्ध होगा।"

एक क्षण तक तो सब का शराब पीने के लिये जोश ठंडा हो गया, सब चुप कर गए और एक-दूसरे का मुख देखने लग गये। इस समय शान्ति उठी और कहने लगी, "चेतु भैया ठीक कहते हैं। शेर के डिब्बे वाले भी गौ की रक्षा करना धर्म समझते हैं और वे यह वचन दे चुके हैं कि जब-जब भी अवसर आयेगा वे गौ माता की रक्षा के लिये अपना मत देंगे। मैं तो यह कहती हूं कि गौ माता की रक्षा तो होगी ही, साथ ही फोकट में शराब पीने को मिले तो क्या हानि है। अतः हमारा मत शेर वाले डिब्बे में जायेगा।"

इस पर तो सुनने वालों के हृदय फिर प्रफुल्लित हो गये।। अन्त में शान्ति ने कह दिया, "पुण्य भी और फलिया भी। दोनों शेर वाले डिब्बे में मत डालने से प्राप्त होंगी।"

इसके उपरान्त चेतु को तो वहां से जान छुड़ानी कठिन हो गई और शान्ति एक बिन्दु विधवा के झोपड़े में बैठ शराब बांटने लगी।

रात मोदू आया तो शान्ति के बाजी जीत जाने की बात सुन वह एक अन्य योजना पर काम करने लगा। इस रात बस्ती के प्रायः सब वृद्ध, युवा, नर-नारी ने एक-एक पैग शराब पी और मस्त हो कर सो गये। बिन्दु, शान्ति और सुन्दर ने तो आधी-आधी बोतल चढ़ा ली। मोदू को भी शराब पीने का निमन्त्रण मिला, परन्तु मोदू ने वह निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया। अगले दिन जब की नींद खुली तो बिन्दु के झोपड़े में पड़ी शेष शराब लापता थी। कोई चुराकर ले गया था। बिन्दु हल्ला करने वाली थी कि उसके झोपड़े में चोरी हो गयी है, परन्तु शान्ति ने मना कर दिया। वह बोली, "मैं इस बात का प्रबन्ध सरदार साहब से कह कर कराऊंगी।"

इस घटना के दो दिन उपरान्त मोदू तीन पेटी शराब लेकर वहां आ गया और बिना शर्त के बांटने लगा। शराब बांटता हुआ वह कह रहा था, "भैया शराब हराम न कर देना। साथ वोट डालोगे तो तीन-तीन रुपये

उस दिन की मजदूरी भी मिलेगी। वोट बैलों वाले डिब्बे में डालना।"

बस्ती का वातावरण बदल गया, परन्तु चुनाव से पहिली रात शान्ति दो पेटी शराब ले आयी और उसने सौगन्ध ले-ले कर शराब पिलानी आरम्भ कर दी। मोदू केवल यह कह रहा था, तीन रुपये प्रतिवोट और बैल वाले प्रत्याशी के जीतने पर एक-एक "पैग" शराब।

तीन रुपये ने पासा पलट दिया था। बस्ती के बहुत से लोग कांग्रेस के पक्ष में हो गये थे। इस बात को शान्ति ने एक अन्य ढंग से काट दिया। उसने बस्ती के बहुत से मत बस्ती के बाहर वालों से डलवा दिये। जब तक मोदू अपनी बस्ती वालों और अपने क्षेत्र के अन्य झुग्गी वालों को एकत्रित करता रहा, उनके बहुत से वोट तीन-तीन रुपया प्रति वोट दे-दे कर झूठे लोगों से डलवा दिये गये थे।

शादीपुर बस्ती में चालीस वोट थे। लगभग इतने ही लोग थे जिनका नाम मतदाता सूची में नहीं था। शान्ति उनको साथ लेकर गयी और दस बजे तक एक घण्टे में ही उसने तीस से ऊपर जाली वोट डलवा दिये। जब तक मोदू अपनी बस्ती वालों और अपने क्षेत्र की अन्य झुग्गी बस्ती वालों को एकत्रित करता रहा, उनके बहुत से वोट तीन-तीन रुपया प्रतिवोट दे-दे कर झूठे लोगों से डलवा दिए थे।

इसी प्रकार दूसरी बस्ती में भी हुआ। जब असली वोटर मतदान करने आये तो उनके बहुतों के मत डाले जा चुके थे। शादीपुर का बनिया कांग्रेस की तरफ से वहां के मतदाता केन्द्र पर ऐजेन्ट था। वह बीच में सरदार से मिल गया था और उसने सब जाली मतों पर आपत्ति नहीं की। वास्तव में ये जाली आदमी भी बस्ती के ही रहने वाले थे और वह उनको पहिचान भी नहीं सकता था। न ही उनको पहिचानने में वह रुचि रखता था। पूर्ण केन्द्र पर आठ सौ मत पड़ने थे। प्रातः नौ से दस बजे तक तो चार सौ से ऊपर मत पड़ गये। ये प्रायः झुग्गी बस्ती वालों के जाली वोट थे।

दस बजे के उपरान्त जब असली मतदाता आने लगे तो भारी जांच

पड़ताल होने लगी और दस से बारह बजे तक दो घंटे में एक सौ मत भी नहीं डाले जा सके। प्रायः लोग परची ले कर आते थे और उनको कह दिया जाता था कि उनकी परची डाली जा चुकी है। यदि मतदाता इन्कार करता तो उसे पुलिस के हवाले कर देने की धमकी दे दी जाती।

यही बात चेतु के साथ हुई। जब वह परची लेकर गया तो उसको बताया गया कि उसकी परची डाली जा चुकी है। उसने प्रतिवाद किया, "पर चेतु वल्द साधु मैं ही हूं।"

बनिये ने पुलिस को संकेत किया और पुलिस के सिपाही ने उसको पकड़कर बाहर खड़ी पुलिस वैन में ले जाकर बैठा दिया। उसे पकड़ा जाता देख एक जनसंघी स्वयं सेवक पूछने आया कि उसे किसलिये पकड़ा गया है?

पुलिस कॉन्स्टेबल ने उसको पकड़ कर भी वैन में धकेल दिया और बाहर से ताला लगा दिया।

इस समय तक वैन में सात लोग बन्द हो चुके थे। पुलिस अधिकारी ने संकेत किया और ड्राईवर ने पुलिस वैन चला दी। पांच मिनट में वैन थाने में पहुंची तो उन सात लोगों को हवालात में बन्द कर दिया। पुलिस वैन वापिस मतदान केन्द्र पर नये अपराधी लाने के लिये चली गयी।

जनसंघी स्वयंसेवक ने चेतु से पूछा, "तुम किसको मत देने जा रहे थे?"

"दीपक को?"

"तो तुमको पकड़ा क्यों है?"

"वह परची बांटनेवाला बोला कि चेतु वल्द साधु का परची डाली जा चुकी है। मैंने कहा कि मैं असली चेतु हूँ। इसपर उसने कह दिया, चलो हवालात में। यह बात मजिस्ट्रेट को बताना।

"बस, मुझे पकड़कर वैन में बैठा दिया गया और अब यहां हूँ।"

"मैं तो केवल तुमसे यह जानने आया था कि तुमको पकड़ा क्यों है?"

चेतु परेशान था। उसकी मां भी अपना मत देने आ रही थी। उसे डर था कि कहीं वह भी पकड़ी न जाये। इस कारण उसने स्वयं सेवक से पूछा, "मजिस्ट्रेट कब तक आयेगा ?"

"कुछ नहीं कहा जा सकता।"

इससे तो चेतु को और भी परेशानी होने लगी थी। वह मन मसोसकर बैठा था। लगभग दो घंटे के पश्चात् जनसंघ का प्रत्याशी एक मैजिस्ट्रेट के साथ थाने में आया। इसपर चेतु इत्यादि को हवालात से बाहर निकाला गया।

सबसे पहले स्वयं सेवक को ही पूछा गया, "क्या नाम है ?"

"जानकीनाथ।"

मैजिस्ट्रेट ने चालानों के परचे देखे जो उसको दिये गये थे। उनमें जानकीनाथ का चालान नहीं था। मैजिस्ट्रेट ने कहा, "तुम जबरदस्ती वैन में घुस आये मालूम होते हो। भाग जाओ यहां से।"

मिस्टर चड्ढा बोला, "इसके बयान तो लिख लिये जायें।"

"यह अभियुक्त नहीं। मैं इसके बयान ले नहीं सकता।"

विवश जानकीनाथ वहां से मतदान केन्द्र की ओर चला गया। सात के सातों बन्दी ऐसे थे कि वे परची डालने आये थे और उनको कहा गया था कि उनकी परची डाली जा चुकी है। उनमें से छः के पास कांग्रेस की सफेद रंग की परची थी। चड्ढा ने उनके विषय में कुछ नहीं कहा और वे पाँचों के पांचों डाँट-डपटकर छोड़ दिये गए। परन्तु चेतु का मुआमला दूसरा था। चड्ढा और चेतु भी चाहता था कि उसका बयान लिखा जाये।

"अच्छी बात है।" मैजिस्ट्रेट ने कहा, "चेतु ! अपनी जमानत लाओ।"

"तो इसके बयान अब नहीं होंगे ?" चड्ढा ने पूछ लिया।

"इस समय फुरसत नहीं। इस समय जमानत मुचलके पर यह छोड़ा जाएगा और तीन दिन पीछे की तारीख पर हाजिर होकर बयान लिखायेगा

तो मुकद्दमा चल सकेगा।"

चड्ढा उठकर थाने से बाहर ज़ामिन लेने चला गया। उसके जाते ही मैजिस्ट्रेट ने पूछा, "कहां काम करते हो?"

"सरकारी नौकर हूँ।"

"तो तुम यहां क्यों फंस गए हो?"

"मैं नहीं फंसा हुज़ूर? मुझको झूठ में पकड़ लिया गया है।"

"तुम ठीक कह रहे होगे, परन्तु जब मुकद्दमा चला तो नौकरी पहले छूटेगी और फिर मुकद्दमा छः मास तक भी चल सकता है।"

"तो फिर?" चेतु ने पूछ लिया।

"बस चुपचाप अपने घर चले जाओ और इन राजनैतिक लोगों के चक्कर में मत पड़ो।"

चेतु को भी यह समझ आया कि मुकद्दमे में झगड़ा बढ़ेगा और उसे नौकरी करनी कठिन हो जायेगी। वह मैजिस्ट्रेट से संकेत पा चुपचाप थाने से बाहर निकल गया। जब तक मिस्टर चड्ढा ज़ामिन लेकर आया, चेतु अपने क्वार्टर में पहुंच चुका था। मैजिस्ट्रेट भी काम समाप्त कर जाने वाला था कि चड्ढा वहां आ पहुंचा। मैजिस्ट्रेट ने कहा, "भाई! वह चेतु तो मिन्नत समाजत कर चला गया है।"

"और उसके बयान?"

"मैंने सबके चालान फाड़ डाले हैं।"

"तो?"

"तो कुछ नहीं। आप अपने चुनाव का काम देखें। यहां अब कुछ काम नहीं है।"

चड्ढा को बहुत निराशा हुई। वह इलैक्शन पटीशन के समय चेतु के मुआमले को उपस्थित करना चाहता था, परन्तु वह तो था नहीं। मैजिस्ट्रेट गया तो चड्ढा भी अपने क्षेत्र का दौरा करने चला गया।

: ४ :

उसी सायंकाल शादीपुर वाली झुग्गी बस्ती में हुक्के के चारों ओर वहां के प्रमुख पुरुष एकत्रित हो निर्वाचनों पर चर्चा कर रहे थे। उनसे कुछ अन्तर पर औरतें शान्ति के चारों ओर बैठी अपनी-अपनी कारगुजारी की चर्चा कर रही थीं।

औरतें प्रायः सरदार भगवानसिंह के कैम्प में हलुआ पूरी खाकर आई थीं और तृप्त हो सरदार के गुणगान कर रही थीं। उन सबने सरदार के शेर के निशानवाले डिब्बे में अपना मत पत्रक डाला था। शान्ति यह आशा व्यक्त कर रही थी कि सरदार को मत अन्य दोनों प्रत्याशियों से अधिक पढ़े हैं और यदि यह बात ठीक है तो एक दिन दावत की बात निश्चित है।"

इस समय चेतु और उसकी मां बस्ती में आ गये। इन दोनों के मत-दाता सूची में नाम इसी बस्ती के मतों के साथ लिखे थे। ये दोनों अपना मत डालने गये थे। और दोनों के मत इनके पहुंचने से पहले ही पड़ चुके थे। चेतु की मां को तो यह कहकर टाल दिया गया था कि वह जाली परची डालने आई है, यदि उसने हल्ला किया तो कैद कर ली जाएगी। चेतु की मां तो डरकर लौट आई थी, परन्तु चेतु तो उसके पहले ही पकड़ा जा चुका था।

चेतु जब घर पहुंचा तो मां खिन्न मन से वहां बैठी हुई थी। दोनों ने अपने साथ बीती बात बताई तो माया ने कह दिया, "यह बेईमानी बस्ती वालों ने की है।"

"हां, मां। मोदू और उसकी बीवी शान्ति ही जानते थे कि हम परची दीपक के डिब्बे में डालने वाले हैं। उन्होंने ही हमारे वहां पहुंचने से पूर्व हमारी पर्चियां डलवा दी थीं।"

"मैं वहां जाकर पता करना चाहती हूँ कि यह किसने और क्यों किया है।" माया ने रोष में कह दिया।

"क्या लाभ होगा ?"

"मुझको पता चल सकेगा कि उन में कौन चोर है ? तब मैं परमात्मा से उसके सर्वनाश की प्रार्थना किया करूंगी।"

"मां, सब व्यर्थ है।"

"मैं तो सायंकाल जाऊंगी। मुझको वहां बहुत शर्म लगी, जब वहां बैठे आदमी ने कहा, माई ! भाग जाओ। नहीं तो कैद में डाल दी जाओगी।

"मैंने पूछा, क्यों, मैंने क्या किया है ? तो वह बोला, तुम झूठी परची डालने आई हो। यह जुरम है !

"मैं कैद किये जाने की बात सुन पसीना-पसीना हो उठी थी।"

"और मैं तो दो घंटे हवालात में ही रह आया हूँ।" चेतु ने कह दिया।

सायंकाल माया झुग्गी बस्ती को चली तो चेतु भी साथ चल पड़ा।

जब सरदार भगवानसिंह के सफल हो जाने की आशा में शान्ति की साथिनें प्रसन्नता प्रकट कर रही थीं, तो माया अपने लड़के के साथ वहां पहुंच गई।

शान्ति ने उसे देख हंसते हुए पूछ लिया, "आओ चाची ! कैसे आई हो ?"

माया ने कह दिया, "शान्ति ! मेरी परची वहां डिब्बे में किसने डाली थी ?"

इसपर तो सब हंसने लगीं। शान्ति ने पूछा, "चाची, क्या बात है ?"

"यह तो चोरी है। परची मेरी थी। तुमने यह चोरी क्यों की ?"

"चाची, परची मैंने नहीं डाली। पर जिस किसी ने भी डाली है, तुम्हारे भले के लिए ही डाली है।"

"मेरा क्या भला किया है उसने ?"

"तुमको परची डालने के कष्ट से बचा दिया है और उसे तुम्हारी बदौलत दो रुपये मिले हैं। वह तो तुमको आशीर्वाद देती है।"

"पर मैं परची तो दीपक वाले डिब्बे में डालना चाहती थी।"

"और चाची उसने भी तुम्हारी परची दीपकवाले डिब्बे में ही डाली है।"

माया इस कथन का अर्थ समझती हुई बोली, "तो तुम उसको जानती हो।"

हां, जानती हूं। इस बस्ती की औरतों की सब परचियां मैंने ही डलवाई थीं। तुम्हारी परची डालने वाली को मैंने कान में कह दिया था कि परची दीपक वाले डिब्बे में डालनी हैं और उसने वैसे डाली है।"

"चाची ! तुमको अब दुःख करने का कारण नहीं। तुम्हारी वजह से उस बेचारी को दो रुपये मिल गए थे। वह तुमको दुआ देती थी।"

"क्या कहती थी ?"

"कहती थी कि माया चाची जुग-जुग जीए। अगले तीन वर्ष वाले चुनाव में भी वह जीवित रही तो फिर उसको कुछ न कुछ कमाने का अवसर मिल जायेगा।"

माया का क्रोध शान्त हो रहा था। उसने कहा, "शान्ति ! यदि तुम अपनी कसम खाकर कहो कि उसने परची दीपक वाले डिब्बे में डाली है तो मैं उसको क्षमा कर दूंगी।"

"हां चाची ! मुझ पर विश्वास करो। परची उसीमें डाली है। परन्तु इससे तो घाटा तुमको रहा है। आज सरदार के कैम्प में हलुवा, पूरीं, चटनी, अचार खूब खाने को मिला है। तुम वहां होतीं तो तुमको भी खाने को मिलता और तुम यह दावत बहुत दिन तक याद रखतीं।"

सुन्दर चेतु को आया देख पुरुषों के गोल में से उठकर उसके पास आया और उसकी बांह में बांह डालकर उसे पुरुषों में ले गया। सुन्दर ने उसे मोदू के समीप बैठाकर मोदू से कहा, "दादा ! इसकी मां वहां कह रही है कि यह दो घंटा तक हवालात में रहा है।"

"क्यों ?" मोदू ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया।"

"मैं अपनी परची डालने गया था।" चेतु ने अपनी घटना सुनाते हुए

कहा, "मेरी परची कोई पहले ही डाल चुका था। जब वहां बैठे बाबू ने कहा कि मेरे नाम की परची डाली जा चुकी है तो मैंने इसरार किया कि चेतु वल्द साधु मैं हूं। इसपर मुझको पुलिस के हवाले कर दिया गया और पुलिसवाले मुझको मोटर में चढ़ा थाने ले गए। वहां मुझको हवालात में बन्द कर दिया। दो घंटा भर रखने के बाद मैजिस्ट्रेट आ गया तो मैं छूट सका।"

मोदू ने अपनी सफाई देते हुए कह दिया, "हमको पता नहीं चला। नहीं तो तुमको पहले ही छुड़ा देते।"

"मेरी परची किसने डाली है?"

"यह जानकर क्या करोगे। उस बेचारे की कुछ कमाई हो गयी।"

"पर उसने किसको परची डाली है?"

सुन्दर ने कहा, "भैया चेतु ! तुम तो सरकारी नौकरी करते हो और तुम काम पर जाओ न जाओ तुम्हारा वेतन मिलता ही है। हम रोजाना पर काम करनेवाले हैं। एक सप्ताह से मैं काम पर नहीं जा सका था। उस सब घाटे को आज मैंने पूरा कर लिया है। मैंने आज दस रुपये कमाये हैं।

"तो तुमने मेरी परची डाली है?"

सुन्दर मुस्कराता रहा। चेतु ने पूछ लिया, "परन्तु तुम तो तीस वर्ष से अधिक आयु के हो और मेरी आयु तो बीस वर्ष लिखी है।"

"भैया ! रुपया बहुत कुछ कर देता है। तुम हैरान होगे कि एक घंटे में हमने कांग्रेस कैम्प से साढ़े तीन सौ पर्चियां डलवाई थी। एक मिनट में पांच पर्चियां। सब कुछ पहले ही प्रबन्ध हो चुका था। मुझे बताया गया था कि नौ बजे से दस बजे तक जितने जाली वोट हैं डाले जा सकेंगे और मैं उस एक घंटे में पांच बार पर्ची डालने गया था। अपनी पर्ची तो मैंने सायं चार बजे डाली थी। अपनी असल पर्ची डालने में आधा घंटा लगा था।"

"तो तुम हो बेईमान।"

सुन्दर हंस पड़ा और बोला, "मैं सत्य कहता हूँ कि ईमानदारी से जिसने रुपये दिए थे, उसके साथ ईमानदारी का व्यवहार किया है।"

निर्वाचनों का परिणाम यह हुआ कि सरदार भगवानसिंह सफल हो कमेटी का सदस्य बन गया।

मोदू और शान्ति की आशाओं के विपरीत सफल सदस्य ने इन बस्ती वालों को ऐसा भुला दिया जैसे वे उस संसार में थे ही नहीं। निर्वाचनों का परिणाम निकलने के दूसरे दिन शान्ति सरदार भगवानसिंह की कोठी पर बधाई देने गयी तो दिन भर बैठे-बैठे चली आयी। सरदार साहब भीतर थे, परन्तु उनको शान्ति से मिलने के लिये अवकाश नहीं था।

चपरासी ने कहा, "माई, अब जाओ। यहां किसलिये आयी हो?"

"मैंने निर्वाचनों में बहुत मेहनत की है और इनाम की आशा करती हूँ।"

चपरासी हंस पड़ा और बोला, "उस दिन का हलुवा-पूरी पहिले हजम कर लो फिर और मांगना।"

दिन भर प्रतीक्षा कर शान्ति मुख लटकाये हुए लौट आयी। बस्ती वाले विचार करते थे चुनाव प्रतिवर्ष क्यों नहीं होते। वे समझते थे कि स्वराज्य में यह मौज बनी तो है, परन्तु तीन वर्ष में एक बार यह तो बहुत अन्याय है।

इस प्रकार चुनावों को स्मरण करते हुए बस्ती के लोग पुनः अपने काम-काज पर लग गये थे। दिन व्यतीत हो रहे थे।

दूसरी ओर एक अन्य घटना घटी। करोलबाग क्षेत्र से एक सदस्य का स्थान रिक्त हुआ और वहां उप चुनाव हो गया। मदनलाल वहां चुनाव लड़ जीत गया। अब मदनलाल और भगवानसिंह दोनों कमेटी के सदस्य हुए तो दोनों नगर की गन्दी बस्तियों को उठवाने में सहमत हो गये। जब उठवाने वाली बस्तियों के नाम लिखवाये जाने लगे तो वे दोनों सदस्य

शादीपुर वाली झुग्गी बस्ती उठवाने के पक्ष में हो गये। सरदार भगवान सिंह ने जब अपने मन की बात मदनलाल को करते देखा तो विस्मय में उसका मुख देखता रह गया।

मीटिंग के उपरान्त भगवानसिंह ने मदनलाल से पूछ लिया, "मैं हैरान हूं कि आप भी शादीपुर वाली बस्ती के खिलाफ हैं।"

"वहां के रहने वाले बड़े बेईमान हैं।"

"पर उन्होंने तो आपको र्चियां डलवाई थीं।"

"सरदार साहब ! नहीं। मुझको विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि वे मुझसे रुपया और शराब लेते रहे हैं और पर्ची जनसंघ को डालते रहे हैं।"

"परन्तु उनके क्षेत्र में तो जनसंघ को सब से कम मत प्राप्त हुए थे।"

"जो कुछ भी मिले थे सब इन बेइमानों ने ही डलवाये थे, परन्तु सरदार साहब ! आप भी तो मेरे प्रस्ताव का समर्थन कर रहे थे।"

"बस्ती की एक औरत शान्ति हलुवा पूरी मेरे कैम्प में से खाती थी और काम कांग्रेस का करती थी।"

"आपको किसने बताया है।"

"यह नहीं बताऊंगा। इस पर भी है यह सच।"

"तो मरने दो सालों को।"

एक बात पर दोनों को विश्वास था कि दूसरा उससे झूठ बोल रहा है। सरदार भगवानसिंह मदनलाल को झूठा समझ रहा था और मदनलाल भगवानसिंह को। दोनों जानते थे कि दूसरे से धन ले-लेकर ये लोग वोट उनको देते थे। यह तो मोदू इत्यादि जानते थे कि जो कुछ ये जानते थे वह सब झूठ था, परन्तु कोई किसी को सत्य बात बताने में रुचि नहीं रखता था। वस्तुतः सब बेईमान थे।

इस प्रस्ताव के स्वीकार होते ही दो चार दिन के भीतर प्रस्ताव पर कार्य हो गया। एक दिन पुलिस ट्रकों को लेकर वहाँ पहुंची और सब घास-

फूस बर्तन-वस्त्र जो कुछ भी बस्ती में मिला तोड़-फोड़ ट्रकों में लाद कर ले गयी। बस्ती के रहने वाले और साधारण जनता खड़ी दया और धर्म की दुहाई दे-देकर सरकार की घोर निन्दा करती रही।

मोदू और शान्ति अपने काम पर गये हुए थे। उनको वहां ही पता चला था कि उनकी बस्ती पर पुलिस ने छापा मारा है और बस्ती को तोड़-फोड़ सब कुछ उठाकर पुलिस ले गयी है।

इस सूचना के मिलने पर मोदू और शान्ति एक दूसरे का मुख देखते रहे गये। शान्ति ने अपने घर वाले की ओर देख पूछ लिया, "क्या किया जाये?"

"सब बस्ती वालों को मिलकर डिप्टी कमिश्नर के पास, पुलिस की शिकायत लेकर जाना चाहिये।" मोदू का सुझाव था।

शान्ति ने कुछ विचार कर कहा, "कुछ नहीं होगा।"

"कैसे कहती हो?"

"यह सोमू चाचा का शाप है।"

"हमने उसका क्या बिगाड़ा है?"

"हमने उसकी लड़की की निन्दा की है। उस भले आदमी ने और उसके दामाद ने हमको रुपये देकर झुग्गियां बनवाई थीं और रुपया लेकर भी हम दुनियां की निन्दा ही करते रहे थे।"

"तो बहुत दया आ रही है उस छिनाल औरत पर?"

"यही तो बात है। तुम्हारे पास क्या सबूत है उसके ऐसा होने का। कुछ दिन हुए सोमू चाचा और नीमो चाची पहाड़ गंज में मिले थे। मोहन के लिये वस्त्र, भूषण और अन्य सामान खरीद रहे थे। वे भी पैसे वाले हो गये हैं। मैंने बधाई दी तो नीमो बोली, "शान्ति! तुमने एक सती लड़की की निन्दा की है और तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकता।"

"तो तुम समझी हो कि यह पुलिस नीमो ने भेजी है?"

"नीमो ने तो नहीं, परन्तु भगवान का कोप ही तो हुआ है।"

"तुम डर के मारे पागल हो रही हो। देखो ! इस प्रकार सोचने से तो कुछ होगा नहीं। मैं तो बस्ती पर जा रहा हूँ और देखता हूँ यदि कुछ लोग मिल गये तो उनका नेता बन कुछ पैदा करूंगा।"

शान्ति को यह बात पसन्द नहीं थी, परन्तु जब उसका घर वाला काम छोड़ बस्ती की तरफ चल पड़ा तो वह भी उसके साथ हो ली।

: ४ :

बस्ती उजड़ चुकी थी और सुन्दर बस्ती वालों का चौधरी बन जन-संघी मिस्टर चड्डा के साथ, पुलिस थाने में अपना-अपना सामान लेने जा चुका था। मोदू को यह समझ आया कि उसकी गाड़ी छूट गयी है, परन्तु वह हताश नहीं हुआ। उसको सूझी कि मदनलाल को जाकर बताना चाहिये कि जनसंघी झुग्गी वालों की और जनता की सहानुभूति प्राप्त कर रहे हैं और अपनी ख्याति की रक्षा के लिये उसे भी कुछ करना चाहिये।

मोदू ने अपनी योजना शान्ति को बताई। उसे इस योजना में कुछ जान समझ आयी। मोदू ने कह दिया, "तुम सरदार भगवानसिंह के पास चली जाओ। देखो, उससे क्या सहायता मिल सकती है।"

"सरदार तो महाबदमाश है। उससे आशा कम है।"

"देखो, तुम उसके पास जाओ। मैं मदनलाल के घर पर जाता हूं। इस समय एक बज रहा है। शाम को ढाबे पर मिलना। कुछ आमदनी हो गयी तो जलसा करेंगे।"

आधे मन से शान्ति सरदार भगवानसिंह की कोठी को चल पड़ी और मोदू मदनलाल के घर को। मोदू को अपनी योजना के सफल होने की बहुत आशा थी। वह जब से राजनीति में भाग लेने लगा था, उसमें प्रतिस्पर्धा को देख रहा था। सब दल जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये प्रत्येक प्रकार के प्रपंच करने के लिये उद्यत रहते थे।

मोदू मदनलाल के घर पर डेढ़ बजे के लगभग पहुंचा। वह घर पर नहीं था। वह उसके द्वार के बाहर भूमि पर ही बैठ गया। इस प्रकार वह मदन-

लाल के और अन्य वहां आने जाने वालों के मन में सहानुभूति उभारने का उपाय कर रहा था।

लगभग छः बजे सायंकाल तक वह बैठा रहा। चलते-फिरते अथवा मदनलाल से मिलने वाले लोग आते और उससे पूछते थे, "भाई ! इस प्रकार यहां किसलिये बैठे हो ?"

"हम लुट गये हैं। पुलिस ने हमारा सब कुछ लूट लिया है।"

"परन्तु यहां किस लिये बैठे हो ?"

"हम तो कांग्रेस के लिये खून पसीना एक करते हैं और इन बाबू जी तक ही हम गरीबों की पहुंच है। इसलिये इस द्वार पर ही बैठा हूँ।"

लोग मोदू की कथा सुनते थे और सहानुभूति प्रगट कर चल देते थे। कोई-कोई विरला यह भी कह जाता था, "बेवकूफ हो जो यहां बैठे हो। तुम्हारी बस्ती को कांग्रेस वालों ने ही तो उजड़वाया है। "भला बाबू मदन लाल तुम्हारी क्या और कैसे मदद कर सकते हैं।"

"पर हमने इन कांग्रेस वालों का क्या बिगाड़ा है ?"

"तुम्हारी बस्ती से खाली हुआ स्थान सरकार नीलाम करेगी और उससे लाखों रुपये सरकार को मिलेंगे। वहां बड़े-बड़े अमीरों के महल खड़े होंगे और वे मदनलाल के मित्र सम्बन्धी और सहायक होंगे।"

"परन्तु हमने भी तो बाबू की सहायता की है। हम गरीब है। कांग्रेस तो गरीबों की मदद के लिये बनी है।"

लोग मुस्कुराते और चले जाते थे।

सायं छः बजे मदनलाल आया। वह मोटर से उतरा और उसने मोदू को सिर नंगा द्वार के बाहर पालथी मारे बैठा देखा तो एकदम क्रोध से भर ड्राइवर से बोला, "चौधरी ! जरा इस आदमी की मरम्मत करना।"

ड्राइवर ने लपक कर मोदू को गले से पकड़ दो घूंसे उसकी कनपटी पर जड़ दिये। मोदू इस अचानक आक्रमण का कारण नहीं जान सका। वह अभी विचार ही कर रहा था कि यह क्यों और किसके हुक्म से हो रहा है

उस समय मदनलाल इस पीटे जाते मोदू के पास आ खड़ा हुआ और लातों से उसकी मरम्मत करने लगा। मोदू को समझ आ गया कि वहां तो वह मार डाला जायेगा। वह उठा और सिर पर पांव रख कर भाग खड़ा हुआ। उसे लोगों की हंसी का शब्द सुनाई दिया, परन्तु उसका साहस नहीं हो सका कि घूमकर देखे कि हंसने वाले कौन है।

उसने दम लिया अपनी उजड़ी बस्ती के समीप आ कर। सुन्दर और कुछ बस्ती के लोग अपना रात को सोने के प्रबन्ध के विषय में विचार कर रहे थे। उनकी दृष्टि मोदू पर पड़ी। उसका मुख मुक्कों की चोट से सूज रहा था। एक दांत हिल गया था और मुख से लहू निकल रहा था। लातों से उसका कुर्त्ता फट गया था और बदन पर खरोंच लगी थी।

सुन्दर ने सहानुभूति प्रकट करते हुए पूछ लिया, "मोदू ! यह क्या हुआ है ?"

मोदू को हंफनी चढ़ रही थी। वह पूर्ण कथा तो बता नहीं सका। उसने केवल यह कहा, "मर रहा हूँ। शान्ति को देखा है।"

"नहीं। कहां से आ रहे हो ?"

"नरक कुण्ड से। यमदूतों से छूट कर आया हूँ।..."

एकाएक उसके मन में विचार आया कि न जाने शान्ति पर क्या बीती होगी। वह सीताराम के ढाबे पर मिलने वाली थी। अतः उसको विचार आते ही वह अपनी बात पूरी किये बिना ढाबे की तरफ चल पड़ा।

शान्ति ढाबे पर नहीं थी। सीताराम ने मोदू की दुर्दशा देखी तो उसको मुख पर से लहू धोने के लिए जल दिया। उसके मुख पर वैसलीन लगाई। उसके कपड़ों में लगी मिट्टी झाड़ दी और और कुर्सी पर बैठाया। फिर पूछ लिया, "यह क्या हुआ है मोदू ?"

मोदू जानता था कि सीताराम मदनलाल का आदमी है। इस कारण उसने अपने पीटे जाने की एक नई कथा सुना दी। उसने कहा, "थाने में अपना सामना लेने गया था। मेरे बर्तन कपड़े थे नहीं। किसी पुलिस वाले

ने चुरा लिये मालूम होते हैं। मैंने कहा कि "साहब ! वे तो किसी ने चुरा लिये हैं। बस मेरा यह कहना था कि दो मुस्टंडे मुझपर पिल पड़े और मेरी यह दुर्दशा कर दी। मैंने शान्ति को यहां मिलने के लिए कहा था।

सीताराम ने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, "तुमको वहां अकेले नहीं जाना चाहिये था। मदनलाल को साथ लेकर जाते तो सामान भी मिल जाता और यह दुर्दशा भी नहीं होती।"

मोदू ने मन में विचार किया कि उसने मदनलाल का नाम न बताकर ठीक ही किया हैं। कहीं बता देता कि उसने ही पीटा है तो यह मदनलाल उसे बैठने को कभी न कहता।

उसने कह दिया, "पंडित सीताराम ! यही तो भूल कर बैठा हूँ। अपनी भूल का मजा ले रहा हूँ।"

आधे घंटे की प्रतीक्षा के उपरान्त शान्ति रोनी सूरत बनाये हुए वहां पहुँची। मोदू समझ गया कि उसे भी सफलता नहीं मिली। वह यह देख संतोष अनुभव कर रहा था कि वह पीटी नहीं गई थी।

शान्ति ने अपने पति का मुख सूजा हुआ और उसपर वैसलीन लगी देखी तो चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया, "यह क्या हुआ है ?"

"यहां नहीं। कहीं और चलकर बताऊंगा। बताओ कुछ मिला ?"

"धक्के देकर कोठी से निकाल दी गई हूँ।"

"गनीमत है। तुम्हारी दशा मेरे जैसी नहीं हुई।"

"तुम्हारी जेब में कुछ है ?"

"हां, तीन रुपये के लगभग है। बस अब यही जमा पूंजी बची है।"

"तो भोजन करो। पेट भर जाएगा तो फिर कोई मार्ग भी सूझ पड़ेगा।"

दोनों ने ढाबे पर खाना खाया। सवा रुपया खर्च कर दोनों ढाबे से निकले तो दुकान से कुछ दूर हटकर मोदू ने आप-बीती बता दी। शान्ति ने सुनी और कह दिया, "परमात्मा का शुक्र है। उन्होंने तुमको मार नहीं

डाला। खैर जान बची लाखों पाये। अब बताओ रात कहां गुज़ारनी है।"

"मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा।"

"मैंने एक बात विचार की है।"

"क्या ?"

"हम कन्हाई के घर पर जायें।"मेरा मन कहता है कि उसके यहां काम भी मिलेगा और झुग्गी बनाने को समान भी मिलेगा।"

"पर मुझे तो पता नहीं कि वह कहां मिलेगा। अब वह गणपतराम की कोठी पर नहीं रहता है।"

' मुझे तो पता है कि वह कहां रहता है। देवनगर में एक बड़े से मकान में रहता है।"

मोदू अनिश्चित मन था। शान्ति को विश्वास था कि वहां उनसे दुर्व-व्यवहार तो नहीं होगा। एक दिन वह काम पर से आती हुई देवनगर में से गुज़र रही थी कि टुनिया अपने बच्चे को लिये हुए जाती दिखाई दी थी। टुनिया ने उसको देखा था और उसके बच्चों के जीवित जल जाने का शोक करने लगी थी। उसने उसकी बस्ती वालों के उसके चरित्र पर सन्देह की बात नहीं की थी। शान्ति ने उसे बहुत बढ़िया वस्त्रों में देख कहा था, टुनिया बेटी ! बहुत खुशहाल मालूम होती हो।

टुनिया का उत्तर था, भगवान की कृपा है। देखो यह तुम्हारा पोता है राम।"

शान्ति ने उसकी ओर देखा तो बच्चा जो इस समय दो वर्ष की आयु का हो गया था, पूछने लगा, मां, "यह कौन है ? टुनिया ने बच्चे को कहा था, तुम्हारी एक और नानी है।"

शान्ति ने पूछा था, "कहां रहती हो टुनिया ?"

"वह देखो। तिमंजिला लाल रंग का मकान है। उसके बीच की मंज़िल पर रहते हैं।"

इससे शान्ति जान गई थी कि कन्हाई कहां रहता है और कन्हाई तथा

टुनिया अपने माता-पिता नीमो तथा सोमू से भिन्न स्वभाव के हैं। इसी विचार से वह अपने पति को कह रही थी, वहां से सहायता मिलेगी।

बहुत विचार-विनिमय के उपरान्त दोनों कन्हाईलाल के मकान के नीचे जा खड़े हुए। द्वार पर एक मोटर खड़ी थी। मोद्दू विचार करता था कि कन्हाईलाल ने मोटर रख ली है क्या। चार वर्ष में वह इतना धनी कैसे हो गया है। यह उसकी बुद्धि में समा नहीं रहा था।

वह संकोच कर रहा था। उसने शान्ति से कहा, "तुम पहिले जाओ और टुनिया से मिल कर देखो कि इनके विचार कैसे हैं। पीछे मुझको नीचे से बुला लेना।

शान्ति ने विचार किया और बोली, "यहीं एक तरफ खड़े रहना। कहीं ऐसा नहीं कि मैं देखने आऊं तो तुम कहीं दिखाई न दो।"

शान्ति मकान की सीढ़ियां चढ़ गयी। पहिली मंजिल पर घर का नौकर टुनिया के बच्चे से खेलता मिला। वह शान्ति को देख विस्मय से उसका मुख देखने लगा। और पूछा, "क्या काम है?"

"टुनिया से काम है।"

अब टुनिया नाम इस घर में किसी को पता नहीं था। इस कारण नौकर ने कह दिया, "माई! यहां कोई टुनिया नहीं है। तुम मकान भूल कर यहां आ गयी हो।"

"नहीं बेटा। मैं इस बच्चे की मां से मिलने आयी हूं।" इस समय शान्ति को टुनिया का नाम स्मरण हो आया। उसने कह दिया, "यह चन्द्रकला का लड़का है न?"

"हां। क्या काम है बीबी जी से।"

"उससे कहो, एक औरत शान्ति नाम की उससे मिलने आयी है।"

नौकर बच्चे की उंगली पकड़ साथ चलाता हुआ बगल के कमरे में चला गया। शान्ति अभी वहां खड़ी टुनिया की प्रतीक्षा कर रही थी कि घर की बैठक से म्यूनिसिपल कमिश्नर मदनलाल और उसके साथ एक स्त्री

निकली। इनके पीछे-पीछे कन्हाईलाल और दुनिया थी। दुनिया का मुख कुछ मलिन हो रहा था। इस पर भी वह बहुत बढ़िया साड़ी जम्पर और चप्पल पहिने थी। कन्हाईलाल तो साफ खद्दर के कपड़े पहिने था।

मदनलाल के साथ उसकी स्त्री थी। मदनलाल ने शान्ति को पहिचाना परन्तु उसने ऐसा प्रगट किया कि वह उसे नहीं जानता। चन्द्रकला ने शान्ति को देखा तो पहिचान लिया। उसने शान्ति की ओर मुस्कुरा कर देखते हुए कहा, "मौसी ज़रा भीतर चल कर ठहरो। इन बहिन जी को विदा कर आ रही हूं।"

शान्ति बैठकघर में चली गयी। उसमें से ही ये सब लोग निकले थे। जब शान्ति भीतर चली गयी तो मदनलाल ने विस्मय प्रकट करते हुए कन्हाईलाल से पूछ लिया, "तो चन्द्रकला जी इस औरत को जानती हैं?"

"हां! मैं भी जानता हूं यह और इसका पति किसी समय मेरे साथ ही सड़क पर टोकरी ढोते थे।"

कन्हाई लाल ने अपने निर्धनावस्था को किसी से चोरी नहीं रखा हुआ था। मदनलाल भी जानता था कि ये पति-पत्नी किसी समय दो रुपये नित्य पर मज़दूरी करते थे। इस कारण इस बात पर विस्मय प्रकट न करते हुए मदनलाल ने कह दिया, "यह एक बहुत ही बेईमान की पत्नी और स्वयं भी अति दुष्टा है।"

"हो सकता है। निर्धनता ही एक भारी शाप है। निर्धनता में भले भी बदमाश दिखाई देने लगते है।"

"नहीं बाबू साहब! मेरा इनके विषय में ज़ाती अनुभव है। मैं जानता हूं कि ये दोनों महाझूठे है।"

"होंगे। परन्तु ये मेरे साथी रहे हैं। मेरे मन में इनके लिये सहानुभूति है।"

मदनलाल ने यह कहा, "मेरा प्रस्ताव आपने सुन लिया। धन मेरा

लगेगा काम आपकी कम्पनी के नाम से होगा। आधे लाभ की जिम्मेदारी आपकी होगी और आधा लाभ मेरा होगा। यदि स्वीकार हो तो आपका मौखिक वचन मेरे लिये प्रमाण होगा। आपका टेंडर स्वीकार होगा तो मैं और भी सहायता करूगा।"

"मुझको लाला रामदयाल जी से राय करनी होगी।"

"वह तो बेचारा गया है जो आप कहेंगे मान जायेगा।"

इतना कह मदनलाल और उसकी पत्नी नीचे उतर गये। कन्हाई लाल और चद्रन्कला उनको छोड़ने नीचे तक गये।

जब मदनलाल मोटर में सवार होने लगा तो उनको मोटर के ड्राइवर ने कान में कुछ कहा। मदनलाल ने ड्राइवर की बात सुनी और उस अंधेरे कोने की तरफ देखा जहां मोदू खड़ा था। मदनलाल ने कन्हाईलाल की ओर देख कर कह दिया, "देखिये कन्हाई बाबू! उस औरत का बेईमान पति वह खड़ा है। इस से सावधान रहना चाहिये।"

कन्हाई ने भी उस कोने में देखा और मोदू को पहिचान लिया। उसने मोदू को आवाज़ दी। मोदू आया तो कन्हाई ने कह दिया, "यहां खड़े क्या कर रहे हो। तुम भी ऊपर चलो। शान्ति ऊपर बैठी है।"

मदनलाल की मोटर गयी तो मोदू भी कन्हाई और चन्द्रकला के साथ ऊपर चढ़ गया।

: ५ :

बैठक घर में बैठे हुए कन्हाईलाल मोदू के फटे कपड़ों और सूजे मुख की कहानी सुन रहा था। चन्द्रकला भी वहां बैठी थीं।

जब मोदू अपना कांग्रेस के लिये चुनावों में काम, पीछे पुलिस द्वारा पूर्ण बस्ती के नष्ट-भ्रष्ट किये जाने और उनका सब कुछ लूट लिये जाने और फिर उसके मदनलाल की सहायता मांगने जाने तथा वहां बुरी तरह पीटे जाने की बात बतायी तो कन्हाई लाल हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, "और यह मदनलाल कह रहा था कि तुम और शान्ति दोनों भारी

बेईमान हो।"

मोदू चुप कर गया। वह डर रहा था कि मदनलाल कन्हाईलाल से मेल-मुलाकात रखता है, मान प्रतिष्ठा में उसको विदा करने घर से नीचे तक गया हैं। इस कारण वह मदनलाल की बात स्वीकार करेगा और उस का तिरस्कार करेगा। वह विचार कर रहा था कि वह मदनलाल की निर्वाचन में बेईमानी की कहानी भी बताये अथवा नहीं। वह अभी मौन ही था कि कन्हाई लाल ने कह दिया, "और देखो! मैं तुमको बेईमान तो नहीं कहता बल्कि तुमको अन्य अनेकों हिन्दुस्तानियों की भांति मूर्ख मानता हूँ। मूर्खता जब निर्धनता के साथ मिल जाये तो यह सब कुछ होता है जो तुम लोगों के साथ हुआ है। वैसे मैं इतना तो कह सकता हूं कि मदनलाल स्वयं दिल्ली में किसी से भी कम बेईमान नहीं।"

मोदू की जान में जान आयी। वह बोला, "कन्हाईलाल! हम फिर अब लाचार हो गये हैं और तुम पर भगवान की दया देख फिर तुमसे सहायता के लिये आये हैं।"

"हां बताओ। क्या चाहते हो?"

"कहीं रहने को स्थान चाहता हूं। काम तो राजेन्द्र नगर में लगा हुआ है।"

"यहाँ स्थान की बहुत कठिनाई है। साथ ही मैं यह पसन्द नहीं करता कि तुम सरकारी भूमि पर झुग्गी बना कर रहो।

"मैंने अपने पास पक्के रूप में काम करने वालों के लिये एक अहाता यहां ले रखा है। उसमें कई कोठरियां है। पांच रुपया महीना एक कोठरी का भाड़ा है। अहाते में नल है और टट्टी पेशाब के लिये ज़गह बनी है, परन्तु तुमको मेरे काम पर मज़दूरी करनी पड़ेगी। तब ही तुम इस अहाते में रह सकोगे।"

"बाबू! मैं करूँगा।"

"तो ऐसा करो। मैं नौकर को तुम लोगों के साथ भेज देता हूं। वह

तुमको उस अहाते में ले जायेगा अभी, तुमको सुखिया की कोठरी में रखूंगा। कल प्रातः काल वहाँ के लोगों के साथ मेरे काम पर चले जानां तुमको काम मिल जायेगा।"

"सुखिया कौन ?" शान्ति ने पूछ लिया।

"भगौड़ी की पत्नी। बेचारी बहुत दुःखी है। बताओ खाना खाया है या नहीं ?"

"बाबू ! खा लिया है।"

कन्हाई ने अपने नौकर सोहनू को आवाज दी और उनको सुखिया की कोठरी में ठहराने के लिये भेज दिया।

आधा घंटा भर कन्हाईलाल और मोदू की बातचीत हुई, परन्तु कन्हाई ने एक शब्द भी अपनी पत्नी के विषय में उनके आरोपों पर नहीं कहा।

जब सोहनू उनको सुखिया की कोठरी में छोड़ कर चला गया तो ये दोनों सुखिया की अवस्था देख भौंचक्के हो खड़े रह गये।

सुखिया कोठरी में एक चटाई पर बैठी थी। कोठरी में सरसों के तेल का दिया जल रहा था। उसके धीमे प्रकाश में मोदू ने देखा कि सुखिया एकदम बूढ़ी दिखाई देती है। सुखिया ने भी इनको देखा और विस्मय में पूछ लिया, "मोदू दादा और शान्ति ? बैठो, यहां चटाई पर बैठ जाओ। कैसे आये हो ? बाबू की नौकरी करली है ?"

"तो तुम भी कन्हाई के काम पर जाती हो ?"

"मैं तो अब काम नहीं कर सकती। मेरी कमर और टांगों में पक्षाघात हो गया है। मैं खड़ी नहीं हो सकती।"

"तो।" शान्ति ने चटाई के एक कोने पर बैठते हुए पूछ लिया।

"मैं कन्हाई बाबू की दया और दान-दक्षिणा पर जीती हूँ। यह कोठरी उसने मुफ्त में दिलवा रखी है। साथ ही बीस रुपया महीना रोटी के लिये देता है। इस प्रकार जीवन की घड़ियां बीती रही हैं।"

"यह कैसे हो गया। तुम दुर्बल भी तो बहुत दिखाई देती हो।"

"हाँ। मरती-मरती बची हूं। पर यह भाग्य का खेल है। जिसकी हम सब निन्दा करते थे उसी की दिन रात प्रशंसा करती नहीं थकती।

"जिस दिन बस्ती में ग्राग लगी थी ग्रौर तुम लोग बच्चे को बहाने यमुना जी को गये थे तो मैं तुम लोगों के साथ नहीं जा सकी। मुझको ग्राशा लग रही थी कि मेरा घर वाला वहां मेरी टोह लेने ग्रायेगा।

"वह ग्राया। उसने दूर से मुझे संकेत कर बुलाया। मैं वहां गयी तो वह बोला, 'चलो। मैं तुमको लेने ग्राया हूं।'

"मैंने पूछा, "पर तुमने यह क्या किया है?" उसका कहना था, "मुझको क्या पता था कि मोदू के बच्चे झुग्गी में सो रहे हैं। सब बच्चे तो बाहर खुले में खेल रहे थे। यह तो मुझको ननकू ने बताया है कि उसमें मोदू के बच्चे जल कर मर गये हैं।"

"ग्रब कहां चलेंगे?" मैंने पूछा तो उसने कहा, एक मकान है उसमें बहुत लोग इकट्ठे रहते हैं ग्रौर वहां मैं ग्रपना नाम बदल कर रहने लगा हूं। मेरा नाम कशी है। तुम्हारा नाम वन्तो होगा।"

"मुझको डर लग रहा है। कहीं पकड़े गये तो फांसी पा जाग्रोगे।"

"कुछ नहीं होगा। ननकू कहता था कि यदि मैं स्वयं किसी को नहीं बताऊंगा तो कोई नहीं जान सकेगा। कल से हम किसी दूसरे काम पर भेज दिये जाएंगे। जहां हमको कोई भी पहचानता न हो।"

"मैं चुप रही। करोलबाग पारकर 'ग्रोरिजनल रोड' पर एक मकान में हम दोनों चले गये। वहां कई मज़दूर रहते थे। मकान में ऊपर-नीचे कई कमरे थे ग्रौर एक-एक कमरे में कई-कई लोग ठहरे हुए थे।

मेरे घर वाले ने मुझको एक कमरे में बैठा दिया। वहां छः लोग पहिले थे। तीन मर्द थे ग्रौर तीन ग्रौरतें थीं। हमारे जाने से ग्राठ हो गये। मेरे घर वाले ने मुझको वहां बैठाया ग्रौर स्वयं एक दूसरे कमरे में चला गया।

वहां बैठे एक ने मुझसे पूछ लिया, 'क्या नाम है ?'

"मैंने अपना नया नाम बता दिया, 'वन्तो।' उसने फिर पूछा, 'कहां काम करते हो ?'

"अभी काम ढूंढ़ने आये हैं।" हमने कहा।

'आप लोग कहां काम करते हैं ?' मैंने पूछ लिया।

"एक ने बताया राजेन्द्र नगर में। उसके समीप बैठी औरत ने बताया, 'मैं तो इसी मकान में सफाई करती हूँ।'

'क्या वेतन पाती हो ?'

'रोटी-कपड़ा, रहने को स्थान और बस।'

इस समय मेरा घरवाला अपने लिये और मेरे लिये तामचीनी की प्लेटों में रोटी-दाल ले आया। एक जग में पानी था। हमने पेट भर रोटी खायी और फिर सोने की तैयारी करने लगे। उस कमरे में आठ के सोने के लिये स्थान था। सब सो गये और गोदाम से अपने-अपने लिये दरी और रजाई ले आये। मैं जब अपने लिये दरी बिछाने लगी तो मैंने अपने घर वाले से पूछ लिया, 'सब लोग एक ही कमरे नें सोयेंगे ?'

'हां।' उसने कहा।

'ये लोग पति-पत्नी हैं ?'

"मुझको पता नहीं।"

मुझको यह ठीक प्रतीत नहीं हो रहा था। इस पर भी मैं चुप थी।

"सर्दी का मौसम था और रजाइयाँ हल्की थीं। सर्दी लगती रहती थी। इससे बीच-बीच में नींद खुल जाया करती थी। अगले दिन ननकू की सहायता से हमें पुराने किले के समीप काम मिल गया। इस मकान में रहने का सुख अनुभव हुआ था। प्रातः काम पर जाने से पूर्व उबले चने और चाय मिल जाती थी। मध्याह्न के लिये बना भोजन कपड़े की पोटलियों में मिल जाता था। सायं घर पर पहुंचते ही भुने चने और चाय मिल जाती थी। रात को भोजन कर हम सो जाते थे। न हमें कपड़े धोने की चिन्ता थी। न

बिस्तर बनवाने की। यह सब काम मकान वाले करते थे।"

"हमारे पास अपना कुछ नहीं था। इस कारण चोरी होने की चिन्ता नहीं थी। जितने नकद रुपये हमारे पास बचते थे वह हम वहीं उस स्थान के कार्यालय में जमा करा देते थे।

"हमारे वहां जाने के तीसरी अथवा चौथी रात की बात है। कोई मेरी रजाई में घुस आया। मैंने समझा मेरा घर वाला है। मैंने उसको कहा भी कि कोई जाग पड़ेगा, परन्तु उसने मेरे मुख पर हाथ रख मेरा मुख बन्द कर दिया। पीछे मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि मेरे पास आने वाला मेरा घर वाला नहीं। वह तो दाढ़ी मूंछ सफा किया व्यक्ति था। मेरे घर वाले की तो मूँछें थीं। मेरा अनुमान था कि वह हमारे कमरे में सोने वाला ही एक पुरुष है, परन्तु मैं उस समय हल्ला करने से घबराती थी। मुझको भय था कि मेरे घर वाले की नींद खुल जायेगी तो वह इस घटना में मेरा कितना दोष मानेगा। मैं चुप पड़ी रही। वास्तव में मेरी बुद्धि और शरीर भय से सर्वथा शिथिल हो रहा था।

कुछ देर में वह चला गया। धीरे-धीरे मुझे होश आयी। मैंने रजाई से हाथ निकाल कर घरवाले के बिस्तर पर टटोला। उसका बिस्तर खाली था। इस स्थिति से तो मेरी चिन्ता और भी बढ़ गयी, कितने ही समय तक मुझे नींद नहीं आयी।

अगले दिन काम पर जाते हुए मैंने घरवाले से पूछा, 'रात कहां थे तुम?'

'सोया हुआ था।'

'मैंने देखा था। तुम्हारी रजाई खाली थी।"

'किस समय की बात है?'

'मेरे पास घड़ी तो है नहीं। समय कैसे बता सकती हूं। कमरे में बिल्कुल अंधेरा था।

"वह मुस्कुराया और बोला, पेशाब करने गया हूंगा।'

"मैं चुप कर रही और अपने पर बीती बात बता नहीं सकी, परन्तु कुछ ही दिनों में मैं समझ गयी और इस स्थिति पर संतोष कर बैठी कि वहां सब स्त्रियां सांझी है। पहिले तो यह बात अटपटी लगी, परन्तु फिर बार-बार ऐसा होने से यह बुरी नहीं लगीं।

"परन्तु इसका परिणाम भयंकर हुआ। एक दिन मुझको पेशाब करते समय वेदना होने लगी। मैंने अपने घरवाले से कहा तो उसने उस मकान के दरोगा से कह कर मुझे हस्पताल में भरती करा दिया। एक महीना हस्पताल में रह कर लौटी। मेरा रोग तो ठीक हो गया परन्तु कमर और टांगों में कमजोरी महसूस होने लगी थी।

"जब मैं उस मकान में जहां से हस्पताल गयी थी, पहुंची तो मेरा घरवाला लापता था। घर के दरोगा ने बताया कि उसका तो उस दिन से ही पता नहीं जिस दिन से मैं हस्पताल गयी थी।

"मैंने कहा कि मैं बहुत दुर्बल हो गयी हूं। कुछ काल के लिये मुझसे मज़दूरी का काम नहीं हो सकेगा। इस कारण जो कुछ मेरा जमा है उसमें से मेरा रोजाना खर्चा एक रुपया ले लिया जाया करे।"

इस पर दरोगा ने बताया तुम्हारा यहां कुछ भी जमा नहीं। काशी का जो कुछ जमा था वह सब ले गया है।

'तो मैं क्या करूं ?' मैंने पूछा। उसने कह दिया, तुम चौराहे पर बैठ कर भीख मांग कर। एक रुपये से अधिक तो मिल ही जाया करेगा। वह देकर तुम यहां रह सकोगी।

अपनी कमज़ोरी के कारण मैं विवश थी और दरोगा के कहने अनुसार कार्य करने लगी। भीख मांगना तो सुगम और लाभप्रद प्रतीत हुआ। कभी-कभी तो चार-पांच रुपये तक मिल जाते थे। मैं प्रातः सायं चौराहे पर बैठ कर भीख मांगती थी। परन्तु उस घर में रहने पर फिर सांझी बीवी बनकर रहना पड़ा। इसका परिणाम तो बहुत ही भयंकर हुआ। मेरी कमर में असह्य पीड़ा होने लगी। मुझे फिर हस्पताल में भरती करा दिया गया।

इस बार मैं एक दूसरे हस्पताल में भेजी गयी थी। यहां रोगियों की भीड़ लगी रहती थी।

"रात के समय पीड़ा बढ़ जाती थी और मैं दूसरे रोगियों को भी सोने नहीं देती थी। रोगियों की संख्या अधिक होने के कारण कई-कई दिन तक डाक्टर देखने नहीं आता था। मैं दिन प्रतिदिन अधिक और अधिक रुग्ण होती जाती थी। जब मैं अपने कमरे में काम करने वाली नर्सों से डाक्टर बुलाने को कहती तो वे नमकीन सा पानी लाकर पिला देतीं और कहतीं डाक्टर ने यह दवा दी है।

"एक दिन एक बड़े अफसर हस्पताल देखने आये। हस्पताल के डाक्टर और दूसरे अधिकारी उसके पीछे-पीछे थे। मैंने अवसर जान उस अफसर को सलाम कर दी और कह दिया कि न तो डाक्टर देखने आता है और न ही दवाई दी जाती है।

"मेरे इस कहने पर वह अफसर अपने पीछे खड़े डाक्टर की ओर देखने लगा डाक्टर ने कुछ कहा जो में समझी नहीं। उस अफसर ने मेरी ओर सहानुभूति पूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा कि आज तुमको दवाई मिल जायेगी।

'उसी दिन सायंकाल डाक्टर आया और मेरी हकीकत जानकर कहने लगा, 'देखो माई! यदि तुमको हमारे इलाज से संतोष नहीं तो तुम यहां से चली जाओ। नहीं तो हम तुमको भेज देगें।'

'कहां भेज दोगे?' मैंने पूछा।

'तुमको पता चल जायेगा।'

"मैंने कह दिया, मेरा कोई नहीं है। मैं तो चल नहीं सकती। मैं कहां जाऊंगी? जहां ठीक समझो भेज दो।"

"डाक्टर चला गया। अगले दिन नर्स पानी की भांति एक पीने की वस्तु लेकर आयी और बोली, 'यह पीकर लेट जाओ। तुमको नींद आ जायेगी और तुमको दूसरे हस्पताल में पहुंचा दिया जायेगा। नहीं तो जाने में पीड़ा होगी।"

"मैंने गिलास उसके हाथ से पकड़ा तो मुझे ऐसा समझ आया कि नर्स का हाथ कांप रहा है और उसका मुख पीला पड़ रहा है। मैंने गिलास पकड़ा तो वह लम्बे-लम्बे कदमों से कमरे से निकल गयी। मैं नर्स के व्यवहार पर विचार कर ही रही थी कि मेरे समीप बैठी एक औरत ने कह दिया, 'मत पीना इसको।'

'क्या ?'

'बच नहीं सकोगी।'

"मुझको सब ज्ञान हो गया। मैंने गिलास एक तरफ रख दिया और यत्न कर उठी तथा वेदना होने पर भी रेंगती हुई कमरे से निकली और फिर हस्पताल से बाहर निकल आयी। द्वार पर पहुंच मैं विचार कर रही थी कि किधर जाऊं। मेरे मन में यह भी विचार आया कि मैं वहां से भाग कर गलती कर रही हूं। यदि मरना है तो फिर हस्पताल में मरी क्या और सड़को पर मरी क्या ? उस समय रेंग कर हस्पताल के द्वार तक आने में पीड़ा हुई थी।

"मैं अनिश्चित मन सड़क के किनारे पटरी पर बैठी थी कि कन्हाई लाल वहां से अपने स्कूटर में जाता दिखाई दिया। मैंने आवाज़ दे दी। उसकी दृष्टि मुझपर पड़ी तो उसने स्कूटर लौटाया और मुझे सड़क पर बैठे चिन्ता व्यक्त कर पूछ लिया, 'सुखिया मौसी ! यहां क्या कर रही हो ?'

"मैंने कहा, 'मैं हस्पताल से भागी जा रही हूं। मुझे डर है कि पकड़ कर मार डाली जाऊंगी। मुझको यहां से कहीं ले जाओ।'

"कन्हाईलाल ने सड़क पर जा रहे एक तांगे को खड़ा कर मुझको उठाकर उसमें बैठा दिया और यहां ले आया।

"यहां इस कोठरी में रख कर एक हकीम का इलाज करा ठीक कर दिया। अब दर्द तो नहीं होता। हां, मेरी टांगों में खड़े होने का बल नहीं। मैं रेंग कर ही जाती-आती हूं।"

"तो यह सब कन्हाईलाल ने किया है ?" मोदू ने पूछ लिया।

"मेरे लिये तो वह भगवान का अवतार है।"

"उसकी बीवी को भी देखा है कभी ?"

"हां। वह ही मुझको महीने के पीछे खर्चा देने आया करती है।"

"कैसी लगती है तुमको ?"

"मैं समझती हूं कि उस देवी की निन्दा का ही फल है कि मुझको वही कुछ करना पड़ा था जिसके करने की बात हम उसको कहते थे। और फिर हाथ फैलाकर उससे भीख मांगनी पड़ी है।"

शान्ति तो यह सुन कांप उठी थी। परन्तु मोदू ने यह कहा, "यदि तुम भगौड़ी के साथ उस मकान में न जाकर रहतीं तो फिर क्या बीमार होतीं ?"

"मुझको यही समझ आ रहा था कि हम ठीक कर रहे हैं। मैंने दुनिया से क्षमा मांगी तो उसने कह दिया, 'मौसी ! मुझे तुम्हारे खिलाफ कोई शिकायत नहीं है। इसमें तुम लोगों का कुछ दोष भी नहीं। निर्धनता और अज्ञानता का ही यह परिणाम है। निर्धनता तो ईश्वर की कृपा के बिना जाती नहीं और ज्ञान प्राप्त करने के लिये धन साधन है। आज ज्ञान सोने के वाटों से तुल कर बिकती है।"

"इतना कहकर वह चली गयी थी, परन्तु मैं समझी कि सचमुच हम सब वहां मूर्ख थे। आज कन्हाईलाल और उसकी पत्नी सभ्य समाज प्रतिष्ठा में पा रहे हैं।"

मोदू के मन से अभी भी दुनिया के प्रति चरित्रहीनता का आरोप मिटा नहीं था। उसकी बुदिध यह मान सकती ही नहीं थी कि पांच वर्ष में कोई मज़दूर से ठेकेदार बन सकता हैं। उसके मस्तिष्क में अभी भी गणपतराय और दुनिया के सम्बन्धों में दाल में काला प्रतीत होता था।

एक बात वह सुखिया की जीवन कथा सुन कर समझा था कि चन्द्र-कला के अतिरिक्त भी लोग है जो चरित्र सम्बन्धी शिथिलता को स्वाभाविक मानते हैं। इससे वह निरुत्तर सा हो सुखिया की कोठरी में सोने का

प्रबन्ध करने लगा था।

: ६ :

जब सोहनू और मोदू शान्ति को सुखिया की कोठरी में छोड़ने चला गया तो चन्द्रकला ने कह दिया, "मुझको इन लोगों पर दया आती है। ये बेचारे गरीब होने से संसार का ज्ञान नहीं रखते। इसी से ये सफेद को काला और काले को सफेद समझने लगते है। इनको सत्य बात बताओ तो ये तुरंत बोल उठते हैं कि यह सब झूठ है। ये इतना भी समझ नहीं सकते कि इनका अपना भी कुछ दोष हैं। इनकी अपनी सूझ-बूझ में भूल भी हो सकती है।"

"हाँ, यह मोदू मदनलाल को कोई बड़ा दानी मान उससे सहायता लेने गया था। वास्तव में मदनलाल एक धोखा है। यह वर्ष में दो बार चुनाव लड़ा है। दोनों चुनावों में चालीस पचास हजार खर्च कर बैठा है। अब यह उस खर्च किये रुपये को एक ही बर्ष में जमा कर लेना चाहता है। जिससे दो बर्ष के बाद फिर चुनावों में उससे भी अधिक खर्च कर सके।"

"यह क्या कहने आया था?" चन्द्रकला ने पूछ लिया, "मैं तो उस की पत्नी से बातें कर रही थी।"

"मैंने म्युनिसिपैलिटी की आसफ अली रोड़ और दरियागंज रोड को ठीक करने का टेंडर भर दिया हुआ है। यह ठेका मंजूर करने वाली उपसमिति का चेयर मैन है और मुझसे भाव-ताव करने आया था।"

"अर्थात कुछ रिश्वत लेने आया था क्या?"

"रिश्वत क्या लेता? हज़ार-दो हज़ार ले लेता, परन्तु यह एक प्रस्ताव लेकर आया था। यह चाहता है कि गुमनाम हम इसको अपने काम में आठ आने का पत्तीदार बना ले। रुपया यह लगायेगा। काम हम करेंगे। टेंडर यह स्वीकार करायेगा और नकद लाभ के रुपये में आठ आना इसका होगा।"

"और आप यह मान रहे हैं?"

"मैंने रामदयाल से बात करनी है और फिर बाबू जी से भी इस विषय में पूछना है। वास्तव में यह रिश्वत नहीं। यह तो अपने नगर निगम के काम मे एक नया पत्तीदार सम्मलित करना है।"

"इसमें एक बात ग़ैर कानूनी है। वह यह कि मदनलाल कमेटी का सदस्य होने के नाते किसी कम्पनी अथवा व्यवसाय से सम्बन्ध नहीं रख सकता, जिसका व्यवहार कमेटी से है।"

"यह कहीं धोखा न दे ?"

"मैंने एक बात विचार की है कि इसको व्यवसाय में सम्मलित कर लूँ और इसके भाग को व्यवसाय में लगे धन पर ब्याज समझूं। कमेटी से किसी प्रकार की रियायत न मागूं, न ही किसी प्रकार की रियायत स्वीकार करूं।"

"हां। बाबू जी से पूछ लीजिये। इस अनियमित बात में हमारा कितना उत्तरदायित्व है ?"

"मुझे तो इस प्रकार काम करने पर कुछ ऐसा समझ आ रहा है। इस धन के मिल जाने से अपने काम को और बढ़ा देगें। यह एक लाख रुपये तक इस काम में लगाने वाला है और एक बर्ष में इसके लाभ का भाग तीस से चालीस हजार होगा। यह कहता था कि उसकी योजना की सफलता इस बात पर निर्भर है कि हम काम कितनी जल्दी समाप्त करते हैं। वह समझता है कि हम यह पूर्ण काम एक वर्ष में समाप्त कर सकेगें।"

"पर आप पीछे लाभ देने से इन्कार भी तो कर सकते है ?"

"यह मैं नहीं करूंगा। देखो चन्द्र, हम जो कुछ अनियमित कार्य करते हैं वह अपनी ईमानदारी की रक्षा के लिये करते हैं। मूल बात यह है कि हम अपने व्यवहार में ईमानदार रहें। जो कुछ सरकारी नौकरों को देना पड़ता है वह इसलिये कि एक ईमानदार ठेकेदार के कारोबार की रक्षा हो। उस पर खर्चा उचित से अधिक भी करता हूं। मैं अपने उचित व्यवहार पर बेईमान सरकारी अफसरों को कुठाराघात करने से रोकने के लिये

उनका मुख मीठा करता हूं। यह तो ऐसे ही है जैसे अमरीका रूस से अपनी रक्षा के लिये पाकिस्तान को धन और शास्त्रास्त्र देता है। मूल सच्चाई है अपने सत्य व्यवहार की रक्षा। शेष गौण है।

"लोग कहते हैं कि रिश्वत देने वाला भी अपराधी है। यह बात तब ही ठीक हो सकती है जब मेरे रिश्वत लेने वालों को भड़काने पर मेरी रक्षा होती हो। यह होता नहीं। कारण यह कि मैं किसी एक अफसर को पकड़ सकता हूं। वह भी पीछे अदालत में वकीलों के दाव पेंच चलवा बच सकता है, परन्तु यह निश्चय है कि पकड़वाने वाले ईमानदार व्यक्ति को कोई अफसर मुख नहीं लगायेगा।

"मैं अपने को उतने तक ही उत्तरदायी मानता हूं जहां तक मेरी ईमानदारी का सम्बन्ध है।

"इसी से मैं यदि मदनलाल से किसी प्रकार का सांझापन करूंगा तो उसका पालन करूंगा। उसके निर्माण उपसमिति का सदस्य होने से मैं किसी प्रकार की उससे अनुचित सहायता नहीं मागूंगा।"

अगले दिन गणपतराय से मदनलाल के प्रस्ताव पर बातचीत हो गयी। गणपतराय को निलम्बित हुए दो वर्ष हो चुके थे। और वह सरकार के विपरीत मुकद्दमा लड़ रहा था। उसने दिल्ली सबजज की अदालत में यह प्रार्थना की थी कि उसको निलम्बित किया जाना रद्द किया जाये। सरकार कहती थी कि निलम्बित करने और नौकरी से निकाल देने में अन्तर है। निलम्बित करने में सरकार हस्तक्षेप नहीं कर सकती। गणपतराय का यह कहना था कि निलम्बित करने में भी कुछ नियमोपनियम हैं। उनका पालन होना चाहिये। गणपतराय पहिली अदालत में मुकद्दमा जीत गया था। इस पर सरकार ने उच्च न्यायालय में अपील की थी। हाईकोर्ट में भी हार कर सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में अर्जी कर दी। अभी वहां निर्णय नहीं हुआ था कि सरकारी लेखा-निरीक्षण विभाग में इस मुद्दकमे पर आपत्ति उठा दी। गणपतराय ने इस विषय पर संसद की लोकसभा में

प्रश्न पुछवा दिया। इस पर केन्द्रीय सरकार के निर्माण विभाग में जांच होने लगी। जांच पर पता चला कि गणपतराय को निलम्बित करने में नियमोल्लंघन किया गया है। इसका अपराधी शिवाराव पाया गया और शिवाराओ को नगर के पश्चिमी विभाग से बदल कर पूर्वी विभाग में नियुक्त कर दिया गया। और उसके स्थान पर एक गड़वाली पंडित सी० आर० पंत लगा दिये गये। पंत ने अपने पद का चार्ज लेते ही गणपतराय को मौखिक संदेश भेज कर अपनी कोठी पर बुला लिया।

गणपतराय ने बिना किसी संकोच के कह दिया, "मैं बिलकुल निर्दोष हूं। सरकार ने जो कुछ मेरे विरुद्ध किया है, उसको वह वापिस ले ले। मैं तो कुछ कर नहीं रहा।"

"देखो गणपतराय !" सरकारी अफसर ने कहा, इसमें सरकार की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। संसद में उत्तर देना है। हम वहां पर तुम्हारे, विरुद्ध कई प्रकार के आरोप लगा कर उत्तर दे सकते हैं। इससे तुम्हारे भविष्य पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। तुम अपने व्यवहार के लिये क्षमा मांग लो तो हम अपील वापिस ले लें। और तुम्हारे 'सस्पैन्शन' की आज्ञा को वापिस ले लेंगे।"

"किस बात के लिये क्षमा मांग लूं ?"

"यही कि जो कुछ तुमने गलतियां की हैं उनको फिर नहीं करोगे और तुम क्षमा कर दिये जाओगे।"

"परन्तु श्रीमान् जी ! मैंने तो कोई गलती अपनी जानकारी में की नहीं।"

"तुमने एक सरकारी अफसर होते हुए एक मजदूर की बीवी से अनुचित सम्बन्ध बनाया है।"

"यह बिलकुल झूठ है। कौन कहता है यह ?"

"तुम्हारे ही आधीन एक मेट नानकसिंह था। यह उसके बयान हैं।"

"तो मेरे चार्ज शीट में यह लिखा क्यों नहीं गया ?"

"इसलिये कि इस बात को जनसाधारण में प्रकट करने पर महकमा की भारी बदनामी हो जाती।"

"देखिये साहब ! नावकसिंह को मेरे विपरीत किसी प्रकार का रोष हो सकता है और उसने झूठी शिकायत कर दी है, परन्तु उसके विषय में जाँच होनी चाहिये। सरकार को महकमा की झूठी प्रतिष्ठा की बहुत चिंता है और एक महकमा में इमानदार व्यक्ति की इज्जत की चिन्ता नहीं।

"मैं आपसे सिर्फ यह आशा करता हूं कि सुप्रीम कोर्ट से सरकार अपील वापिस ले ले। मेरे निलम्बित करने की आज्ञा वापिस ली जाये और मेरा दो वर्ष का वेतन मुझे मिल जाये। यही एक ढंग है जिससे सुलह हो सकती है।"

"यह नहीं होगा।" पंत का यह कहना था।

"तो सुलह का प्रश्न ही नहीं है। सरकार नानकसिंह को अदालत में पेश क्यों नहीं करती ?"

"मैं तो यह कहना चाहता था कि इस मुकद्दमे पर सरकारी अफसरों के घर से एक पैसा खर्चा नहीं हो रहा। तुम्हारा दिवाला पिट रहा होगा। साथ ही तुम इस काल में कुछ काम धन्धा कर नहीं सकते। परिणाम यह होगा कि तुम उजड़ जाओगे।"

"मैं ऐसा नहीं समझता। सरकार से मेरा एक चौथाई से भी कम व्यय हो रहा है। इतना कुछ तो अपनी मान प्रतिष्ठा के लिये तो खर्च करना ही पड़ेगा।"

"और सरकार को चार गुणा छोड़ दस गुणा भी खर्च करना पड़े तो करेगी। सरकार का क्या जाना है। वह जनता के टैक्सों में से दिया जाता है। तुम बरबाद हो जाओगे।"

"मुझे इस बात की चिन्ता नहीं।"

पंत ने यह धमकी दे दी और गणपतराय को खुद मुकद्दमा लड़ने के लिये तैयार करने की बात कह दी। उसने कहा, "अभी तो दो वर्ष ही हुए

हैं। यह केस दस वर्ष तक चलेगा।"

: ७ :

गणपतराय अपने बुलाये जा कर इस प्रकार की धमकी का अर्थ नहीं समझ सका था। परन्तु वह कुछ कर नहीं सकता था। विवश वह इस धमकी का किसी प्रकार का उत्तर दिये बिना अपनी कोठी पर लौट आया। वह पंत से मिलने सायंकाल पांच बजे गया था और साढ़े छः बजे घर पर पहुंचा। उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने पूसा रोड वाली कोठी पर ननकू को बैठे प्रतीक्षा करते देखा।

गणपतराय अभी-अभी सुन कर आया था कि उसके विपरीत ननकू ने ही आरोप लगाया था। इससे वह सतर्क हो उससे मिला, "सुनाओ भाई ननकू! कैसे आये हो?"

"आप से ही मिलने आया हूं।"

"सच? क्या बात है?"

"आप भीतर चलिये। कुछ कहने और आपको समझाने आया हूं।"

गणपतराय ने कोठी के ड्राइंग रूम में ननकू को ले जाकर बैठाते हुए स्वयं ही बात आरम्भ कर दी। उसने मुस्कुराते हुए पूछ लिया, "भाई ननकू! अब तो तुम नानकचन्द लगते हो। कहीं से गड़ा धन मिल गया मालूम होता है।"

"क्या परिवर्तन देखा है आपने मुझ में?"

"पहिले तुम्हारे दर्शन ईंटा ढोते हुए होते थे। फिर मैंने ही सिफारिश कर तुमको मेट बनवा दिया था। इस पर भी मेट का वेतन इतना नहीं होता कि तुम ऐसे वस्त्र पहन सको जो तुम पहिने बैठे हो। वैसे मुख से भी मजदूरों की सी अवस्था दिखाई नहीं देती।"

"ओह! तो आप मेरे ये खद्दर के कपड़े इत्यादि देख रहे हैं?'

"हां! और मुख पर हज़ामत इत्यादि तथा चिकनापन मजदूरों का सा नहीं है।"

"बात यह है बाबू जी ! अब मेरी तरक्की हो गयी है।"

"सत्य ? तो अब तुम्हारी क्या पदवी ?"

"यह बताने की स्वीकृति नहीं। केवल इतना कह सकता हूं कि मैंने इस प्रकार बन ठन कर घूमने की सामर्थ्य प्राप्त कर ली है।

"मैं मजदूर था और ननकू कहाता था। फिर आपकी सहायता से मेट बना तो ननकू हो गया और अब मैं एक संस्थान में चीफ ऑरग्नाइजर हूं और अब मेरा नाम नानकसिंह है।"

"तुम बोलने के लहजे से तो पंजाबी मालूम होते हो।"

"जी ! मैं पंजाब में न्यास गांव का रहने वाला एक जमींदार गुरमुख सिंह का सब से छोटा लड़का हूं।"

"ठीक ! यह तो मुझको पहिले ही समझ आया था कि तुम किसी भले घर के युवक हो। अब तुम्हारी बातों से तो कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि तुम कुछ पढ़े लिखे भी हो।"

नानकसिंह हंस पड़ा। हंस कर बोला, "मैं पंजाब विश्वविद्यालय का स्नातक हूँ।"

"ओह ! परन्तु मजदूरी करने की आवश्यकता किस लिये पड़ी थी ?"

"मेरे अफसरों ने मुझको ऐसा करने के लिये कहा था। मैंने अपना वह कार्य बहुत सफलता से चलाया था। इसी कारण अब मेरी उन्नति हो गयी है और मैं अब सवा सौ रुपया महीने के मकान में रहता हूं। सवारी के लिये अभी बाइसिकल मिली है, परन्तु शीघ्र ही एक स्कूटर मिलने की आशा कर रहा हूं।"

"तो भाई ! मेरी बधाई स्वीकार करो।" गणपतराय ने कह दिया। वह यह समझा था कि नानकसिंह खुफिया पुलिस में नौकर है और महकमा की तरफ से उस पर जासूसी करने के लिये भेजा गया था। वह मजदूर बन उस के अपराधों की छान-बीन कर रहा था। अब उसको किसी अन्य पर जासूसी करने के लिये लगाया गया है और यहां उसको खद्दर पोश बन जासूसी

करनी पड़ रही है। पर वह मन में विचार कर रहा था कि अब वह उससे क्या कहने अथवा पूछने आया है।

गणपतराय सुखिया और उसके घरवाले भगौड़ी का वृत्तान्त सुन चुका था। उनकी कहानी में भी ननकू ने सक्रिय भाग लिया था। तो यह वहां क्या कर रहा था। इसका झुग्गी बस्ती को आग लगवाने में कितना हाथ था और क्यों था ? वह समझ नहीं रहा था।

गणपतराय को इस प्रकार विचार मग्न देख नानकसिंह ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "नहीं विश्वास आया न मेरी बात का ?"

"मन तो यही कहता है कि कह दूं कि तुम सब झूठ कह रहे हो, परन्तु मेरे मुख से इस प्रकार का अभिमान युक्त वाक्य नहीं निकलता। इस कारण मैं तो यही कहूं कि तुम जो कुछ भी हो, इस सब का मुझसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं। फिर जो कुछ भी तुम हो, या कहते हो मेरी चिंता का विषय नहीं। मैं तो यह जानने के लिये उत्सुक हूं कि तुम्हारा यहां आना किस मतलब से हुआ है।"

"मैं आप के विपरीत निलम्बन आज्ञा वापिस होने की बधाई देने आया हूं।"

"नानकसिंह !" गणपतराय ने दृढ़ता से कहा, "मैं अभी-अभी पंत साहब से मिल कर आया हूं। बहुत बातें हुई हैं और अन्त में उनके मुख से सुन आया हूं कि मुकद्दमा दस वर्ष तक चलेगा। अभी तो दो वर्ष ही हुए हैं।"

नानकसिंह हंस पड़ा और बोला, "कदाचित् ये पंत साहब अपने-आपको राष्ट्रपति से भी ऊपर समझने लगे हैं। देखिये मैं कहता हूं कि एक दो दिन में आपको अपने काम पर हाज़िर होने की आज्ञा होने वाली है।

एक तो मेरी बधाई स्वीकार करिये दूसरे मैं यह बताना चाहता हूं कि इसका श्रेय मुझको भी कुछ तो है। मुझको यह कहा गया था कि मैं आपके विपरीत एक स्टेटमेंट दे दूं कि आप भ्रष्ट चरित्र रखते हैं। मैंने

इन्कार कर दिया है, इसी कारण आपके अधिकारियों को आपके विरुद्ध मुकद्दमा वापिस लेने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय ही प्रतीत नहीं होता।"

गणपतराय ने कह दिया, "यद्यपि मेरी पंत साहब से बात-चीत से मेरा मन कहता है कि तुम्हारी भविष्य-वाणी सत्य नहीं हो सकती। इस पर भी मेरे पास कोई कारण नहीं कि मैं तुम पर विश्वास न करूं। इस लिये तुम्हारा इस समाचार के लिये मुख मीठा तो करा ही देना चाहिये।

गणपतराय ने आवाज दी। नौकर आया तो उसे चाय तथा मिठाई लाने के लिए कह दिया। नानकसिंह चुप बैठा रहा। जब नौकर चला गया तो नानकसिंह ने कह दिया, "मेरा विचार था कि आपको कल ही कार्यालय में उपस्थित होने की आज्ञा आयेगी और तब आपको मेरा लिखा पत्र देखने को मिलेगा। मैं उस पत्र के विषय में अपनी सफाई देने आया था। मिठाई की तो कुछ अधिक लालसा नहीं।"

"कैसा पत्र ? गणपतराय ने पूछ लिया।

"एस० डी० ओ० शिवाराव ने मुझसे एक पत्र लिखवाया था। वह मुझ पर दबाव डलवाकर लिखवाया गया था। अब मैं उसी पत्र के विषय में अपना बयान मिस्टर पंत को दे आया हूं। पंत ने ही मुझ को बताया था कि आपको एक-आध दिन में काम पर बुलाया जा रहा है।"

इस समय नौकर चाय और रसगुल्ले की प्लेट लेकर आया और एक तिपाई पर रख कर चला गया। इस समय कन्हाईलाल ने बाहर से घंटी बजाई। गणपतराय उठकर देखने गया कि अब कौन आया है। वह कन्हाई लाल को अपने साथ भीतर ले वहां आ बैठा जहां नानकसिंह चाय पीने के लिए तैयार बैठा था।

गणपतराय ने कन्हाईलाल को एक कुर्सी पर बैठाते हुए पूछ लिया, "कन्हाईलाल ! चाय पीयोगे न ?"

"वैसे तो पी चुका हूं। अब तो घर जाकर खाना खाने का विचार रखता था। इस पर भी यदि आप कह रहे हैं तो एक प्याला ले सकता हूं।"

गणपतराय ने पुनः नौकर को बुलाकर कन्हाई के लिए भी एक प्याला मंगवा लिया। और चाय पीते हुए कन्हाईलाल से पूछ लिया, "इनको पहिचानते हो ?"

कन्हाईलाल ने मुस्कुराते हुए कह दिया, "इनको मैं भूल नहीं सकता। ये ननकू, नानकचन्द और अब नानकसिंह हैं।"

"तो तुम मुझसे अधिक जानते हो ?"

"मैं यही विस्मय कर रहा था कि किस शुभ कार्य के लिए आप इनको मिठाई खिला रहे हैं ?"

"ये कहते हैं कि मेरी बहाली होने वाली है। मैं इनके इस कहने पर इनका मुख मीठा करा रहा हूं।"

"तो आपको नौकरी पर बहाल होने की बहुत खुशी है ?"

"यह बात दूसरी है। मुझको खुशी होती तो मैं आप मिठाई खाता। यह तो मैं इनको खिला रहा हूं। इनको यह खुशी की बात लगी होगी तभी तो ये मुझको यह समाचार सुनाने आये हैं।

"हां जी ! मुझको तो खुशी हुई ही है।" नानकसिंह ने कह दिया।

"मुझको इस बात पर विश्वास नहीं आ रहा। जिस बात को कराने वाले आप स्वयं है, यदि उसमें सफलता नहीं मिल रही तो आपको शोक अनुभव होना चाहिए, प्रसन्नता नहीं।" कन्हाईलाल ने अपनी जानकारी को बताते हुए कहा।

"तो आप जानते हैं कि मैंने इनको मुअत्तिल कराने में क्या किया था?"

"मैं इससे बहुत अधिक जानता हूं। एक भगौड़ी से जो कुकर्म आपने कराया था और फिर उसकी बीवी से जो व्यवहार आपने कराया वह भी जानता हूं।"

"तब तो सत्य ही आप बहुत कुछ जानते हैं। तो यह भी सुन लीजिए कि मेरी योजना गरीब मजदूरों को गन्दी झुग्गियों से निकाल कर पक्के मकानों में रखने की थी। उसके लिए मैंने सहकारी 'लॉज' चलाने की योजना

बनाई। एक लॉज ही अभी खुला था कि उसमें सुखिया की भाँति के तीन केस हो गए। फिर एक औरत के लिए दो मजदूर लड़ पड़े और एक ने दूसरे की हत्या कर दी। परिणाम यह हुआ कि सहकारी लॉज बन्द करना पड़ा। भगौड़ी अपनी बीवी का एकत्रित धन लॉज से ले भागा और एक दिन उस धन से शराब पी अपने काम के एक साथी से लड़ पड़ा और शराब के नशे में उस पर गहरी चोट कर बैठा। अतः हत्या करने के यत्न में पकड़ा गया और सात वर्ष का दंड पा गया है।"

गणपतराय ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया, "तो सरकारी 'लॉज' अर्थात् सहकारी वेश्यागार भी आप चला चुके हैं?"

"यह भी मेरे अफसरों ने करने को कहा था और उनका यह काम भी असफल रहा।"

कन्हाईलाल आया था मदनलाल के प्रस्ताव पर विचार करने, परन्तु वहां नानकसिंह के सामने उसके प्रस्ताव पर बात नहीं कर सका। अतः अपने काम की बात न कर चाय पीने लगा था।

नानकसिंह ने कन्हाईलाल को सम्बोधित कर कहा, "मुझको सुखिया की मृत्यु का सख्त अफसोस है। डाक्टरों का कहना था कि उसकी बच्चेदानी में 'केन्सर' हो गया था। इस कारण उसकी अस्पताल में मृत्यु हो गई थी।"

कन्हाईलाल समझ गया कि यह झूठ भी हस्पताल वालों ने बनाया है। वह जानता था कि सुखिया हस्पताल वालों को बताये बिना वहां से भाग आई थी और वह अभी जीवित है। परन्तु उसने नानकसिंह का भ्रम दूर करना उचित नहीं समझा। अन्यथा वह कह सकता था कि यह सब झूठ है।

नानकसिंह चाय समाप्त कर चुका तो बोला, "मैं एक दो दिन बाद आपसे कार्यालय में मिलने आऊंगा। मैं तब बताऊंगा कि शिवाराव का क्या दबाव था कि मैंने वह झूठी चिट्ठी आपके विरुद्ध लिखी थी।"

"अच्छी बात है। मैं आपसे फिर मिल कर प्रसन्नता अनुभव करूंगा।"

नानकसिंह गणपतराय से हाथ मिला कर चला गया। उसके चले

जाने पर कन्हाईलाल ने बताया, "यह कम्युनिस्ट कार्य करता है। अपने दल की ओर से रोजाना उजरत पर काम करने वालों की ट्रेड यूनियन बनाने के काम पर लगा हुआ है। आज कल यह हमारे काम पर लगे मजदूरों की यूनियन बनाने का यत्न कर रहा है।

"हमारे तीन काम चल रहे हैं। एक विश्वविद्यालय में, एक आसफअली रोड पर और तीसरा नजफगढ़ रोड पर। नजफगढ़ वाला काम रामदयाल देखता है और दूसरे दो काम मैं देख रहा हूं। मेरे दोनों काम पर के मजदूरों की यूनियन इसने बनाई है; परन्तु मजदूरों से मेरे व्यवहार ने इसकी योजना को ढीला कर रखा है।

"मैं दो काम करता हूं। एक तो मजदूरों को सब प्रकार की सुविधाएं देता रहता हूँ। दूसरे, उनको उन्नति करने में सहायता देता हूं। इस पर भी मैं यह यत्न करता हूं कि उनको कम्यूनिस्टों की चालों से परिचित रहूं।

"नानकसिंह ट्रेड यूनियन बनाने में तो सफल हो गया है, परन्तु इसको मेरे कामों में विघ्न डालने का अवसर नहीं मिला। मैं स्वयं एक मजदूर रहा हूं और मज़दूरों के मनोभावों को समझता हूं। उनके भावों का समाधान करने का यत्न करता रहता हूँ और मैं अभी तक इसके कुचक्र से अपने मजदूरों को बचाता रहता हूं।"

"मैं तो इसको खुफिया पुलिस का अफसर समझता था।" गणपतराय ने अपना संदेह वर्णन करते हुए बताया।"

"कम्यूनिस्ट होना तो खुफिया पुलिस में होने से भी भयंकर बात हैं। खुफिया पुलिस वालों का अपना स्वार्थ कुछ नहीं होता, परन्तु एक कम्यूनिस्ट तो अपने वर्ग के स्वार्थ से अन्धा हो दूसरे वर्ग को विनष्ट करने के लिए प्रत्येक प्रकार के सत्य झूठ कर्म करता रहता है।

"जब से मुझे यह पता चला है कि मजदूरों का नेतृत्व कम्यूनिस्ट अपने हाथ में ले रहे हैं, मैंने इनके विषय में पर्याप्त अध्ययन किया है। इनकी पुस्तकें भी पढ़ कर समझने का यत्न किया। मैं तो यही समझता हूं कि ये

अकिंचन मज़दूरी से पेट भरने वालों का एक वर्ग समझ उनके विपरीत समाज के अन्य सब वर्गों को नष्ट कर देना चाहते हैं। यह तो ये कर नहीं सकेंगे। हां, ये अकिंचनों के स्वार्थरत हो जायेंगे। साथ ही इस जीवन-मीमांसा वालों ने अकिंचनों का हित उनकी अकिंचनता दूर करने में नहीं माना, वरंच दूसरों को भी अकिंचन बनाने में माना है। यह एक वर्ग के स्वार्थ का ही प्रतीक है, स्वार्थ भी मूर्खतापूर्ण इस कारण मैं इनको अति भयंकर जन्तु मानता हूं।"

गणपतराय मुस्कुराता हुआ कन्हाईलाल द्वारा कम्यूनिस्टों की विवेचना सुनता रहा। वह विस्मय करता था कि इस अनपढ़ मजदूर ने कैसे पांच छः वर्षों में ही इतनी उन्नति कर ली है कि इस वर्तमान युग की महान समस्या में भी विचार कर अपना मत निश्चय करने लगा है।

गणपतराय अभी विचार ही कर रहा था कि कन्हाईलाल ने अपनी बात बदलकर अपने आने का प्रयोजन बताना आरम्भ कर दिया। गणपतराय ने पूर्ण बात सुनकर कहा, "मैं तो तुमको सदैव ही अपनी नीति समझाता रहा हूँ। इन गलकटों के संसार में जीवित रहने का एक ही ढंग है। वह है इसमें रहते हुए भी इससे अलिप्त रहा जाये। बात घुमा फिराकर वहीं आ जाती है कि—

कबीरा तेरी झोंपड़ी गलकटयों के पास,
जो करनगे सो भरणगे तू क्यों भयो उदास ॥

"कबीर ने यह नहीं कहा कि इन गलकटों में से अपनी झोंपड़ी उठाकर दूर चले जाओ। यह सम्भव नहीं। यहाँ रहते हुए इनसे अलिप्त रहने का उपाय हो। यह भगवान कृष्ण ने बताया है। भगवान ने कहा है जिस मनुष्य के सब कर्म कामनाओं से रहित होकर और फल की इच्छा छोड़कर किये जाते हैं और जो अपने कर्मों को ज्ञान की अग्नि में दग्ध कर देता है, वह विद्वान कहाता है। जो कर्मफल की इच्छा त्यागकर सदा सन्तुष्ट और किसी की प्रशंसा व निन्दा का आश्रय छोड़कर कर्म में लग जाता है वह

कुछ भी नहीं कर रहा समझा जाना चाहिये।

अतः मेरा तो यह कहना है कि तुम उससे साझेदारी कर लो, परन्तु अपना काम उसके आश्रय पर मत छोड़ो। वह तुम्हारे काम की प्रशंसा करता है अथवा निन्दा करता है, इस भरोसे पर न रहकर अपने काम की श्रेष्ठता पर विश्वास रखो। साथ ही उसकी सिफारिश और उसके द्वारा प्राप्त रियायतों की भी इच्छा मत करो। आती है तो आने दो। नहीं आती तो मत आने दो। तुम अपना काम करते जाओ। इससे तुम पंडित माने जाओगे और सफल भी होगे।"

कन्हाईलाल स्वयं भी इसी प्रकार विचार करता था। इससे वह अपने निर्णय पर संतुष्ट था। उसने बता दिया, "वह हमारे कारोबार में गुमनाम पत्तीदार होगा।"

"यह मैं समझ गया हूँ। वह अपनी सदस्यता का नियम भंग कर रहा है। यह वह जाने और सरकार जाने। जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है तुम टेंडर भरकर देने के समय से लेकर काम सम्पूर्ण कर रुपया वसूल करने तक मदनलाल की सदस्यता का किसी प्रकार का लाभ न उठाना। तुमने तो उसको लाभ में से भाग देना है, उसके रुपये का प्रयोग करने पर। और बस। यह धन तुमने किसके नाम से अपनी किताबों में लिखना है, उससे पूछ लेना और वैसा ही दर्ज करना और साथ ही आय कर विभाग वालों को बता देना। यदि आय कर विभाग वाले कभी जानना चाहें कि तुमने किसके रुपये से काम किया है तो अपनी किताब में लिखे व्यक्ति का नाम धाम बता देना होगा।"

मदनलाल कन्हाईलाल की कम्पनी में रुपया दे गया। उसने जमानत देकर लायड्स बैंक से एक लाख रुपये का ओवरड्राफ्ट कन्हाईलाल के नाम ले दिया और कन्हाईलाल को विस्मय हुआ कि साझेदारी होने से पहले ही उनका टैंडर स्वीकार हो चुका था। उसको यह समझ आया कि टेंडर स्वीकार होने के पीछे ही मदनलाल उससे मिलकर साझेदारी की बात

निश्चय कर गया है। इसका अभिप्राय यह था कि उसका टेंडर अपने गुणों के कारण ही स्वीकार हुआ था।

समय-समय पर मदनलाल कन्हाईलाल से मिलता रहता था और उसको कई प्रकार की बातें बताता रहता था, परन्तु कन्हाईलाल ने अपना सिद्धान्त बना लिया था कि वह किसी प्रकार का भी अनियमित व्यवहार स्वीकार नहीं करेगा।

इसपर एक दिन रामदयाल ने पूछ लिया, "कन्हाईलालजी! आसफ अली रोड का काम कैसा काम चल रहा है ?"

"ठीक चल रहा है। तीन बिल भेज चुका हूँ। एक चालीस हजार का, दूसरा पैंतीस हजार का और अन्तिम पचास का। पहले दो का दस प्रतिशत छोड़कर शेष प्राप्त हो चुका है और तीसरा भी एक दो दिन में मिलनेवाला है। काम फर्स्ट क्लास का हो रहा है। लाभ कुछ कम हुआ है, परन्तु सुविधा पर्याप्त रही है।"

"यदि लाभ कम हो रहा है तो मदनलाल को बीच में सम्मिलित करने में क्या लाभ हुआ ?"

"लाभ यह हुआ है कि काम बहुत जल्दी पास होता है। बिल तुरन्त पास होते हैं और रुपया मिलने में देरी नहीं लगती। इसके परिणामस्वरूप हम यह दस लाख का काम केवल मदनलाल के एक लाख रुपये से निभा सकेंगे। अभी तीन महीने में ही हमने चार लाख का काम पूरा कर दिया है। दो बिल तैयार हो रहे हैं। यह सब इसी कारण हो सका है कि हमारे काम की पैमाइश और बिलों की मंजूरी तुरंत होती है। अन्यथा इतना काम डेढ़-दो वर्ष में हो सकता।"

"मतलब यह कि हमें अपनी उचित सुविधा प्राप्त करने के लिए मदनलाल को रिश्वत देनी पड़ रही है।"

"नहीं ठेकेदार साहब! रिश्वत तो वह धन होता है जिससे कोई अनुचित रियायत प्राप्त की जाये।"

"लेनेवाला तो रिश्वत ले रहा है ?"

"मैं उस रुपये का सूद दूंगा जो मुझे मदनलाल की सहायता से मिला है इतना रुपया मुझको इस सुविधा से प्राप्त न हो सकता और फिर इतनी कम पूंजी से इतना बड़ा काम करने योग्य न हो सकता। ये सब सुविधाएं मेरा अधिकार था। इस अधिकार को प्राप्त करने के लिए ही मुझे रुपये पर छः प्रतिशत के स्थान बीस प्रतिशत से ऊपर देना पड़ रहा है।

: ८ :

जिस दिन नानकसिंह गणपतराय के घर से रसगुल्ले खाकर गया था, उससे अगले ही दिन गणपतराय को सरकारी चपरासी कार्यालय में उपस्थित होने को आज्ञा दे गया था। इस आज्ञा में यह भी लिखा था कि सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से अपील वापस ले ली है।

गणपतराय उससे अगले दिन कार्यालय में पहुँच गया और काम पर जा पहुँचा। उसका पहला काम यह था कि उसने अपने निलम्बित रहने के दिनों के वेतन का बिल बनाकर ऊपर भेज दिया।

वह उचित अधिकारियों से मिलकर अपने बिल के शीघ्रातिशीघ्र स्वीकार किए जाने का अनुरोध करने लगा। जब वह इस विषय में बार-बार यत्न करने लगा तो पंत इत्यादि को विस्मय हुआ कि वह इतनी जल्दी किसलिए मचा रहा है।

गणपतराय को काम पर जाते अभी एक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि नानकसिंह उससे मिलने कोठी पर आया। आते ही उसने कह दिया, "मैं आज आपसे मिठाई खाने नहीं आया। मैं आपको अपनी वह चिट्ठी की नकल दिखाने लाया हूँ, जिसके आधार पर आप पर जांच बैठाई गई थी और आपको निलम्बित किया गया था।"

इतना कह नानकसिंह ने अपने थैले में से एक टाईप की हुई चिट्ठी जिसपर दो वर्ष पूर्व की तिथि छपी थी, दिखा दी। गणपतराय ने चिट्ठी पढ़ी। चिट्ठी लम्बी थी। बहुत अच्छी अंग्रेज़ी भाषा में लिखी थी। गणपत-

राय पर कई आरोप थे। इनमें चन्द्रकला से सम्बन्ध के विषय में भी एक था।

गणपतराय ने पत्र पढ़कर कहा, "नानकसिंह ! बहुत प्रबल आरोप लगाये थे तुमने ?"

"जी। परन्तु मैं इनको सिद्ध नहीं कर सका।"

"क्यों ? कोई झूठे गवाह नहीं मिल सके ?"

"मिलते थे, परन्तु वे आपके काम से सम्बन्ध नहीं रखते थे। चीफ इंजीनियर ने स्वीकार नहीं किये। आपके साथ सम्बन्ध में आनेवाले लोगों में एक भी नहीं मिला, जो इन आरोपों का समर्थन करता।"

"क्यों ?"

"मुझको स्वयं विस्मय होता रहा है। आज़ तक मैं इसका रहस्य नहीं जान सका। आज के अपने देश की अवस्था में यह बात आश्चर्यजनक ही थी। आपके परम प्रिय अफसर शिवाराव तो उनको अनेक प्रकार के प्रलोभन भी देते थे, परन्तु वे बहाने बना झूठ बोलने से बाहर रहते थे। मैं आपसे इसका रहस्य जानने ही आया हूँ। उस दिन भी इसी अभिलाषा से आया था, परन्तु आपको अभी काम पर बुलाने की आज्ञा नहीं आई थी। इस कारण मैंने न तो चिट्ठी दिखानी उचित समझी, न ही यह प्रश्न करना।"

"देखो भाई नानकसिंह ! मैं इसका एक ही कारण बता सकता हूं, परन्तु तुम उसको सत्य मानोगे नहीं। इस कारण बताने में लाभ नहीं समझता।"

"मैं सत्य क्यों नहीं मानूंगा।"

इसलिए कि तुम कम्यूनिस्ट हो और कम्यूनिस्ट परमात्मा में विश्वास नहीं रखते।"

"तो आप इसमें परमात्मा को कारण मानते हैं ? यह बात किसी सूझ-बूझ रखने वाले का समाधान नहीं कर सकती।"

"इसीलिए कहता हूँ कि श्री नानकसिंह जैसे सूझ-बूझ रखने वाले व्यक्ति को इस बात के बताने में कुछ भी लाभ नहीं कि परमात्मा मेरी रक्षा कर रहा था।

"परन्तु नानकसिंह ! एक बात मैं जानने के लिए उत्सुक हूं। यदि यह चिट्ठी तुमने अन्य किसी से लिखवाई नहीं तो तुम एक उच्च शिक्षा प्राप्त युवक प्रतीत होते हो।"

"यह चिट्ठी तो मेरी ही लिखी हुई है। वैसे मुझे अब यह न बताने में कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि मैं एम० ए० इन इंग्लिश हूँ।"

"इस पत्र को पढ़कर तो तुम्हारी बात पर विश्वास करना ही पड़ता है। अन्यथा ननकू का इतिहास जानकर तो इस बात को मानने पर बुद्धि तैयार नहीं होती। जैसे तुमको यह चमत्कार प्रतीत हुआ है कि आज के काल में किसी विषय में तुमको झूठे साक्षी नहीं मिले वैसे ही आज के काल में एक ग्रेजुएट को ईंट ढोते देख आंखों पर विश्वास नहीं होता।"

"तो कह दीजिये कि यह भी परमात्मा की प्रेरणा से हुआ है।"

"हुआ तो ईश्वर की प्रेरणा से ही है, परन्तु ईश्वर व्यर्थ में अथवा तमाशा देखने के लिये प्रेरणा नहीं देता। उसका इसमें कुछ प्रयोजन रहता है। सम्भवतः तुम्हारे पिछले जन्म के कर्म फल इस जीवन में फलीभूत हो रहे हैं।"

"यह सब झूठ है। छोड़िये इस बात को। मैं आपको बताता हूँ कि क्या बात थी। मैं जब कालेज में पढ़ता था तब ही ईश्वर इत्यादि किसी बात को नहीं मानता था। मेरे पिता जी गुरुमुख सिक्ख हैं। नित्य स्नान कर जपजी साहब का पाठ करते थे। वर्ष में एक बार गुरु-ग्रंथ साहब का पाठ रखा दिया करते थे और फिर हलुवा व अर्दास हुआ करती थी। मुझको यह कुछ भी पसन्द नहीं था। मैं कम्युनिस्ट दल का सदस्य तो विद्यार्थी जीवन में ही हो गया था। एम० ए० की परीक्षा दी और केश कटवा, दाढ़ी मूंछ सफा करवा घर पहुंच गया। घर वाले तो मुझको गालियाँ देने लगे।

पिता जी तो जूता ले मुझे पीटने दौड़े। मैं सिर पर पांव रख भाग खड़ा हुआ। बस, फिर मैं घर नहीं गया। मेरा परीक्षा फल पीछे निकला।

"मैं दिल्ली में पार्टी का होल टाइमर बन गया और फिर पार्टी वालों ने मेरी परीक्षा के लिये मुझे वह कठोर कार्य दिया था। अब पहिले से कुछ सुगम काम मिला हुआ है। बस यह है वह चमत्कार, जिसके पीछे आपको परमात्मा दिखाई देता है।"

"देखो नानकसिंह। अकारण कुछ नहीं होता। कारण इस समय अदृश्य है। इस समय पता नहीं लग रहा, परन्तु जैसे तुम मेरी आंखों के सामने एक सत्य का प्रतीक हो, वैसे ही तुम्हारे ये काम भी एक सत्य के प्रतीक होते हैं।"

"मैं तो यह समझता हूं कि मैं कुछ काम करता हूं। उस काम की सफलता तब होती है जब मैं उसको कुशलतापूर्वक करता हूं। असफलता मेरी अकुशलता का परिणाम होता है। यदि सहकारी लॉज की मेरी योजना असफल हुई है तो उसमें मेरी कार्य कुशलता में त्रुटि ही माननी चाहिये।"

गणपतराय ने आज नानकसिंह को एक पढ़े-लिखे की भांति युक्ति करते देख उसे कर्म की गति को समझाने का यत्न कर दिया। उसने कहा,

"भला तुम इतना पढ़-लिखकर भी कार्य-कुशल क्यों नहीं हुए ?"

"कार्य-कुशलता और पढ़ाई दो भिन्न-भिन्न बातें हैं।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ। तनिक कन्हाईलाल की बात ही समझ लो। उसकी सफलता उसकी कार्य-कुशलता के कारण ही है। यह पढ़ाई से भिन्न बात है। यही तो तुमने कहा है। भला यह कार्यकुशलता कहाँ से आ गयी है ? यह कर्म फल नहीं क्या ? मेरा मतलब है कि पूर्व जन्म के कर्मों का फल।"

"जो है नहीं उसका फल कैसे हो गया ?"

"है तो। तुम अपने एक कार्य में असफल हुए। मेरा मतलब है कि अपनी पढ़ाई का लाभ नहीं पा रहे। तुम दूसरे काम में भी असफल हुए हो। मेरा

अभिप्राय है इस सहकारी लॉज में।"

"कार्यकुशलता का अभाव यहीं प्रकट कर रहा है कि पूर्व जन्म के कर्म फलीभूत हो रहे हैं।"

"मैं ऐसा नहीं मानता।"

"तो कोई और कार्य करके देख लो। यदि यह घटनावश है तो किसी दूसरे कार्य में तो सफलता मिलनी चाहिये।"

"मैं अपनी एक योजना चलाने वाला हूं।"

"ठीक है। जब सफल हो जाओगे तो बताना। तुम्हें फिर रसगुल्ले खिलाऊंगा।"

नानकसिंह की योजना अपने विवाह की थी। जब वह करोलबाग में एक मकान लेकर रहने लगा तो उसका मन भोग-विलास में लीन, विवाह की बात विचार करने लगा। बह अपने लिये उपयुक्त पत्नी ढूंढ़ने लगा। यों तो पार्टी में कई लड़कियाँ थीं और वह किसी को भी अपने साथ रहने के लिये तैयार कर सकता था, परन्तु वह कोई ऐसी पत्नी चाहता था जो उसके अधीन होकर रहे। पार्टी की लड़कियां प्रायः उस पर शासन करती प्रतीत होती थीं।

जब भी कोई युवा स्त्री अथवा कुंवारी लड़की दिखाई देती वह उसको अपनी पत्नी बनाने की दृष्टि से देखता था। इस देखने की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न प्रकार की होती थी। प्रायः स्त्रियां मुख मोड़ कर चल देती थीं। कुछ माथे पर त्यौरी चढ़ा कर इसको देखती। कुछ ऐसी भी थीं इसको जूता दिखा देती थीं। कोई उसके देखने पर मुस्कुरा भी देती थीं। उनमें से ही उसकी खोज चलती थी।

आखिर वह अपनी खोज में सफल हुआ। जिस दिन नानकसिंह ने गणपतराय को बताया था कि वह अपनी एक योजना चलाने वाला है उस दिन तक उसका अपनी प्रिया से बहुत कुछ निश्चय हो चुका था।

वह उससे मिलने जाता था और उसको अपने पति का घर छोड़ उसके

साथ चलकर उसके अपने मकान में रहने की प्रेरणा दे रहा था। वह औरत कहती रहती थी, "इसकी क्या आवश्यकता है। जब तक दो पतियों में निर्वाह हो रहा है तब तक क्यों न किया जाये ?"

परन्तु यह बात चिरकाल तक चल नहीं सकी। एक दिन बात प्रकट हो गयी और अगला पग उठाना पड़ा।

: ६ :

जब से कन्हाईलाल ने कमेटी का काम लिया था वह बहुत ही व्यस्त रहता था। उसने अपना एक सहायक कृष्णकान्त नियुक्त कर रखा था। यह कृष्णकान्त विश्वविद्यालय क्षेत्र में क्षेल रहे कार्य की देखभाल करता था।

कृष्णकान्त कश्मीर रजौरी जिला का रहने वाला था। और पाकिस्तान के आक्रमण पर अपना घर छोड़ जम्मू में रहने चला आया था। इसके माता-पिता और एक बहिन तथा दो भाई थे। कृष्णकान्त उस समय सोलह-सत्रह वर्ष का था। जम्मू में अपने माता-पिता की आर्थिक स्थिति दुर्बल देख वह दिल्ली चला आया और कैम्प कालेज में पढ़ता हुआ नौकरी करने लगा था। कनाट प्लेस में एक दुकानदार के पास एक सौ रुपया मासिक पर लेखाकार के रूप में वह काम करता था। इस स्थिति में उसका विवाह हो गया तो सौ रुपया महीने में निर्वाह कठिनाई से होने लगा। दुकानदार वेतन बढ़ाना नहीं चाहता था। इस समय कन्हाई लाल अपने काम में कोई सहायक ढूंढ रहा था। गणपतराय को कृष्णकान्त की कठि-नाइयों का ज्ञान हुआ तो उसने उसे अपने पास रख लिया।

कन्हाईलाल ने उसे उसी अहाते में जहां कन्हाई के कारीगर रहते थे, कृष्णकान्त को पत्नी के साथ वहां पर रहने को स्थान दे दिया। अहाते में ऊपर की मंजिल पर दो कमरे कृष्णकान्त को सांकेतिक भाड़े पर दे दिये और वेतन दो सौ रुपया महीना नियत कर कह दिया कि काम मेहनतसे करेगा तो वेतन बढ़ाया भी जा सकता है। कन्हाईलाल ने कह दिया, "अधीन

काम करने वालों की कठिनाइयों पर सहानुभूति से विचार करना चाहिये। इससे ही उनसे ठीक काम लिया जा सकता है।"

कृष्णकान्त अपनी पत्नी के साथ ऊपर की मंज़िल पर रहने लगा। उसने कर्मचारियों के साथ मेलजोल का व्यवहार बनाना आरम्भ कर दिया था। वह काम पर भी अहाते में रहने वाले मजदूर और कारीगरों के साथ अपने मन का सा व्यवहार रखता था। उनसे मिलकर उनकी कठिनाइयों का ज्ञान प्राप्त करता रहता था और उन कठिनाइयों को दूर करने का भरसक प्रयत्न करता रहता था।

कन्हाईलाल भी कृष्ण कान्त से मिलकर उसके अधीनस्थ कर्मचारियों के सहायता कार्य में उसका दिग्दर्शन करता रहता था। इस कार्य में विषमता उत्पन्न हुई नानकसिंह के अहाते में आ कर्मचारियों से मेल-मिलाप बढ़ाने से। कृष्णकान्त को बता दिया गया था कि नानकसिंह से मेल-मिलाप रखना चाहिए, परन्तु इस कारण कि वह कहीं किसी प्रकार का आपत्तिजनक विचार कर्मचारियों में न फैला सके। जब भी किसी प्रकार की खराबी करने का विचार करे, उसका उचित प्रतिकार किया जा सके।

कृष्णकान्त ने नानकसिंह के सामने अपने को कन्हाई का एक कर्मचारी ही प्रकट किया। इस पर नानकसिंह कन्हाई के मज़दूरों में मनोविकार उत्पन्न करने का कृष्णकान्त को साधन बनाने लगा। नानकसिंह ने कृष्णकान्त को नए युग की जीवन-मीमांसा सिखानी आरम्भ कर दी। इस शिक्षा-दीक्षा में नानकसिंह का पग कृष्णकान्त के घर में जा पहुंचा और वहां उसको कृष्णकान्त की नवविवाहिता उपयुक्त पत्नी समझ आई।

कृष्णकान्त की पत्नी सुभद्रा विवाह से पूर्व सरकारी कार्यालय में नौकरी पर लगी हुई थी। लड़की ने ही कृष्णकान्त को अपना पति ढूंढा था। विवाह हुआ तो सुभद्रा ने स्वयं नौकरी छोड़ देने का विचार उपस्थित कर दिया। यह तब सम्भव हुआ जब कृष्णकान्त को कन्हाईलाल के यहां सेवा कार्य मिल गया।

परन्तु नानक की दृष्टि सुभद्रा पर पड़ी तो उसने इसे अपनी अभिलाषा पूर्ण करने का साधन मान लिया।

एक दिन सुभद्रा बस में कनाट प्लेस को जाती हुई नानकसिंह को मिल गई। परिचय तो था ही। बात-चीत भी होती रहती थी, परन्तु पति के सम्मुख। पति की अनुपस्थिति में मिलने का यह पहला ही अवसर था। नानकसिंह ने इस अवसर से लाभ उठाना अपना अधिकार समझ लिया। नानकसिंह ने सुभद्रा के पास बैठ पूछ लिया, "किधर जा रही हैं सुभद्रा जी।"

"घर बैठे-बैठे उचाट हो गई थी। विचार आया कि तनिक दिल बहलाने के लिए कनाट प्लेस में घूम आऊँ।"

"वाह! भला कनाट प्लेस में घूमने से दिल कैसे बहलेगा?"

"दुकानों की खिड़कियों में लगे सामान को देख-देखकर।"

"यही तो पूछ रहा हूं कि देखने से कैसे दिल बहलता है? खरीदने की सामर्थ्य हो तो कुछ बात भी है।"

सुभद्रा ने दीर्घ निःश्वास छोड़ा और चुप रही। नानकसिंह ने उसे सांस छोड़ते देख समझ गया कि मर्म स्थान का पता चल गया है। ठिकाने पर चोट लगी तो यह औरत उसकी मनोकामना पूरी कर देगी। उसने कुछ देर तक चुप रह कर कह दिया, "मुझको कुछ ऐसा समझ आया है कि सुभद्रा जी का यह जीवन सुखी नहीं?"

"भाग्य की बात है। मां बेचारी लोगों के घर में काम कर निर्वाह करती है। मैंने दफ्तर की नौकरी छोड़ी थी सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिए। परन्तु पता लगा है कि यह भूल थी। दो सौ रुपये महीने में निर्वाह कठिन है।"

"तो इस अवस्था को सुधारने का यत्न किया जा सकता है।"

"कैसे?"

"किसी समय घर आकर बताऊंगा। जब एक स्थान पर नौकरी से

पर्याप्त आय न हो तो मालिक बदल लेना चाहिए। कभी यह भी हो जाता है कि दूसरे स्थान पर ओवर टाइम लगा कर आय में वृद्धि की जा सकती है।"

यह आरम्भ था नानकसिंह की योजना का और नौबत यहां तक पहुँच गई कि सप्ताह में दो-तीन बार नानकसिंह कृष्णकान्त के घर दोपहर के समय पहुँच सुभद्रा को अपने घर ले जाता था।

नानकसिंह उसको अपने ही घर में रख लेने का यत्न करने लगा तो सुभद्रा ने कह दिया, "पार्ट-टाईम' कार्य ठीक नहीं क्या ?"

इस पर बहस चल रही थी कि एक दिन नानकसिंह विश्वविद्यालय क्षेत्र वाले कार्य पर गया तो कृष्णकान्त ने उसकी बहुत बुरी तरह मरम्मत की। कारणवश इसी समय कन्हाईलाल वहां अपने स्कूटर पर आ पहुंचा। वह स्कूटर को एक ओर खड़ा कर जब इमारत की ओर चला तो सामने नानकसिंह फटे वस्त्रों और सूजे मुख के साथ सामने आ खड़ा हुआ।

कन्हाईलाल ने प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो वह कहने लगा, "कन्हाईबाबू ! तुम्हारे पांच-छः लोगों ने मिलकर हमारी यह दुर्दशा की है और मैं पुलिस में रिपोर्ट करने जा रहा हूँ।"

"क्या लाभ होगा पुलिस में जाने का। किसने यह दुर्दशा की है। बताओ तो मैं तुम्हारी यहां पर ही सुलह सफाई करा देता हूँ।"

नानकसिंह ने कुछ विचार किया और फिर कह दिया, "यह सब कराया तो कृष्णकान्त ने है, परन्तु उससे साथ चार लोग और थे।"

"यह क्यों किया गया है ? क्या कारण समझे हो ?"

"मैं क्या बता सकता हूँ ? यह तो पीटने वालों को विदित होगा।"

"कृष्ण तो एक भला युवक ही समझ आता है। उसने यह क्यों किया ?"

"मैं तो उसको कैद करा कर रहूंगा।"

"इतनी पिटाई के लिए कैद नहीं हो सकती। देखो नानकसिंह ! तुम

ठंडा पानी पियो और आधी छुट्टी के समय कृष्ण से पूछ कर तुम्हारा फैसला करा दूंगा।"

इतना कह कन्हाई बन रही इमारत में चला गया और कृष्णकान्त के कार्य को निरीक्षण करते देख उसके पास जा खड़ा हुआ। कृष्णकान्त का मुख क्रोध से लाल हो रहा था और उसकी मुट्ठी बंधी थी।

कन्हाईलाल उसको एक तरफ ले जा कर पूछने लगा, "नानक से झगड़ा क्यों हुआ है ?"

"वह क्या कहता था ?"

"कहता था कि तुम्हारे कहने पर पांच ने मिलकर उसको पीटा है।"

"वह झूठ कहता है। पीटा तो मैंने अकेले ने ही है। हां, गोविन्द समीप था। वह समझ रहा था कि वह मुझसे तगड़ा है और मुझे नुकसान पहुंचा सकता है। इस कारण वह मेरी सहायता के लिए समीप खड़ा रहा था। उसने हाथ नहीं लगाया।"

"पर यह क्यों ?"

"आपको आधी छुट्टी के समय बताऊंगा। इस समय चित्त शान्त नहीं है।"

"तो तुम भी ठण्डा पानी पियो। नानकसिंह को भी मैं यही कह आया हूँ।"

कृष्णकान्त चुप रहा। वह हाजरी ले रहा था। कन्हाईलाल ने इमारत का नक्शा देखा और फिर बन रहे काम को देखने लगा।

मध्याह्न के अवकाश के समय कन्हाईलाल ने नानकसिंह को देखना चाहा, वह लापता था। कृष्णकान्त एक पेड़ के नीचे बैठ अपने डिब्बे में से खाना निकाल खा रहा था। कन्हाईलाल ने उसके समीप दो ईंट रखकर उस पर बैठ पूछने लगा।

"क्या बात थी कृष्ण ?"

"इसने मेरी पत्नी से अनुचित सम्बन्ध बनाया है। मैंने इसको कह

दिया है कि यदि इसके दर्शन फिर अहाते में हुए तो इसको यम द्वार दिखा दूँगा।"

"परन्तु कृष्ण ! इसने तुम्हारी पत्नी से सम्बन्ध बनाया है अथवा तुम्हारी पत्नी ने इससे सम्बन्ध बनाया है ?"

"मैं इन दोनों में अन्तर नहीं समझता।"

"परन्तु अन्तर तो है। देखो, क्या आयु है तुम्हारी पत्नी की ?"

"विवाह के समय इसकी माँ ने बताया था कि बीस वर्ष की है, परन्तु है वह बड़ी आयु की।"

"मतलब यह कि वह बालिग है। ऐसी अवस्था में दो ही बातें हो सकती हैं। या तो इसने उससे बलात्कार किया हो अथवा तुम्हारी स्त्री ने स्वेच्छा से उसको स्वीकार किया हो।"

"कुछ भी हो। मैं इस गुण्डे को सीधा कर दूंगा।"

"परन्तु कृष्ण ! गुण्डा कौन है ? यह निर्णय किये बिना किसको सीधा करोगे ? मेरी राय मानो पहिले अपनी पत्नी को काबू में करो। कहीं ऐसा न हो कि वह स्वेच्छा से तुमको छोड़ जाय। तब मार पीट का कुछ भी लाभ नहीं होगा।"

"परन्तु इसकी हत्या कर दूं तब तो लाभ हो जायेगा। वह मुझे छोड़ किसके पास जायेगी।"

"और यदि नानक मर गया, और तुम पकड़ लिये गये तो तुम फांसी चढ़ा दिये जाओगे और तुम्हारी बीवी किसी तीसरे के पल्ले जा पड़ेगी। यह सुझाव नहीं है इस समस्या का।"

"तो क्या सुझाव है ?"

"पहले अपनी बीवी को पक्का करो। तब नानकसिंह को समझा दिया जायेगा। और यदि वह न माने तो उसकी इससे भी जबरदस्त पिटाई करा दी जायेगी।"

"तो आप इसमें मेरी सहायता करेंगे ?"

"तब यह तुम्हारी सहायता नहीं रहेगी। यह तो तुम्हारी स्त्री की एक दुष्ट से रक्षा की बात बन जायेगी। उस समय हम दूर सीमा तक जा सकेंगे। एक अबला की रक्षा में हत्या क्षम्य हो जाएगी।"

कृष्णकान्त को समझ तो आयी, परन्तु उसे आशा नहीं थी कि उसकी स्त्री सर्वथा निर्दोष है। पिछली रात उसने सुभद्रा से बात की थी। सुभद्रा का कहना था कि आपका इससे क्या सम्बन्ध हो सकता है? आप मेरी मोनोपली चाहते हैं?"

कृष्णकान्त ने इस कथन का अभिप्राय जानकर कह दिया, 'सुभद्रा! मेरा तुम्हारे साथ विवाह हुआ है।"

"तो फिर क्या हुआ? वह विवाह टूट तो नहीं रहा।"

"परन्तु तुमने तो एक दूसरे को पति बना रखा है।"

"एक से पेट नहीं भरा तो पार्ट टाइम दूसरे का काम भी कर लेती हूँ।"

"तो तुम मेरी नौकरी करती हो क्या?"

"अर्थ की दृष्टि से तो यही समझ आया है।"

"तो तुम्हारी नौकरी तुड़वा देना चाहता हूँ।"

इस पर सुभद्रा चुप रही थी। कृष्णकान्त ने उसे भी कहा था तुम्हारे 'पार्ट टाइम' मालिक को भगा दिया जायेगा।"

कृष्ण अपनी पत्नी का यह भाव समझ कर कन्हाईलाल की बात पर विचार कर रहा था। वह मन में विचार कर रहा था कि कन्हाई ठीक कहता है कि पहले सुभद्रा को समझाना चाहिये।"

एकाएक कृष्ण के मन में यह बात आयी कि यदि सुभद्रा नहीं मानी तो फिर क्या करना चाहिये? उसने यही प्रश्न कन्हाई लाल से कर दिया। "यदि सुभद्रा ने स्वेच्छा से नानकसिंह को न छोड़ा तो क्या करना चाहिये?"

"तुम्हें उसको छोड़ देना चाहिये।"

"और रंडवा हो घूमता फिरूँ ?"

"पर बलपूर्वक किसी औरत को अपने पास कैसे रख सकते हो ?"

कृष्णकान्त अभी विचार ही कर रहा था कि नानकसिंह कपड़े बदल और घावों पर मर्करी क्रोम लगवा वहाँ आ पहुंचा। इस समय उसके साथ दो हृष्ट-पुष्ट आदमी भी थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वह लड़ने की तैयारी कर आया था, कन्हाई लाल को वहां बैठे देख उसने अपने साथ आ रहे आदमियों को दूर खड़े रहने का संकेत कर स्वयं समीप आकर कहने लगा, "मुझको भय लग रहा था कि कृष्ण मेरी हत्या कर देगा। इस कारण मैं अपने दो अंग रक्षक साथ लेकर आया हूँ।"

कन्हाईलाल ने कहा, "हत्या ही करनी होगी तो एक की क्या और क्या तीन की। नानकसिंह ! जानते हो यहां पचास से ऊपर लोग काम करते हैं और सब मेरा कहा मानने को तैयार हैं।"

"परन्तु मैंने आपका क्या बिगाड़ा है जो आप मेरी हत्या करवायेंगे ?"

"तुमने कुकर्म जो किया है। कुकर्म करने वालों से यही तो किया जाता है।"

"पर कन्हाई बाबू ! मैंने कोई कुकर्म नहीं किया।"

"तो किसी की विवाहिता से सम्बन्ध बनाना कुकर्म नहीं क्या ?"

"परन्तु बाबू साहब ! कौन किसकी पत्नी है ?"

"जिससे उसका विवाह हुआ है।"

"परन्तु विवाह क्या होता है ?"

"तुम तो इतना पढ़-लिख कर भी इतना नहीं जानते कि विवाह क्या होता है ?"

"बाबू साहब, जानता हूं।" इस समय तक नानकसिंह भी उनके पास बैठ गया था। उसने अपने मन की बात कह दी, "जब एक मर्द और एक औरत स्थाई रूप में साथ-साथ रहने का वचन दें तो विवाह होता है। सुभद्रा ने मेरे साथ स्थायी सम्बन्ध बनाने का वचन दे दिया है। इससे मैंने

कोई कुकर्म नहीं किया।"

"इसका कोई साक्षी है क्या ? और फिर पहले वचनों का क्या हुआ ?"

"यह तो कोर्ट के निर्णय करने की बात है। यदि कृष्ण को कोई आपत्ति है तो वह कचहरी में जाकर मुझपर दावा कर सकता है और मैं वहां जवाब दे दूंगा।"

"यह तो ठीक है। परन्तु कृष्णकान्त, तुम्हारे उसके घर पर आने पर आपत्ति करता है और यही उसने आज किया है। यही फिर करेगा।"

नानकसिंह ने मुस्कुराते हुए यह कहा, "आपत्ति करना कृष्णकान्त का अधिकार नहीं। घर सुभद्रा का है। वह ही मेरे अथवा कृष्णकान्त के आने पर आपत्ति कर सकती है। पुरुष तो आने-जाने वाले पंक्षी होते हैं।"

"तो तुमने उस मकान को कटरा समझा हुआ है ? यह बात नहीं। वह मकान मैंने अपने काम करने वालों के लिये ले रखा है। और जो मेरा काम छोड़ देते हैं, उनको वह मकान भी खाली करना पड़ता है। सुभद्रा मेरा किसी प्रकार का काम नहीं करती।"

"आप ठीक कहते हैं, परन्तु ऐसा मालूम होता है कि आपके किराये-दार कृष्ण ने उसे सुभद्रा के रहने को दिया हुआ था। अतः अब वह माल-किन है। पहले उसे बेदखल कराइये। पीछे आपकी युक्ति काम करेगी।"

कन्हाई लाल ने समझा कि यह पढ़ालिखा बेईमान है। इस कारण यह झगड़ा करेगा। अतः बात समाप्त करने के लिये कह दिया, "नानक-सिंह ! मैं समझता हूँ कि तुम दोनों में झगड़े का मूल कारण सुभद्रा है। अतः जब तक यह उपस्थित झगड़ा निपटाया नहीं जा सकता, मैं तुम दोनों में सुलह नहीं करा सकता।"

"तो आप इस बात में मत पड़िए। मैं स्वयं निपट लूंगा।"

इतना कह वह उठ खड़ा हुआ और कृष्णकान्त को पूछने लगा, "अच्छा कृष्णकान्त जी ! अब आप क्या चाहते हैं ? क्या सुभद्रा का पूर्ववत् सम्बन्ध चलेगा अथवा उसको बदलना चाहते हैं।"

"मैं तुमसे इस विषय में बात करना नहीं चाहता। मैं सुभद्रा से निर्णय कर लूंगा। वह ही तुमको बतायेगी कि क्या निर्णय किया गया है।"

"तो मैं चलता हूं। मैं अब सुभद्रा से ही पता करूंगा कि उसने क्या प्रबन्ध किया है।"

नानकसिंह चला गया। उसके चले जाने पर कन्हाईलाल ने कृष्ण कान्त से कहा, "बात वही ठीक है जो मैंने कही है। सुभद्रा को समझाना चाहिये।"

"बाबू जी! मुझे शेष समय की छुट्टी दे दीजिये। मैं अभी घर जाना चाहता हूँ और उस चुड़ैल को चोटी से पकड़कर घर से बाहर निकाल देना चाहता हूं। वह दो पतियों की पत्नी बनकर नहीं रह सकती। दोनों जहान का मज़ा मैं उसे नहीं लेने दूंगा।"

कन्हाईलाल भी यही ठीक समझता था। उसने कृष्णकान्त को छुट्टी देकर कह दिया, "अपने साथ चार-पांच मजबूत साथी ले जाना चाहिये। मुझे भय है कि कहीं नानकसिंह मकान पर पहुंचा तो झगड़ा न हो जाये।"

कन्हाई ने पांच और आदमियों को छुट्टी दे दी और वे सब कृष्णकान्त के घर को चले गये।

आज कन्हाई इसी काम पर रहा। अभी चार ही बजे थे कि कृष्ण-कान्त लौट आया। कन्हाईलाल प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा तो उसने बताया, "हम बस में देवनगर गये थे। आधा घण्टा लगा होगा। परन्तु हमारे जाने से पूर्व सुभद्रा सब सामान लदवाकर चली गयी है। मेरा विश्वास है कि नानकसिंह मध्याह्न यहां आने से पहले ही उसे वहां से ले गया है।"

"और क्या कुछ ले गयी है?"

"मेरे वस्त्र और हजामत का सामान व पुस्तकें छोड़ गयी है। कदाचित् वह घर का सब सामान अपना समझती होगी।"

"कितने मूल्य का सामान रहा होगा?"

"चार-पांच सौ से अधिक का नहीं होगा। कुछ भूषण थे। वह तो उसके थे ही।"

"अब क्या करने जा रहे हो?"

"विचार है कि उस पर चोरी का इल्ज़ाम लगाकर पुलिस में रिपोर्ट लिखा दूं और पीछे दोनों को पकड़वा दूं।"

"मैं समझता हूं कि यह गलती होगी।"

"तो कुछ न करूं?"

"नहीं। पुलिस में रिपोर्ट लिखा दो और चोरी इत्यादि की बात न लिखाना।"

"इससे क्या लाभ होगा?"

"तुम पर उसको मार डालने का इल्ज़ाम भी लग सकता है। इससे बचने में यह लिखाना लाभप्रद होगा।"

कृष्णकान्त गम्भीर हो गया और अनिश्चित मन खड़ा रहा। कन्हाई लाल ने कहा, "कृष्ण! यदि राय पसन्द नहीं तो किसी और से राय कर लो।"

कन्हाई लाल के जानने वालों को कन्हाईलाल और गणपतराय के सम्बन्धों का ज्ञान था। अतः किसी और से राय की बात सामने आने पर कृष्णकान्त ने कह दिया, "ओवरसीयर बाबू से राय कर लूं?"

"ठीक है। बैठो मेरे स्कूटर के पीछे और हम दोनों उनकी कोठी पर चलते हैं।"

: १० :

गणपतराय ने नौकरी छोड़ दी थी। जिस दिन उसको निलम्बित किये जाने के काल का वेतन मिला, उसी दिन उसने एक मास के भीतर अपनी नौकरी से मुक्त किये जाने की अर्जी कर दी। मिस्टर पंत तो उसका पत्र पढ़कर चकित रह गया। उसने आश्चर्य में पूछ लिया, "मिस्टर गणपत-राय! यह क्या है?"

"यह मेरा नौकरी से त्याग पत्र है।"

"किसलिए ?"

"मैं ऐसे बुद्धिमानों के महकमे में रहना नहीं चाहता।"

"तो हम सब पर व्यंगात्मक टिप्पणी कर रहे हो ?"

"व्यंगात्मक नहीं साहब ! मैं सत्य हृदय से ऐसा मानता हूँ। मैं शिवाराव को और उसके साथ चीफ इंजीनियर साहब और उनसे भी ऊपर मन्त्री महोदय को सोलहों आना बुद्धिमान मानता हूँ। और स्वयं इतना बुद्धिमान न होने के कारण यहां रह कर कष्ट ही भोग रहा हूँ।"

"अब यदि मैं यहाँ रहा तो मेरे लिये नयी मुसीबत का भय होगा। आप मुझ जैसे मूर्ख को निकालने से डरेंगे और मैं अपने को पूर्ण रूप से 'अनफिट' पाऊँगा।"

पंत को गरणपतराय की बातों से क्रोध आ रहा था। उसने डांट के भाव में कहा, 'डोन्ट टाक ननॉसैंस, मिस्टर गरणपतराय ! बी सेंसिबल। मूर्खता की बात मत करो। होश में बात करो।"

"हुज़ूर ! यही तो कह रहा हूं। देखिये न। जिस अधिकारी ने झूठा दोषारोपण कर मुझको निकलवाने का यत्न किया, मैं मूर्ख उसके डिसमिस किये जाने की आशा करता हूं। भला कितनी बड़ी हमाकत है मेरी !"

मिस्टर पंत बौखला कर उठा खड़ा हुआ और बोला, "गेट आउट यू रास्कल।"

गरणपतराय बाहर चला आया। उसका त्याग पत्र वहीं मेज पर रखा रह गया। पहले तो पंत के मन में आया कि चिट्ठी को फाड़ कर फेंक दे, परन्तु फिर कुछ विचार कर कुर्सी पर बैठ गया और विचार करने लगा कि इसको अपनी धृष्टता का किस प्रकार मज़ा चखाया जाये। परन्तु सामने पड़े त्याग पत्र को देख कर वह कोई योजना नहीं बिचार सका कि उसका क्या करे।

उसने चपरासी से ठंडा जल मंगवाया। वह पिया तो उसका मस्तिष्क कुछ ठंडा हुआ। एकाएक उसने त्याग पत्र उठाया और चीफ इन्जीनियर के कमरे में चला गया।

पंत ने चीफ इंजीनियर के सामने गणपतराय का त्याग पत्र रख दिखा। चीफ ईन्जीनियर ने देखा तो कह दिया, "मुझे रजिस्टर्ड पोस्ट से इसकी नकल मिली है। उसमें लिखा है कि असल "थ्रू प्रपार चैनल" आ रही है।"

"मैं समझता हूँ कि वह बिलकुल पागल हो गया है।"

"क्या ?" चीफ इन्जीनियर ने घबरा कर पूछा।

"वह अभी मेरे पास आया था। उसकी आंखों में खून था और अवा-तवा बोल रहा था।"

"उसके साथ हुई भी तो बहुत बुरी है। पिछले दो वर्ष में पांच ओवर-सीयर उन्नति कर उससे आगे निकल गये हैं।"

"वे अपनी योग्यता के कारण हुए हैं। इसने किस विषय में अपनी विशेषता दिखाई है ?"

चीफ इन्जीनियर मुस्कुराता हुआ बोला, "मुकद्मा लड़ कर सरकारी वकीलों को पछाड़ कर। सब से बड़ी बात यह थी कि हमारा डिपार्टमैंट इसके विरुद्ध एक भी झूठा साक्षी नहीं बना सका।"

"यह भी भला योग्यता की बात है ? मेरा मतलब था कि···।"

"मैं तुम्हारा मतलब समझता हूं पंत देखो मेरी राय यह है कि इसको एक महीने की छुट्टी का वेतन दे कर कहो कि वह आराम करे और यदि आराम करने के उपरान्त भी उसका नौकरी छोड़ने का विचार हुआ तो उसे छुट्टी दे दी जायेगी।"

पंत को यह बात पसन्द नहीं थी, परन्तु चीफ इन्जीनियर उठ खड़ा हुआ और यह कह कि उसे मन्त्री महोदय तथा चीफ सैक्रेटरी से काम है, बाहर निकल गया।

पंत विस्मय में डूबा हुआ अपने कमरे में चला आया। वहां पहुंच उसने चपरासी भेज गणपतराय को बुला भेजा।

गणपतराय आया तो पंत ने कहा, "चीफ इन्जीनियर साहब की इच्छा है कि तुम एक महीने की छुट्टी "वेतन सहित" की अर्जी दे दो और इतने दिन तक आराम करो। पीछे जब तुम्हारा चित्त ठिकाने हो जायेगा तब त्याग पत्र पर विचार किया जायेगा।"

"पर मैं तो तुरन्त छुट्टी चाहता था। एक महीने के नोटिस के प्रतिकार में मैं एक महीने का वेतन छोड़ने को तैयार हूं।"

"परन्तु इतनी जल्दी किस बात की है? साहब का विचार है कि आराम करोगे तो स्वस्थ मन से नौकरी छोड़ने के विचार को छोड़ दोगे।"

"खैर। जब साहब की यह इच्छा है तो मैं अभी छुट्टी के लिये प्रार्थना पत्र लिख कर दे देता हूं। तो अब मैं जा सकता हूं क्या?"

"हां। और मेरी राय मानो तो कहीं पहाड़ पर चले जाओ। दिल्ली में गरमी बढ़ रही है।"

"धन्यवाद है। आपके सुझावों पर मैं विचार करूंगा।"

वास्तव में गणपतराय ने सरकारी नौकरी छोड़ कारोबार करने का निश्चय कर लिया था। उसका साला अमेरिका से 'पेंट्स एण्ड वार्निशिज' बनाने का काम सीख कर आया था और गणपतराय की सम्मति सहयोग से गाजियाबाद में एक रंग-रोगन का कारखाना खोलने की योजना बना रहा था।

रंग-रोगन का कारखाना खोलने के लिये पांच लाख रुपये पूंजी की एक प्राइवेट लिमिट्ड कम्पनी चालू की गयी। इसमें पांच पत्तीदार थे। गणपतराय था, उसका भाई लखपतराय था, गणपतराय का साला जगदीश था, जगदीश का पिता सुखदयाल था और कन्हाई लाल था।

एक-एक लाख रुपया सब ने डाला था और गाजियाबाद में फैक्टरी

तैयार की जा रही थी। जगदीश फैक्टरी के अध्यक्ष का काम करने वाला था और व्यवसायिक पक्ष गणपतराय के अधीन होने वाला था। यही कारण था कि गणपतराय सरकारी नौकरी छोड़ इस काम में लग जाना चाहता था।

जिस दिन गणपतराय एक मास की छुट्टी लेकर कार्यालय से लौटा था उसी दिन कन्हाईलाल कृष्णकान्त को अपने स्कूटर पर बैठा गणपतराय से मिलने आया था। वैसे फैक्टरी की कम्पनी में सम्मलित होने के करण कन्हाईलाल प्रायः नित्य जगदीश इत्यादि से बातचीत करने आया करता था। आज वह नित्य के समय से पहले ही आ पहुंचा था। इस कारण गणपतराय नें पूछ लिया, "कुछ खास बात हैं कन्हाईलाल ?"

"जी! आप कृष्ण को तो जानते है। नानकसिंह इसकी पत्नी को ले भागा है।

"ओह! अब समझा हूँ। कुछ दिन हुए वह कह रहा था कि वह एक योजना चलाने वाला है। तो यह योजना थी उसकी ?

"मैंने उसे कहा था कि वह कार्य कुशल नहीं। इस कारण उसकी योजनाएं सफल नहीं होती। मुझे डिसमिस कराने में उसके असफल होने पर यह बात हुई थी। इस पर उसने कहा था कि वह सदा असफल नहीं होगा। अब वह एक योजना चलाने वाला है और निश्चय वह उसमे सफल होगा।"

इस पर कृष्णकान्त ने पूर्ण वृत्तांन्त बता दिया। उसने बताया, "नानकसिंह मजदूरों की यूनियन के सम्बन्ध में हमारे रहने वाले अहाते में आया करता था। कुछ दिन से वह मध्याह्न के समय जब सब लोग काम पर होते थे आया करता था। दो दिन हुए सुमेर बीमार होने के कारण काम पर नहीं गया था। उसने सुभद्रा को नानकसिंह के साथ लौटते देखा वह उसको लेकर अपने कमरे में चली गयी। भीतर से कुण्डा चढ़ा दोनों एक घंटा भीतर रहे।

"सुमेर ने सायंकाल मुझे बताया तो मैंने सुभद्रा से पूछा लिया। उसने अपना सम्बन्ध नानकसिंह से स्वीकार कर लिया। मेंने उसे मना किया तो बोली कि मैं किसी की बिकी हुई लौंडी नहीं हूं। आप उसको मना कर दीजिये। वह नहीं आयेगा तो मैं उसको यहां नहीं बुलाऊंगी।

"इस कारण आज जब वह अपने किसी कार्य से काम पर आया तो उसकी मरम्मत कर दी। इस पर वह अहाते में आया प्रतीत होता है और सुभद्रा को लेकर चला गया मालूम होता है। मैं घर पर गया था और सुभद्रा वहां पर नहीं थी। साथ ही सब कुछ सिवाय मेरे पहनने के कपड़े और हजामत का सामान छोड़ सब ले गयी है।

"मैं यह जानने आया हूँ कि मुझको क्या करना चाहिये ?"

"कुछ नहीं। अपने काम में ऐसे लगे रहो जैसे कुछ हुआ ही नहीं।"

"और बीवी।"

"सामर्थ्य होगी तो और आ जायेगी।"

"मैं विचार कर रहा था कि उस पर चोरी का दोष लगा कर पुलिस में रिपोर्ट और फिर मुकद्दमा कर दूं।"

"कुछ लाभ नहीं होगा। किंचित् मात्र लाभ हुआ भी तो खर्चा लाभ से कई गुणा अधिक होगा। मुकदमें से बीवी तो मिलेगी नहीं। सम्भव तो यह है कि बहुत हल्ला हो जाये और कोई नई बीवी भी तुम्हारे घर आना पसन्द न करे।"

इस पर कृष्ण चुप कर गया। गणपतराय ने पुनः कहा, "देखो कृष्ण पति-पत्नी का सम्बन्ध कम से कम हिन्दुओं में एक जैन्टलमैनज़ अनरिटन कॉन्ट्रेक्ट (भले लोगों का अलिखित प्रबन्ध) होता है। इससे कचहरी में चाराजोई करनी व्यर्थ है।"

कृष्णकान्त चुप रहा और मन में विचार करता रहा। एकाएक वह उठा और हाथ जोड़ नमस्कार कर चला गया।

सुभद्रा नहीं लौटी और कृष्णकान्त नित्य अपने काम पर जाता रहा।

नानकसिंह पहले सप्ताह में दो तीन बार काम पर आता था और संगठन कार्य को कर रहा था। परन्तु कृष्णकान्त की पत्नी की घटना के उपरान्त वह इस काम पर भी नहीं आया। मज़दूरों और अन्य कर्मचारियों में कानों-कान नानक सिंह की निन्दा होने लगी थी। जब कोई कर्मचारी उससे पूछता था तो वह कह देता था, "प्रकृति ने पुरुष स्त्री को स्वेच्छा से विचरने के लिये बनाया है। इस कारण उसने वही कुछ किया है जो प्रकृति ने करने के लिये नियुक्त कर रखा है।"

मज़दूर और अन्य कर्मचारी युक्ति का उत्तर तो नहीं दे सकते थे, परन्तु उनको यह बात ठीक मालूम नहीं होती थी।

दिन व्यतीत हो रहे थे। कृष्ण कान्त की पत्नी सुभद्रा को गये दो मास के लगभग हो चुके थे। एक दिन नानक सिंह करौलबाग में सुभद्रा के साथ कुछ कपड़ा खरीद रहा था कि चन्द्रकला की नज़र पड़ गयी। वह भी कपड़ा खरीदने वहां गई हुई थी।

चन्द्रकला सुभद्रा को जानती और पहचानती थी। वह सुखिया को खर्चा देने जाती थी तो सुभद्रा से भी मिल लिया करती थी। अब उसे उसके नानक सिंह के साथ जाकर रहने का ज्ञान भी था। चन्द्रकला ने उसे देखा तो सुभद्रा एक क्षण के लिये घबराई तो फिर हाथ जोड़ नमस्कार करने लगी। इससे उत्साहित हो चन्द्रकला ने पूछ लिया, "ओह सुभद्रा! कहां रहती हो। सुखिया से मिलने गयी थी तो तुम्हारे कमरे को ताला लगा मिला। पता चला कि अब तुम वहां नहीं रहतीं।

नानकसिंह चन्द्रकला को नहीं पहचानता था। परन्तु सुखिया के नाम से वह सतर्क हो गया था। इस समय तक उसे विदित हो गया था कि सुखिया जीवित है और कन्हाईलाल के आश्रय में पल रही है। इससे उसे सन्देह हो गया कि यह कन्हाईलाल की पत्नी हो सकती है। इस पर भी वह पीछे हट कर खड़ा रहा। एकाएक सुभद्रा ने कहा, "मैं आपसे मिलने आपके घर आना चाहती थी, परन्तु डरती थी कि आप पसन्द करेंगी अथवा नहीं?"

"पसन्द क्यों नहीं करूंगी ?" चन्द्रकला ने समझते हुए भी अपने को अनभिज्ञ बताना ही उचित समझा।

सुभद्रा वहां दुकान पर खड़े-खड़े बताने में संकोच अनुभव करती थी। उसने बात बना कर कहा, "आप बड़े लोग हैं। इसलिये गरीबों से कैसा व्यवहार करते हैं ? जानती नहीं। कहें तो एक दिन आऊं ?"

"हां-हां ! तुम घर तो जानती हो। अहाते, जिसमें तुम लोग रहते हो उसके बाहर दक्षिण की ओर पचास पग जाकर ठेकेदार का मकान है।"

"मैंने मकान देखा है। अच्छा देखिये, ये मेरे······।" वह कहती-कहती रुक गई।

चन्द्रकला ने मुस्कुराते हुए कह दिया, "भाई हैं न ?" और चन्द्रकला ने नानकसिंह को नमस्कार कर दिया। नानकसिंह झेंप गया और भूमि की ओर देखता रह गया। सुभद्रा भी भाई का शब्द सुन लाल मुख हो भौंचक्की खड़ी रह गयी। चन्द्रकला को समझ आ गया था कि वह उसका नवीन पति नानकसिंह है। इस पर भी उसने अपने को वास्तविक बात न समझाते हुए पूछ लिया, "भाई साहब कहाँ काम करते हैं ?"

"ये आवारा गर्दी करते हैं। कहीं पक्का काम नहीं है। सप्ताह में एक दिन ही काम रहता है।" इस प्रकार सुभद्रा ने बात टालने का यत्न किया, परन्तु चन्द्रकला ने बात का सूत्र न छोड़ते हुए कह दिया कि इनके विषय में कृष्णजी को क्यों नहीं कहती। वे राम के पिता को कहकर पक्की नौकरी दिलवा देगें। गाजियाबाद में अपना एक बड़ा सा कारखाना चालू होने वाला है।"

"तो इनको भी साथ ले आऊंगी। आप इनकी सिफारिश कर दीजियेगा तो कुछ काम मिल जायेगा।"

"सिफारिश तो कर दूंगी, परन्तु रखने वाले तो ओवरसीयर बाबू हैं न। वे बिना परीक्षा लिये रखेंगे नहीं।"

"वैसे ये पढ़े लिखे हैं। मुझे विश्वास है कि परीक्षा पास कर लेंगे।"

बस और बात नहीं हो सकी। चन्द्रकला कपड़ा खरीद चुकी थी और कपड़े के बांधने तक ही बात चीत रही। चन्द्रकला ने दाम दिया और सुभद्रा को कहा, "अच्छा, जरूर आना सुभद्रा।" वह मार्केट से बाहर निकल गयी।

सुभद्रा ने तो केवल दो चोली के लिये कपड़ा लेना था। लिया, दाम दिया और नानकसिंह के साथ मार्केट के बाहर आ गया। बाहर सड़क के किनारे खड़े हो नानकसिंह ने पूछ लिया, "तुम इससे क्यों मिलना चाहती हो?"

"तो आप इसको जानते हैं!"

"जानता नहीं था, परन्तु तुम दोनों के वार्तालाप से समझ गया था कि यह कन्हाई की बीवी है।"

"हां। चन्द्रकला नाम है। मैं मिलने का विचार नहीं रखती थी, परन्तु जब आमना-सामना हुआ था तो कुछ बात तो करनी थी। बस, यही मिलने की ही बात कर दी।"

"मैंने समझा था कि अपना रोना रोने का विचार रखती हो?"

"आप मुझको मूर्ख समझते हैं। कहावत है न कि नानी ने नया विवाह किया तो बहुत खराब किया और फिर विवाह कर छोड़ दिया तो और भी खराब किया। मुझसे यह दूसरी बात नहीं हो रही।"

"तो इससे मत मिलने जाना।"

"क्यों?"

"एक तो यह मुझे तुम्हारा भाई समझती है। दूसरे यह सफलता-पूर्वक दो पति रख चुकी है।"

"मैं सुलखी मौसी से बात सुन चुकी हूं। यह बात गलत है।"

"उसका घर वाला भगौड़ी बताता था।"

"यह सब झूठ है। भगौड़ी तो महापाजी आदमी है।"

"तो तुम उसको भी जानती हो?"

"हां, सुखिया के द्वारा जान चुकी हूं कि उसने झुग्गी वस्ती को क्यों

ग्राग लगाई थी।"

"कदाचित् सुखिया को सब बात विदित नहीं ?"

"ग्रौर ग्रापको तो विदित है ?" सुभद्रा ने सतर्क हो उत्तर दिया।

"तो सड़क पर ही लड़ने लगोगी ?"

"मैं तो ग्रापसे लड़ती नहीं। परन्तु ग्राप जब सफेद को काला ग्रौर काले को सफेद कहते हैं तो मुझसे रहा नहीं जाता।"

"ग्रच्छा, बकवास बन्द करो, कहीं सड़क पर ही पिटाई न होने लगे।"

# तृतीय परिच्छेद

: १ :

एक दिन मध्याह्न के समय सुभद्रा चन्द्रकला से मिलने के लिए आई यह उस मुलाकात के लगभग एक सप्ताह बाद की बात है जब वह बाजार में चन्द्रकला से मिली थी।

चन्द्रकला को यह आशा नहीं थी कि वह आएगी। उसने उस दिन की पूर्ण बात को दिखावा ही माना था। इसी कारण उसने इस भेंट की बात को अपने पति से भी नहीं कही थी।

जब सुभद्रा आई तो एक क्षण के लिए वह घबराई। उसको सन्देह हो गया कि कहीं नानकसिंह भी उसके साथ न आ गया हो। उसने तुरन्त अपने को सम्हाल कर कहा, "तो आ गई हो। और अपने भाई को भी साथ ही लाई हो ?"

सुभद्रा खिलखिला कर हंस पड़ी। हंस कर पूछने लगी, "तो आप उसको नहीं जानतीं ?"

"किसको नहीं जानती ?" चन्द्रकला ने अपने को उसकी पूर्ण कथा से अनभिज्ञ ही प्रकट करने का निश्चय किया था।

सुभद्रा ने बात स्पष्ट करने के लिए पूछ लिया "आप किसी नानकसिंह को जानती हैं ?"

"जानती तो नहीं, हां नाम सुना है। सुखिया ने अपनी जीवन कथा सुनाते हुए उसका नाम और काम बताया था।"

"बस वही है, मैंने उससे दूसरा विवाह कर लिया है।"

कुछ क्षण तक चन्द्रकला बात समझने का बहाना करते हुए सुभद्रा का मुख देखती रही। सुभद्रा चन्द्रकला के समीप एक कुर्सी पर बैठ गई थी। फिर पूछने लगी, "पर तुम्हारा विवाह तो कृष्णजी से हिन्दू तरीके से हुआ था। वह तो अभी टूट नहीं सकता। अभी तलाक का कानून बना नहीं।"

"इसीलिए दूसरा विवाह विधिवत् नहीं हो सका। मैं समझती हूं कि यह ठीक ही हुआ है। मैं उससे भी ऊब गई हूं।"

"अरे! दूसरा विवाह कर भी लिया और उससे इतनी जल्दी ऊब भी गई हो!"

सुभद्रा ने आंखें नीची किए हुए कहा, "वह बहुत निर्दयता से पीटता है।"

"अरे तो तुम कोई बहुत ही खराबी का काम करती होगी?"

"अपनी जानकारी में तो कुछ भी खराबी का काम नहीं करती। केवल उसके झूठे होने का ज्ञान होने पर उससे कहती रहती हूं कि वह झूठ बोल रहा है?"

"तो वह झूठा भी है? भला क्या झूठ बोला है उसने?"

"वह कहता था कि उसका एक सहस्र रुपया मासिक वेतन है। उसके बैंक में बीस सहस्र रुपया नकद है। वह अपना एक मकान बनाने वाला है और कृष्ण जैसे बीस आदमी उसके अधीन काम करते हैं।"

"ओह! तो यह सब झूठ था?"

"हां, वह किसी राजनीतिक दल का नौकर है। वहां से उसको एक सौ बीस रुपया मासिक मिलता है। मकान और अन्य कुछ सुविधाएं उसको पार्टी की ओर से मिलती हैं।

"जब मुझे उसके इस झूठ का ज्ञान हुआ तो मैंने पूछ लिया कहां है उसका एक सहस्र रुपया वेतन?"

"वह कहने लगा कि वह रुपयों में नहीं है। वह किस्म में है। एक सौ

बीस रुपया तो पाकेट का खर्चा है। दो सौ का मकान है। कपड़े प्रति तीसरे मास मिलते हैं और फिर आने-जाने को मोटर, बस, स्कूटर तथा रेल का किराया है और दल की ओर से सिगरेट-शराब भी मिलती है। इन सबका दाम कूता जाए तो एक सहस्र से कम नहीं होगा।

"इस पर मैंने कह दिया कि बहुत बड़े झूठे हैं आप ?

"यह सुनते ही उसने मेरे मुख पर एक थप्पड़ दे मारा। वह पहली पिटाई थी। प्रायः वह बिना एक भी पैसा नकद दिए ही मुझे बहलाता रहा है। जब भी मैं उसको पिछली बातें बताती हूं तब ही पिटाई हो जाती है। मैं उसकी मार से ऊब गई हूं।"

"और कृष्ण से किस बात से ऊबी थीं।"

"उसके नग्न सत्य से और प्रत्येक अच्छी बुरी बात को प्यार में समाप्त करने से।"

चन्द्रकला हंस पड़ी। हंसते हुए कहने लगी, "एक के मीठे स्वभाव से ऊब गई थीं और दूसरे के कटु स्वभाव से।"

"बात तो यही है। पहले साहब के अति मीठे व्यवहार से अरुचि उत्पन्न हो गई थी और दूसरे के कड़वे स्वभाव से।"

"सुभद्रा ! तो अब क्या करोगी ?"

"इसी कारण तो आपसे मिलने के लिए आई हूं। मैं पिछले पन्द्रह बीस दिन से किसी से अपने विषय में राय करने का विचार कर रही थी। समझ में नहीं आ रहा था कि किस से बात करूं। उस दिन आप मिलीं तो समझ आया कि आप से ही राय कर लूं। वहां बाजार में और इन दूसरे साहब के सामने तो अपने मन की बात कह नहीं सकी। इस कारण आपसे घर आकर बात करने का निश्चय कर आ गई हूं।"

"देखो सुभद्रा ! खाने के लोभी, जिनको पेटू भी कहते हैं, तो यह करते हैं कि मीठा खाते है और फिर कड़वा खाते हैं। फिर मीठा खाते हैं और फिर कड़वा खाते हैं। परन्तु ये लोग तो शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

यह तुम भी कर सकती हो। तुम फिर कृष्ण जी के पास चली जाओ। और जब उसके व्यवहार से ऊब जाओ तो पुनः नानकसिंह का द्वार खटखटा देना। परन्तु इसका निश्चित परिणाम नैतिक और शारीरिक मृत्यु होगी।

"पर अब मेरा ऐसा करने को चित्त नहीं करता।"

"तो धैर्य और संयम से रहना सीखो। यदि किसी के घर में मीठा ही बनता तो वहां के लोग यह करते हैं कि थोड़ा खाते हैं और थोड़े-थोड़े समय के उपरान्त उपवास रख लेते हैं। इससे पहले का खाया हजम हो जाता है और खाने में पुनः रुचि हो जाती है।"

"परन्तु ये दूसरे साहब तो अकारण ही काटने दौड़ते हैं। उस दिन आपसे मिली थी और घर पर जाकर पिटाई हुई।"

"किसलिए ?"

"यही कि वह मेरा भाई नहीं मेरा पति है।"

"ओह ! तो अब कह देना कि तुमने असल बात बता दी है।"

"और मुझे विश्वास है कि ऐसा बताने पर आज दुगुनी पिटाई होगी।"

"क्यों ?"

"इस लिए कि वह समझेगा कि मैंने अपने नित्य पीटे जाने की बात भी बताई होगी। उसके सामने बता देतीं तो बात दूसरी थी।"

"तो तुम यहां आने की बात बताने वाली नहीं हो।"

"बिलकुल नहीं।"

"तब तो तुमको यहां आना भी नहीं चाहिए था। पति-पत्नी में झूठ का व्यवहार तो किसी प्रकार भी क्षम्य नहीं हो सकता।"

'परन्तु उसने तो झूठ से ही मेरे साथ व्यवहार आरम्भ किया है।"

"तभी तो निभ नहीं सकी। देखो, जाकर बता देना कि तुम यहां आई थीं और तुम ने सब कुछ बता दिया है।"

"और यदि वह पूछे कि आपने क्या राय दी है तो क्या कहूं ?"

"तो उसे सत्य बता देना कि मैं तुम्हारे कृष्ण जी को छोड़ जाने को

बहुत बुरा मानती हूं और अब तुम्हारे उसको छोड़ कर कहीं चले जाने को और भी बुरा समझती हूँ।"

"मतलब यह है कि मुझको मार खानी चाहिए।"

"यह मार तो तुम्हारे उस कुकर्म का फल है जो एक भले घर वाले को छोड़ कर चले जाने से हुआ है।"

"इस कुकर्म का फल समाप्त नहीं हो गया क्या ?"

"यह तो मैं नहीं बता सकती। कुकर्म का का अनुमान तो लगा सकती हूं। इसके फल का अर्थात् प्रायश्चित का भी कुछ नाप तोल कर सकती हूं। परन्तु वह फल तुमको मिल चुका है। अथवा नहीं यह कैसे बता सकती हूँ।"

"बहुत पीटी जा चुकी हूं !"

"बहुत और कम का क्या नाप तोल है ?"

"आप बताइए कि कितनी पीटी जाने पर इस कुकर्म का फल समाप्त हो जावेगा। क्या कोई अंग-भंग हो जाने पर यह हो जावेगा।"

"देखो, सुभद्रा ! इसका सम्बन्ध अंग-भंग से नहीं है। न ही इसका सम्बन्ध छड़ी से पीटे जाने अथवा जूतों से पीटे जाने से है। इसका सम्बन्ध मन में कुकर्म से ग्लानि उत्पन्न होने से है।"

"पर यह तो है। यदि मुझको उससे घृणा न होती तो मैं आपसे राय करने के लिए आती ही क्यों ?"

"वह तो तुम पीटे जाने की पीड़ा से कष्ट अनुभव कर आई हो। साथ ही तुम घृणा करने लगी हो पीटने वाले से। यदि वह आज पीटना बन्द कर दे तो तुमको कृष्णकांत के साथ किए गए बुरे व्यवहार का स्मरण भी नहीं आवेगा। बुरा व्यवहार किया कृष्णकांत से। घृणा करती हो नानकसिंह से। भला, इन दोनों बातों का क्या सम्बन्ध हो सकता।"

"मैं यह तो अनुभव करती हूं कि मैंने पहले को छोड़कर बुरा काम किया है।"

"यदि करती तो उससे जाकर क्षमा याचना करतीं। मेरे पास आने से क्या लाभ होगा ?"

"पर वह तो मेरी हत्या ही कर देगा ?"

"तब तो ठीक ही होगा। तुम्हारे पूर्ण पाप कर्म धुल जावेंगे। इस हत्या का फल तो उसको भोगना पड़ेगा, तुमको नहीं।"

"पर मैं तो मर जाऊंगी।"

"नहीं, तुम नहीं मरोगी। यह शरीर जरूर नाश को प्राप्त हो जावेगा परन्तु तुम पाप से मुक्त हो किसी बहुत ही पुण्य योनि में चली जाओगी।"

"किसने देखा हैं ?"

"भगवान देखता है। उसने ही गीता भगवती में बताया हैं कि मनुष्य आत्मा है। वह मरता नहीं। वह अपने कर्म फलों से बंधा हुआ अच्छी बुरी योनियों में जन्म लेता है। "यदि कृष्ण तुम्हारी हत्या कर देगा तो तुम्हारे कुकर्म का फल धुल जावेगा। और निस्सन्देह तुम्हारी आत्मा किसी बहुत ही पुण्यात्मा, धनी मानो के घर में जन्म ले लेगी।"

"डर लगता।" सुभद्रा ने कह दिया।

"इसका अर्थ है तुमको अपने कर्म से अभी पर्याप्त ग्लानि नहीं हुई।"

सुभद्रा गम्भीर हो विचार करने लगी। फिर कुछ विचार कर बोली "और यदि उसने भी मेरी हत्या न की और मुझे घर में घुसने न दिया तो ?"

"तो घर के द्वार पर बैठ, क्षमायाचना करती हुई, भूखी प्यासी रह कर यह पापी देह उसके द्वार पर त्याग देना।"

सुभद्रा के कंपकंपी हो उठी। चन्द्रकला ने यह देखा तो कह दिया, "मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि न तो वह तुम्हारी हत्या करेगा, न ही वह तुमको घर से बाहर निकालेगा। हां, वह तुम्हारा विश्वास नहीं करेगा और तुम्हारे हाथ में अब कुछ अधिक देगा नहीं। तुम उसके घर में

टिक जाना और यदि कुछ खाने को दे तो खा लेना और न दे तो भूखी रह कर भी उसकी सेवा करना। तुम्हारे कुकर्म का यही प्रायश्चित्त होगा। जब पर्याप्त सेवा कर चुकोगी तब तुम्हारे कर्मफल समाप्त हो जायेंगे और यदि फिर कोई नया पाप कर्म न कर दिया तो जीवनभर सुखी रहोगी।"

चन्द्रकला का यह अन्तिम अनुमान सुभद्रा के मन में उत्साह भर देने वाला सिद्ध हुआ। और उसने कहा, "मैं आज ही उसके घर में चली जाऊंगी।"

चन्द्रकला मन में विचार करती थी कि इस औरत की सहायता करनी चाहिये।

दोनों घर की बैठक में बैठी थीं। वहां दीवार के साथ घड़ी लगी थी। सुभद्रा ने घड़ी में समय देखा। पांच बज चुके थे। वह बोली, "मैं जा रही हूं। अपने पहले पति के घर में। अब जो हो सो हो। मैं उसकी सेवा करने का यत्न करूंगी।"

अगले दिन कृष्णकान्त ने कन्हाईलाल को काम पर बताया, "सुभद्रा कल मकान पर चढ़ गई और घर में मेरे लिए रोटी बनाने लगी। मैंने उससे कहा कि वह नीचे उतर जाए। वह नहीं उतरी। मैं छड़ी ले उसको पीटने लगा था, परन्तु जब वह मेरी ओर पीठ कर मार खाने के लिए तैयार हो गई तो मेरा हाथ रुक गया और मैंने पीटा नहीं।

"रात उसने रोटी पकाई परन्तु मैंने नहीं खाई। रात को वह मेरे पांव दबाने लगी तो मैं वहां से उठ दूसरे कमरे में चला गया और भीतर से द्वार बन्द कर सो गया। प्रातः मैं स्नान कर घर से चला आया हूं। मार्ग में चाय और डबल रोटी खा आया हूँ। दोपहर को चने आदि लेकर खा लूंगा। परन्तु मैं समझ नहीं सका कि उसका क्या करूं?"

कन्हाईलाल को चन्द्रकला ने पिछली रात सारी बात बतला दी थी। इस कारण उसने पूछ लिया, "तुम क्या करना चाहते हो?"

"मैं तो उसकी हत्या कर देना चाहता था। यदि कहीं वह मेरी छड़ी

मेरे हाथ से छीनने का यत्न करती तो निस्सन्देह उसको पीट-पीटकर समाप्त कर दिया होता। परन्तु वह तो छड़ी देख पीठ नंगी कर सामने लेट गई थी। इसपर मैं उसकी हत्या नहीं कर सका।"

"उससे पूछना था कि वह लौट क्यों आई है?"

"पूछा था। परन्तु उसने कुछ बताया नहीं। चुपचाप आंसू बहाती रही है।"

कन्हाई ने कह दिया, "अब उसे कहां छोड़ आये हो?"

"वह घर में बैठी है। मैं बाहर से ताला लगा आया हूं।"

"ताला किसलिए?"

"पिछली बार वह घर का सब सामान उठाकर ले गई थी। उसके जाने के बाद मैंने पुनः बर्तन इत्यादि खरीदे थे। मुझको भय था कि वह पुनः उनको भी लेकर न चल दे।"

"मैं समझता हूं बाबू गणपतरायजी से राय कर लेनी चाहिये।"

: २ :

उसी दिन काम समाप्त कर कृष्णकान्त गणपतरायजी के मकान पर जा पहुंचा। कन्हाई ने वहां पहुंच जाने के लिए कह दिया था। ये दोनों जब गणपतरायजी के सामने पहुंचे और कृष्णकान्त ने पिछले दिन की घटना बताई तो गणपतराय ने कह दिया, "मेरी सम्मति तो यह है कि तुम न तो उसको घर से निकालो, न ही उसे मारो पीटो। उसको घरपर रहने दो और देखो कि वह अपने किए पर सत्य ही पश्चात्ताप करती है। तब उससे उचित व्यवहार करना।"

"और इतनी देर तक खाने-पीने को।"

"वह तो देना ही होगा।"

"पर मेरा चित्त उसके हाथ का खाने को नहीं करता।"

"तो मत खाओ। तब तक ढाबे में खा लिया करो। उसके लिए रसद पानी ला दिया करो।"

कृष्ण इस व्यवहार का अर्थ न समझ सका।

गणपतराय ने समझा दिया, "देखो कृष्ण! जब कोई व्यक्ति मन में प्रायश्चित्त करना चाहे तो उसके मार्ग में बाधा डालना तो पाप हो जावेगा उसकी सहायता नहीं करना चाहते तो न सही।"

"पर वह मुझको फिर लूटकर जा सकती है।"

"कितना कुछ होगा तुम्हारे घर में।"

"उसके जाने के बाद दो वेतन मिले हैं और प्रतिमास चालीस-पचास रुपये का सामान घर पर खरीदकर लाया हूं।"

"तो यह सौ डेढ़ सौ रुपये का सामान मानव मन के परीक्षण के लिए कुछ अधिक नहीं। देखो कृष्ण! यह सम्भव है कि वह तुमको धोखा देकर कुछ ठग ले जाने के लिए आई हो। साथ ही यह भी सम्भव है कि वह अपने कुकर्म को अनुभव कर पश्चात्ताप करती हुई आई हो। पहली अवस्था में वह कितनी हानि पहुंचा सकती है, यह तुम देख लो। दूसरी अवस्था में तुम एक पतनोन्मुख मानव कल्याण में साधन हो जाओगे। इसके लिए कुछ भय तो लेना ही पड़ेगा। यह आवश्यक है कि जब तक तुमको वह पश्चात्ताप कर प्रायश्चित्त कर ली प्रतीत न हो तब तक उससे तटस्थ और असमबद्ध रहो।"

"परन्तु बाबूजी! नानसिंह उसको लेने के लिए आ सकता है।"

"ठीक है, वह उसके साथ जाना चाहे तो जाने देना। और यदि वह न जाना चाहे तो नानकसिंह को पीटना चाहिए। हत्या भी की जा सकती है। हम तुम्हारा मुकदमा लड़ेंगे।

"यह तो आपकी विशेष कृपा है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि मैं यह सब क्यों करूं?"

"अपनी पत्नी की रक्षा के लिए।"

"इस रक्षा में हत्या कर हत्या करने के अपराध में फंस जाऊं।"

"तुम अपनी पत्नी की रक्षा करने से डरने कब से लगे हो?"

"जब से उसके बदकार होने का पता लगा है।"

"परन्तु इसे पता लगने पर भी तो तुम नानकसिंह की हत्या करने लगे थे।"

इसपर कृष्णकान्त को अपने अयुक्तियुक्त व्यवहार का भास हुआ और वह चुप रह गया। इसपर गणपतराय ने कह दिया, "कृष्ण! घर चले जाओ। स्वयं भोजन बाजार से करो। उसके लिए रसद पानी लाकर रख दिया करो और फिर देखो क्या होता है। संयम से, क्रोध पर नियंत्रण रख कर रहो। मैं समझता हूं परमात्मा तुम्हारी सहायता करेगा।

कृष्णकान्त अपने मकान को लौट गया। सुभद्रा अपने पति के व्यवहार पर परेशान थी उसने भी रात कुछ नहीं खाया था। दिन के समय कृष्ण जब बिना खाये पीये काम पर चला गया तो सुभद्रा भूख से व्याकुल विचार करने लगी। उसे चन्द्रकला की बात स्मरण हो आई कि उसे अपना विश्वास जमाना है। वह सेवा से ही हो सकेगा। और यदि भूखी रही तो सेवा कैसे कर सकेगी।

अतः उसने रात का बना भोजन खा लिया। कृष्णकान्त भीतर गया तो सुभद्रा ने द्वार बन्द कर दिया और भीतर से कुण्डा चढ़ा दिया। कृष्ण हंसने लगा। उसने पूछा, "क्यों किसी के आने का भय लग रहा है?"

"जी।"

"किसका।"

"उसी नानकसिंह के बच्चे का।"

"पर पहले तो उससे डरती नहीं थी।"

"जी, अब पहले से समझदार हो गई हूं।"

"यही तो देखना हैं।"

कृष्ण ने अपने कमरे में पहुंचकर पूछा, "भोजन कर लिया कि नहीं।"

"कर लिया है और सायंकाल के लिए तैयारी कर रही हूँ।"

"पर मैं तो खाऊंगा नहीं।"

"क्यों ?"

"मुझे भय है कि कहीं तुम मुझको विष देकर मार न डालो।"

"क्या लाभ हो सकता है इससे ?"

"मेरे मर जाने पर तुम विधवा हो जाओगी और फिर किसी से भी नया विवाह कर सकोगी।

"खाना मैं बनाऊंगी फिर जिसमें से मैं खाऊंगी उसी में से आप खाइएगा तब तो भय नहीं रह जायेगा।"

"नहीं इसमें धोखाधड़ी भी हो सकती है।"

"पर मैं तो भूखी नहीं रह सकती। मैं तो खाऊंगी।"

"क्या करोगी जीकर।"

"आपकी सेवा कर अपने कुकर्म का प्रायश्चित्त करना चाहती हूँ।"

"तो करो। जैसा मन में आये करो।"

सुभद्रा रसोईघर में चली गई। कृष्ण गया और ढाबे से भोजन कर आया। जब आया तो सुभद्रा भोजन परस रही थी। उसने फिर कह दिया, "खा लीजिये।"

"नहीं, तुम खाओ। मैं बाजार से खाकर आया हूं।"

सुभद्रा ने खाना आरम्भ कर दिया।

कृष्ण कमरे में जा सोने की तैयारी करने लगा। आज भी सोने से पूर्व उसने भीतर से कुण्डा लगा लिया। सुभद्रा दूसरे कमरे में सोई।

दिन के बाद दिन इसी प्रकार व्यतीत होने लगे। नानकसिंह न तो सुभद्रा से मिलने के लिए आया न ही उसने कृष्ण से मिलकर उसके विषय में पता करने का यत्न किया।

कन्हाई और गणपतराय भी विस्मय कर रहे थे कि नानकसिंह ने सुभद्रा को भुला क्यों दिया।

गणपतराय गाजियाबाद में रंग-रोगन का कारखाना बनवा रहा था। वह प्रायः नित्य गाजियाबाद जाता था और सायंकाल लौट आता था।

उसने सरकारी निर्माण विभाग से अपना त्यागपत्र वापस नहीं लिया और वहां से उसे छुट्टी हो गई थी।

सुभद्रा को घर लौटे तीन मास हो चुके थे। गणपतराय गाजियाबाद में बस की प्रतीक्षा में बस स्टैंड पर खड़ा था। नानकसिंह गणपतराय के सामने आकर खड़ा हो गया। गणपतराय अभी अपने विस्मय को छिपाने का यत्न ही कर रहा था कि नानकसिंह ने पूछ लिया, "बाबू साहब ! कैसे आये हैं यहां ?"

"ओह ! तुम यहां हो ?"

"मैं तो आपसे यहां होने का कारण पूछ रहा था। आपने मुझसे पूछ लिया तो लीजिए पहले मैं ही बताता हूं। मेरे अधिकारियों ने मेरी ड्यूटी यहां लगा दी है।"

"क्यों दिल्ली से क्यों हटा दिया है ?"

"यह तो मुझको बताया नहीं गया। हमारे यहां कारण बताये भी नहीं जाते। काम बताये जाते हैं।"

"तो अपनी पत्नी सहित यहां आ गए हो ?"

"पत्नी ? कौन पत्नी ? किसकी पत्नी ?"

"भाई, तुम्हारी पत्नी सुभद्रा। तुमने उसको अपनी पत्नी बनाकर घर पर रख लिया था न ?"

"आपको किसने बताया है ?"

"उसके पहले पति कृष्णकान्त ने।"

"तो वह उसके घर वापस नहीं गई ?"

"यह तो मुझको पता नहीं। तुमने उसको घर से निकाल दिया है क्या ?"

"मैंने नहीं निकाला। वह एक दिन घर से गई और फिर नहीं आई।"

"तो तुम्हारे घर से भी कुछ चुराकर ले गई है।"

"नहीं, ले तो कुछ नहीं गई।"

"याद है एक दिन तुमने कहा था कि तुम अपनी नवीन योजना चलाने वाले हो। उस कथन के कुछ दिन उपरांत ही पता चला था कि तुमने सुभद्रा का अपहरण कर लिया है। इस समाचार से मैं समझा था कि कम से कम इस प्रकार के कार्य में तो तुम सफल ही हो रहे हो। परन्तु आज अपनी पेशीनगोई को ठीक होता देख मुझे प्रसन्नता नहीं हो रही।"

"परन्तु मैं तो समझता हूं कि मैं अपनी योजना में सफल ही हुआ हूँ। मेरी इच्छा थी कि कुछ दिन के लिए एक पत्नी मिल जावे। मैंने यत्न किया और मिल गई। जब तबियत भर गई तो मैंने यत्न किया और वह भाग गई।"

"तो तुमने भगाया है उसको। क्यों और कैसे ?"

"भगाना तो घर ले जाने से सुगम सिद्ध हुआ है। ले जाने के लिए तो उसके मस्तिष्क में एक सुनहरी चित्र खींचना पड़ा था और भगाने के लिए दो-चार चपत लगाने पर्याप्त सिद्ध हुए। जब वह गई तो मैंने उसका विचार छोड़ दिया।"

नानकसिंह और सुभद्रा के वक्तव्य में समानता थी। इस कारण गण-पतराय ने उस पर अविश्वास करने में कारण नहीं समझा। केवल वह विस्मय करता था कि वह दूसरों के जीवन से किस प्रकार खिलवाड़ कर रहा है। उसके निजी जीवन और सार्वजनिक जीवन में बहुत अंशों में समानता दिखाई थी। उसने कह दिया, "कुछ भी हो तुम पत्नी नहीं पा सके।"

"पाई तो थी। फिर आवश्यकता हुई तो पा सकूंगा।"

"यह पत्नी पाना नहीं कहा जाता। इसे पंजाबी कहावत में तो मुख काला करना ही कहा जाता है।"

"मुझे यह भी पसन्द है। शरीर की आवश्यकता पूर्ण की और फिर इच्छा होगी तो कोई और मिल जावेगी। जीवनभर गले में चक्की बांधकर बैठने से बच गया हूँ।"

"तुम मुझको उस कंगले की बात स्मरण करा रहे हो जो कुछ भी अर्जन करने के अयोग्य है और अपनी अकिंचनता को त्याग और तपस्या घोषित करता फिरता है। नानकसिंह ! भूमण्डल पर अरबों लोग बसे हुए हैं उनमें ९९ प्रतिशत स्थायी पति-पत्नी का सम्बन्ध बनाने में ही सुख अनुभव करते हैं। केवल एक हजार में एक ऐसे हैं जो तुम्हारी भांति अवारा-गर्दी करने में सुख अनुभव करते हैं। हमारे शास्त्रों में कोई सुन्दर, सुशील, सुखकारक और कल्याणमयी पत्नी पा जाना अपने पुण्यकर्मों का फल समझा जाता है और तुम इसके विपरीत बातों को सुख मान रहे हो।"

"आपका अनुभव बहुत थोड़ा है। संसार में प्रायः लोग विवाहित पत्नी रखने पर भी इधर उधर का रस लेते रहते हैं।"

"मेरा ज्ञान तो यह है कि वे लोग भी जो लोग अनुभवहीन अल्पआयु में भटकते रहते हैं प्रौढ़ होने तक इस जीवन को नीरस मान स्थायी संबंध बनाने में लाभ समझने लगते हैं। मेरे एक सम्बन्धी दो वर्ष अमेरिका में रह कर आये हैं और वहां के जीवन के विषय में वे आंकड़े लाये हैं। सोलह सत्रह वर्ष की आयु से बीस वर्ष की आयु तक पचहत्तर प्रतिशत युवक अपने जीवन का मूल्यवान समय और शक्ति तितलियों के पीछे भागने में व्यतीत करते हैं। इन पचहत्तर प्रतिशत युवकों में से पन्द्रह से पच्चीस प्रतिशत तो शेष जीवन किसी न किसी मानसिक अथवा शारीरिक रोग में ग्रस्त हो जीवन पर अविवाहित रहने में ही कल्याण मानने लगते हैं। शेष पचास प्रतिशत तीस वर्ष की आयु के उपरांत जीवन में स्थिर होने का यत्न करते हैं और फिर हो जाते हैं।

"पूर्ण युवक समाज में केवल पच्चीस प्रतिशत ही ऐसे हैं जो जीवन में इधर उधर भटकने के स्थान विवाह कर स्थिर जीवन व्यतीत करने में लाभ समझते हैं और यह पच्चीस प्रतिशत ही वहां की जाति की रीढ़ की हड्डी कही जा सकती है।"

"किसी मूर्ख ने यह आंकड़े अपने मन में गढ़ लिए है।" नानकसिंह ने

कह दिया, "आपने फ्रायड का नाम सुना है।"

"सुना है। पढ़ा भी है। उसने मन की एक ऐसी स्थिति का वर्णन किया है जो असुरों में पाई जाती है। जब मनुष्य इन्द्रिय भोगों को जीवन का साध्य मानने लगता है तब उसका मस्तिष्क यौन सम्बन्धी क्रियाओं में डूब जाता है। परन्तु असुरों की संख्या समाज में कितनी भी अधिक क्यों न हो, उनकी गणना समाज में नहीं की जाती। वे तो भले समाज से बाहर माने जाते हैं। उनका कोई समाज नहीं होता। वे परस्पर भी स्वेच्छा से सहयोग नहीं दे सकते। प्रायः ये लोग किसी तानाशाह के शिकंजे में कसे जाकर ही इकट्ठे रह सकते हैं। अवसर पाते ही ये एक दूसरे को चीर फाड़ कर खा जाने का यत्न करने लगते हैं।"

"गणपतराय बाबू किसी स्वप्न लोक में रहते मालूम होते हैं। दुनिया ने इसके विपरीत सिद्धांत स्थिर कर दिया है। कहे जाने वाले स्वतन्त्र और 'रिलीजियस माइन्डैड' लोग राज्य के लिए लड़ मर रहे हैं और फ्रायड मार्क्स तथा लेनिन के अनुयायी जिनको आप असुर कहते हैं, मजे में जीवन व्यतीत करते हुए उत्तरोत्तर उन्नति कर रहे हैं।"

दिल्ली जाने की बस आ गई थी। गणपतराय ने कह दिया, "बात वही है जैसे कोई अकिंचन अपने को सन्यासी कहने लगे।

इतना कह कर गणपतराय बस पर चढ़ गया। नानकसिंह भी उसके साथ बैठ गया। वह भी दिल्ली ही जा रहा था। गणपतराय ने पूछा "तो तुम भी दिल्ली जा रहे हो ?"

हां। एक घंटे भर आपकी संगत का और लाभ होगा। देखिये गणपतराय बाबू ! मैं आपके व्यक्तित्व से अति प्रभावित हूं। जब मैंने देखा कि सरकारी कार्यालय में कोई भी आपके विरुद्ध झूठी गवाही देने के लिए तैयार नहीं हुआ तो मैं तब से ही आप का मुरीद हो चुका हूं। परन्तु आपके विचार सुन तो मुझको हंसी आती है। आप सर्वथा अव्यावहारिक व्यक्ति ही प्रतीत होते हैं। बताइये पंत जी से कैसी पटती हैं ?"

"मैंने सरकारी नौकरी छोड़ दी है।"

"अरे क्यों ?"

"उस नौकरी में रहता हुआ मैं भी अकिंचन होता जा रहा था। जब मैंने देखा कि कन्हाईलाल पांच-छः वर्ष में लखपति हो सकता है तो मैंने भी उस की नीति का अनुकरण करना आरम्भ कर दिया है।"

"उसकी नीति का! भला यह कैसे हो सकता है। उसकी पत्नी तो उसकी उन्नति में सहायक हो गई थी। भला आपका कौन सहायक हो सकता है।"

"तुम रहे मूर्ख ही। मूर्ख भी ऐसा जिसने कसम खा रखी हो कि आंख कान, नाक रहते हुए भी कुछ सीखना नहीं। देखो, मैं तुमको बताता हूं। एकबार कन्हाईलाल के व्यवहार से उसके सांझीदार रायदयाल की पत्नी ने चन्द्रकला से पूछा था कि उसके मेरे सम्बन्ध में कितनी सचाई हो सकती है।

"चन्द्रकला ने कहा था कि यह सब झूठ है।"

"रामदयाल की पत्नी ने कहा गणपतराय की सामाजिक स्थिति में उससे तुम पर कुदृष्टि रखनी स्वाभविक प्रतीत होती है।

"चन्द्रकला का कहना था कि वह मुझमें पिता की भावना रखती है। जहां यदि वे अपनी लड़की पर कुदृष्टि रख सकते हैं तो मैं इस में क्या कर सकती हूं। जहाँ तक मुझे ज्ञात है वे मुझे अपनी लड़की ही मानते हैं।

"इस पर भी कन्हाईलाल ने आपकी सहायता से ही यह सब पाया है।"

"यह भी झूठ है। उसमें दृढ़संकल्प, निर्मल बुद्धि और शारीरिक सामर्थ्य है जो उसको सदा आगे बढ़ने में सहायक हो रहे है। मैंने तो ये सब बाते उसमें देखी थीं और केवल उसकी पीठ ठोकी है। केवल यही नहीं वरन् उसके उन्नति करने के ढंग को देख कर मैं भी उसी पथ पर चल पड़ा हूँ।"

"क्या ढंग है उसका ?"

"मेहनत और विवेक से काम करना। फल स्वाभाविक मिलता है। देखो मैं उससे अपने प्रथम परिचय की बात बताता हूं। उस समय उसका विवाह नहीं हुआ था और वह रामदयाल के पास ढाई रुपया नित्य पर काम करता था। मैं काम का निरीक्षण करने के लिए गया हुआ था। उस समय मैंने उसको देखा था कि यह रोड़ी ढोने के उतने ही काल में तीन चक्कर लगाता था जितने में दूसरे मजदूर दो चक्कर लगाते थे।

"मैंने उससे पूछ लिया कि वह ऐसा क्यों करता है।"

"उसका उत्तर था, मुझमें बल है और मैं उसका प्रयोग करता हूँ।"

"मैंने कहा कि तुमको उजरत तो सबके बराबर ही मिलती है। उसका कहना था कि यह ठेकेदार के काम लेने के गलत तरीके के कारण है। परन्तु मैं उसके गलत तरीके से अपना स्वभाव बिगाड़ नहीं सकता।"

"मैंने पूछा, यदि वह तुमको इसके लिये कुछ भी अधिक नहीं देगा, तब भी ऐसा ही करते जाओगे क्या ?"

इस पर उसने कहा, "यदि वह ठेकेदार जान-बूझकर अन्धा बना रहेगा तो मैं कहीं अन्यत्र काम करूंगा। मैं तो स्वतन्त्र काम करने के स्वप्न ले रहा हूँ और मेरा यह स्वभाव उस समय मेरे काम आयेगा।"

"मैं कन्हाई के उत्तर और उसकी सूझ बूझ पर चकित रह गया। मैंने उसको दो अक्षर पढ़ाने की योजना बनाई तो वह मेरे घर के बर्तन साफ लगा और उसके प्रतिकार में मुझसे पढ़ने लगा।

"उसका विवाह हुआ तो उसने कहा कि वह अपनी पत्नी को सड़क के किनारे टोकरी ढोने के काम पर लगाना नहीं चाहता। तो मेरी पत्नी ने उसको घर के भीतर का काम दे दिया। वह भी पढ़ गई।"

"इस पर भी मैं कहता हूं कि यदि इन दोनों पति-पत्नी की बुद्धि प्रखर न होती, शरीर स्वस्थ न होता और दोनों विवेक से काम न लेते तो इतनी उन्नति न कर सकते।"

"मैं बताता हूं कि इस समय कन्हाईलाल ठेकेदारी से भी बाहर

निकलने का यत्न कर रहा है। हमने एक प्राईवेट लिमिटेड कम्पनी बनाई है और वह उस कम्पनी के पांचवे हिस्से का मालिक है। वह कम्पनी गाजियाबाद में 'भारत पैंट्स' के नाम से एक फैक्टरी बना रखी है। मैं उसी में मैनेजर के रूप में काम करना चाहता हूं, मैनेजर के अतिरिक्त मैं उसमें भागीदार भी हूं। कन्हाईलाल उसकी इमारत बनवा रहा है।"

"ओह ! तो यह हापुड़ की सड़क पर नई फैक्टरी आपकी खुल रही है।"

"हां !"

नानकसिंह भौंचक्का हो गणपतराय का मुख देखता रह गया।

: ३ :

म्युनिसिपैलिटी के काम से कन्हाईलाल को सात लाख का लाभ हुआ था। इतने बड़े लाभ में बिलों के तुरन्त स्वीकार होने और रुपया न्यूनातिन्यून विलम्ब से मिलने का हाथ भी था। साथ ही इसमें कन्हाईलाल की कार्य पटुता का श्रेय भी था। काम नियत समय पर कम अवधि में समाप्त हुआ और बहुत योग्यता से किया गया था। कुल सत्रह लाख रुपये का काम था और इसमें सात लाख से अधिक लाभ हुआ था। इसमें मदनलाल का हिस्सा साढ़े तीन लाख बना था। उस पर आय कर देकर बाद में डेढ़ लाख रुपया उसको नकद मिला था।

जब मदनलाल को कन्हाईलाल ने लाभ का इतना अंश दिया तो वह गद्गद् प्रसन्न हो कहने लगा, "मेरे घर के सब लोग कह रहे थे कि मैंने बिना लिखत-पढ़त के आपसे मौखिक बचन पर आपकी सहायता कर भूल की है। परन्तु मैं देखता हूं कि मैंने कोई भूल नहीं की थी।"

"मदनलाल जी ! मैं लिखे और मौखिक बचन में अधिक अन्तर नहीं मानता। वचन तो मन और बुद्धि करते हैं। कलम दावात तथा जिह्वा तो उस मन बुद्धि के हथियार हैं। यदि बचन मन से किया गया हो तो वह मुख से किया जाय अथवा हाथ के हस्ताक्षर से किया जाय कुछ अन्तर नहीं

रखता।

"परन्तु एक बात मैं और बता देना चाहता हूं। वह यह कि आपने जो कुछ भी हमारी सहायता की थी वह किसी भी प्रकार से अनियमित नहीं थी। मैंने अनियमित सहायता कभी आपसे मांगी भी नहीं।"

"इसी बात पर तो घर वाले संशय करते थे। वे कहते थे कि आप जब किसी प्रकार की रियायत नहीं चाहते तो आप मेरे हिस्से के लाभ की मात्रा पूरी देंगे नहीं। कुछ थोड़ा-सा देकर टाल देंगे।

"मेरा यह विचार था कि आप जानते हैं कि आपको ईमानदारी से मिलने वाला रुपया भी तो इतनी सतर्कता से कभी नहीं मिल सकता था। मैंने कमेटी की मशीन को तेल देकर ठीक समय पर और ठीक ढर्रे से काम करने पर विवश कर दिया था।"

"हां, यह तो है ही। मैं इस बात को जानता हूँ कि आज सरकारी कर्मचारियों से उचित काम कराने के लिये भी कुछ न कुछ देना पड़ता है। यह देश का दुर्भाग्य है और यही समझिये कि इतनी सी सहायता के लिये हमने आपको यह सब कुछ भेंट में दिया है।"

"अच्छा, यह बताओ कि तुमने दर्रा खैबर वाले क्वार्टरों के लिये टेंडर क्यों नहीं दिया?"

"मैंने एक काम गाजियाबाद में ले लिया है। उसके लिये मुझे अब वहां जाना पड़ता है। इस कारण मैं यह काम नहीं कर सकता था।"

"यदि तुम टेंडर भर देते तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता था।"

"मैं ठेकेदारी का काम हलका कर रहा हूँ।"

"किसलिये?"

"मैं उद्योगपति बनने का स्वप्न देख रहा हूँ। एक फैक्टरी में पत्तेदारी भी कर ली है।"

कन्हाईलाल का चैक मदनलाल की साली के नाम पर था। मदनलाल की साली अपना पृथक् कारोबार कर रही थी। और यह रुपया उसमें खप

गया।

एक बात इन दिनों और हुई। रामदयाल का देहान्त हो गया था और रामदयाल की पत्नी ने अपने पति का कारोबार बन्द कर उसका भाग मांग लिया। इस पर भी कन्हाईलाल ठेकेदारी छोड़ उद्योगपति बनने की दिशा में विचार करने लगा था।

जब ठेकेदारी का कारोबार समेटा जाने लगा तो कृष्णकान्त के लिये भी चिन्ता का विषय उपस्थित हो गया। एक दिन जब विश्वविद्यालय के क्षेत्र का काम समाप्त हो रहा था कृष्णकान्त ने कन्हाईलाल से पूछ लिया, "तो मुझको भी छुट्टी मिल जावेगी अब ?"

"कृष्ण ! तुम्हारे विषय में मैंने अपने मन में कुछ निर्णय किया हुआ है। परन्तु उसमें तो तुम्हारे अपने विचार करने की बात भी है।"

"क्या निर्णय किया है ?"

"यही कि यदि तुम मेरे साथ रहना पसन्द करो तो मैं तुमको गाजियाबाद में ले जाऊंगा। लाला गणपतराय से तुम्हारे विषय में बात हुई है और वे तुमको अपने कारखाने में स्थान दे देंगे।"

"गाजियाबाद जाने के विषय में मैं विचार करूंगा।"

"वहां रहने का स्थान मिल जावेगा।"

"स्थान की बात भी ठीक है। परन्तु मेरे विचार का विषय है नानकसिंह। सुना है उसने वहां आजकल निवास स्थान बना लिया है।"

इससे कन्हाईलाल को सुभद्रा की बात स्मरण हो आई। उसने पूछ लिया, "क्यों, क्या अभी तक तुम्हारी अपनी पत्नी से सुलह नहीं हुई ?"

"सुलह तो हो गई है। परन्तु दो बातें विचारणीय है। एक तो सुभद्रा के बच्चा होने वाला है। वह कहती है कि बच्चा नानकसिंह का नहीं है। इस स्थिति में बहुत गड़बड़ होने की सम्भावना है।"

"क्या सम्भावना है ?"

"यदि तो बच्चा सत्य ही उसका है तो मैं उसको अपने घर में नहीं रख

सकूंगा। उस अवस्था में वह पुनः हमारे परस्पर के सम्बन्धों में आ कूदेगा।"

कन्हाईलाल विचार करता था कि कृष्णकान्त की बात में कुछ भी युक्ति है क्या। उसे उसका कथन सर्वथा अनर्गल प्रतीत हो रहा था। उसने पूछ लिया, "कृष्ण ! यह क्या कह रहे हो ? कुछ विवेक की बात करोगे तो निस्सन्देह कुछ दूसरी बात कहने लगोगे।"

कृष्ण आश्चर्य में कन्हाई का मुख देखता रहा। वह समझा नहीं कि उसने कौन-सी अविवेक की बात कही है। उसे मौन बैठा देख कन्हाईलाल ने उसकी बात में अयुक्ति बता दी। उसने कहा, "तुमने कहा है कि तुम समझते हो कि बच्चा नानकसिंह का है। वह कहती है कि उसका नहीं है। इसका निर्णय एक बात में है। परन्तु इस निर्णय पर तुम्हारे व्यवहार पर नानकसिंह की उपस्थिति से क्या प्रभाव हो सकता है ?"

"यदि बच्चे की रूपरेखा नानकसिंह से मिलती-जुलती हुई तो वह सदा मुझको उसका भास दिला कर सुभद्रा के प्रति मेरे आदर को कम करता रहेगा।"

"परन्तु मैं पूछता हूँ कि इसमें नानकसिंह के गाजियाबाद में होने का क्या सम्बन्ध है। मान लो कि बच्चा नानकसिंह की भांति गोल नाक का होता है। तब दिल्ली में नानकसिंह से दूर रहते हुए वह नानकसिंह की याद नहीं दिलायेगा और गाजियाबाद में नानकसिंह के समीप रहते हुए उसकी याद दिलायेगा। यह भला क्यों ?"

"नानकसिंह उसे देखकर उस पर अपना दावा कर सकता है।"

"तो उसको वह बच्चा दे देना। परन्तु मैं तुमको एक बात बता दूं। वह अब न तो सुभद्रा को पहचानेगा और न ही बच्चे के लिये स्नेह अनुभव करेगा। वह जड़ बुद्धि व्यक्ति है। और जड़ पदार्थ से स्मरण रखना अथवा स्नेह अनुभव करने की आशा नहीं है।"

"फिर भी…।"

"फिर भी क्या ? देखो तुमको यह निर्णय करना है कि सुभद्रा से

तुम्हारे सम्बन्ध अब कैसे हैं। और भविष्य में रहने में हितकर होंगे अथवा नहीं। यदि तो सुभद्रा पुनः तुमको छोड़ने में रुचि रखती प्रतीत होती है तो बच्चा किसी का भी हो उसको घर में रखकर क्या करोगे? और यदि ऐसी सम्भावना प्रतीत नहीं होती तो फिर बच्चा किसी का भी हो खिलाने-पिलाने के मूल्य से सस्ता सौदा समझना चाहिये। बच्चे को यह पता नहीं लगने दो कि वह तुम्हारा पुत्र नहीं है।"

"तो दूसरे का बच्चा पालता रहूं।"

"वह सुभद्रा का तो होगा ही। वह उससे स्नेह भी रखेगी। तुमको तो मुफ्त से बच्चा मिल जावेगा। यदि वह तुम्हारे अनुकूल बनता चला गया तो उसकी परवरिश करते जाना और यदि वह विद्रोही हुआ तो उसकी ओर से चित्त मोड़ लेना।"

"इस पर भी मुझे सुभद्रा से राय करनी होगी कि वह उस नगर में रहने के लिये तैयार होगी जिसमें कि वह गुण्डा रहता है।"

"हां पूछ लेना। यदि तुम वहां जाना नहीं चाहोगे तब भी मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। तुम बताना क्या करना चाहते हो?"

कन्हाईलाल ने मन में विचार किया कि उसकी झुग्गी बस्ती के लोग भी इसी प्रकार अयुक्तिसंगत व्यवहार और बातें करते थे। नानकसिंह पढ़ा लिखा युवक होने पर भी बात अविवेकशील ही करता है और अब यह कृष्ण भी उसी प्रकार बातें कर रहा है।

उसने कृष्णाकान्त की बात गणपतराय को बता दी। उसने कहा, "यह विवेक अर्थात ठीक ढंग से विचार करना स्कूल कालेज की शिक्षा से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखते। इसका सम्बन्ध कुछ तो पूर्वजन्म के कर्मों से है और दूसरे उस वातावरण से है जिसमें मनुष्य रहता है। इसमें विद्या, माता-पिता के विचार और मित्र, साथी सबका प्रभाव होता है।

"देखो कन्हाई! मिस्टर शिवराव भी उसी श्रेणी की बुद्धि रखता था जिसकी तुम्हारी झुग्गी बस्ती वाले रखते थे, अथवा यह नानकसिंह

रखता है। मैं तो यह समझा हूं कि अधिकांश सरकारी नौकर भी उसी ढंग से विचार करते हैं जिस ढंग से नानकसिंह इत्यादि विचार करते हैं।

"इनके विचार का ढंग यह है कि ये ज्ञानेन्द्रियों से संसारी सुख-दु:ख का अनुभव करते हैं। ये बिना विचार किए सुखों के पीछे भाग खड़े होते है। इसमें विचार की अथवा विवेक की बात यह होती है कि जो सुखकारक है वह भोग करने पर सुखकारक रह जावेगा क्या? इस विचार में शरीर क्रिया विज्ञान का पता होना चाहिये। मन और बुद्धि के व्यवहार की प्रतिक्रिया का ज्ञान होना चाहिये और फिर आत्मतत्व और मन एवं बुद्धि के सम्बन्ध का पता होना चाहिए। इतना ज्ञान होने पर कार्य का स्वतः निर्णय होने लगता है। परन्तु यह ज्ञान न तो स्कूल कालेजों में प्राप्त होता है न ही अधिकांश लोगों की संगति से प्राप्त होता है। इस दिशा में पढ़े लिखे और अनपढ़ एक ही मार्ग पर चलते प्रतीत होते हैं।"

कन्हाईलाल यह तो समझता था कि एक ही अनुभव की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न मनुष्यों में भिन्न-भिन्न होती है। यह क्यों? गणपतराय का कहना था कि बुद्धि जो अनुभव को प्राप्त कर मनन कर उस पर प्रतिक्रिया का निर्णय करती है भिन्न-भिन्न होती है।

जो मनुष्य इन्द्रिय सुखों का ही जीवन का सार मानते हैं उनकी बुद्धि पर अनुभवों की प्रतिक्रिया तो सुखों के अनुकूल और दु:खों के प्रतिकूल होती है। जिन मनुष्यों को यह ज्ञान होता है कि अमुक सुख शरीर, मन और आत्मा का ह्रास करने वाला है। वे उस सुख का अनुकरण नहीं करेंगे।

"देखो कन्हाईलाला!" गणपतराय ने एक उदाहरण देते हुए कहा, "एक व्यक्ति मिठाई खाता है। उसे बहुत स्वादिष्ट लगती है और वह हलवाई की दुकान से एक सेर भी मिठाई खरीदकर ले आता है और बार-बार खाता है।

"परिणाम यह होता है कि वह विशुचिका से रुग्ण हो बीमार पड़ जाता है। इस पर भी जिह्वा के स्वाद के वशीभूत वह मिठाई लाता और

खाता रहता है। परिणाम स्वरूप मृत्यु का ग्रास हो जाता है।

"यह इस कारण होता है कि वह शरीर क्रिया का ज्ञान नहीं रखता इसी प्रकार सब इन्द्रियों के सुखों के विषय में समझ लेना चाहिये। एक शरीर, मन और आत्मा का ज्ञाता तो इस प्रकार का व्यवहार नहीं करेगा। वह देखेगा कि यह मानव जन्म किसी पूर्व जन्म के पुण्यकर्मों से मिला है। इस कारण मिष्ठान्न के सामयिक सुख के लिये इस जीवन को व्यर्थ नहीं गंवा देना चाहिये। अतः मिष्ठान्न का स्वाद गौण हो जाता है। और स्वस्थ सुदृढ़ और सुन्दर शरीर मुख्य हो जाते हैं। फिर मन तथा बुद्धि की निर्मलता शरीर से भी अधिक आवश्यक हो जायेंगे। कारण यह कि मन बुद्धि का सानिध्य होने से उसका आत्मा पर प्रभाव पड़ता है।

"मन, बुद्धि और आत्मा को अन्त:करण कहते हैं। उनके ज्ञान को आध्यात्म विद्या कहते हैं। इसकी शिक्षा जिनको है वे इस प्रकार की अवि-वेक युक्त बातें नहीं करते।"

: ४ :

नानकसिंह के मन पर गणपतराय की बात की प्रतिक्रिया यह हुई कि वह अपने आपको सांसारिक व्यवहार में अयोग्य मानने लगा। गणपतराय के इस कहने पर कि सुभद्रा के विषय में भी वह कार्यकुशल सिद्धि नहीं हुआ, उसने कहने को तो कह दिया कि वह सुभद्रा का भोगकर निकाल देने में ही अपनी कार्य कुशलता मानता है। परन्तु मन ही मन इस कथन को असत्य मानता था। वह अपने सुभद्रा के विषय में विचारों का विश्लेषण करने लगा था। उसने घर पर निश्चिन्त हो विचार करना आरम्भ किया तो उसको समझ में आया कि वह नहीं चाहता था कि सुभद्रा उसको छोड़ जाय। इसपर भी वह सुभद्रा के मन पर यह अंकित करना चाहता था कि वह उसके पीछे लगी है और वह उसकी परवाह नहीं करता।

नानकसिंह अपने मन की उन दिनों की अवस्था को स्मरण कर रहा था, जब सुभद्रा गई थी। जिस दिन उसने उसका घर छोड़ा था उसने दिन

के समय अपने कार्य पर जाने के समय एक बहुत ही साधारण-सी बात के लिये एक लात टिका दी थी।

सुभद्रा ने कहा था, "मुझे आपके घर आये तीन महीने होने जा रहे हूं। इतने काल में आप एक बार भी तो सिनेमा दिखाने के लिये नहीं ले गये।"

"तुम सिनेमा देखने के लिए जाओगी ?"

"क्यों, मुझमें क्या है ?"

"तुम सर्वथा निर्बुद्धि हो। तुम पिक्चर समझ सकोगी क्या ?"

"अपनी समझ में तो मैं आपसे ज्यादा समझ रखती हूं।" वह निर्बुद्ध कहे जाने पर कुछ उद्विग्न हो उठी थी।

परन्तु नानकसिंह अपने को बेसमझ कहे जाने पर क्रोध से पागल हो उठा। वह जाने के लिये खड़ा था और सुभद्रा चटाई पर बैठी थी। नानकसिंह ने क्रोध में लात जमा दी। और यह कहता हुआ नीचे उतर गया, "मेरी समझ का परिचय मिल गया है न ?"

उस दिन सायंकाल वह आया तो मकान खुला पड़ा था। वह ऊपर चढ़ा तो वहां कोई नहीं था। उसने समझा कि वह जरा बाजार आदि गई होगी। परन्तु मकान खुला छोड़ जाने पर वह नाराज हो रहा था। वह मन में विचार कर रहा था कि थोड़ी और पिटाई करनी होगी।

परन्तु जब वह रात को भोजन के समय तक भी नहीं आई तो उसको सन्देह होने लगा कि वह घर छोड़ गई है। इस समझने की प्रथम प्रतिक्रिया उसके मन पर यह हुई कि उस गन्दे और मैले आदमी के पास वह एक रात भी नहीं काट सकेगी। एक एम० ए० तक पढ़ाई किये, संसार के सबसे अधिक प्रगतिशील दल के एक प्रमुख कार्यकर्ता पर वह एक ठेकेदार के मुंशी को उपमा नहीं दे सकती। वह अपने मकान की सफाई और सजावट का कृष्णकान्त के मकान से मुकाबला करता था और समझ रहा था कि उसके पास रहने का स्वाद लेने के उपरान्त वह कहीं जा ही नहीं सकती थी।

परन्तु जब वह एक सप्ताह तक भी नहीं लौटी तो उसने टोह ली कि वह कहीं अन्य उससे भी अच्छे पुरुष के पास न चली गई हो। कन्हाईलाल के मज़दूरों में से एक दो ऐसे थे जो उससे मिलते रहते थे। उसने एक से पता किया तो उसको यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह कृष्णकान्त के घर में रहती है और प्रत्यक्ष रूप में दोनों में किसी प्रकार का झगड़ा नहीं होता। इसका प्रभाव उसके मन पर यह हुआ कि वह औरत मूर्ख थी और अच्छा ही हुआ कि वह चली गई है। उसकी यह भावना भी दो सप्ताह तक रही। उसके उपरान्त वह फिर घर में स्त्री का अभाव अनुभव करने लगा। अब वह सुभद्रा का मुकाबला उन दल की लड़कियों से करने लगा था जो कभी कभी उसको अपनी संगति का फल देती रहती थीं। उसे कुछ ऐसा समझ आया कि सुभद्रा उन जैसी प्रगतिशील नहीं थी। वह सभा समाज में जाने में रुचि नहीं रखती थी। वह उससे फ्रायड के सिद्धान्तों पर बातचीत नहीं कर सकती थी। उस समाज के आर्थिक ढाँचे में रुचि नहीं थी। इसपर भी वह खाना अच्छा बना लेती थी। उसके कपड़े धोकर लोहा बहुत भली भांति कर सकती थी। घर में सफाई और सजावट में वह उसको नये नये सुझाव देती रहती थी। कार्ल मार्क्स और एंजिल का तो वह नामोच्चारण भी शुद्ध नहीं कर सकती थी।

एक मास तक उसके मन में यह तुलना चलती रही। परन्तु उसके उपरान्त उसे सुभद्रा के गुण अन्य सबसे जिनसे उसका वास्ता पड़ता था, भारी प्रतीत होने लगे।

जिस दिन वह गणपतराय से मिला था उस दिन तक वह यह निश्चय कर चुका था कि घर में एक स्थायी गृहिणी होनी आवश्यक है और इस दृष्टि से सुभद्रा एक अच्छी स्त्री थी। उसमें गणपतराय को तो यह कह दिया था 'फिर आवश्यकता हुई तो और कोई मिल सकती है।' परन्तु वह अनुभव कर रहा था कि यह इतना सुगम नहीं जितना वह समझ रहा था।

यह नहीं कि उसने इस दिशा में यत्न ही न किया हो। जब से वह

गाजियाबाद में आया था उसने तीन स्थान पर यत्न किया था। परन्तु लड़कियां उसे चाचा, मामा कहकर सम्बोधन करतीं तो उसका उत्साह क्षीण हो जाता था। एकाध प्रौढ़ा स्त्री से भी उसने सम्बन्ध बनाने का यत्न किया था। परन्तु वे उसे भाई साहब कह कर समझा देती थीं कि ऐसा व्यवहार उनके मान का नहीं।

एक स्थायी पत्नी की लालसा उसके मन में और भी उग्र हो उठी थी। जब गणपतराय ने उसे अमेरिका के आकड़े बताए तो उसको यह भी समझ आ रहा था कि रूस में भी स्थायी सम्बन्धों की संख्या अस्थायी सम्बन्धों से कहीं अधिक है।

वह तीन चार मकान बदल चुका था। मकान बदलने में कारण यह ही होता था कि वहां का स्त्री वर्ग उसे भाई, चाचा, मामा, मौसा इत्यादि से सम्बोधन करता था और वह वहां अपने वासनामय पंख फैलाने का साहस नहीं कर सकता था।

गणपतराय से वार्तालाप के बाद वह पुनः मकान परिवर्तन की इच्छा करने लगा था।

आखिर उसे एक उपयुक्त मकान मिल गया। सन्तराम एक 'आयल प्रेस' में एकाउन्टेंट का काम करता था और नानकसिंह उस फैक्टरी के कर्मचारियों की यूनियन का निरीक्षण करने उस आयल प्रेस में जाया करता था। आज कल वह जहां भी जाता, अपने लिए मकान का एक भाग की किराये पर की आवश्यकता का उल्लेख करता रहता था। सन्तराम के कान में ये शब्द पड़े तो उसने पूछ लिया, "कितने भाड़े का मकान चाहिए।"

"मकान लेकर क्या करूंगा। अकेला जीव हूँ। एक कमरा चाहिये।"

"भाई एक कमरा तो है। परन्तु भाड़ा चालीस रुपये होगा और टट्टी, गुसलखाना सांझा होगा। गर्मियों में बाहर सड़क के किनारे सोना पड़ेगा। हां, मकान के प्रांगण में भी सो सकते हो।"

"दिखा दीजिए।"

मकान देखा गया और मकान के जीवों को देखकर मकान पसन्द कर लिया गया। सन्तराम अपने परिवार के साथ ऊपर की मंजिल पर रहता था। मकान की भूमि पर तीन कमरे थे। एक में घर का टूटा फूटा सामान रखा था और दूसरे में सन्तराम का लड़का विष्णु अपनी पढ़ाई करता और सोता था। तीसरा कमरा बैठक घर के लिये बना था और वह भाड़े पर चढ़ाने के लिए रिक्त था। यह सड़क के किनारे था।

मकान की भूमि पर गुसलखाना और टट्टी भी थी। तीनों कमरे, गुसलखाना और टट्टी प्रांगण के चारों ओर थे। टट्टी गुसलखाने के साथ ऊपर की मंजिल को जाने के लिए सीढ़ियां थीं। ऊपर की मंज़िल पर सन्तराम अपनी पत्नी तथा दो लड़कियों के साथ रहता था।

नानकसिंह जब कमरा और गुसलखाना देख रहा था तो सन्तराम की लड़की माया कालेज से किताबें लिये लौटी थी और नानकसिंह ने कह दिया, "मुझे स्थान पसन्द है। यहां से कोई होटल कितनी दूर होगा!"

"समीप ही है।"

"तो ठीक है।" इतना कहकर नानकसिंह ने एक मास का भाड़ा अग्रिम देकर कमरा रिजर्व करा लिया। अगले मास की प्रथम तिथि से नानकसिंह कमरे में आकर टिक गया।

नानकसिंह ने सन्तराम और उसके बच्चों से परिचय प्राप्त किया और उनकी पढ़ाई में अपनी सहायता प्रस्तुत कर दी। इस समय नानकसिंह अपनी बैठक में बैठा सन्तराम से बातें कर रहा था। विष्णु स्कूल से आया था तो नानकसिंह ने बात आरम्भ कर दी, "यह लड़का आपका है?"

"हाँ, नाम विष्णु है। इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा देने वाला है।"

"क्या विषय लिए हुए है।"

"संस्कृत, मैथमैटिक्स, सिविक्स आदि।"

"भला ये भी कोई विषय हैं। भला क्या होगा संस्कृति पढ़ने से?"

मैं तो कुछ अधिक पढ़ा लिखा नहीं हूँ। मैट्रिक पास कर टाइपिंग और

एकाउन्टेंसी का काम सीखा है : पहले अपनी दुकान पर काम करता था। देश विभाजन के उपरान्त यहां आया तो दुकान करने की सामर्थ्य नहीं रही। अब एकाउन्टेट के रूप में नौकरी करता हूँ।"

' यह मकान तो नया ही बनाया प्रतीत होता है।"

"हां" पिछले सात वर्ष की जमा पूंजी और पत्नी के सब भूषण लगा दिए हैं इसपर। इसपर भी कुछ ऋण लेना पड़ा है।"

"परन्तु जिस किसी ने भी इस लड़के के लिए संस्कृति की पढ़ाई की राय दी है मूर्खता की है।"

"विष्णु के एक गुरु हैं। वे यहां के डिग्री कालेज में प्रोफेसर भी है और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्त्ता भी। उनकी राय से ही यह लड़का काम करता है।"

"तब तो ठीक है। मूर्खों और फ़ासिस्टों की इस संस्था से कुछ अधिक अक्ल की बात की आशा भी नहीं की जा सकती।"

"बताया है न, मुझे तो कुछ अधिक ज्ञान भी नहीं। इसकी बड़ी बहिन माया ने अपनी अध्यापिका की राय से एफ० एस० सी० में मैडिकल सायंस ले ली है। वह भी इसी वर्ष परीक्षा देने वाली है।"

"उसने विष्णु से तो अधिक अक्ल की बात की मालूम होती है। देखिए मैंने विज्ञान बी० ए० तक पढ़ा है। यदि लड़की को किसी बात की आंवश्यकता हो तो मैं सहायता कर सकता हूँ।"

"वह बौटनी की तैयारी में कुछ कभी अनुभव करती है।"

"बह तो मेरा प्रिय विषय था। बुलाइए उसको। मैं उसकी बहुत सहायता कर सकता हूं।"

सन्तराम को प्रतीत हुआ कि यह बहुत ही अच्छा अवसर है। उसने प्रांगण में खड़े हो आवाज दे दी, "माया ! जरा नीचे आना।"

माया आई तो उसने उसको नानकसिंह की बैठक में बुलाकर उसका नानकसिंह से परिचय करा दिया और कह दिया, "कॉलेज में बौटनी इनका

प्रिय विषय था। यदि किसी प्रकार की कठिनाई हो तो ये तुम्हारी सहायता कर सकते हैं।"

इस परिचय के उपरान्त नानकसिंह ने विभिन्न विषयों में माया से प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये। और फिर उनके विषय में नई नई बातें बतानी भी आरम्भ कर दीं। पांच मिनट के वार्त्तालाप पर माया ने नानकसिंह की सहायता लेने में लाभ समझा। समय निश्चय हो गया रात सात से आठ बजे तक।

"आप पढ़ाई की क्या फीस लेंगे?" सन्तराम ने पूछ लिया।

"कुछ नहीं। छोटी बहिन की पढ़ाई में सहायता की फीस कैसे ले सकता हूं।"

इस बार नानकसिंह ने स्वयं भाई बनना स्वीकार कर लिया। अतः पढ़ाई में सहायता आरम्भ हो गई। बौटनी के अतिरिक्त अन्य विषयों में भी सहायता दी जाती थी और एक घंटे की सीमा प्रायः पार होने लगी। इसका परिणाम यह होने लगा कि सायंकाल का खाना नानकसिंह सन्तराम के घर पर ही खाने लगा।

: ५ :

नानकसिंह सितम्बर मास में इस नये मकान में आया था और परीक्षा के दिनों तक उसे घर का ही प्राणी माना जाने लगा था। अतः वह दोनों समय भोजन और प्रातः सायं की चाय यदि वह समय पर घर होता तो सन्तराम के घर ही पीता था।

वैसे नानकसिंह को मिलने वाले भिन्न-भिन्न फैक्टरियों के कर्मचारी यूनियनों के सदस्य और अधिकारी भी आते रहते थे। और नानकसिंह उनको मार्कसियन विचारधारा समझाता रहता था। ऐसे समय में कभी सन्तराम घर पर होता तो वह भी इन बातों को रस पूर्वक सुनता था। इन से उसके मस्तिष्क में यह बात बैठती जाती थी कि नानकसिंह अति विद्वान व्यक्ति है।

एक दिन यूनियनों के लोग नहीं आये थे और नानकसिंह एक पुस्तक पढ़ता हुआ अपने कमरे में बैठा था। सन्तराम कार्यालय से आया तो नानकसिंह को अकेले बैठे देख उसके कमरे में चला आया। मकान के फाटक से मार्ग बैठक घर के साथ से ही था और बैठक घर का एक द्वार तो प्रांगण में था। दूसरा द्वार इस फाटक से प्रांगणके मार्ग की ओर तथा दो द्वार बाहर सड़क की ओर थे।

"सन्तराम ने अपनी बाइसिकल बाहर प्रांगण में रखी और बैठक में आते हुए पूछने लगा, "नानकसिंह जी चाय पी अथवा नहीं ?"

"माया अभी-अभी कालेजसे आई है। मेरा विचार है लाती ही होगी।"

सन्तराम ने आवाज दी, "माया ! मेरे लिए भी चाय यहीं ले आना।"

आवाज दे वह नानकसिंह के समीप कुर्सी पर बैठ कर पूछने लगा, "यह मजदूरों का संगठन तो ठीक ही मालूम होता है परन्तु आप उसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ करते रहते हैं।"

"हां, वह जो कुछ करता हूं वह रेलगाड़ी का इंजन है। शेष तो रेलगाड़ी के डिब्बे हैं। डिब्बे इंजन के पीछे-पीछे ही चलते हैं।"

सन्तराम ने पूछ लिया, "और इंजन में स्टीम क्या है ?"

"स्टीम है फ्रायडवाद, मार्क्सवाद और डार्विनवाद।"

"मार्क्सवाद के विषय में तो आप बताते रहते हैं परन्तु ये दूसरे दो क्या है।"

"फ्रायडवाद है यौन प्रेरणा का सिद्धान्त।"

इस समय माया चाय लेकर आई। वह तीनों व्यक्तियों के लिए चाय लाई थी। उसने मेज पर बर्तन लगा दिए और एक कुर्सी पर बैठ तीनों के लिए चाय बना दी। नानकसिंह ने अपना कथन पुनः आरम्भ कर दिया। उसने कहा, "मनुष्य में कामनाएं बनीं रहती हैं। वे सब कामनाएं सेक्स ऐट्रक्शन (यौन आकर्षण) की धुरी पर घूमती रहती हैं। प्राणी पैदा होता हैं, युवा होता है और यौन तृप्ति कर बूढ़ा हो मर जाता है। बाल्यकाल से यौवन

के अन्त तक सब कुछ यौन तृप्ति की ही तैयारी होती है और जब वह तृप्ति पूर्ण हो जाती है तब प्राणी मृत्यु की ओर चल पड़ता है।

"डारविनवाद यह है कि प्राणी जगत एक ही माता पिता की सन्तान हैं। परन्तु वह माता पिता आदम और हव्वा नहीं। एक बहुत ही छोटे प्रकार का जन्तु होता है। इसका नाम 'अमीबा' है। यह जानवर इतना छोटा होता है कि एक मिली मीटर लम्बाई में पांच सौ से अधिक आ जातेहैं।

"इस प्राणी से लेकर जीवन और जीवन में यौन तृप्ति के लिए संघर्ष चला और इस संघर्ष में दुर्बल मारे गए और प्रबल जीवों ने अपना वंश चलाया। इस संघर्ष में प्रबल सिद्ध हुए जो दूसरों से अपने शरीर में विशेषता रखते थे। इन विशेषताओं को प्राप्त करते-करते प्राणियों की नई-नई जातियां बनी और फिर उनसे योग्य जातियां उत्पन्न हुईं। अन्त में यह मनुष्य बन गया।

"मनुष्य ने भी स्वयं को जीवित रखने के लिए अपने में विशेषताएं उत्पन्न की हैं। इसने बन्दूक, बम्ब इत्यादि शस्त्रास्त्र बना लिए हैं और यह अपने भोजन के लिए अन्य प्राणियों की इतने बड़े स्तर पर हत्या कर रहा है कि वे जन्तु जो खाने में स्वादिष्ट होते है कम हो रहे हैं। एक दिन समाप्त हो जावेंगे और तब कदाचित मनुष्य मनुष्य को मार कर खाने लगेगा।

"इस स्थिति से मानव समाज को बचाने के लिए मार्क्सवाद की कल्पना की गई है। यह है भूमि पर उपलब्ध भोग सामग्री को सब बांट कर खावें। इसीको समाजवाद भी कहते हैं।

"यह सब हैं इस निमित्त ही कि युवा होने पर मनुष्य को अपना यौन साथी मिल जावे।"

"क्या आयु है आपकी?" सन्तराम ने पूछ लिया।

"सत्ताईस।"

"आपका यौवनारम्भ हुआ है कि नहीं?"

"हो गया है और अपने जीवन साथी की खोज में हूं।" इतना कह

उसने माया की ओर अर्थभरी दृष्टि से देखा। सन्तराम अपने चाय के प्याले की ओर देख रहा था। माया की समझ में आया कि नानकसिंह उसकी ओर देख रहा है। उसका मुख लज्जा से लाल हो गया। नानकसिंह मुस्कुराता हुआ उसकी ओर देख रहा था।

सन्तराम ने चाय की सुरकी भरी और फिर बिस्कुट उठाते हुए कह दिया, "आप अपने माता पिता को क्यों नहीं कहते कि आपको गांव में से कोई लड़की ढूंढ़ दें ?"

"वे तो कोई गंवार देहाती लड़की ढूंढ़ देंगे। साथ ही वे कट्टर सिख पन्थी हैं और मुझको पुनः केश रखने के लिए कहेंगे।"

"तो फिर ?"

"मैं अपने लिए स्वयं ही यत्न कर रहा हूं। सब प्राणियों का यही धर्म हैं और मैं अपना धर्म समझ रहा हूं।"

"मेरी परमात्मा से आपके लिए प्रार्थना है।"

"वह क्या होता हैं ?" नानकसिंह ने हलकी हंसी हंसते हुए कह दिया।

"वही जो इस जगत् को रचने वाला है।"

"आपने रचते हुए देखा है ?"

"देखा तो नहीं पर सृष्टि के नियम से जाना अवश्य है। इस जगत में बिना किसीके किए कुछ नहीं होता।"

"होता क्यों नहीं। यह देखो।" नानकसिंह ने चाय का पॉट उठा प्याले में चाय उड़ेलते हुए कहा, "यह चाय किसके करने से प्याले में जा रही है।"

"आपके करने से।"

"नहीं जी। मैंने तो चाय को कैटली ले बाहर जाने को मार्ग दिया है। गिर तो यह अपने आप ही रही है।"

"यह तो भुमित्वाकर्षण के कारण गिर रही है।"

"परन्तु पृथ्वी परमात्मा नहीं। यह जड़ ही है और जड़ पदार्थों में भी काम करने की शक्ति होती है। इस कारण परमात्मा-वात्मा कुछ नहीं।"

"तब तो आपकी शादी नहीं हो सकेगी। आप भूमि की ओर तो आकर्षित हो जावेंगे परन्तु किसी लड़की की ओर नहीं।"

"एक ही बात है सन्तराम जी।"

माया यह वार्तालाप सुन रही थी। और समझ रही थी। इसमें एक कारण यह भी था कि विषय पर नानकसिंहने उससे सभी बातचीत की थी जब नानकसिंह ने कहा था कि वह अपना यौवन ढूंढ़ रहा है तो वह इसका आशय समझ रही थी।

इस विषय पर बौटनी पढ़ाते हुए कई बार चर्चा चली थी कि मनुष्य एक पेड़ पौधे के समान ही है। नानकसिंह के मत में इन दोनों में कोई अन्तर नहीं था। केवल शरीर की बनावट में अन्तर होने से पेड़ असहाय है और मनुष्य सशक्त है। वह चल फिर सकता है। इतना कुछ मनुष्य को लाखों वर्ष के संघर्ष से प्राप्त हुआ था। परन्तु जीवन का सार ज्यों का त्यों ही है। जन्म, बाल्यकाल, कौमार्य, यौवन, सन्तान और मृत्यु।

माया का पूर्ण ध्यान परीक्षा की ओर था। इस कारण नानकसिंह की जीवन मीमांसा पर उसका ध्यान नहीं जाता था। इस पर भी उसकी बातों से उसके मन में अनेकानेक विचार होने लगे थे।

परीक्षा समाप्त हुई तो नानकसिंह ने उसे पुस्तक पढ़ने के लिए लाकर देनी आरम्भ कर दीं। अधिकांश पुस्तकों के विषय कठिन होते थे और उसे समझने के लिए उसे नानकसिंह की सहायता लेनी पड़ती थी।

इस घर में चर्चा चल पड़ी थी कि यदि माया ने परीक्षा पास कर ली तो फिर क्या हो। सन्तराम और रानी में यह चर्चा होती थी और इसकी गूंज माया के कानों में पड़ा करती थी।

रानी का विचार था कि माया को और अधिक पढ़ने की आवश्यकता नहीं। बहुत अक्ल आ गई है। अब इसका विवाह हो जाना चाहिए। सन्तराम यह तो अनुभव करता था कि माया की पढ़ाई जारी रखी गई तो वह लेडी हार्डिंग मैडिकल कालेज में भरती हो सकेगी और वहां का खर्चा दो

सौ रुपया मासिक होगा। उसे स्वयं ढाई सौ रुपया मासिक मिलता था। इतना देने में वह स्वयं को असमर्थ पाता था।

कभी नानकसिंह से बात होती थी तो वह कहता था कि मानवजीवन का ध्येय तो विवाह करना है परन्तु विवाहित जीवन को सुखी बनाने के लिए धन एक अत्यावश्यक साधन है। वर्तमान पूंजीवादी समाज में बिना धन के जीवन चलाना कठिन है।

अभिप्राय यह था कि माया को डाक्टर बनना चाहिए। सन्तराम ने यह बात अपनी पत्नी को बताई तो साधनों पर विचार होने लगा। माया समीप बैठी सुन रही थी। उसने कह दिया, "पर मैं पढ़ाई करना नहीं चाहती।"

"क्यों ?" सन्तराम ने विस्मय में पूछ लिया।

"मैं विवाह करूंगी।" माया का स्पष्ट उत्तर था।

रानी लड़की को इस प्रकार कहते सुन डर गई। फिर यह विचार कर कि लड़की पढ़ लिख कर सब बात समझती है और इसकी आयु अठारह वर्ष की हो गई है अतः उसकी मनोकामनाओं का अनुमान लगा कर बोली, "ठीक है, मैं भी यही विचार कर रही हूँ। जरा परीक्षाफल निकल जावे तो अच्छा वर घर ढूंढ़ने में सहायता मिल जावेगी।"

परन्तु माया समझ रही थी कि उसने वर ढूंढ़ लिया है। इस पर भी वह स्वयं इस विषय पर कहना नहीं चाहती थी। वह अपने ढूंढ़े हुए वर से ही यह प्रस्ताव कराने का विचार कर रही थी।

सन्तराम यह समझ रहा था कि लड़की विवाह की बात इस कारण कह रही है कि वह अपने माता पिता की आर्थिक स्थिति समझती है। इसी कारण वह पढ़ाई का विचार छोड़ बैठी है। वह अपनी हीन आर्थिक स्थिति पर लज्जित था। उस समय तो वह चुप रहा परन्तु अगले ही दिन उसने अपने मिल मालिक से अपने घर की समस्या पर विचार विमर्श किया।

आयल मिल का मालिक प्यारेलाल सिंहानी मारवाड़ी था और जब

उसने अपने अकाउण्टेट की समस्या सुनी तो पूछने लगा, "परीक्षा फल निकल चुका है।"

"अभी नहीं। इस पर भी मुझे और उसकी प्राध्यापिकाओं को विश्वास है कि वह उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण होगी।"

"कितना खर्च बैठेगा आगे पढ़ने का।"

"पांच वर्ष के लिए निरन्तर लगभग दो सौ रुपया मासिक।"

"अभिप्राय यह है कि ढाई हजार रुपया वार्षिक हुआ। कुल बारह हजार रुपया मिल सकता है, परन्तु ऋण के रूप में ! हां, इतनी रियायत हो सकती है कि सूद नहीं देना पड़ेगा। रुपया किश्तों में चुका देना।"

सन्तराम को यह बहुत बड़ी बात प्रतीत हुई। उसने योजना बना ली। एक सौ रुपया मासिक अपने वेतन से 'सेविंग स्कीम' में जमा कराने से पांच वर्ष के बाद दस हजार रुपया हो जावेगा। शेष वह किसी प्रकार प्रबन्ध कर लड़की के डाक्टर बनते ही दे देगा। इतना विचार कर उसने अपनी पत्नी को सब योजना सुना दी।

ठीक उसी समय माया नानकसिंह से इस विषय पर बात कर रही थी। माया ने पूछा, "बताइए। आप कब विवाह करिएगा ?"

"देखो माया ! विवाह तो हो चुका है। तुम यह जानती हो कि मैं हिन्दुओं के विधिविधान में विश्वास नहीं करता।"

"परन्तु मेरे माता-पिता तो वेदी के चारों ओर फेरे लिए बिना विवाह समझेगें नहीं।"

"परन्तु विवाह के उपरांत माता-पिता की जरूरत रह जाती है क्या।"

माया इसका अर्थ समझने के लिए नानकसिंह का मुख देखने लगी। नानकसिंह ने अपने कथन की व्याख्या करते हुए कहा, "हमारा विवाह हुए एक मास से अधिक हो चुका है। अब तुमको माता-पिता की चिन्ता ही नहीं करनी चाहिए।"

"तो फिर मैं ऊपर उनके घर में न जाऊं। रात यहीं रह जाऊं और

उनसे कह दूं कि अपने पति के घर में रह गई हूँ।"

"चाहिए तो यही। परन्तु मैं कल से अपनी पत्नी के साथ रहने योग्य मकान ढूंढ़ लेता हूं। तब तुम और मैं वहां चल कर रहने लग जावेंगे।"

"मैं चाहती हूँ कि उनको अभीं बता दूँ कि मेरा विवाह हो चुका है जिससे वे मेरी शिक्षा के लिए ऋण न लें।

"अभी परीक्षाफल निकलने तक ऋण नहीं लिया जावेगा। इस लिए तब तक डिक्लेयर करने की आवश्यकता नहीं।"

इससे माया को पूर्ण सन्तोष नहीं हुआ। हां, एक दिशा दिखाई देने लगी थी।

: ६ :

विष्णु का परीक्षा फल घोषित हुआ तो वह प्रथम श्रेणी में उतीर्ण हुआ था। विष्णु अपने स्कूल से अपना परीक्षा फल देख कर घर की ओर चला तो मार्ग में उसको महेश्वरदयाल मिल गया। महेश्वरदयाल इतिहास में एम० ए० पास करने के उपरान्त तीन वर्ष तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक के रूप में काम करते रहे थे। पिछले वर्ष तीन वर्ष की अवधि समाप्त कर वह गाजियाबाद सरकारी कालेज में इतिहास का प्राध्यापक नियुक्त हो गया था।

परीक्षाफल निकलने पर वह यह पता कर रहा था कि संघ के कितने स्वयं सेवक उत्तीर्ण हुए है और कितने अंक ले कर उत्तीर्ण हुए हैं। गाजि-याबाद में कई शाखाये कार्य कर रही थीं। और उनके लगभग चालीस विद्यार्थियों ने मैट्रिक की परीक्षा दी हुई थी। सब के सब स्वयं सेवक उत्तीर्ण हुए थे। और उनमें विष्णु ने सबसे अधिक अंक लिये थे।

जब विष्णु महेश्वरदयाल को मिला तो उसने विष्णु को बधाई देते हुए कहा, "परीक्षाफल देख आये हो?"

"जी। मेरे ६०९ अंक आये हैं।"

"अब क्या पढ़ने का विचार कर रहे हो?"

"मैट्रिक में संस्कृत आपकी राय से ली थी। अब भी आपसे ही राय करने वाला था।"

"मैं तो अभी भी तुमको संस्कृत लेने के लिये ही कहूंगा।"

"परन्तु हमारे घर में एक नानकसिंह रहते है। वे कहते थे कि किसी मूर्ख ने मुझे संस्कृत पढ़ने की सम्मति दी है।"

महेश्वरदयाल हंस पड़ा। उसने पूछा, "यह नानकसिंह क्या करता है?"

"यह तो मैं जानता नहीं। वैसे वह पढ़ा लिखा बहुत है। वह विज्ञान और अर्थशास्त्र की बहुत बातें किया करता है।"

"तब ठीक है वह स्वयं संस्कृत नहीं जानता और आजकल के पढ़े लिखों की भाँति जो विद्या वे स्वयं नहीं जानते उसे मर्खता ही मानते हैं।

"अच्छा चलो तुम्हारे पिताजी को वधाई दे दूं और उनसे भी राय कर लूं कि तुम को कहां दाखिला चाहिये और क्या पढ़ना चाहिये।"

विष्णु प्रोफेसर साहब को लेकर घर पहुंचा तो उसके पिता जी उस समय नानकसिंह की बैठक में बैठे चाय पी रहे थे। माया उनके लिये चाय बना रही थी।

महेश्वरदयाल और विष्णु भी वहां पहुंच गये। सन्तराम ने हाथ जोड़ नमस्कार कर दी और माया से कहा, "प्रोफेसर साहब के लिये कुर्सी ले आओ।"

वहां एक स्टूल फालतू रखा था। महेश्वरदायल उस पर बैठने लगा तो सन्तराम ने उसको अपनी कुर्सी पर बैठा दिया और स्वयं माया के कुर्सी लाने की प्रतीक्षा करने लगा। माया विष्णु के कमरे से कुर्सी लाई तो सब बैठ गये। विष्णु स्टूल पर बैठ गया। माया चाय आदि लाने के लिये ऊपर चली गई।

महेश्वरदयाल ने कहा, "आप लोग पीजिए। यह ठंडी हो रही है।"

इस पर सन्तराम ने कह दिया, "ठीक है। तीन प्याले तो हैं। माया

और विष्णु फिर पी लेंगे।"

"मैं तो आपको बधाई देने के लिए आया था।" महेश्वरदयाल ने माया का बनाया हुआ प्याला उठा लिया और कहा, "विष्णु प्रथमश्रेणी में बहुत अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ है।"

"तब तो मिठाई मंगवाता हूं।"

"मिठाई खाने के लिये फिर किसी दिन आ जाऊंगा। मैं इस समय एक और परातर्श करने के लिये आया था। एक सप्ताह के उपरान्त कॉलेज में प्रवेश आरम्भ हो जावेगा। आपको शीघ्र ही निश्चय कर लेना चाहिये कि विष्णु किस कॉलेज में प्रविष्ट हो और वह क्या विषय चुने।

"प्रोफेसर साहब ! यह विष्णु तो आपकी राय से ही पढ़ाई कर रहा हैं। सन्तराम ने चाय पीते हुए कह दिया।

"मैंने अपने मन की बात उसे बताई थी। परन्तु उसने बताया कि कोई नानकसिंह यहां हैं जो संस्कृत पढ़ने की सम्मति देने वाले को मूर्ख कहता है। इस कारण वह मूर्ख आप द्वारा अपनीं सम्मति की स्वीकृति चाहता है।"

नानकसिंह अपना सुन मुस्कुराता रहा। वह देख रहा था कि प्रोफेसर नहीं जनता कि उसको सूर्ख कहने वाला भी उसके सम्मुख ही बैठ कर चाय पी रहा है। यह ठीक था। महेश्वरदयाल का विचार था कि नानकसिंह कोई नानकपथी सिख होगा। उसके केश, दाढ़ी, मूंछ होगी। परन्तु उसको मूर्ख कहने वाला नानकसिंह तो क्लीन शेव्ड और केश रहित था।

इस समय विष्णु ने कह दिया, "जी वे नानकसिंह जी तो यहीं बैठे है।"

इस पर महेश्वरदयाल ने हाथ जोड़ नमस्कार कर दिया और पूछ लिया, "आप की शिक्षा सम्बन्धी योग्यता मैं जान सकता हूं क्या ?"

नानकसिंह गम्भीर हो गया। उसने कह दिया, "मैं इंग्लिश में एम० ए० हूं। पंजाब विश्वविद्यालय का ग्रेजुएट हूँ। लौहर गवर्नमेंट कॉलेज में

शिक्षा पाई है।"

"आपको संस्कृत का कितना ज्ञान है।"

"एक अक्षर भी नहीं जानता।"

"तो इस विषय में आपने ऐसी सम्मति क्यों दे दी। आप तो पढ़े लिखे विद्वान हैं। जिस विषय का आप को ज्ञान नहीं, उस विषय में आप ने सम्मति देकर अनधिकार चेष्टा नहो की है क्या ?"

"मैंने संस्कृत तो नहीं पढ़ी। परन्तु मैं मार्केट की खबर रखता हूं। और देख रहा हूँ कि संस्कृत की दुकान का दिवाला निकल रहा है।'

"मार्किट का ? मैं समझता हूँ कि आपको तो केवल मछली मार्किट का ज्ञान है। भला वहाँ संस्कृत के किस विद्वान ने अपनी दुकान लगाई है। भाई साहब, संस्कृत की दूकानों की मार्किट दूसरी ही है। वहां आप कभी गये ही नहीं और वहां जाने का आपके पास प्रवेशपत्र भी नहीं है।"

इससमय तक माया चाय लगा चुकी थी और अपने तथा विष्णु के लिए चाय बना रही थी। सबसे पहली बात जो माया ने देखी वह नानकसिंह के मुख पर परेशानी के लक्षण थे। नानकसिंह स्वयं को मछली मार्किट का पर्यटक सुन कर मुस्कुराया भी था और घबराया भी। मुस्कुराया था महेश्वर दयाल के सतर्क उत्तर पर और घबराया था स्वयं को संस्कृत के विषय में बात करने का अनधिकारी कहा जाने पर।

महेश्वरदयाल ने चाय की एक सुरकी लेकर अपना कथन जारी रखा। उसने कहा, "नानकसिंह जी ! विद्वानों की मांग उस मार्किट में है जिसमें स्वामी दयानन्द, स्वामी शंकराचार्य, महर्षि व्यास, महर्षि गौतम, कणाद, कपिल इत्यादि की दुकानें हैं। इसी मार्किट में एक छोटी-सी दुकान मैक्स-मूलर, ग्रिफिथ इत्यादि की भी है। आचार्य भण्डारकर और विद्यार्थी गुरुदत्त का भी माल इसी मार्किट में रखा है। यह मार्किट सहस्रों वर्षों से चल रही है और वहां का माल अभी भी तरोताजा, सुरुचियुक्त और रंगा-रंग के पुष्पों से लदा पड़ा है। यह आपकी मछली मार्किट का माल तो दो घंटे

में ही बासी और दुर्गन्ध फैलाने वाला हो जाता है।

सन्तराम इस तुलना से तो खिलखिला कर हंस पड़ा। माया देख रही थी कि नानकसिंह के माथे पर पसीने की बूदें छलकने लगी हैं। महेश्वरदयाल स्वयं को मूर्ख कहे जाने का प्रतिकार ले रहा था। उससे पूछ लिया, "क्षमा करें, यह आज के अर्थशास्त्र का लेखक किस सन् में पैदा हुआ था?"

नानकसिंह ने समझा कि यह पण्डित अब फंसा है उसके शिकंजे में। वह स्वयं को अर्थशास्त्र का धुरन्धर विद्वान मानता था और इस विषय में वह इस प्रोफेसर के बच्चे को पछाड़ सकता है। ऐसा मान उसने साहस पकड़ कर कह दिया, "यों तो अर्थशास्त्र एक बहुत ही पुराना विषय है। कहते हैं चाणक्य भी इस विद्या को जानता था। परन्तु इसका वर्तमान रूप तो कार्लमार्क्स तथा एंजिल का आविष्कृत है। उसने ही यह सिद्धांत प्रस्तुत किया है कि उन लोगों का लाभ जो अपने अधीन लेबर नौकर रख कर करते हैं, उन मजदूरों की सरप्लस वैल्यू ही है।

"यह उनसे छीन लेनी चाहिये। और उन मजदूरों को वापिस दिलवा देनी चाहिये।"

"बस! या कुछ और भी?"

"यह मुख्य है। इसी सिद्धांत को आधार बना कर शेष सब कुछ कहा गया है।"

"परन्तु यह बात तो आज से पांच सहस्र वर्ष पूर्व भी कही गई थी। महर्षि वेद व्यास ने अपने महान ग्रन्थ महाभारत में यह कहा है कि किसी दूसरे की वृत्ति न छीनो। वृत्ति अर्थ है ईमानदारी से उपार्जित मजदूरी। यह भी लिखा है, "अनृशंश्चरेदर्थं। क्रूरता के बिना अर्थ संग्रह करे। और भी कहा है—आदद्यान्न च साधुभ्यो। श्रेष्ठ पुरुषों का धन न छीनो।

"भला आपके कार्लमार्क्स ने कौन सी नवीन बात कह दी है?"

"परन्तु उनका कहा कोई मानता तो नहीं?"

"वह इस कारण कि आज की सरकारें दुर्बल हैं। वे दुष्टों को नियन्त्रण में नहीं रख सकतीं।"

"दुर्बल कैसे हैं ? उनके पास तो एटमबम्ब जैसे शस्त्रास्त्र हैं। इतनी शक्ति तो पहले किसी भी सरकार की नहीं रही।"

"एटम बम्ब इत्यादि तो हैं परन्तु उनके प्रयोग का सामर्थ्य तो उनमें नहीं है। सरकार की शक्ति उसके मनोबल में होती है। हथियारों में नहीं। मनोबल का हथियारों से सम्बन्ध नहीं। इसका सम्बन्ध आत्मशक्ति से है। जब सरकार प्रत्येक बात में जनता के कहने पर चलने के लिए बचनबद्ध है तो सरकार बल जनता बन जाती है। जनता में अधिकांश लोग अज्ञ, कम शिक्षित और साधारण बुद्धि के होते हैं। दुष्ट लोग उनको भ्रम में डाल अपनी ओर करते रहते हैं और जन बल सदा दुष्टों, अनृतभाषियों, चोरों, ठगों के हाथ में कठपुतली बन कर प्रयुक्त होता है। जनबल पर आधारित सरकार भला उन दुष्टों को कैसे नियन्त्रण में रख सकती है।"

"जन बल के अतिरिक्त और कौनसा बल है जिस पर सरकार खड़ी की जा सके ?"

"वह बल है धर्म का। परन्तु यह तभी सम्भव हो सकता है जब जनता को यह समझ आने लगेगा कि धर्म तो जन बल से भी श्रेष्ठ बल है और इसकी सहायता से वे दुष्टों से बच सकेंगे। धर्म का अर्थ बहुमत नहीं।"

नानकसिंह ने हंस कर कहा, "और धर्म बल पड़ा है मन्दिरों और मस्जिदों में। यही न ?"

"किसी मूर्ख को ही वहां धर्म बल दिखाई देता होगा। धर्म बल है निष्पक्ष न्यायकर्त्ता और न्यायाधिकरणों में। जिस देश और काल में न्यायकर्ता स्वतन्त्र, सदाचारी, निष्पक्ष विद्वान होंगे और उनके निर्णय पूर्ण जनता मानेगी उसकी सरकार बलवान होगी और वह जनता की चोर और तस्करों से रक्षा कर सकेगी। जनता का बल, धर्म अर्थात् न्यायाधिकरण का बल होने पर चोर और ठग नहीं पनप सकेंगे।"

नानकसिंह निरुत्तर हो रहा था। इस कारण उसने बात बदल दी। उसने कहा, "परन्तु प्रोफेसर साहब ! एक साधारण वृत्ति के परिवार के लड़के को ऐसी विद्या पढ़ने के लिये कहना जिसका मार्किट मूल्य कुछ नहीं, तो उस परिवार के साथ घोर अन्याय हो जावेगा।

"अन्याय किस प्रकार ?"

"उनको सदा के लिए निर्धन बनाए रखने का मार्ग दिखा कर।"

"तो आप धनवान बनाने के पक्ष में हैं। आपके गुरु कार्लमार्क्स तो यह पसन्द नहीं करते। वे तो पोलिटेरियेट अर्थात् सम्पत्ति विहीन बनाने के पक्ष में हैं।"

नानकसिंह पुनः एक कोने में फंस गया। परन्तु एक चतुर व्यक्ति की भांति उसने कह दिया, "जब तक कम्युनिस्ट समाज नहीं बन जाता तब तक तो धन का मूल्य है ही।"

"इस प्रकार तो समाज पोलिटेरियेट कभी होगा नहीं। परन्तु नानक सिंह जी ! मैं आपको एक बात बताता हूं। धनवान पढ़ाई से नहीं होते, वरन् भाग्य से होते हैं। पढ़े-लिखे भीख मांगते फिरते हैं और अनपढ़ लाखों का व्यापार चलाते फिरते हैं। धन पैदा करने और संचय करने की वृत्ति भाग्य से मिलती है। यदि विष्णु के भाग्य में धनी होना लिखा है तो वह संस्कृत पढने पर भी और कम्युनिष्ट डाकुओं का राज्य हो जाने पर भी धनी हो जावेगा। इसको कोई रोक नहीं सकता।"

"तो आपके भाग्य में धनवान होना नहीं लिखा है। जो आप ढ़ाई सौ रुपये की नौकरो करते फिरते हैं।"

महेश्वरदयाल हंस पड़ा। उसने हंसते हुए कहा, "आप मेरे विषय में कुछ नहीं जानते। मेरे पिता करोड़पति हैं। वे मुझे कह रहे है कि मैं कारोबार में लग जाऊं। परन्तु मैं लोक कल्याण के कार्य में लगा हुआ हूं। इसी कारण ढाई सौ रुपये की नौकरी स्वीकार की है। यह स्वेच्छा से सब कुछ जानते हुए अर्थात् ज्ञानी होकर और अपने उज्जवल भविष्य का

विचार कर ही यह कह रहा हूं। हमारी जीवन पद्धति में इसे यज्ञरूप जीवन कहते हैं। भाग्य ने धनी परिवार में उत्पन्न किया है। भाग्य ने उच्च शिक्षा और धन संचय करने का अवसर भी दिया है, परन्तु मन ने एक दूसरा मार्ग स्वीकार किया है और वह मार्ग है श्रेय का।

"वह क्या होता है ?"

"वह आप नहीं समझ सकते। कारण कि उस मार्ग का ज्ञान उस शिक्षा में जो आपने ग्रहण की है अर्थात् पाश्चात्य शिक्षा पद्धति में है ही नहीं। उसके लिए संस्कृत भाषा और उसके साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है।"

"धन मेरे लिए गौण हो जाता है।"

इसके उपरान्त नानकसिंह को कहने के लिए कुछ अन्य सूझ नहीं रहा था। उसने कह दिया, "अपना-अपना दृष्टिकोण है।"

महेश्वरदयाल ने भी बात समाप्त कर दी। उसने कहा, "सन्तराम जी ! धनी बनने के लिए भगवान का भजन करिए और संसार में उन्नति करने के लिए बुद्धि को परिमार्जित करिये। बुद्धिमार्जन का उपाय अपने शास्त्रों के अतिरिक्त आपको अन्य कहीं नहीं मिलेगा। यही मैंने विष्णु को कहा है। आपको भी कहता हूं। यह तो प्रत्येक आयु, अवस्था और स्थिति में हो सकता है।

"अच्छा, अब मुझे आज्ञा दीजिए। विष्णु के इतने अच्छे अंक लेकर पास होने की बधाई देते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है।"

: ७ :

सब प्रोफेसर साहब को विदा करने के लिये मकान के द्वार तक आये। महेश्वरदयाल सबको नमस्कार कर अपने मकान की ओर चल पड़ा। ये लोग पुन: बैठक घर में आये तो सब से पहले नानकसिंह हंसा और विष्णु से पूछने लगा, "बताओ विष्णु ! क्या अब भी संस्कृत पढ़ोगे ?"

"क्यो, अब क्या अन्तर पड़ गया है।"

"तुम्हारे गुरु बता गए हैं कि तुम इस विद्या को पढ़कर स्वामी शंकर-चार्य और स्वामी दयानन्द बन जाओगे। बताओ क्या बनना चाहते हो तुम ?"

विष्णु ने महेश्वर की उक्ति दोहरा दी, "मैं मछली मार्केट में मछली नहीं बेचूंगा।"

इसपर तो माया सबसे जोर से हंसी। नानकसिंह को क्रोध चढ़ने लगा था। उसने घूरकर माया की ओर देखा तो माया ने कह दिया, "मुझे तो अभी से आपकी मार्केट में मछली की दुर्गंध आने लगी है।"

'मेरी मार्केट। मेरी मार्केट कौन-सी है ?"

"वही जो आप कहते रहते हैं। मेरा मतलब है कार्लमार्क्स की दुकान। आप प्रोफेसर साहब की किसी भी बात का उत्तर नहीं दे सके।"

"क्या उत्तर नहीं दे सके ?"

"यही कि कार्लमार्क्स की पूंजीपतियों को दी गईं सब गालियां जानने के उपरांत भी आप विष्णु को धनवान बनने की बात कह रहे थे। अब भी कह रहे हैं। यहीं से मुझको इस दुकान से बासी मछली की दुर्गंध आने लगी है।"

इस पर तो विष्णु और सन्तराम भी हंसने लगे। नानकसिंह माया के इस प्रकार के कथन पर तो परेशानी अनुभव करने लगा था। बात विष्णु ने रख ली। उसने कह दिया, "पिताजी ! मैं पढ़ूंगा तो संस्कृत और इति-हास। साथ ही मैं विचार कर रहा हूं कि मेरी पढ़ाई का बोझ आप पर न पड़े। मैं आपसे केवल निवासस्थान, वस्त्र और भोजन ही लूंगा। वह भी जब आप प्रसन्नतापूर्वक देंगे।"

इस दिन के वार्तालाप का सबसे अधिक प्रभाव माया पर हुआ था। वह नानकसिंह को विद्वत्ता का भण्डार समझे बैठी थी। आज उसको पता चला कि विद्वत्ता के क्षेत्र में तो वह एक नगण्य प्राणी है।

सन्तराम और विष्णु उठे तो नानकसिंह ने कह दिया, "माया के

विषय में भी तो विचार करना होगा ?"

सन्तराम ने कह दिया, "उसके विषय में लगभग निश्चय ही है। उसका परीक्षा फल पता चले तभी उसके विषय में अन्तिम निश्चय हो सकेगा।"

"मैं तो कहूँगा कि उसे आगे पढ़ना चाहिये।"

"हां, यदि इतने नम्बर लेकर पास हुई जिससे कि आगे कॉलेज में भरती हो सकी तो जरूर पढ़ेगी।"

सन्तराम विष्णु के परीक्षाफल से उत्साहित हो रहा था। वह अब विष्णु के पास होने का समाचार विष्णु की मां को सुनाने की लालसा करने लगा था। इस कारण वह बैठकघर से निकल ऊपर चला गया। विष्णु भी मां का आशीर्वाद प्राप्त करने ऊपर चला गया। माया पीछे रह गई। उसने घूमकर नानकसिंह से कहा, "मैं आज अपने कॉलेज गई थी। वहां यह चर्चा थी कि हमारा परीक्षाफल भी एक दो दिन में निकलने वाला है। आपको उससे पहले मकान का प्रबन्ध कर लेना चाहिये। नहीं तो बहुत गड़बड़ मच जावेगी।"

"मेरी योजना तैयार है।"

"और एक बात और बता दूं। मेरे मासिक धर्म होने की तारीख निकल चुकी है।"

नानकसिंह भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचार कर बोला, "कितने दिन ऊपर हो गये हैं।"

"मेरा विचार है पन्द्रह दिन हो गए हैं।"

'कोई बात नहीं। इतने दिन तो कभी वैसे भी निकल जाते हैं।"

माया ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया और अपने भाई और पिता के साथ मकान के ऊपर चढ़ गई।

माया को नानकसिंह की बातों में कोई सार नहीं दिखाई दे रहा था। वह महेश्वरदयाल की बातों से बहुत प्रभावित हुई थी। उसने कहा था

धन तो ईश्वर की कृपा से मिलता है। पढ़ाई तो आत्मश्रेय के लिए है। आत्मश्रेय का अर्थ वह जानती थी आत्मोन्नति। इसके साथ ही उसको दिन व्यतीत होने के साथ इस बात का विश्वास होता जाता था कि उसे गर्भ ठहर गया है। यद्यपि वह डाक्टरी नहीं पढ़ी थी। इसपर भी बायोलोजी में शरीर क्रिया विज्ञान पढ़ने से वह इतना जान चुकी थी कि बच्चा कैसे बनता है और मासिक धर्म बन्द हो जाना उसके बन जाने के लक्षण हैं। इससे वह अपने भविष्य जीवन के विषय में चिन्ता अनुभव करने लगी।

जून के मध्य में उसका परीक्षाफल निकला। वह भी एफ० एस० सी० में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई थी। अपने दोनों बच्चों को पढ़ाई में श्रेष्ठ रहते देख सन्तराम का हृदय बल्लियों उछल रहा था। उसने माया का परिणाम अपनी फैक्टरी के मालिक को बताया तो उसने ऋण देने के प्रस्ताव को पुनः दोहरा दिया। सन्तराम ने स्वीकार करते हुए कहा, "मैं उसको लेडी हार्डिंग कालेज दिल्ली में डाक्टरी पढ़ने के लिए दाखिल कराना चाहता हूं। मैं कल लड़की को वहां फार्म लेने के लिए भेज दूंगा और प्रवेश मिलते ही आपसे रुपये लेने का विचार रखता हूँ।"

"मिल जायेंगे।"

इस समय तक विष्णु सरकारी कालेज गाजियाबाद में प्रवेश पा चुका था। उसने संस्कृत और इतिहास विषय लिए थे। इसका परिणाम यह हुआ था कि विष्णु का महेश्वरदयाल से बहुत समीप का सम्बन्ध हो रहा था। महेश्वरदयाल ने विष्णु के लिये बच्चों को पढ़ाने का प्रबन्ध करदिया था। इसका परिणाम यह हो रहा था कि उसके कालेज का खर्च निकल रहा था। एक दिन विष्णु महेश्वदयाल के घर पर गया हुआ था और वहां माया के विषय में बात चल पड़ी। महेश्वरदयाल ने पूछा, "तुम्हारी बहिन पास हुई कि नहीं।"

"पास हो गई है। वह भी प्रथम श्रेणी में पास हुई है।"

"उसका मस्तक देखकर ऐसा ही प्रतीत होता था कि वह बहुत ही

प्रतिभाशाली लड़की होगी।"

"परन्तु प्रोफेसर साहब ! घर में एक झगड़ा चल रहा है।"

"क्या ?"

महेश्वरदयाल का विचार था कि आगे पढ़ाई के सम्बन्ध में बात हो रही होगी। विष्णु ने बताया, "पिताजी कह रहे थे कि उसे लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए यत्न करना चाहिए। उसका कहना है वह पढ़ना नहीं चाहती। अब उसका विवाह हो जाना चाहिये।"

"विवाह कहां होना चाहिये ?"

"अभी तक कोई योग्य वर तो मिल नहीं पाया। मां कई दिनों से दिल्ली में अपनी विरादरी वालों से मिलने जा रही हैं। पिताजी कह रहे हैं कि जब विवाह नहीं हो रहा है तो कॉलेज में दाखिल क्यो न हुआ जाये। अभी तक कुछ निर्णय नहीं हो पाया है।"

"और नानकसिंह क्या कह रहा है।" महेश्वरदयाल ने मुस्कुराते हुए पूछा लिया।

"वह मौन है। कुछ कह नहीं रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी किसी परेशानी में फंसा हुआ है।"

महेश्वरदयाल ने कुछ विचारकर कहा, "तो तुम्हारे पिताजी से फिर मिलना चाहिये। कदाचित् मैं किसी प्रकार की सहायता कर सकूं।"

"तो कब चलिएगा ?"

"आज तो हमारे कॉलेज में स्टाफ मीटिंग है। मैं आज रात विलम्ब तक वहां रहूंगा। कल किसी समय मिलूंगा।"

उस दिन विष्णु घर पहुंचा तो माया की समस्या एक पग और आगे निकल चुकी थी। नानकसिंह दिल्ली गया था और मैडिकल कॉलेज का प्रोसपैक्टस ले आया था और साथ ही भरने के लिए फार्म भी ले आया था।

जब नानकसिंह और माया में कुछ समय तक परामर्श हुआ तो

माया ने फार्म भरकर हस्ताक्षर कर दिए और नानकसिंह अगले दिन फार्म दिल्ली ले जाने के लिए तैयार हो गया।

जब विष्णु ने यह सुना तो उसने अपने प्रोफेसर के आने की बात बता दी। उसने कहा, "वे शापसे कल मिलने के लिए आनेवाले हैं। वे कह रहे थे कि कदाचित् वे आप आपकी सहायता कर सकें।"

विष्णु की मां को यह समझ आया कि विष्णु का प्रोफेसर एक धनी बाप का बेटा है और कदाचित् वह आर्थिक सहायता करना चाहता है।

सन्तराम ने कह दिया, "अच्छी बात है आने दो। यदि वह कुछ भी सहायता कर देगा तो हमारा बोझ कुछ तो कम होगा ही।

माया विष्णु और विष्णु के प्रोफेसर की बात सुन रही थी। परन्तु वह इस बात में रुचि लेती प्रतीत नहीं होती थी। घर के सब प्राणी यह समझ रहे थे कि जब से नानकसिंह फार्म लाया है और उसने माया को समझाया है। वह एक बलि के बकरे की भांति कुछ न समझती हुई बलि के लिए जा रही प्रतीत होतीं थी। माया के इस व्यवहार पर सब हैरान थे।

माया को उत्साहित करने के लिए सन्तराम ने कह दिया, "देखो माया! तुमको अब चिन्ता नहीं करनी चाहिये। ईश्वर की कृपा से सब तुम्हारी सहायता के लिए कह रहे हैं।"

माया ने कुछ उत्तर नहीं दिया। अगले दिन माया नानकसिंह के साथ दिल्ली गई और भरा हुआ फार्म कॉलेज में देकर वे मध्याह्नोत्तर तीन बजे तक घर लौट आये। आने पर माया पहले से अधिक प्रसन्न प्रतीत होती थी। नानकसिंह ने रानी को बताया, "आज शनिवार है, बुधवार दाखला लेकर वहां जाना चाहिये।"

"इसके पिता तो जा नहीं सकेंगे। माया को अकेले ही जाना पड़ेगा।" रानो ने कह दिया।

नानसिंह ने कह दिया, "माताजी! आपको इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। मैं उस दिन माया के साथ वहां जाऊंगा और उसको वहां बोर्डिंग

हाउस में दाखिल करा आऊंगा।"

रानी ने सुख का सांस लेते हुए कहा, "इसके पिता दफ्तर से रुपया मंगलवार को ले आयेंगे और यह बुधवार को जा सकेगी।"

इस प्रकार बात निश्चित हो जाने पर माया अपने कमरे में निश्चिन्त हो लेट रही। सन्तराम को माया के बुधवार प्रवेश के लिए जाने का कार्य-क्रम मिल चुका था। वह भी प्रसन्न था। इस समय विष्णु महेश्वरदयाल के साथ आया। यह सायंकाल लगभग पांच बजे का समय था। दोनों ऊपर की मंजिल पर चढ़ आए। सन्तराम ने उसे अपने कमरे में बैठाकर चाय इत्यादि पूछ ली।

"आप पी चुके हैं क्या ?" महेश्वरदयाल ने पूछा।

"नहीं। मैं अभी दफ्तर से आया ही हूं।"

विष्णु ने अपनी माताजी को बता दिया कि उसके प्रोफेसर साहब आये हैं। उनके लिए भी चाय बनानी है।

चाय आई तो सन्तराम ने माया को भी बुला लिया। चाय पीते हुए माया के कॉलेज में प्रवेश की बात चल पड़ी। महेश्वर ने पूछ लिया, "परन्तु मुझे तो विष्णु ने बताया था कि माया देवी आगे पढ़ाई करने के लिए राजी नहीं हैं।"

"हां।" सन्तराम ने कहा, "कल प्रातःकाल तक यह ऐसा ही विचार रखती थी। नानकसिंह ने इसे समझाया और यह समझ गई है। आज यह फार्म भरकर कॉलेज में दे आई है। आगामी बुधवार प्रवेश की स्वीकृति मिल जायगी। यह उस दिन जायगी और प्रवेश शुल्क दे भरती हो जायगी।"

"तो मायादेवी की समझ में आ गया है कि पढ़ाई करने से लाभ है ?"

"जी नहीं, समझ में तो आया नहीं। मैं तो अब भी विचार कर रही हूं कि मेरे पढ़ने से कोई लाभ नहीं होगा। परन्तु परिस्थितियों से विवश हो मैं यह योजना मान रही हूं।"

"क्या विवशता है मायाजी ! देखिये, मैं तो किसी लड़की के डाक्टरी पढ़ने को ठीक ही समझता हूं। यद्यपि मेरी दृष्टि में उसके लिए इससे भी एक श्रेष्ठ कार्य है। मुझको बताया गया था कि मायादेवी उसी की इच्छा कर रही हैं। क्या मैं गलत समझा हूं।"

माया आंखें नीची किये चुपचाप बैठी रही। उत्तर सन्तराम ने दिया, "यह लड़की कह रही थी उसका पढ़ाई में मन नहीं है। इससे विवाह का प्रबन्ध कर दिया जाय। मैं समझा था कि यह मेरी आर्थिक अवस्था देख डाक्टरी महंगी पढ़ाई करने से इन्कार कर रही है। इस कारण मैंने रुपये का प्रबन्ध कर दिया और इसको समझाया है कि इसको नियम से महीने के महीने खर्चा मिलता रहेगा। इस पर भी जब यह नहीं मानी तो इसकी मां ने इसके लिये वर ढूंढ़ने का यत्न किया। विरादरी के दो युवकों के नाम, काम और फोटो इसको दिखाये परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इसको वे पसन्द नहीं आये और निराश हो यह पढ़ाई करने पर तैयार हो गई है।"

"एक लड़के का प्रस्ताव तो मैं भी लेकर आया हूं। यदि माया देवी अभी भी पढ़ाई का विचार न रखती हों तो मैं उस लड़के की बात कर सकता हूं।"

माया अभी भी चुपचाप चाय की ओर आंखें किये बैठी रही। वह चाय भी नहीं पी रही थी। इसका अर्थ महेश्वरदयाल यह समझा था कि वह उसकी बातें ध्यान से सुन रही है और मन में उन पर विचार कर रही है।

महेश्वर दयाल की बात का उत्तर माया की मां ने दिया। उसने कहा, "हां आप बताइये। हम और माया भी इस सम्बन्ध पर विचार करेंगे। अभी यह भरती तो हुई नहीं है। किसी प्रकार का व्यय भी अभी इसके भरती होने के लिये किया नहीं गया।"

"तब तो ठीक है। मैं उस लड़के का नाम-धाम और परिचय तथा चित्र साथ लाया हूं। वह चित्र मैं आपको जाते समय देता जाऊंगा, जिससे आप लोग मेरी अनुपस्थिति में उस पर निस्संकोच भाव से विचार कर सकेंगे।"

बात समाप्त हो गई। अब माया पुनः प्रफुल्लित मन इधर-उधर देखने लगी। जाने से पूर्व महेश्वरदयाल ने एक लिफाफा सन्तराम के हाथ में दिया। और कहा, "इसको आराम से देखियेगा और विचार करियेगा। यदि कुछ और जानने का विचार हुआ तो विष्णु के हाथ मुझे बुला कर पू सकते हैं और यदि इस लड़के से माया देवी स्वयं मिलकर किसी प्रकार क जानकारी प्राप्त करना चाहें तो विष्णु के हाथ कहला भेजें। मैं इस लड़ को यहां भेज दूंगा। और यदि यह भी पहले प्रस्तावों की भांति अस्वीका हुआ तो उत्तर भेजने की आवश्यकता नहीं। उत्तर के अभाव में मैं आपक अस्वीकृति समझ जाऊंगा।"

इतना कह महेश्वरदयाल मकान से उतर बाहर निकल गया। जब व फाटक से बाहर निकला तो नानकसिंह कहीं से आता हुआ मिल गया। नानकसिंह ने प्रोफेसर साहब को नमस्कार किया और पूछ लिया, "स्वास्थ कैसा है?"

"एक्सलैंट।"

महेश्वरदयाल ने उत्तर दिया और हाथ मिलाया और चल दिया।

: ८ :

भीतर ऊपर की मंजिल पर सन्तराम ने लिफाफा खोला और उसमें एक चिट्ठी और एक तस्वीर निकाल ली। उसने तसवीर पहले देखी। व तसवीर महेश्वरदयाल की ही थी। एक क्षण में ही तसवीर पहिचान व हंस पड़ा। हंसते हुए उसने तसवीर अपनी पत्नी के हाथ में दे दी। स्वयं प पढ़ने लगा। पत्र पढ़कर उसने माया के हाथ में दे दिया।

रानी ने तसवीर को पहचाना तो कह दिया, "यह लड़का तो स प्रकार से योग्य है। माया को मान जाना चाहिये।" यह कह उसने तसवी अपने पति को वापस कर दी।

माया पत्र पढ़ रही थी। उसमें लिखा था—

सुश्री माया देवी जी, नमस्ते।

उस दिन नानकसिंह के कमरे में चाय पीते हुए मैंने आपको पहली बार देखा था। और उसी समय मेरे मन में आपके समीप का सम्बन्ध बनाने का विचार उत्पन्न हुआ था। परन्तु मैंने यह समझ कि आप अभी पढ़ती हैं और अभी भी आगे पढ़ेंगी अपने मन की बात किसी से नहीं कही थी। कल विष्णु से पता चला कि आप पढ़ाई करना नहीं चाहतीं तो मैं यह प्रस्ताव आपके तथा आपके माता-पिता के सामने रख रहा हूँ।''

"मैं शिक्षा और ज्ञान वृद्धि को जीवन का एक महान कार्य मानता हूं। परन्तु यह काम तो जीवन भर चलता रहता है। साथ ही साथ जीवन के अन्य कार्य भी चल सकते हैं। मैं समझता हूँ कि किसी स्कूल कालेज में पढ़ने के लिये जाने से अधिक उपकारी कार्य पर फुलवारी लगा उसका सिंचन करना, मेरा अभिप्राय परिवार सृजन करना है।

जहां तक धन पैदा करने का काम है। यह लड़कियों का नहीं। लड़कियों का काम तो वही है जो मैंने बताया है। यह कार्य परम पवित्र और मोक्ष-दिलाने वाला है।

यों तो हमारे परिवार पर ईश्वर की कृपा है। इतना तो मुझको अनायास ही मिल जावेगा, जितने से जीवन भर बिना काम किये सुख से निर्वाह हो सके। मैं तो काम समाज सेवा के विचार से कर रहा हूं। इस प्रकार काम करने को यज्ञ करना कहते हैं। और यज्ञ मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को दिलाने वाला होता है।

"मैं इससे और अधिक कहना नहीं चाहता। केवल इतना कहना चाहता हूँ कि आपको सुखी रखने का वचन निभाऊंगा। महेश्वरदयाल

माया ने पत्र पढ़ा और अपने पिता को देकर वह उठी और अपने कमरे में चली गई। उसने तसवीर देखने की लालसा प्रकट नहीं की। उसके चले जाने के उपरान्त माता-पिता एक दूसरे का मुख देखने लगे। विष्णु ने एक बात कह दी, "पिताजी! मेरा विचार है कि माया नानकसिंह से विवाह

करना चाहती है।"

"उसने बताया था यह ?"

"नहीं, इस पर भी मेरी बुद्धि इसी परिणाम पर पहुँची है। कल प्रात काल तक वह कह रही थी कि वह पढ़ाई नहीं करेगी। मध्याह्न नानकसि ने कुछ समझाया और वह कॉलेज में भरती होने के लिये तैयार हो गई।"

इस पर मां ने कह दिया, "नानकसिंह भी खराब लड़का नहीं। यदि चाहे तो वह विवाह कर सकती है।"

"परन्तु माताजी !" विष्णु ने कह दिया, "प्रोफेसर साहब के मुकाब में वह कुछ भी नहीं। न रूप में, न रंग में, न बुद्धि में, न धन दौलत में औ फिर न समाज में मान प्रतिष्ठा के विचार से।"

"यह तो ठीक है बेटा ! परन्तु मन की बात में धन सम्मान अक्ल पढ़ा आदि की कुछ भी गणना नहीं होती।"

"तो मैं प्रोफेसर साहब को कह दूं कि वह नहीं मानी।"

"यह तुम कैसे कहते हो कि वह नहीं मानी। उसके उठकर चले जा से तो मैं यह समझती हूं कि वह मान रही है। अपने कमरे में एकान्त में व विचार करने के लिये गई है। और एक दो दिन में बात पता चल जायगी

"देखो विष्णु ! तुम अपने प्रोफेसर साहब से कुछ नहीं कहना। जो कु कहना होगा तुम्हारे पिताजी कहेंगे। समझे। तुम अभी छोटे हो। तुम इन कामों में दखल नहीं देना चाहिये।"

विष्णु चुप रहा। माया खाती, पहिनती, चलती फिरती, सोती, जागत अर्थात् हर समय वह विचार मग्न सी ही दिखाई देती थी। वह किसी बोलती नहीं थी। माया समझती थी कि वह अभी निर्णय नहीं कर सकती एक बात और हुई थी। नानकसिंह दिल्ली गया हुआ था। वह कह कर गय था कि मंगलवार सायंकाल तक वह आ जायेगा और बुधवार को माय को दिल्ली में कॉलेज में प्रवेश कराने के लिये ले जायगा।

नानकसिंह के व्यवहार से और माया के मौन से रानी को विष्णु

बात में तथ्य प्रतीत होने लगा। परन्तु बिना पूछे वह इस विषय में कुछ राय नहीं देना चाहती थी। नानकसिंह सब प्रकार से ठीक प्रतीत होता था। केवल वह आर्थिक दृष्टि से महेश्वर से हीन प्रतीत होता था। परन्तु एक हिन्दू की भांति भाग्य पर भरोसा करना उसकी विशेषता थी। मंगलवार सायंकाल नानकसिंह आया तो माया उससे मिलने के लिये चली गई। सन्तराम अभी कार्यालय से नहीं लौटा था।

एक घण्टा भर नानकसिंह से राय कर माया ऊपर आई और पुनः अपने कमरे में चली गई। रानी उसके इस व्यवहार से परेशान थी। परन्तु वह विष्णु के पिता के घर आने की प्रतीक्षा में थी। सन्तराम आज बहुत विलम्ब से घर आया। उसका मुख उतरा हुआ था। रानी ने प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो उसने अपनी परेशानी का कारण बताते हुए कहा, "रविवार से मालिक कहीं बाहर गया हुआ है और रुपया आज नहीं मिल सका। पांच सौ रुपये का चैक लिखा रखा है। परन्तु हस्ताक्षर नहीं हो सके।"

"तो माया को बता देना चाहिये। उसने भी तो अभी तक कुछ नहीं बताया कि महेश्वरदयाल के प्रस्ताव के उपरान्त भी वह कालेज में प्रवेश लेने के लिये जावेगी कि नहीं।"

"मैं नानकसिंह से बात करता हूं। जिससे उसका विचार भी जाना जा सके।"

"ठीक है। माया भी उससे बातचीत कर आई है।"

"क्या कर आई है।"

"पता नहीं।"

सन्तराम बिना चाय पानी पिये और बिना कपड़े बदले नीचे चला गया। नानकसिंह भी गम्भीर विचार में मग्न था। सन्तराम उसके कमरे में पहुंचा तो वह चौंककर उठ बैठा और प्रश्न भरी दृष्टि से उसके मुख पर देखने लगा।

सन्तराम कुर्सी पर बैठते हुए और नानकसिंह को बैठने का संकेत करते

हुए कहने लगा, "आज रुपये मिल नहीं सके। मालिक चैक बनाने का हुक्म तो दे गये थे परन्तु हस्ताक्षर करने से पूर्व वे गाजियाबाद से कहीं बाहर चले गये हैं। उनके आज लौटने की आशा थी, परन्तु वे लौटे नहीं। इस कारण रुपया मिल नहीं सका। क्या माया का प्रवेश के लिये जाना एक दो दिन के लिये स्थगित नहीं हो सकता ?"

"रोकने की क्या आवश्यकता है। मेरे पास दिल्ली बैंक में रुपया रखा है। मैं तो जा ही रहा हूं। प्रवेश का खर्चा मैं दे दूंगा। आपको जब रुपये मिल जावे तो वापस कर दीजियेगा।"

"तो माया कल प्रवेश के लिये जा रही है ?"

"हां। उसने यह भी कहा है कि विष्णु का प्रोफेसर उससे विवाह का प्रस्ताव कर गया है। वह मेरी सम्मति पूछने के लिये आई थी। मैंने यह राय दी है कि अभी तो उसको कालेज में भरती हो ही जाना चाहिये। बाद में विवाह के विषय में भली-भांति विचार कर लेंगे। आखिर तीन चार सौ रुपये के खर्च की ही तो बात है। जहां विवाह का प्रश्न हो वहां इस तुच्छ रकम की चिन्ता नहीं करनी चाहिये।"

"मैं तो कल दिल्ली जा नहीं सकता। इस कारण मैं इस विषय में आप पर ही भरोसा करता हूं।"

"आप चिन्ता न करें। सब ठीक होगा।"

सन्तराम ने यह सब बात रानी को बतायी तो उसने कह दिया, "विष्णु का अनुमान ठीक ही प्रतीत होता है।"

"मुझको इसमें भी आपत्ति नहीं।"

"विस्मय की बात है कि माया मुझसे राय करने के बजाय नानकसिं से राय करने चली गई है।"

"ईश्वर भली करेगा।"

"आप रुपया ले आते तो मैं उसके साथ आपको भेजना उचि समझती।"

सन्तराम अपनी परेशानी में चुप पत्नी का मुख देखता रह गया। अगले दिन माया बहुत प्रातः उठ स्नानादि से निवृत्त हो दिल्ली जाने के लिये तैयार खड़ी थी। सन्तराम अभी सिगरेट पी सोने की सुस्ती दूर ही कर रहा था। रानी ने माया को उठ तैयार होते देखा तो वह उसके लिये चाय और अल्पाहार तैयार करने लगी।

सन्तराम ने माया को तैयार देख पूछ लिया, "सायंकाल किस समय तक लौट आओगी।"

"यदि तो होस्टल में प्रवेश मिल गया तो आज नहीं आऊंगी। आशा करती हूँ कि रविवार तक आप लोगों से मिलने के लिये आ सकूंगी।"

सन्तराम ने कह दिया, "कुछ समाचार तो मिलना चाहिये।"

"मास्टर जी आयेंगे और सब बता देंगे।"

इससे सन्तराम को सन्तोष हो गया और वह शौचादि के लिये चला गया। जब तक वह स्नान कर आया माया और नानकसिंह जा चुके थे। विष्णु उनको बस के अड्डे तक छोड़ने के लिये गया था।

जब सन्तराम ऊपर आया तो रानी हताश हो आराम कुर्सी पर बैठी थी। "क्यों क्या बात है ?" सन्तराम ने पूछा।

"मुझे किसी प्रकार का अज्ञात भय लग रहा है।"

"भगवान का चिन्तन करो। सब ठीक हो जावेगा।"

"मैं उसे दिल्ली मिलने के लिये जाऊंगी।"

"कब ?"

"जब आप ले चलें।"

"रविवार के दिन प्रातः ही चल पड़ेंगे।"

"उस दिन तक तो वह स्वयं भी आने की बात कह रही है।"

"तो ठीक है। पहली बात तो यह है कि मालिक लौट आवें तो रुपये नानक सिंह को दे दूं। फिर शनिवार को छुट्टी ले सकूंगा।"

"जी नहीं, मैं तो कल ही उससे मिलने के लिये जाना चाहती हूं।

विष्णु को साथ ले जाऊंगी।"

"ठीक है, रुपये मिल जावें तो चली जाना।"

उस दिन पांच सौ रुपये ऋण की पहली किश्त सन्तराम को मिल गई। और वह घर आकर नानकसिंह की प्रतीक्षा करने लगा। नानकसिंह नहीं लौटा। अगले दिन भी उसकी प्रतीक्षा की जाती रही। जब बृहस्पति वार को भी नानकसिंह की सूचना नहीं मिली तो रानी विष्णु को लेकर दिल्ली के लिये चल पड़ी। सन्तराम ने उसे चार सौ रुपया दिया। उसने कहा, "जितना नानकसिंह ने खर्च किया हो उतना उसको दे आना और कुछ माया को खर्च के लिये दे आना।"

सायंकाल सन्तराम फैक्टरी से लौटा तो तब उसकी पत्नी और विष्णु दिल्ली से लौटे नहीं थे। वह उनकी प्रतीक्षा करता रहा। रानी और विष्णु रात के आठ बजे लौटे। रानी की सूरत रोने वाली बनी थी। विष्णु भी बहुत थका हुआ अनुभव कर रहा था। सन्तराम घर के नीचे फाटक के बाहर ही उनसे मिला। वह मकान के ऊपर नीचे चक्कर लगा रहा था और इस प्रकार अपने मन की बेचैनी को शान्त करने का यत्न कर रहा था।

रानी के रिक्शा से उतरते ही सन्तराम ने पूछ लिया, "बहुत देर कर दी है।"

उत्तर विष्णु ने दिया, "पिताजी! आप ऊपर चलिये।"

रानी बोली नहीं। उसकी आंखें लाल प्रतीत होती थीं। तीनों चुपचाप ऊपर चल आये। छोटी लड़की किशोरी भी घर में शोक छाया अनुभव कर रही थी। और सहमी सी भूमि पर चटाई बिछाये लेटी हुई थी।

दिल्ली की यात्रा का वृत्तान्त बताते हुए विष्णु ने कहा, "हम बस स्टैंड से ही टांगा करके सीधे लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज पहुंचे। कालेज के कार्यालय में पहुँच माया के विषय में जानना चाहा तो क्लर्क ने उसकी श्रेणी के विषय में पूछा।

"मैंने कहा, इसी वर्ष फर्स्ट ईयर में प्रविष्ट हुई है।"

"क्लर्क ने कहा, अभी दाखिला तो हुआ नहीं। हां, कुछ फार्म भर कर आये हैं। हां, क्या नाम बताया था आपने ?"

"मैंने बहिन का नाम बताया तो क्लर्क ने एक फाइल में लगे फार्म देखकर कहा, "गाजियाबाद की एक माया देवी का फार्म आया तो है। उसको प्रवेश मिल भी जावेगा। किन्तु प्रवेश तो पन्द्रह जुलाई से पूर्व आरम्भ होने वाला ही नहीं है।"

"हमने जब होस्टल की बात पूछी तो उसने बताया, "पहले कॉलेज में प्रवेश मिलेगा उसके बाद ही छात्रावास में प्रवेश मिलने की बात हो सकती है।"

"हम वहां से बाहर आये तो हमको कितनी ही देर तक कुछ सूझा नहीं। सामने हाकी ग्राउण्ड में जा बैठकर हम विचार करने लगे। आखिर माता जी ने यह विचार किया कि थाने में रिपोर्ट लिखा दी जाय। हम पार्लियामेंट स्ट्रीट के थाने में जा पहुंचे। वहां हमने रिपोर्ट लिखाई तो मुंशी ने कहा कि हमें वहीं रुकना होगा अभी मैजिस्ट्रेट आने वाला है उसके सामने बयान देने के बाद नानकसिंह के वारण्ट जारी हो जावेंगे।

"हम वहीं एक ओर बैठ गये। मजिस्ट्रेट सायं पांच बजे तक आया। हम उसके सामने उपस्थित हुए तो मां ने अपने बयान लिखाये। नानकसिंह का हुलिया लिखाया तो मजिस्ट्रेट बोल उठा, "वह तो ट्रेड यूनियन का कार्यकर्ता है। इसके तो पहले भी वारन्ट निकले हुए हैं।"

"हम भौंचक्के मजिस्ट्रेट का मुख देखने लगे मजिस्ट्रेट ने नानकसिंह के वारण्ट निकाले और कह दिया, "माई ! तुम्हारी लड़की बालिग है। जब तक वह धोखा-धड़ी और बलात्कार की बात नहीं बताती तब तक इस मुकदमे में कुछ होगा नहीं। इस पर भी तुम्हारी लड़की की खोज की जायेगी।"

"हम छः बजे वहां से चल कर सीधे यहीं आ रहे हैं।"

सन्तराम ने अपनी पत्नी की ओर देखकर पूछ लिया, "अब क्या

होगा ?"

रानी विह्वल हो रोने लगी। बहुत देर तक सब लोग मौन बैठे रहे। अन्त में सन्तराम ने मुख खोला, "उठो रानी ! कुछ खाना पीना चाहिए। दिन के खाने के उपरान्त किसी ने कुछ खाया नहीं है।

"देखो विष्णु। यह समाचार किसी को बताना नहीं चाहिये। प्रोफेसर साहब को भी नहीं। यदि वे पूछें तो कह देना उनके विषय में विचार हो रहा है।"

: ६ :

सन्तराम ने विष्णु को माया का समाचार प्रोफेसर साहब को बताने से मना कर दिया था। परन्तु बात छिपी नहीं रह सकी। पुलिस से यह समाचार कि एक नानकसिंह गाजियाबाद के सन्तराम की लड़की माया के अगवा का केस पुलिस में रिपोर्ट किया गया है। समाचार पत्र वालों को मिल गया। दिल्ली के प्रायः सब समाचार पत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ। महेश्वरदयाल ने भी पढ़ा। उसके घर पर दो पत्र आते थे। अंग्रेजी का हिन्दुस्तान टाइम्स और हिन्दी का वीर अर्जुन। दोनों प्रातः आठ बजे उसके पास पहुंच जाया करते थे। उस समय तो प्रोफेसर कालेज चला जाया करता था और वह वहां से मध्याह्न के समय लौटकर पढ़ा करता था। जिस दिन दिल्ली में रानी ने रिपोर्ट लिखाई थी उससे अगले दिन भोजन करते समय महेश्वरदयाल ने समाचार पत्रों में माया के लापता होने का समाचार पढ़ा। भोजन समाप्त कर वह सन्तराम के घर गया।

यह शनिवार का दिन था। सन्तराम तो फैक्टरी गया हुआ था। घर पर किशोरी, विष्णु और रानी थे। नानकसिंह का कमरा बन्द था। महेश्वरदयाल ने प्रांगण में पहुंच आवाज दी तो विष्णु अपने कमरे से निकल आया। महेश्वरदयाल ने विस्णु से कहा, "तुम्हारे पिता जी घर पर हैं ?"

"जी नहीं, वे काम पर गये हैं।"

"माता जी।"

"वे ऊपर हैं, आइये बैठिये।"

"उनको आवाज दो।"

विष्णु माता जी को बताने के लिये ऊपर चला गया। दो ही मिनट में विष्णु ने ऊपर से ही प्रोफेसर साहब को ऊपर बुला लिया।

महेश्वरदयाल ने बैठते ही कहा, "माता जी! आज समाचार पत्र में माया का समाचार पढ़ने का मिला है।"

रानी समझ गई कि यह बात थाने से बाहर निकली है। उसने उत्तर नहीं दिया। वह तरल नेत्रों से महेश्वर के मुख पर देखती रही। प्रोफेसर ने पुष्टि के रूप में पूछा, "तो क्या यह समाचार ठीक है?"

रानी ने पूछ लिया, "क्या छपा है अखबार में?"

महेश्वरदयाल ने जेब से वीर अर्जुन निकाल कर समाचार सुना दिया। लिखा था, "गाजियाबाद की एक लड़की माया देवी को ट्रेड यूनियन के एक कार्यकर्ता नानकसिंह द्वारा अपहरण किये जाने का समाचार पार्लियामेंट स्ट्रीट थाने में दर्ज कराया गया है। रिपोर्ट देने वाली लड़की की मां थी। पिछले मास में गाजियाबाद से इस प्रकार की तीसरी घटना है।"

रानी ने सब भेद खुल गया समझकर कह दिया, "यह सब सत्य है, मैंने ही रिपोर्ट लिखाई है। बुधवार के दिन माया नानकसिंह के साथ लेडी हार्डिंग कालेज में दाखिल होने के लिये दिल्ली गई थी। कल मैं उससे मिलने के लिये दिल्ली गई। विष्णु मेरे साथ था। हमको कालेज से पता चला कि माया का फार्म वहां पहुंचा हुआ है। परन्तु दाखला तो पन्द्रह जुलाई से आरम्भ होगा।

"मुझे शक है कि नानकसिंह किसी प्रकार का फरेब करके और झूठ बोल कर माया को ले भागा है।"

"आपको पुलिस में रिपोर्ट दर्ज नहीं करानी चाहिये थी।"

"किसलिये।"

"इससे लाभ तो कुछ होगा नहीं। हां बदनामी अवश्य हो जावेगी।"

"तो क्या करते ?"

"आपको मुझसे कहना चाहिये था। पुलिस से अधिक कुशलता से खोज तो मैं ही कर सकता था।"

"तो अब क्या होगा ?"

"मैं कल तक आपसे मिलूंगा। आज मैं दिल्ली जा रहा हूं।"

रानी चुप रही तो महेश्वरदयाल उठ खड़ा हुआ और चुपचाप गम्भीर मुद्रा में मकान से नीचे उतर गया।

अगला दिन रविवार था। दिन के दस बजे के लगभग फाटक खटखटाया गया। विष्णु जो अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा था, भाग कर गया। उसने फाटक खोला तो रिक्शा में माया बैठी थी। साथ ही उसका बिस्तर और ट्रंक था जो वह जाते समय अपने साथ ले गई थी। फाटक रिक्शा वाला खटखटा रहा था।

विष्णु के मुख से निकला, "बहिन यहां बैठी क्या कर रही हो।"

इस समय विष्णु ने देखा कि माया का मुख रक्त विहीन हो रहा है। उसने विष्णु को समीप बुलाया, उसके कंधे पर हाथ रख वह रिक्शा से नीचे उतरी तो विष्णु ने पूछ लिया, "क्या है बहिन !"

"मुझे ऊपर ले चलो। मैं बहुत दुर्बल हो गई हूं।"

विष्णु ने माया की कमर में हाथ डाल उसे आश्रय दिया। माया उसके कंधे पर हाथ रख धीरे-धीरे चलकर मकान के ऊपर चली गई। उसने रिक्शे वाले को सामान उठा लाने के लिये कह दिया।

आंगन में पहुंच विष्णु ने मां को आंवाज दी। वह नीचे आ गई और माया को ऊपर ले गई। विष्णु ने रिक्शा वाले को भाड़ा दिया और बिस्तर, सूटकेस उठाकर माया के कमरे में रख दिया। सन्तराम दिल्ली गया हुआ था। वह पुलिस से पता करना चाहता था कि लड़की का पता चला है

अथवा नहीं।

"कहां गई थी माया ?" मां ने उसे अपने कमरे में खाट पर लेटाते हुए पूछ लिया।

माया ने विष्णु से कहा, "जरा पीने के लिये पानी तो ला दो।"

विष्णु जल लेने के लिये गया तो उसने मां को कहा, "मेरे गर्भ ठहर गया था। उसे निकलवाने के लिये गई थी। इसमें बहुत कष्ट हुआ है। डाक्टर तो मेरे जीवन के लिये भी निराश हो गई थी। अकस्मात् बच गई हूं।"

"और वह कहां है ?"

"मुझे मरता देख वह भाग गया था। यह वीरवार की बात है। उसके जाने के बाद ही रक्तस्राव बन्द हुआ और मैं बच गई। दो दिन में उठने लायक हुई तो घर लौट आई हूं। डाक्टर से मिन्नत समाजत कर दो रुपये लिये थे। अब रिक्शा वाले के लिये भी भाड़ा नहीं था।"

इस समय विष्णु जल ले आया। माया ने जल पिया और बोली, "मां! मैं बहुत थक गई हूँ। अब मुझे सो जाने दो।"

"कुछ खाने के लिए लाऊं ?"

"आधे घंटे बाद बिस्कुट और चाय ले आना।"

मां और पुत्र दोनों उसके कमरे से निकल आए। विष्णु ने बाहर आ कर मां से पूछ लिया, " यह बीमार क्यों हो गई है ?"

"सब भाग्य का खेल है बेटा !"

मध्यान्होत्तर सन्तराम और महेश्वरदयाल दोनों आ गए। उस समय तक माया चाय आदि पीकर पुनः सो गई थी। महेश्वरदयाल और सन्तराम निराश लौटे थे। महेश्वरदयाल ने नानकसिंह का पता करना चाहा या कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यालय से, ट्रेड यूनियन के कार्यालय से, पुलिस थाने से और वह इतनी ही बात का पता कर सका था कि नानकसिंह के विषय में उन्होंने भी समाचार पढ़ा है। नानकसिंह करौलबाग में एक अल्पआयु

लड़की से बलात्कार करने के अपराध में पुलिस द्वारा खोजा जा रहा है। पुलिस का विचार है कि यह नानकसिंह वही है। कम्युनिस्ट दल वाले और ट्रेड यूनियन वाले किसी नानकसिंह के विषय में जानते नहीं थे। महेश्वरदयाल का विचार था कि समाचार पत्र में उसके एक और अपराध के विषय में छपने के कारण दल वालों ने स्वयं को उससे पृथक् रखने के लिए झूठ बोल दिया है।"

महेश्वरदयाल शनिवार को दिल्ली आया था और रविवार को दोपहर के समय गाजियाबाद के लिए लौट रहा था। सन्तराम पुलिस थाने से पता चलने की सूचना ले उसी बस लौट रहा था। दोनों में भेंट हो गई और दोनों ने अपनी-अपनी खोज का परिणाम बताया। दोनों निराश घर लौटे थे। नीचे प्रांगण में ही विष्णु से विदित हुआ कि माया घर लौट आई है।

दोनों इस समाचार से विस्मय में विष्णु का मुख देखते रहे। महेश्वर-दयाल ने पूछ लिया, "और नानकसिंह !"

"वह अकेली आई है, बीमार है और इस समय सो रही है।"

दोनों ऊपर गए तो रानी ने संक्षिप्त में वह सूचना दे दी जो माया ने बताई थी। उसने यह भी बताया कि मैंने उसे टोस्ट और चाय आदि देकर सुला दिया है, वह बहुत ही दुर्बल हो गई है।

महेश्वरदयाल ने कहा,"अच्छा, अब मैं चलता हूं। सायंकाल मिलूंगा। अभी आप पुलिस वगैरा में कुछ नहीं बताइगा। किसी वकील से राय कर बात करेंगे।"

गम्भीर विचार उपरांत यह निश्चय किया गया कि नानकसिंह के माया के बरगला कर ले जान की कहानी तो बता दी जाए परन्तु गर्भपात की बात न बताई जाए। माया यह कह दे कि उसने तीन दिन तक कुछ खायापीया नहीं। इससे नानकसिंह घबरा कर उसे छोड़ भाग गया और वह घर लौट आई।

दो दिन आराम कर और कुछ शक्ति संचित कर लेने के उपरान्त पुलिस

में रिपोर्ट कर दी गई कि माया लौट आई है। नानकसिंह लापता है। पुलिसवालों ने केस फाइल कर दिया।

पुलिसवाले माया का डाक्टरी मोआयना करवाना चाहते थे। इस पर पुलिसवालों को ले दे कर बात रफा दफा कर दी गई।

माया को अपनी दुर्बलता से और पुलिसवालों से छुटकारा पाने में एक सप्ताह लग गया। इन सब समय महेश्वरदयाल सन्तराम के घर आता रहा और उसको पुलिस के साथ बातचीत करने में सहायता देता रहा।

जब सब बात शान्त हो गई तो सन्तराम ने माया से पूछ लिया, "अब क्या करना चाहती हो?"

"मैं पढ़ूंगी नहीं।"

"तो विवाह करोगी?"

"किस के साथ?"

"यह तो विचार करना पड़ेगा। पिछले दो सप्ताह से महेश्वरदयाल ने इस विषय में कोई बात नहीं की। हम वर्तमान स्थिति में उससे कुछ कह भी नहीं सकते।"

"मैं समझती हूं कि मुझे कहीं नौकरी करने का यत्न करना चाहिए। यदि आप कहें तो मैं टाइप करना सीख लूं?"

"मैं भी यही ठीक समझता हूँ। वह घटना पुरानी हो जाए तो फिर विवाह के लिए यत्न किया जावेगा।"

अगले दिन माया टाइप सीखने के लिए चल पड़ी। उसको टाइप सीखने में लगभग दो मास लग गए। इस अवधि में भी महेश्वरदयाल सन्तराम से मिलने के लिए आता रहा था।

नानकसिंह के कमरे का ताला तोड़ कर, उसका सामान उस कमरे में में डाल दिया गया जिसमें घर का टूटा-फूटा सामान पड़ा हुआ था। परन्तु वह कमरा अब भाड़े पर नहीं दिया गया। अब सन्तराम ने कमरे को अपनी बैठक बना लिया और वह महेश्वरदयाल इत्यादि से इसी कमरे में मिलता

था। यहां माया के दर्शन नहीं होते थे। महेश्वरदयाल माया का समाचार पूछता रहता था और सन्तराम कहता, "वह स्वास्थ्य लाभ कर रही हैं।"

महेश्वरदयाल संघ के कार्य से गाजियाबाद के धनी मानी लोगों से मिलता रहता था। उसको गाजियाबाद में भारत पेन्ट्रस एण्ड वार्निश का मैनेजर गणपतराय सबसे विलक्षण जीव प्रतीत हुआ था।

गणपतराय व्यवहारिक बुद्धि रखता था। और उससे ही वह जब अपने जीवन की गाड़ी चलाता रहता था। अभी वह ओवरसियर ही था तब भी वह अपने आप से बचत कर पूंजी संचय कर रहा था। सौभाग्य से उसका पिता एक सफल व्यापारी था और उसने ही गणपतराय को यह शिक्षा दी थी।

जब गणपतराय सरकारी नौकर हुआ था, तब जर्मनी से युद्ध चल रहा था। सरकारी कर्मचारियों को मंहगाई भत्ता मिलता था। इस पर भी ईमानदारी के वेतन और भत्ते से निर्वाह नहीं होता था। साथ ही अफसरों का मुख मीठा होता था। इस स्थिति में गणपतराय ने अपने पुत्र से पूछ लिया, "गणपत ! इतने वेतन में निर्वाह कर सकोगे ?"

"यत्न करूंगा।"

"यत्न सफल तब ही होगा जब दो बातें करोगे। एक तो घर का खर्च बढ़ने न दो। और दूसरे ईमानदारी का अर्थ समझ लो।"

गणपतराय ताजा कालेज से निकला था और इस प्रकार की बात का व्यवहारिक अर्थ नहीं समझता था। गणपतराय ने लड़के को चुपचाप मुख देखते और कुछ न समझते देखा तो कह दिया, "देखो, मैं बताता हूँ। आज कल युद्ध के दिन हैं। माल कम मिलता है और सरकार का खर्चा बढ़ जाने से लोगों के हाथों में रुपए अधिक हो गए हैं। लोगों की माल के लिए मांग बढ़ गई है। उनकी क्रयशक्ति में वृद्धि हो गई है। दुकानदार माल को नियन्त्रित कीमत से अधिक बेचते हैं और लाखों पैदा कर रहे हैं।

"मैं भी यही करता हूं। परन्तु इसमें एक शर्त लगा रखी है। वस्तु के

दाम से अधिक जो कुछ मिलता है उसमें व्यापारिक लाभ पचीस प्रतिशत निकालकर शेष में से जो कुछ अफसरों को रिश्वत देनी पड़ती है, देता हूँ। इस पर भी बहुत कुछ बचता है। वह मैं अपना नहीं मानता। उसको धर्मार्थ व्यय करता हूँ। ऐसा करने से मेरी आत्मा मलिन नहीं होती।

"समाज में बुद्धिशीलता, राज्य में न्यायप्रियता और राज्याधिकारियों में युक्तियुक्त व्यवहार रखने का स्वभाव मेरे कहने से बनता बिगड़ता नहीं। यह काम विद्वानों और राजनीतिज्ञों का है कि समाज, राज्य और राज्य-कर्मचारी ठीक युक्तियुक्त व्यवहार रख सकें। मैं एक व्यापारी इस विषय में क्या कर सकता हूँ। मैं इस सबका बहिष्कार कर सकता हूँ। परन्तु इसमें तो मैं, मेरा व्यापार ही ठप्प हो जायेगा। इस कारण मैं इस बहती नदी में बहाव के साथ बह रहा हूं। परन्तु प्रत्येक क्षण में दो प्रयास कर रहा हूं वह यह कि पानी नाक से ऊपर न चला जावे। मेरा सिर जल से ऊपर रहे। मतलब यह है कि मेरा व्यापार ठप्प न हो जावे। दूसरी बात मैं यह करता हूं। कि इस भयंकर बाढ़ में मैं किनारा पा जाऊं। इसके लिए यत्न करता हूँ। अर्थ व्यवस्था के बिगड़ने से जो कुछ अनायास लाभ हो रहा है, वह मैं अपने सुख भोग में प्रयोग न कर धर्मार्थ व्यय करूं। इससे मैं समझता हूँ कि अर्थ व्यवस्था की विषमता के कारण मैं पाप का भागी नहीं बनूंगा।

"एक बात और याद रखो। जो पचीस प्रतिशत लाभ से निकालता हूँ वह मैं पूंजी संचय करने में लगाता हूं। पूंजी परिश्रम के मूल्य को बढ़ाने में काम आती हैं।"

गणपतराय ने अपने पिता के इस उपदेश पर मनन किया था और उसके अनुकूल आचरण कर लाभ उठाया था।

गणपतराय अपने पिता के मकान में रहता था। अपने माता-पिता और भाई-भावज के साथ रहता हुआ कम से कम खर्च में जीवन चलता था। अपने वेतन में से जो कुछ बचता था उसे वह बैंकों के सर्टिफिकेट खरीदने में व्यय करता था। अफसरों को प्रसन्न करने के लिए वह ठेकेदारों

से अथवा माल सप्लाई करने वालों से जो कुछ पाता था वह अधिकांश अफसरों को ही दे देता था। इसमें से प्रायः कुछ न कुछ बच रहता था। उसको वह दान दक्षिणा में व्यय करता था। वह सन् १९४३ में सरकारी नौकर हुआ था और १९५५ में उसने त्यागपत्र दे दिया था। जब-जब बैंक में एक सहस्र रुपया एकत्रित हो जाता था। वह किसी उद्योग के हिस्से खरीद कर उसमें लगा देता था। धन बढ़ने लगा था। सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के समय उसके पास चालीस हजार से अधिक एकत्रित हो गया था और इसमें कुछ ऋण लिया रुपया मिलाकर उसने भारत पेन्टस एण्ड वार्निश के हिस्से खरीद लिए थे। साथ ही उसने फैक्टरी का मैनेजर बनना स्वीकार कर लिया था। यह निश्चय हुआ था कि जब तक काम चालू हो, माल मार्केट में जाता नहीं, तब तक ढाई सौ रुपया मासिक लेगा और काम चलने पर वह पांच सौ रुपया महीना लेगा। शेष प्रथम लाभ का चिट्ठा निकलने के बाद निश्चय होने वाला था।

: १० :

फैक्टरी के माल निकालने और इसके बेचने की स्वीकृति मिलने तक गणपतराय ने विज्ञापन दे कर माल की मांग निर्माण कर ली थी। परिणाम यह हुआ कि फैक्टरी का माल तैयार करने का लाइसेंस मिलते ही माल बिकने लगा :

जब गणपतराय का कारखाना चलने लगा तो महेश्वरदयाल उससे भी मिलने आया, मेल हुआ, परिचय बढ़ा और फिर मित्रता हो गई। अवस्था यह थी कि सप्ताह में दो तीन बार महेश्वरदयाल गणपतराय से मिलने आता था। तब तक उसको गणपतराय की जीवन-मीमांसा का भली भांति ज्ञान हो चुका था।

किसी फैक्टरी के इंस्पैक्टर की तली को तेल लगाते देख महेश्वरदयाल ने कह दिया, "बाबू साहब ! मैं आपसे यह आशा नहीं रखता था !"

"तो क्या करता ?"

"उसको कह देते कि किसी प्रकार की अनियमित कार्यवाही यहां होती नहीं, इस कारण यहां से उसे कुछ भी पाने की आशा नहीं करनी चाहिए।'

"तो निस्सन्देह वह फैक्टरी बन्द हो जाती। फिर केवल यह इंस्पैक्टर ही तो नहीं लेता। दूसरे भी कई हैं। ये सब मिल जावें तो बात-बात पर तंग करना आरम्भ कर देते हैं।"

"यदि हम पढ़े-लिखे बुद्धिशील लोग सुधार के लिए यत्न नहीं करेंगे तो देश में सुधार तो कभीं होगा ही नहीं।"

"परन्तु जब मानव को सन्मार्ग दिखाना क्या एक वैश्यावृत्ति के व्यक्ति का काम है? यह तो ब्राह्मण और क्षत्रियवर्ग का काम हैं।" इस पर गणपतराय ने अपने पिता का अनुभव, और अपना अनुभव और अपने साथ कन्हाईलाल का अनुभव बता दिया।

महेश्वरदयाल ने कहा, "परन्तु ब्राह्मण और क्षत्रिय भी तो वैश्यों के आश्रय अपना कार्य करते हैं।"

"ब्राह्मणवर्ग में तो मैं आपको मानता हूँ। आप बताइए कि आपको समाज सुधार के लिए क्या सहायता चाहिए। मैं वह यथाशक्ति देने के लिए तैयार रहता हूं। जहां तक राजनीतिज्ञों को सहायता का प्रश्न है वह मैं इतना ही समझ पाया हूं कि वर्तमान कांग्रेस तो सहायता की पात्र है ही नहीं। परन्तु है कौन यह मैं अभी जान नहीं पाया।"

महेश्वरदयाल के मन में यह बात बैठ रही थी कि गणपतराय ही इस विषम काल में ठीक संतुलित व्यवहार रख रहा है। इस पर भी एक संशय उसके मन में बना ही रहता था। वह उसने कह दिया, "परन्तु इस प्रकार के खर्चा करने से अनियमित आय होती होगी। इस अनियमित आय के आने से बुद्धि में लोभ और मोह उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इस प्रकार बुद्धि-भ्रष्ट होने से सत्यासत्य, उचितानुचित, कर्त्तव्याकर्त्तव्य, भक्ष्याभक्ष्य और धर्माधर्म में भेद करने की सामर्थ्य नहीं रहती और फिर व्यक्ति घोर पतन के मार्ग पर चल पड़ता है।"

"इस सम्भावना को मैं जानता हूं। इसके लिए ही भगवान ने गीता में कहा है कि अपने भक्तों को मैं सन्मार्ग दिखाता रहता हूं। मैं इसके लिए अपने को भगवान के आश्रय छोड़ अपनी बुद्धि का मार्जन करता रहता हूं।"

गणपतराय ने अपने लिये फैक्टरी के साथ ही एक छोटा सा मकान बनवा लिया था। महेश्वरदयाल वहीं उससे मिलने के लिये जाया करता था। इस बंगले में गणपतराय अपनी पत्नी सरस्वती के साथ रहता था। उसके बच्चों में सबसे बड़ी लड़की सुमित्रा थी। वह एम०ए० पास कर जयपुर में लड़कियों के कालेज में अध्यापक बन गई थी। एक लड़का अमेरिका पढ़ने के लिए गया हुआ था और दूसरा लड़का पिलानी में इलैक्ट्रिकल इजीनियरिंग में पढ़ रहा था।

महेश्वरदयाल का परिचय सरस्वती से हुआ तो सरस्वती मन में उसे सुमित्रा के लिए उचित वर विचार कर महेश्वरदयाल के परिवार के विषय में परिचय प्राप्त करने लगी थी।

सरस्वती ने अपने विचार अपने पति को बता दिया। इससे वह हापुड़ में उसके पिता के विचारों का पता करने में लग गया।

एक दिन महेश्वरदयाल गणपतराय जी से मिलने उनके कार्यालय में गया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की एक पब्लिक रैली में उसे सभापति पद के लिये कहना था।

महेश्वरदयाल ने गणपतराय के कमरे का द्वार खोल नमस्कार किया और भीतर जाने लगा तो वह द्वार पर ही खड़ा रह गया। माया गणपतराय के मेज पर खड़ी कुछ कागज दिखा रही थी। गणपतराय ने द्वार की ओर देखा तो उससे कहा, "आइये महेश जी। आजाइये।"

महेश्वरदयाल मेज के समीप रखी कुर्सी पर जाकर बैठने लगा तो माया की दृष्टि उस पर पड़ गई। महेश्वर दयाल ने उसको भी नमस्कार कर उससे पूछा, "अब स्वास्थ्य कैसा है ?

धीमे स्वर में उसने कहा, "अब ठीक हूं। और फिर वह गणपतराय

के सामने रखे कागजों को देखने लगी। गह उसमें संशोधन कर रहा था। जब संशोधन हो चुका तो गणपतराय ने कह दिया, "इसे अभी टाइप कर लाओ। यह शीघ्र ही जाने वाला है।"

माया वह कागज और उसके साथ रखी फाइल लेकर बाहर चली गई।

"तो यह आपके यहां नौकरी करने लगी है?" महेश्वरदयाल ने पूछ लिया।

"हां, इसको काम करते हुए एक मास के लगभग हो चला है। यह बहुत ही समझदार और योग्य लड़की है। मैं इसको कह रहा हूं कि यह शॉर्टहैंड सीख ले तो इस का वेतन ढाई सौ रुपया महीना कर दूंगा।"

"और अब क्या देते हैं?"

"अभी तो डेढ़ सौ रुपया वेतन और दस रुपया वार्षिक वृद्धि पर यह काम करने लगी है।"

"यह हमारे एक स्वयं सेवक की बहिन है। लड़का भी बहुत ही प्रतिभाशाली है।"

"इसने दो तीन दिन में ही काम समझ लिया था और अब तो यह एक योग्य असिस्टेंट के रूप में काम करने योग्य हो गई है।"

इसके उपरान्त महेश्वरदयाल ने अपने आने का प्रयोजन वर्णन कर दिया। गणपतराय ने स्वीकार किया और दिन तथा समय और स्थान अपनी डायरी में लिख लिये। महेश्वरदयाल जब जाने लगा तो गणपतराय ने कहा, "सरस्वती कह रही थी कि कई दिन से आप दिखाई नहीं दिये। स्वास्थ्य तो ठीक है?"

"माता जी से मेरी नमस्ते कहियेगा और कहियेगा मैं बिल्कुल ठीक हूं। यह उत्सव का काम समाप्त होते ही मिलने के लिये आऊंगा।"

"हां अवश्य आइये। वह आपको कुछ सन्देश देना चाहती हैं।"

"अच्छा, तब तो समय निकाल कर पहले भी आने का यत्न कर सकता

हूं।"

महेश्वरदयाल उसी दिन सायंकाल सन्तराम से मिलने के लिये गया। वह समझ रहा था कि माया अभी सर्वथा स्वस्थ नहीं हुई होगी। आज उसे नौकरी पर काम करते देख वह अपने प्रस्ताव के विषय में जानने के लिये चल पड़ा था।

सन्तराम नीचे बैठक में बैठा विष्णु और किशोरी से बात कर रहा था। वे माया के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके आने पर सब चाय पीने वाले थे।

महेश्वरदयाल आया तो वह भी वहीं बैठ गया। सन्तराम ने कहा, "प्रोफेसर साहब ! इस बार तो बहुत दिनों में आपके दर्शन हुए हैं।"

"जी हां। गाजियाबाद संघ की शाखा का वार्षिकोत्सव हो रहा है। कई दिन से उसके प्रबन्ध में व्यस्त हूँ।"

"तो उत्सव हो गया ?"

"नहीं, वह आगामी रविवार को होने वाला है। भारत पेन्टस एण्ड वारनिशेज के मेनेजर लाला गणपतराय उत्सव का सभापतित्व करने वाले हैं।"

"वे बहुत ही सुलझे हुए मस्तिष्क के व्यक्ति हैं। आज कल माया उनके पास ही काम कर रही हैं।"

"तो उसे नौकर करा दिया है ?"

"जी हां। उसका कहना था कि उसका चित्त पढ़ाई में नहीं लगता।"

"तो नौकरी में उसका चित्त लग रहा है ?"

"यह हमने पूछा नहीं। प्रत्यक्ष रूप में वह अपने काम से सन्तुष्ट है। जबतक उसके विवाह का प्रबन्ध नहीं हो जाता खाली घर पर बैठे रहने से तो ठीक ही है।"

"परन्तु एक प्रस्ताव मैंने भी तो किया था, वह अस्वीकार कर दिया गया है क्या ?"

इस पर सन्तराम गम्भीर हो गया। वह अभी इसका उत्तर देने ही लगा था कि माया आ गई। माया आज प्रोफेसर साहब को वहां बैठा देख मुस्कुरा कर नमस्कार करने लगी।

महेश्वरदयाल ने कहा, 'माया जी! मैं आज आपको फैक्टरी में काम करते देख आश्चर्य करने लगा हूं। उसी के विषय में आपके पिता जी से पूछने के लिये आया हूँ।"

"इसमें आश्चर्य करने की क्या बात है?"

"आश्चर्य आपके व्यवहार पर नहीं हुआ। वह अपने विषय में वस्तु-स्थिति समझने के लिये हुआ है।

"मैं जानने के लिए आया हूं कि मेरी एक अर्जी आपके पिताज़ी के पास पहुँची हुई है। उस पर विचार किया गया है अथवा नहीं और यदि विचार कर रिजैक्ट किया जा चुका है तो किस आधार पर?"

"यह सब आप पिताजी से पूछिये। मैं तब तक कपड़े बदल कर चाय लाती हूं। इतना कह कर वह बैठक से निकाल गई।

सन्तराम ने कहा, ' जब आपने प्रस्ताव किया था तो माया ने उन कारणों से जिनका आपको भी ज्ञान है उस पर विचार नहीं किया। वह किसी अन्य के वचन और आश्वासनों में बंध चुकी थी। जब वह दूसरा भाग गया तो वह अपने को हीन अवस्था में समझने लगी थी। इस कारण हम सबने उस घटना के उपरान्त प्रस्ताव को समाप्त समझ लिया था।

हम घटना को हुए कुछ समय व्यतीत हो जाने के उपरान्त ही उसके विवाह के लिये अपनी खोज आरम्भ करने वाले थे। तब तक माया को नौकरी करा देना उचित समझा है।"

"तो क्या मैं अपने प्रस्ताव को पुनः जीवित कर सकता हूं?"

"देख लीजिये। माया में अन्तर पड़ चुका है। क्या वर्तमान परिस्थिति में भी आप अपने प्रस्ताव पर विचार करने के लिए कह रहे हैं? '

"बिल्कुल।"

परन्तु क्या यह दया के भाव से है?" रानी जो चाय की ट्रे लिये महेश्वर के पीछे के द्वार से आ गई थी, उक्त वार्त्तालाप सुन पूछने लगी।

महेश्वरदयाल ने घूम कर उसकी ओर देखा और नमस्कार कर दी।

जब रानी ने ट्रे मेज पर रख दी तो महेश्वरदयाल ने कह दिया कि नहीं माता जी! यह बात नहीं है। मैं इतना दयालु नहीं हूँ।

"परन्तु आप किसी प्रकार से बूढ़े तो प्रतीत नहीं होते?" सन्तराम ने मुस्कुराते हुए कह दिया।

"नहीं जी। बूढ़ा भी नहीं हूँ। इस पर भी लोभी और स्वहित चिन्तक अवश्य हूं।"

इतने में माया कपड़े बदल कर नीचे आ गई।

सन्तराम जी ने माया को कह दिया, "देखो माया! मैंने महेश्वर जी को अपने विचार बता दिये हैं। उन विचारों को सुनकर भी यह समझते हैं कि माया देवी से विवाह का प्रस्ताव कर ये अपना हितचिन्तन कर रहे हैं। बताओ तुम क्या कहती हो?"

माया ने कुछ क्षण आंखें मूंद कर कह दिया, "मैं स्वयं को इनके योग्य नहीं समझती।"

"यह मिथ्या भ्रम है। और यदि भ्रम नहीं है तो यह सर्वथा झूठ ही हो सकता है।"

सन्तराम हंस पड़ा। वह बोला, "यही तकिया कलाम नानकसिंह का था। वह सब बातों में कह दिया करता था कि यह सब झूठ है। आज आपने भी वही कुछ कह दिया है।"

महेश्वरदयाल ने मुस्कुराते हुए कहा, "शब्द वही हैं परन्तु भाव दूसरे हैं। वह तो जिन बातों को अपने विचारों के विपरीत मानता था, उसीको झूठ कहता था और मैं तो उस बात को झूठ कह रहा हूं जिसको मैं वैसा ही समझता है।"

"क्या मतलब !" रानी ने इस युक्ति को न समझते हुए कहा।

"बात यह है कि मैं माया को अपनी पत्नी बनने के योग्य समझ कर ही पत्नी बनाने का विचार कर रहा हूं। माया ने कहा है कि वह मेरे योग्य नहीं है। इसके दो अर्थ हो सकते हैं। एक यह कि वह अपने को मुझसे हीन जाति की समझती है। यह भ्रम है। वह मानव है, जैसा मैं हूँ। हम दोनों सजातीय हैं। एक दूसरी बात भी हो सकती है। वह यह कि यह मुझको अपने से कम और हीन समझती है। मेरा कहना है कि यह मिथ्या बात है। यह जानती है कि मैं मन, बुद्धि और शरीर से इनसे अधिक सबल हूं। इस सबलता का प्रमाण मैं दे सकता हूं। यह इन्होंने किसी प्रयोजन से अनृतभाषण किया है।"

"मेरा यह दूसरा मतलब नहीं है।" माया ने अपनी सफाई देते हुए कहा।

"तो आप किसी भ्रम में फंसी हुई हैं। मैं आपका भ्रम निवारण करना चाहता हूं। और आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि पहली बात तो है नहीं। कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि जड़वादी नानकसिंह ने आपको यह विश्वास करा दिया प्रतीत होता है कि आप भी जड़ हैं। इसीसे जड़ पदार्थों की भांति एक बार शरीर में कुछ बिगाड़ आने पर समझ रही हैं कि वह बिगड़ा सुधर नहीं सकता।

"देखिये मायादेवी ! यदि यह चीनी की प्लेट टूट जाय तो फिर जुड़कर पहले की भांति नहीं हो सकती। परन्तु हाथ चाकू से कट जाय तो जीवित होने के कारण इसका घाव कुछ समय के उपरान्त भर जाता है। यदि आप स्वयं को चेतन और सजीव समझती हैं तो आपमें स्वस्थ होने की शक्ति का होना समझ आ जाना चाहिए। मैं आपको अपनी भांति ही चेतन, सजीव और विकास करने में सक्षम मानता हूं।"

माया मुस्कुरा रही थी। वह चित्त से तो प्रसन्न थी कि उसके मन की अभिलाषा के अनुकूल ही बात हो रही है। परन्तु मुख से कुछ कह नहीं

रही थी। विष्णु ने अपने प्रोफेसर को अकाटय युक्ति करते देख हंसते हुए पूछ लिया, "बताओ वहिन जी ! आप जीवित और चेतन स्वरूप हैं या नहीं।"

इस पर सब हंसने लगे। चाय पी जाने लगी और रानी ने बात बदल दी। उसने कह दिया, "मुझे आज बाजार में नानाकसिंह घूमता हुआ दिखाई दिया है।

"यह तो अपशकुन ही है।" सन्तराम ने पुनः महेश्वरदयाल के प्रस्ताव की ओर संकेत कर दिया।

"अब वह अपशकुन बन नहीं सकता।" माया ने आंखें मूंदे ही कह दिया।

"तब तो अपना प्रस्ताव स्वीकार हो गया मैं समझ सकता हूं।"

सब माया के मुख पर देखने लगे थे और वह किसी विचार में मग्न चाय पी रही थी। जब माया ने कुछ उत्तर नहीं दिया तो महेश्वरदयाल ने सन्तराम की ओर देखकर कहा, "मैं अपनी माता जी को अभी-अभी जाकर यहां बुला लाता हूं और वे कल आकर माया जी के उचित शकुन कर जावेंगी। और साथ ही विवाह का दिन और मुहूर्त भी निश्चय कर जावेंगी।"

इसका भी जब किसी ने उत्तर नहीं दिया तो महेश्वरदयाल ने अपना खाली प्याला प्लेट में रखते हुए कहा, "तो अब मुझे स्वीकृति दीजिये। मैं माता जी को लेने के लिए चला जाऊं। अभी गाड़ी पकड़ने का समय है।"

"क्यों माया !" रानी ने पूछ लिया।

"मुझको इसमें क्या आपत्ति हो सकती है ! केवल इतना चाहती थी कि अपने विवाह के लिए कुछ रुपया पैदा कर लेती तो ठीक था।"

"कितना जमा कर लिया है ?"महेश्वरदयाल ने पूछा।

"अभी तो एक ही मास का वेतन मिला है। उसमें से १०० रुपये ही डाकखाने में जमा कराया है।"

"अरे ! इससे तो दस विवाह हो सकते हैं।"

"दस रुपये में भला क्या हो सकेगा ?"

"हवन सामग्री और पण्डित की दक्षिणा तो इतने में हो जावेगी।"

"और कुछ नहीं चाहिए।"

"और के लिए मैंने पर्याप्त पैदा कर लिया है।"

: ११ :

महेश्वरदयाल गणपतराय और सरस्वती से मिलने के लिए अगले दिन गया। वह अपने साथ अपनी माता को भी लेकर गया था। महेश्वरदयाल ने सरस्वती से अपनी माता जी का परिचय कराते हुए कहा, "मुझे कल बाबू जी ने कहा था कि आप मुझको कुछ आज्ञा देने वाली हैं। मैं तो कल ही आने वाला था परन्तु कल एक आवश्यक कार्य के लिए माता जी को लेने हापुड़ जाना पड़ गया था। आज ये यहां आई हैं तो मैंने समझा कि आपके दर्शनों का लाभ इनको भी हो जाय तो ठीक ही है। इस कारण इनको भी साथ ले आया हूं।"

"यह तो महेश जी ! आपने बहुत ही ठीक किया है। मैं इनसे ही भेंट के लिए आपको कहने वाली थी। सो यह अपने आप आ गई हैं यह हमारे सौभाग्य हैं।"

सरस्वती महेश्वरदयाल की सगाई की बात करना चाहती थी। परन्तु वह पहले सुमित्रा को बुलाने का विचार कर रही थीं। अथवा महेश्वरदयाल को जयपुर भेजकर उसको देख आने की बात करना चाहती थी। उसके बाद ही वह महेश्वरदयाल की मां से मिलकर बात करना चाहती थी। अब सदारानी के स्वयं आने पर वह बात आरम्भ करने तरीके पर विचार करने लगी तो सदारानी ने अपने आने का प्रयोजन स्वयं ही बता दिया। उसने कहा, "महेश कल एकाएक घर पहुंचा और कहने लगा कि मुझे उसकी सगाई का प्रबन्ध करने के लिए आज ही गाजियाबाद चलना होगा। यह मेरा सबसे छोटा लड़का है। दो और हैं। वे अपने पिता के साथ कारोबार

करते हैं। इनकी दो बहनें भी हैं। दोनों के विवाह हो चुके हैं। सबसे छोटी सन्तानें होने के कारण यह मुझे सबसे अधिक प्रिय है। और इसकी किसी बात से मैं इन्कार नहीं कर सकती। सो बिना हील हुज्जत किए मैं साथ चली आई। और प्रात:काल ही इसकी होने वाली पत्नी के मांग में सिन्दूर भर आई हूं। मैं कल लौट जाने वाली हूं। यह कहने लगा कि इसकी एक अन्य माता जी यहां रहती हैं। उनके दर्शन भी करने चाहिये। सो यहां चली आई हूं।"

सरस्वती तो अवाक् बैठी रह गई। वह अपने मन में अपनी लड़की के लिए योजना बना रही थी और यहां तो योजना पूर्ण करने वाली कोई और आ टपकी थी।

गणपतराय समीप बैठा यह सुन रहा था। वह हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, "मैं तो पहले ही इस भाग्यवान से कह रहा था कि जितना यह विचार करती है उतना ही भाग्य उसमें हस्तक्षेप करने का अवसर पा जाता है।

"जो हो। मैं महेश्वर जी को बधाई देता हूं। भाई, कहां गठबन्धन किया है आपने ?"

"आपके कार्यालय की एक क्लर्क माया मेरा निर्वाचन है। गठबन्धन तो अगली पूर्णिमा के दिन सायं छः बजे करने का निश्चय करके माता जी आई हैं।"

"ओह ! तब तो ठीक ही हुआ है। सरस्वती अपनी लड़की सुमित्रा से तुम्हारे गठबन्धन की योजना बना रही थी। परन्तु वह बेचारी नहीं जानती—

सोचियां सोच न होई जे सोचे लखबार।
चुपियां चुप न होवई, लाई रिहा लवतार
भुखियां भुख न उतरे जे बना
ते इक न चले नाल।

कि सच्चियारा होइये कि व कूड़े तुरे पाल
हुकम रजाई चलणा नानक लिखिया नाल ॥

"ओह! महेश के मुख से निकल गया। फिर कुछ विचार कर उसने कहा,

"एक विचार से यह ठीक ही हुआ है। यदि आप कहते भी तो मैं मानता नहीं। कारण यह है कि माया के विषय में मेरे विचार को चार मास से अधिक हो चुके हैं।"

"खैर जो हुआ ठीक ही हुआ है। क्यों महेश जी! हमें विवाह पर बुलायेंगे कि नहीं?"

"आपको न बुलावें, यह कैसे हो सकता है। सब कार्यक्रम तो आप ही बनाएंगे।"

परन्तु विवाह में एक विघ्न और पड़ गया। महेश एक दिन बहुत प्रातः विष्णु के द्वार खटखटाने पर जागा। महेश्वरदयाल ने द्वार खोला तो विष्णु को सिर नंगे खड़ा देख पूछने लगा, "क्या बात है?"

"प्रोफेसर साहब! रात घर में एक घटना हो गई है। नानकसिंह किसी प्रकार घर में घुस आया था और उसकी हत्या हो गई है। किसी ने उसके पेट में छुरी घोंप दी थी। वह मरा नहीं था। उस सोचनीय अवस्था में पुलिस आ गई। और उसने बयान दिया कि उसकी हत्या करने वाली बहिन है।"

"बहिन हवालात में है और नानकसिंह का शव पोस्टमार्टम के लिये

* लाखों बार सोचने से भी विचार पूर्ण नहीं होता। मुख से चुप रहने पर कुछ नहीं होता जब तक मन चुप न करे। भूख नहीं मिटती चाहे पेट पर बहुत सी पूरियां बांध ली जांय। कितनी भी अक्लमन्दी की बातें करें, कोई पूरी नहीं होती। किस प्रकार मन सत्य पवित्र और सफल हो सकता है और झूठ का भंडा फूट सकता है। नानक कहता कि परमात्मा की आज्ञा के साथ चलने से ही यह सब कुछ हो सकता है।

गया है। पिता जी ने मुझे आपको सूचना देने के लिए कहा है।"

महेश्वरदयाल ने अपनी साइकल पकड़ी और गणपतराय को साथ लेकर थाने में पहुँच गया। वहाँ माया को पृथक कमरे में बन्द कर रखा था। पुलिस ने उनको माया से नहीं मिलने नहीं दिया। बाद में वे सन्तराम से मिले और मुकदमे की पैरवी के लिए दिल्ली का एक योग्य वकील कर लिया गया।

उसी दिन माया को रिमाण्ड के लिए मजिस्ट्रेट के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। पन्द्रह दिन का रिमाण्ड मिल गया। माया की जमानत नहीं हो सकी।

विवाह निश्चित तिथि पर सम्पन्न नहीं हो सका।

वकील की राय से माया ने अपने बयान में कहा, "घटना के दिन मुझको नानकसिंह मिला था। मैं दफ्तर से आ रही थी। उसने मेरा मार्ग रोक लिया। मैंने पूछा क्या चाहते हो।"

उसने कहा, "मैं तुमको अपनी पत्नी मानता हूं और तुम्हें अपने साथ ले चलना चाहता हूं।"

"मैंने उससे कहा, "तुम घर पर आ जाओ। माता-पिता के सामने मेरी माँग प्रस्तुत करो। उनके सामने ही मैं तुम्हारे साथ चल सकूंगी।"

"बीच सड़क पर मैंने उसके साथ तू-तू मैं-मैं करनी उचित नहीं समझी। वैसे मेरा उसके साथ जाने का कोई विचार नहीं था।

"कोई समय था, जब वह मुझसे प्रेम प्रकट करता था। उसका मेरे साथ सम्बन्ध भी बना चुका था। मुझे कॉलेज में भरती कराने के बहाने मेरे माता-पिता से झूठ बोल कर मुझे दिल्ली ले गया था। वहाँ उसने मुझे एक मकान में बन्द कर रखा था। मैं कैद होने के लिये उसके साथ नहीं गई थी। मैं स्वेच्छा से उसके साथ विवाह करने के लिये गई थी। वह विवाह करना नहीं चाहता था। एक दिन अपने कैद के बगल वाले कमरे में मैंने इसको एक अन्य से बातें करते सुना। दूसरा व्यक्ति कह रहा

था कि पुलिस इसका सुराख पा गई है। और इस मकान पर छापा डालने वाली है।

"इसने पूछा, क्यों ?"

"दूसरे ने कहा, पुलिस उसकी करोलबाग में एक नाबालिग लड़की से बलात्कार करने के अपराध में खोज कर रही है।"

"उस वार्त्तालाप के उपरांत नानकसिंह नहीं आया। उससे बात करने वाला मालिक मकान था और मुझको अपने लिए रखने के लिए यह सब कर रहा था। वास्तव में पुलिस नहीं आई थी।

"नानकसिंह के लापता होने के उपरांत उसका साथी मेरे पास आया और मुझसे विवाह का प्रस्ताव करने लगा। मैंने आमरण व्रत रख लिया। तीन दिन तक बिना पानी तथा खाने के रहने से मैं अति दुर्बल हो गई। तो उस आदमी ने डाक्टर बुलाया मैंने डाक्टर को सारी बात बताई तो उस आदमी को डरा धमका कर मुझे छुड़ाया और मैं अपने घर लौट आई।

"मेरा नानकसिंह से विवाह नहीं हुआ था। नाबालिग लड़की से बलात्कार की बात सुन कर मैंने उससे विवाह न करने का निश्चय कर लिया था। अतः घटना के दिन जब यह मुझे सड़क पर मिला तो मैं इसको घर पर बुला कर अपने मन की बात बता देना चाहती थी।

"वह हमारे रात का खाना खाने के उपरांत आया। उसके साथ दो आदमी और थे और उसने बल पूर्वक मेरे अपहरण करने का यत्न किया। मैंने अपनी रक्षा के लिए एक तेज छुरी अपने पास रखी हुई थी। मैं समझती थी कि यदि वह आया तो कुछ न कुछ खराबी करने का यत्न करेगा। वह छुरी मेरे काम आई। जब अन्य दो आदमियों ने मेरे माता-पिता को पकड़ उनके हाथ पांव बांधने आरम्भ किए और नानकसिंह मुझे घसीट कर मकान के बाहर ले जाने लगा तो मैंने अपनी छुरी जो मैंने अपनी चोली के भीतर छिपा कर रखी हुई थी, निकाली और उसके पेट में घोंप दी। वह चीख मार कर गिरा तो मेरा भाई विष्णु अपने पढ़ने के कमरे से निकल

आया और मेरे कहने पर नानकसिंह को मर रहा समझ भाग कर थाने गया और पुलिस को बुला लाया।''

इस बयान में वकील की राय से गर्भपात की बात छिपा ली गई थी। और उस लेडी डाक्टर को जिसने गर्भपात का आपरेशन किया था, इसके बदले बयान के अनुसार बयान दिलवा दिये गये। उसने कह दिया, ''मैं रात के समय एक मकान में यह कह कर ले जाई गई थी कि मुझे एक मरीज देखना है। वहां मुझे इस लड़की को अति दुर्बल अवस्था में दिखाया गया। मैंने इससे दुर्बलता का कारण पूछा तो इसने अपने वहां कैद किये जाने की कहानी बताई। मैंने मुझे वहां ले जाने वाले को धमकाया तो वह इसे छोड़ने पर राजी हो गया। उसने यह भी बताया कि इस लड़की का अपहरण नानकसिंह ने किया है। इसने यह भूख हड़ताल उसके विरुद्ध कर रखी है।

''मैं इस लड़की को अपनी मोटर में अपने साथ ही अपने क्लिनिक में ले आई और फिर इसको खिला पिला कर इसे घर जाने का भाड़ा देकर भेज दिया।''

माया पहली ही अदालत में छूट गई। माया ने स्वरक्षा में हत्या की है यह प्रारम्भिक जांच का परिणाम निकला।

इसके उपरान्त माया का विवाह महेश्वरदयाल के साथ हो गया। विवाह के उपलक्ष्य में दी गई दावत के समय गणपतराय ने महेश्वरदयाल को माया से विवाह करने पर बधाई देते हुए नानकसिंह के विषय में अपना विश्लेषण बता दिया।

यह दावत गणपतराय ने माया के उसके कारखाने की एक क्लर्क होने के कारण दी थी। इस दावत में महेश्वरदयाल, माया, माया के माता पिता तथा भाई बहिन थे। गणपतराय के कारखाने के भागीदारों में उसका साला जगदीश, कन्हाईलाल और उसकी पत्नी चन्द्रकला को भी आमन्त्रित किया गया था।

दावत के उपरान्त सब गरणपतराय के ड्राइंग रूम में बैठे हुए थे। काफी पी जा रही थी। नानकसिंह की चर्चा चली तो गरणपतराय ने उसके विषय में बताते हुए कहा, "मैंने पहले ही दिन जब नानकसिंह को देखा था तो समझ लिया था कि यह व्यक्ति अविकसित बुद्धि रखता है। इस कारण आज के संसार में वह सफल नहीं हो सकता। मैंने इसे कहा भी था। परन्तु इसने अपनी पूर्व की असफलताओं का कारण न समझने के स्थान, मुझसे कह दिया कि मैं झूठ बोल रहा हूं। और वह अपनी इन्द्रियों के भोगों को प्राप्त करने के पीछे भागता रहा। उसने कभी भी उनकी उपादेयता अथवा पूर्ण की होने सम्भावना का विचार नहीं किया।"

कन्हाईलाल ने पूछ लिया, परन्तु क्या एम० ए० तक ही पढ़ाई विकसित बुद्धि का लक्षण नहीं है?"

"नहीं! आज कल की पढ़ाई अधिकतर पुस्तकों में पढ़ी बातों को स्मरण कर उत्तर पर्चों पर लिख देने को कहते हैं। इसमें बुद्धि के विवेक-यन्त्र के विकास का कुछ भी भाग नहीं होता।"

महेवरदयाल ने एक अन्य बात का रहस्योद्घाटन करते हुए बताया, "पुलिस ने नानकसिंह के घर से चले आने का रहस्य भी पता किया था। यह एम० ए० पास कर अपने गांव से आया था और वहां उसने अपनी बुआ की लड़की से बलात्कार करने का यत्न किया था, जिसके परिणाम स्वरूप इसके पिता ने इसको घर से निकाल दिया था।

"मैं विस्मय करता हूं।" गरणपतराय ने पूछ लिया, "कम्युनिस्ट होने से कोई पतित आचरण बनाता है अथवा पतित आचरण रखने से कम्यु-निस्टों में खप जाता है।"

महेश्वरदयाल ने अपने अध्ययन का परिणाम बताते हुए कहा, "बात यह है कि योरोप में अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दि में तीन विचार बहुत प्रबल हुए। एक "फ्रायडवाद", दूसरा "जड़वाद" और तीसरा डार्विन का "विकासवाद"। तीनों सगे भाई बहिन हैं। तीनों मानव में से

मानवता नि शेष करनेवाले सिद्ध हुए हैं। और कम्युनिज्म इन तीनों क
समन्वय है। तीनों के उपासक पहले बनते हैं और फिर मार्क्सवाद में आ
हैं। अथवा पहले मार्क्सवादी होते हैं और फिर वे इन वादों को मान
वाले होते हैं ? यह एक अनावश्यक विवेचना का विषय है।

## हमारे यहां से प्रकाशित अन्य साहित्य

### उपन्यास

| | | |
|---|---|---|
| भग्नाश | श्री गुरुदत्त | ७.५० |
| विद्यादान | ,, | ३.०० |
| भाग्यरेखा | ,, | ३.०० |
| सभ्यता की ओर | ,, | ३.०० |
| सीमाएँ | श्री मनहर चौहान | १२.०० |
| सूर्य का रक्त | ,, | ६.०० |
| सन्तुलन असन्तुलन | ,, | ४.५० |
| रात खो गयी | ,, | ५.५० |
| हिरना सांवरी | ,, | ४.५० |
| टूटा व्यक्तित्व | ,, | २.७५ |
| आकाश तले धरती पर | श्री उमाशंकर | ३.५० |
| संगम या विछोह | श्री यशोविमलानन्द | ३.२५ |
| कांच और कंचन | श्री शरण | ३.०० |
| आग पानी और तूफान | डा० यतीन्द्र | ४.५० |
| झरोखे | श्री राम शर्मा 'राम' | ५.५० |

### नाटक

| | | |
|---|---|---|
| गूंगी मछलियां | श्री विनोद रस्तोगी | ३.५० |
| स्वर्ग के खण्डहर | ,, | २.७५ |
| नेफा की एक शाम | श्री ज्ञानदेव अग्निहोत्री | २.५० |
| खून की आवाज | श्री राम कुमार भ्रमर | २.७५ |

## कहानी

| | | |
|---|---|---|
| बीस सुबहों के बाद | श्री मनहर चौहान | ३ |
| संसार की तेरह श्रेष्ठ कहानियां | सं० गोपाल शेखरन् | ३ |
| उर्दू की तेरह श्रेष्ठ कहानियां | सं० रमेश गौड़ | ४ |
| शेक्सपियर के नाटकों की कथाएं ( तीन भाग ) | रूपा: शत्रुघ्नलाल शुक्ल | १७ |
| गौरवमय भारत ( दो भाग) | तीन अनुभवी लेखक | १० |

## साहसिक कहानियाँ

| | | |
|---|---|---|
| हमारे बहादुर हवाबाज | श्री वीरेन्द्र मोहन रतूडी | २. |
| हमारे बहादुर जवान | ,, | २. |
| नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएं | ,, | २. |
| भारत के साहसी वीरों की गथाएं | श्री धर्मपाल शास्त्री | २. |
| विश्व की साहसिक कथाएं | श्री शत्रुघ्नलाल शुक्ल | २. |